सेठ भोलाराम सेकसरिया स्मारक ग्रन्थ-माला १६

बुन्देली
का
भाषाशास्त्रीय अध्ययन

लेखक
डॉ० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल
एम०ए० (हिन्दी एव तुलनात्मक भाषाशास्त्र), पी-एच०डी०

प्रधान सपादक
डॉ० दीनदयालु गुप्त
एम०ए०, एल०एल०बी०, डी०लिट्०
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषाविभाग

स्वर्गीय सेठ श्री भोलाराम सेकसरिया

कृतज्ञता-प्रकाश

श्रीमान् सेठ शुभकरन जी सेकसरिया ने लखनऊ विश्वविद्यालय की रजत-जयन्ती के अवसर पर बिसवाँ-शुगर-फैक्ट्री की ओर से बीस सहस्र रुपये का दान देकर हिन्दी विभाग की सहायता की है। सेठ जी का यह दान उनके विशेष हिन्दी-अनुराग का द्योतक है। इस धन का उपयोग हिन्दी मे उच्च कोटि के मौलिक एव गवेषणात्मक ग्रन्थो के प्रकाशन के लिए किया जा रहा है जो श्री सेठ शुभकरन सेकसरिया जी के पिता के नाम पर 'सेठ भोलाराम सेकसरिया स्मारक ग्रन्थ माला' मे सग्रथित होगे। हमे आशा है कि यह ग्रन्थमाला हिन्दी साहित्य के भण्डार की समृद्धि करके ज्ञानवृद्धि मे सहायक होगी। श्री सेठ शुभकरन जी की इस अनुकरणीय उदारता के लिए हम अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते है।

दीनदयालु गुप्त,
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी तथा
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय।

परिचय

यो तो आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ का अध्ययन १९वी शताब्दी के उत्तरार्ध मे ही प्रारभ हो गया था और उस प्रारभिक अध्ययन की पूर्णाहुति ग्यारह खडो मे प्रकाशित सर जार्ज ग्रियर्सन के 'भारतीय भाषाओ का सर्वे' (१८९४-१९२७ ई०) मे हुई थी, किंतु एक-एक आधुनिक भाषा के सूक्ष्म वैज्ञानिक अध्ययन का पथ-प्रदर्शन प्रसिद्ध फ्रासीसी विद्वान् प्रो० ज्यूल ब्लाक ने 'मराठी भाषा' पर लिखी अपनी पुस्तक (१९१९) द्वारा किया था। उसके उपरान्त डा० सुनीति कुमार चैटर्जी का 'बगाली भाषा की उत्पत्ति और विकास' पर महत्वपूर्ण अध्ययन (१९२६) मे निकला था। हिन्दी-प्रदेश की उपभाषाओ पर प्रारम्भिक कार्य डा० बाबूराम सक्सेना का 'अवधी का विकास' (१९३१) तथा लेखक का 'ब्रजभाषा' (१९३५) शीर्षक थे। इस अध्ययन शृखला की नवीनतम कडी डा० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल का 'बुदेली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन' शीर्षक प्रस्तुत अध्ययन है। उपर्युक्त कार्यों के समान यह भी विश्वविद्यालय के डाक्टरेट थीसिस के रूप मे तैयार हुआ था।

डा० अग्रवाल के बुदेली उपभाषा के इस अध्ययन की कई विशेषताएँ है। बुदेली ध्वनियो का विश्लेषण नवीन वर्णनात्मक पद्धति के अनुसार किया गया है, बुदेली के उपरूपो की विशेषताओ को विस्तार मे दिया गया है, विषयप्रवेश मे इस उपभाषा की 'ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' के सबध मे नवीन रोचक सामग्री है। अनेक महत्वपूर्ण परिशिष्टो क फलस्वरूप इस कृति की उपादेयता और भी अधिक बढ गई है, जैसे बुदेली क्षेत्र के कुछ भाषा-सबधी मानचित्र, बुदेली के उपरूपो की तुलना की दृष्टि से सचित लगभग २०० वाक्यो की सूची, बुदेली के लगभग १००० विशिष्ट शब्दो की सूची।

हिदी प्रदेश की उपभाषाओ से सबधित अभी भी पर्याप्त कार्य शेष है। अनेक प्रमुख उपभाषाओ का अध्ययन होना बाकी है, उदाहरणार्थ खडी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन अभी तक उपलब्ध नही है। प्रमुख भाषाओ के अध्ययनो के तैयार हो जाने पर हिन्दी प्रदेश की भाषा का पूर्ण ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक स्वरूप बनाना होगा। उसी प्रकार हिन्दी प्रदेश की शब्दावली का भी पूर्ण कोष तैयार होना है। इस प्रदेश की उपभाषाओ के नवीन,

पूर्ण तथा वैज्ञानिक भाषा-सर्वे फिर से होने की आवश्यकता है । इस प्रकार के अध्ययनो के समाप्त हो जाने पर प्रदेश का सास्कृतिक इतिहास भाषा-सामग्री के आधार पर लिखा जा सकता है । राजभाषा हिदी के व्याकरणगत तथा कोशगत मानक रूपो को निर्धारित करने मे भी उपर्युक्त अध्ययन विशेष सहायक सिद्ध हो सकते है ।

आशा है कि हिदी प्रदेश की उपभाषाओ की ध्वनियो, रूपो तथा शब्दावली के वैज्ञानिक वर्णनात्मक अध्ययनो की यह परपरा नवयुवक विद्वानो के द्वारा शीघ्र सम्पन्न हो सकेगी, जिसमे इस प्रदेश के ऐतिहासिक, भौगोलिक, तुलनात्मक तथा सास्कृतिक अध्ययनो को पूर्ण रूप दिया जा सके । मुझे वास्तविक प्रसन्नता है कि प्रदेश की उपभाषाओ के अध्ययन का जो कार्य हम लोगो ने लगभग तीस वर्ष पूर्व आरभ किया था, वह डा० अग्रवाल जैसे सुयोग्य तथा उत्साही अध्यापको के द्वारा निरतर आगे बढाया जा रहा है । मैं यह चाहूँगा कि यह उनका अतिम कार्य न होकर इस क्षेत्र का प्रथम कार्य सिद्ध हो ।

धीरेन्द्र वर्मा

भाषा विज्ञान विभाग,
सागर विश्वविद्यालय
जून २०, १९६३

वक्तव्य

भारतवर्ष मे भाषाशास्त्र के अध्ययन की एक प्राचीन परम्परा रही है, जिसमे भाषा के विविध पक्षो का अध्ययन गम्भीर रूप मे किया गया है। आधुनिक भारतीय भाषाओ के उत्थान के युग की कई शताब्दियो मे यह अध्ययन रुका रहा, इसका कारण यही था कि उन शताब्दियो मे अव्यवस्थित शासन और शिक्षा की दुर्व्यवस्था थी, परिणामत जीवन के अन्य अनेक उपयोगी शास्त्रो का अध्ययन और अध्यापन बन्द था। जनता बहुधा अनपढ थी। पिछली दो शताब्दियो मे यूरोपीय देशो ने सब प्रकार की उन्नति की और विविध शास्त्रो के मौलिक अध्ययन की रुचि वहाँ उत्तरोत्तर बढती गई। उपनिवेशन और ईसाई धर्म-प्रचार की क्रियाशीलता के साथ ही पाश्चात्य देशो मे ससार की अनेक प्राचीन और अर्वाचीन भाषाओ के अध्ययन की जिज्ञासा भी बढी। भारतवर्ष मे आकर उन विदेशियो ने यहाँ की भाषाएँ सीखी और सस्कृत भाषा के अतुल साहित्य-भण्डार का मन्थन किया। उन्होने पाणिनि के अष्टाध्यायी जैसे सस्कृत के भाषाशास्त्रीय अध्ययनो से लाभ उठाया। इतना ही नही, उन विद्वानो ने भाषाशास्त्र के अध्ययन को अनेक नई दिशाए प्रदान की, यही कारण है कि आज यह शास्त्र नृविज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, काव्यशास्त्र और अन्य अनेक ज्ञान और भावधाराओ के अध्ययन के लिए एक अनिवार्य साधन हो गया है।

भारतवर्ष मे अनेक भाषाएँ, उपभाषाएँ तथा बोलियाँ है। देश जिस प्रकार जाति-पाँति, मतपथ और प्रदेशीय वर्गों मे विभक्त है, उसी प्रकार यह अनेक भाषा-बोलियो मे बँटा हुआ है। इस मे जितने प्रकार की भाषाओ और जितने प्रकार की मानव-कोटियो के शास्त्रीय अध्ययन की गुजाइश है उतनी किसी अन्य देश मे नही है। आवश्यकता है, शिक्षा के प्रसार की, साथ ही, भारत की सुदीर्घ साहित्य-परम्परा तथा शास्त्रीय अध्ययनो के प्रति अभिरुचि उद्दीप्त करने की। विदेशी विद्वानो का अनुगमन उत्साहित कर सकता है परन्तु हमे नवीन अनुसंधानात्मक परख से अपनी परिस्थितियो के अनुकूल अपनी वस्तु के आँकने की मौलिक दृष्टि प्रदान नही कर सकता। ग्रीक, लैटिन, गॉथिक आदि भाषाओ पर आधारित विविध भाषाशास्त्रीय सिद्धान्तों के अन्धानुकरण का समय अब जाना चाहिए। इनसे प्रेरणा लेकर नयी दिशा और

नई गतिविधियो मे हमे अपनी समस्या और अपनी निधि का अध्ययन करना चाहिए, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार पाश्चात्य विद्वानो ने हमारे प्राचीन साहित्य से अनेक क्षेत्रो मे प्रेरक सकेत लिये और वे मौलिक अनुसन्धानो मे प्रवृत्त हुए। सन्तोष की बात है कि भाषाशास्त्र और भारतीय विविध भाषा और बोलियो के अध्ययन मे भारतीय विद्वानो की मौलिक अभिरुचि हुई है और उसके फलस्वरूप उच्च कोटि के ग्रन्थो का प्रणयन हुआ है। हिन्दी भाषा की बोलियो का भी अध्ययन हुआ है और उसकी बिखरी हुई भाषा-शक्ति बटोरी जा रही है।

हिन्दी की ब्रजी, अवधी तथा भोजपुरी बोलियो के अध्ययन का बडा सुन्दर कार्य विद्वानो ने किया था, परन्तु अनेक हिन्दी-बोलियो के शास्त्रीय अध्ययन अब भी अवशिष्ट है। बुन्देली एक बहुत विस्तृत भूभाग की प्रचलित उपभाषा है। उसके अध्ययन का कार्य सन् १९५३ मे मैने अपने अध्यवसायी शिष्य श्री रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल को दिया। डा० अग्रवाल हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्वान और सस्कृत के अच्छे जानकार व्यक्ति है। साहित्य और भाषाशास्त्र, दोनो मे प्रथम श्रेणी मे एम०ए० परीक्षाएँ पास करने के बाद ये कई वर्षो से एम०ए० कक्षाओ का अध्यापन कार्य कर रहे है। इन्होने पाश्चात्य और भारतीय, दोनो भाषा-अध्ययन प्रणालियो का समुचित ज्ञान प्राप्त किया है। अपने परिपक्व ज्ञान और अध्ययन के फलस्वरूप इन्होने प्रस्तुत ग्रन्थ को एक मौलिक अनुसन्धानात्मक प्रबन्ध-रूप मे लिखा है। आशा है, देशी और विदेशी विद्वान इस ग्रन्थ का स्वागत करेगे और डा० अग्रवाल भाषाशास्त्र के क्षेत्र मे अपनी लेखिनी द्वारा और भी अनेक ग्रन्थो का प्रणयन कर हिन्दी को समृद्ध बनायेगे। उनकी मै मगल कामना करता हूँ।

डा० दीन दयालु गुप्त,
एम०ए०,एल-एल०बी०,डी०लिट्०,
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी तथा
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
डीन, फैकल्टी ऑव् आर्ट्स्,
अध्यक्ष, हिन्दी-समिति,
उत्तरप्रदेश सरकार

लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ
जून १७, १९६३

दो शब्द

प्रस्तुत कृति लेखक के पी-एच०डी० प्रबन्ध 'ए डिस्क्रिप्टिव ऐनालिसिस ऑव बुन्देली' (A descriptive Analysis of Bundeli) का हिन्दी-अनुवाद है। मूल भी मुद्रण-सम्बन्धी कतिपय कठिनाइयो को पार कर शीघ्र ही प्रकाश मे आ रहा है। इस अनुसधान का कार्य 'बुन्देली भाषा का उद्भव और विकास' (औरीजिन एण्ड डेवलेपमेन्ट ऑफ बुन्देली लैंग्वेज) के रूप मे सन् १९५३ मे ही प्रारम्भ हो गया था। आवश्यक सामग्री सग्रह किए जाने पर लेखक को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि क्षेत्रीय प्राकृत और अपभ्र श की समुचित सामग्री के अभाव मे यह प्रयास पूर्वकृत कार्यो का प्रायः पिष्टपेषन-मात्र कहा जायगा। लेखक जब इसी असमजस मे पडा था, तभी डॉ सुमित्रमगेश कत्रे के सत्प्रयत्नो ने भारतीय भाषाशास्त्र को एक नई दिशा प्रदान की। लेखक ने उनके इस प्रयास का शक्त्यनुसार लाभ उठाया, परन्तु 'अर्थ' को 'भाषा' से 'बलपूर्वक दूर ले जाने वाली' आधुनिक भाषाशास्त्र की 'उपसर्गीय' प्रवृत्ति से आविर्भूत होकर इस यज्ञ मे दीक्षित कतिपय साहसिको ने पुराने खेवे के भाषा-इतिहास के कार्यो को हेय-दृष्टि से देखना प्रारभ कर दिया है, ऐसी स्थिति मे लेखक अपनी इस कृति के सम्बन्ध मे क्या कहे! उसकी दृष्टि से तो इस प्रबन्ध मे आलोच्य-क्षेत्र की सकालिक भाषा का विशुद्ध व्याकरण-पक्ष सबल है परन्तु भाषा-विशेष की भौगोलिक व्यापकता का सर्वेक्षण, भाषा के ऐतिहासिक सकेतो के उद्घाटन से लेखक को न रोक सका। परिणामत. प्रबन्ध का वर्तमान रूप 'बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन' पाठको के सामने प्रस्तुत है। इसमे इतना कुछ अवश्य मिलेगा कि गुरुजनो को निराश न होना पडेगा, शेष, सहृदय आलोचको की सेवा मे सादर प्रस्तुत है।

लेखक प्रेरणा-स्रोत सपूज्य डॉ दीनदयालु जी गुप्त तथा प्रबन्ध-निर्देशक आदरणीय डॉ० सरयूप्रसाद जी अग्रवाल का आजन्म ऋणी है, साथ ही, विद्वान एव सहृदय परीक्षक-द्वय -- गुरुवर डॉ० सुकुमार सेन, खैरा प्रोफेसर, कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा आदरणीय डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, निदेशक, हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार—का विनत होकर आभार मानता है जिन्होने प्रबन्ध को पी-एच०डी० के लिए स्वीकार करके उसे कृतार्थ किया है।

—लेखक

विषय प्रवेश

गिरिराज विन्ध्य के अचल मे शत-शत निर्झरियो द्वारा पोषित इस दिव्य बुन्देल-भूमि को प्रकृति का सुन्दर वरदान तो मिला ही है, साथ ही, यह इतिहास के अनादि स्रोत से भारत के सास्कृतिक वैभव का यशस्वी केन्द्र भी रही है। भू-तत्त्वान्वेषियो से छिपा नही है कि खटिका युग (Cretaceous period) से ही इस जरठा धरणी ने कितने भीम-भयकर भूकम्पो का सामना किया है, कितने सागरो का अन्त देखा है। इतिहास के विद्यार्थी को भलीभाँति ज्ञात है कि महर्षि अगस्त्य और रघुवशी राम के दक्षिणापथीय सास्कृतिक अभियान यही से प्रारम्भ हुए, शुग-सम्राट पुष्यमित्र और 'सर्वराज्योच्छेत्ता' समुद्रगुप्त की दिग्विजय तथा मौर्याधिपति अशोक की धर्म-विजय-सम्बन्धी गाथाएँ आज भी इस प्रदेश के पत्थरो पर अकित है, भारतीय-हृदयो को अनुप्राणित करने वाली शकारि विक्रमादित्य और महाराज भोजकी कहानियो के जन्मदाता इसी प्रदेश के रत्न थे, चदेलो का वैभव और पराभव, आन पर मर मिटने वाले बुन्देलो की आहुतियाँ, गोडो के प्रभुत्व-सन्देश इस बात के साक्षी है कि भारत के हृदय-तल पर सुशोभित यह प्रदेश 'भारत का सच्चा हृदय' है।

इस बुन्देल-भूमि की राजनैतिक सीमाएँ नैतिक-विग्रहो के कारण समय-समय पर सकुचित एव व्यापक होती रही है—'इत जमुना उत नरमदा, इत चम्बल उत टौस'—उत्तर मे पुण्य-सलिला यमुना, दक्षिण मे प्रपात-रमणीया नर्मदा, पूर्वभाग मे आदिकवि की वाणी से पवित्र हुई तमसा (टौस) और पश्चिमी सीमा पर पुराण-चर्चित चर्मण्यवती (चम्बल)—यह सीमा बुन्देलखण्ड-केसरी महाराज छत्रसाल की कही जाती है, क्योकि दोहे का अर्धांग इस तथ्य की पुष्टि कर रहा है—'छत्रसाल सो लरन की, रही न काहू हौस'। इतिहासज्ञ इस वीर-बुन्देला का स्थिति-काल सन् १६४८ ई० से १७३१ ई० तक मानते है।[1] इस प्रकार बुन्देलखण्ड की यह सीमा अधिक पुरानी नही कही जा सकती।

---

१. बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास—गोरेलाल तिवारी, पृ० १६३, २३१

इस भू-भाग के बुन्देलखण्ड नाम की कल्पना ५००–६०० वर्षो से अधिक पुरानी नही जान पडती। जनश्रुति तो यह है कि गहरवारवशीय काशीश्वर विन्ध्यराज की वश-परम्परा मे उत्पन्न हुए महाराज हेमकरन ने (जिनको इतिहासकारो ने वीर पचम के नाम से अभिहित किया है) भाइयो द्वारा छीने हुए अपने राज्य की प्राप्ति के लिए 'विन्ध्यवासिनी देवी[1]' को प्रसन्न किया। आत्मोत्सर्ग के लिए उठी हुई करबाल की एक खरोच मस्तक मे लग गई और रुधिर का एक सबल विन्दु पृथ्वी पर जा गिरा, फलस्वरूप वीर पचम की सतति 'बुन्देला' क्षत्रिय (बूंद < स० विन्दु, के प्रभाव से राज्य-प्राप्ति) के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसी जनश्रुति का आधार लेकर महाराज छत्रसाल के राजकवि गोरेलाल उपनाम 'लाल' कवि ने 'छत्र प्रकाश' मे बुन्देला नाम की कल्पना की है

'प्रथमहि राज आपनौ पावौ, परभुव भोगनहार कहावौ।
यह कहि हाथ माथ पर राखे, पुहुमी प्रगट बुन्देला भाखे॥[2]'

इस जनश्रुति के आधार पर बहुत ही स्पष्ट जान पडता है कि वे गहरवारवशीय काशीस्थ क्षत्रिय जिन्होने किन्ही कारणोवश काशी से भागकर विन्ध्यभूमि मे अपना प्रभुत्व स्थापित किया[3], विन्ध्य से सम्पर्क

---

१. **अनार्यो की प्रसिद्ध देवी, देखिए 'गउडवहो', श्लोक संख्या २८५–२३७, विन्ध्य के उत्तर-पूर्व अञ्चल मे इनका प्रसिद्ध मन्दिर है।**

२. **छत्रप्रकाश—सम्पादक—श्यामसुन्दर दास, (ना० प्र० सभा, काशी) पृ० ७।**

३. Arjunpāl Gaharwār who had been encouraged by the goddess, with a promise that he should found the Bundelā Rāj, entered the service of the khangār chief who appointed him बक्सी of his army On an occasion when the khangār had gone towards Bāndā to attend a wedding, Arjunpāl attacking slew them all From his time, i e to say, from the year 1400 संवत्, is the date of the rise of Bundelā Rāj.

J A S B. 1881, history of Bundelkhand.
by V A Smith

(For other version of the story, where Pancham Singh had been used in place of Arjunpāl, see the same.)

रखने के कारण *विन्ध्येले > *विन्देले > 'बुन्देले' कहलाए[1] । विन्ध्य की अटवियो मे रहने वाली जातियो का स्मरण 'विन्ध्य' के आधार पर किया जाता रहा है, यथा—'विन्ध्यवासिन' (वायुपुराण १३१) 'विन्ध्यपृष्ठ-निवासिन' (वायुपुराण १३४) 'विन्ध्य के वासी ·' (तुलसी, कवितावली) आदि । 'विन्ध्यराज' 'विन्ध्यशक्ति' आदि व्यक्तिसूचक नामो का भी प्रयोग हुआ है । स्थान के आधार पर जातियो के नाम और जातियो के आधार पर स्थानो का नामकरण करने की प्रथा सापान्य हे ।[2] अत स्पप्ट है कि 'बुन्देला' नाम 'विन्ध्य' से बहुत कुछ सम्बन्ध रखता है, जो इस जाति के व्यापक प्रभुत्व मे आने पर अधिकाधिक प्रचलित होने लगा होगा । इसमे यह भी निप्कर्प निकलता है कि 'बुन्देलखण्ड' नाम परवर्त्ती है और बुन्देला जाति के राज्य-विस्तार के आधार पर कल्पित किया गया है ।

'इण्डियन गजेटियर्स' (Indian Gazetteers) मे दी हुई बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमाएँ पूर्णरूपेण वे ही है जो बुन्देल-वीर छत्रसाल के राज्य-विस्तार के लिए ऊपर उद्धृत की जा चुकी है । आधुनिकतम राजनैतिक विभाजन के आधार पर हम इस भू-भाग के अन्तर्गत आने वाले जिलो की परिगणना इस प्रकार करा सकते है —

उत्तर प्रदेश—(i) जालौन (ii) हमीरपुर (iii) झाँसी (iv) बाँदा

मध्य प्रदेश—(v) टीकमगढ (vi) छतरपुर (vii) पन्ना (vii) दमोह (ix) सागर (x) नरसिहपुर (xi) भिण्ड (xii) दतिया (xiii) ग्वालियर (xiv) शिवपुरी (xv) मुरैना (xvi) गुना (xvii) विदिशा (xviii) रायसेन (xix) होशगाबाद

---

१ तुलना कीजिए—रुहेला-(रोह = पर्वत) से सम्बन्ध रखने वाले । बनेला—बन से सम्बन्ध रखने वाले । इसी प्रकार व्याघ्रदेव से सम्बन्ध रखने वाले बघेले तथा चन्द्रात्रेय से सम्बन्ध रखने वाले चन्देले ।

२ हिन्दी के अभ्युदय काल मे कबीलो और जातियो के आधार पर स्थान—नामकरण की प्रवृत्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है—बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड ही नही बैसवाड़ा, भीलवाडा राजपूताना, गौडवाना आदि ।

क्षेत्रीय भापा अथवा बोली के लिए 'बुदेलखण्डी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सर जार्ज ए० ग्रियर्सन (Sir G A Grierson) द्वारा किया हुआ जान पडता है, क्योकि १८४३ ई० मे मेजर आर० लीच, सी० बी० (Major R Leech, C B) ने इसे बुन्देलखण्ड की हिन्दुवी बोली (Hinduvee dialect of Bundelkhanda) कहा है।[1] स्थानवाची होने के कारण अधिक उपयुक्त होते हुए भी यह नाम श्रुति-मधुर नही कहा जा सकता, अतएव तुलना मे अल्पाक्षरात्मक 'बुन्देली' शब्द का प्रयोग समीचीन समझा गया है। भाषा-व्यापकता की दृष्टि से उक्त सीमा मे कुछ परिवर्तन आवश्यक होगे, जैसे नर्मदा के दक्षिण मे स्थित 'छिदवाडा', 'सिवनी' तथा 'बैतूल' के जिले मराठी-मिश्रित होते हुए भी बुन्देली-भाषा-भाषी ही ठहरेगे, साथ ही, पूर्व-स्थित 'बाँदा' जिला बुन्देली के अन्तर्गत नही लिया जा सकता।

स्वाभाविक प्रान्तो की पहिचान भाषा और बोली की एकता से ही नही होती, अपितु इसके लिए भौगोलिक एकता और पिछले इतिहास मे एक साथ रहने की प्रवृत्ति पर भी ध्यान देना होता है। इस दृष्टि से यहाँ बुन्देलखण्ड की भौगोलिक गठन पर विचार कर सकते है —'विन्ध्याचल के उत्तरी और दक्षिणी तट के बीच इतना बडा विस्तृत देश और रचना मे वह उत्तर भारत के मैदान से इतना भिन्न है कि उसे उत्तर भारत मे नही गिना जा सकता, विन्ध्य मेखला को दक्षिण मे गिनना तो किसी को अभीष्ट न होगा। ×××× कलकत्ते से सूरत तक का रेल-पथ उसी रेखा को सूचित करता है। वह विन्ध्यमेखला और दक्षिण भारत की ठीक विभाजक रेखा है।'[2] उपरिकथित बुन्देली भाषा की उत्तर-दक्षिण सीमा इस भौगोलिक सीमा का अक्षरशः अनुकरण कर रही है।

'समूची विन्ध्यमेखला के पश्चिम से पूरब, गुजरात के अतिरिक्त, पाँच टुकडे है :—१ राजपूताना २ मालवा का पठार ३ बुन्देलखण्ड ४. बघेलखण्ड-छत्तीसगढ ५ झाडखण्ड, बुन्देलखण्ड मे बेतवा (वेत्रवती), धसान (दशार्ण) और केन (शुक्तिमती) के काँठे, नर्मदा की उपरली घाटी और पचमढी से अमरकण्टक तक ऋक्षपर्वत का हिस्सा सम्मिलित है, उसकी पूर्वी सीमा टौस (तमसा) नदी है। ×××× इस प्रकार बेतवा और

१. J.A S B Vol XII–'A Hinduvee Dialect of Bundelkhanda'
२ **भारतभूमि और उसके निवासी—जयचन्द्र विद्यालङ्कार, पृ० ६५।**

केन काँठो तथा नर्मदा के उपरले काँठे वाला प्रदेश बुन्देलखण्ड है।'[1] वस्तुत बुन्देली भाषा की अनिर्वचनीय एकता का दर्शन कराने वाला भू-भाग यही है।

सास्कृतिक एव सामाजिक एकता अर्थात् भारतीय इतिहास मे एक साथ रहने की प्रवृत्ति पर भी विचार कर लेना चाहिए। बुन्देली जनता मे अति प्रचलित एक बुझौवल है

भैंस बधी है ओरछैं, पडा होशगाबाद।
लगवैया है सागरै चपिया रेवा—पार।।

इस दोहे मे वस्तुत बुन्देली (या बुन्देलखण्ड) की सीमा ही निर्धारित कर दी गई है, पर यह जनोक्ति भी अधिक पुरानी नही जान पडती, क्योकि होशगाबाद पन्द्रहवी शती के प्रथम दशक मे[2] और ओरछा सन् १५३१ मे बसाया गया था[3]। सम्भवत ओरछा राज्य के अभ्युदय ने ही इस उक्ति को जन्म दिया होगा। कुछ भी हो, सास्कृतिक एव सामाजिक एकता तो इस उक्ति के मूल मे है ही। एक ही व्रत-उत्सव और तीज-त्योहार इस भू-खण्ड पर सभी जगह मनाए जाते है। वही कजरियाँ बरुआ सागर से लेकर गढा-मँडला के गगासागर तक बोई जाती है और 'कजरियो की लडाई' उसी चाव से गाँव-गाँव के ढोल-मँजीरो पर गूँजती है। एक छोर से दूसरे छोर तक वही 'फागै' और 'राई' की ध्वनि सुनाई पडती है।

रही, राज्य-सूत्र-सचालन की एकता। उसका प्रभाव भी भाषा को सुगठित करने मे सहायक होता है। उसकी चर्चा बुन्देली भाषा के अनुमानित इतिहास के साथ-साथ की जा रही है।

प्राचीन लोक-साहित्य-सामग्री के अभाव मे किसी भी भाषा का सुगठित एव प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करना सभव नही। बुन्देली ही क्यो, अन्य आधुनिक आर्य भाषाओ के ऐतिहासिक अध्ययन के लिए पर्याप्त मात्रा मे अनुमान का सहारा लेना पडा है, क्योकि भारतीय भाषाओ की साहित्यिक प्राकृतो एव अपभ्रशो की सामग्री अत्यल्प मात्रा मे उपलब्ध हो सकी है। दूसरे, आज की

१. **भारतभूमि और उसके निवासी—जयचन्द्र विद्यालकार, पृ० ६५।**
२—३ **बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास—गोरेलाल तिवारी, पृ० १२४।**

भाति प्राचीन युग मे क्षेत्रीय बोली-रूपो को स्पष्ट करने वाली सामग्री के सकलन का प्रयास नही हुआ था। यही कारण है कि साहित्य-समृद्ध पालि भाषा को विकसित करने का गौरव किस क्षेत्रीय भाषा को प्राप्त है, इस सम्बन्ध मे विद्वानो मे पर्याप्त मतभेद है। पैशाची एव महाराष्ट्री प्राकृतो की आधारभूत जनपदीय बोलियाँ कौन-सी है, यह अब भी सुनिश्चित नही। इसमे सन्देह नही कि वर्तमान बुन्देली का ध्वन्यात्मक एव व्याकरणिक ऐक्य हिन्दी की पश्चिमी बोलियो से है, अर्थात् ब्रज एव खडी बोली से उसका नैकट्य (affiliation) प्रमाण-सिद्ध है, परन्तु प्राचीन आर्य भाषा सस्कृत से लेकर अद्यावधि बुन्देलखण्ड की प्रदेशीय भाषाएँ कौन-कौन सी रही है, इस सम्बन्ध मे अधिक प्रामाणिकता के साथ भाषाविज्ञानेतर (non linguistic) कारण ही प्रस्तुत किए जा सकते है।

कालक्रमानुसार भारतीय आर्य भाषाओ का विकास तीन युगो मे विभाजित करके देखा गया है —

i) १५०० ई० पू० ५०० ई० पू०। यह युग बुद्ध के पूर्व का है। जबकि साहित्यिक भाषाएँ छान्दस एव सस्कृत थी।

ii) ५०० ई० पू० ···१००० ई०। इस युग की साहित्यिक भाषाएँ—पाली, क्षेत्रीय प्राकृते एव अपभ्रशे थी, साथ ही, शिष्ट-जन-परग्रहीत राष्ट्रभाषा सस्कृत का प्रसार भी व्यापक था।

iii) १००० ई० से अद्यावधि। इसे भाषा शास्त्रियो ने 'भाषा युग' की सज्ञा दी है।

वस्तुत प्रागैतिहासिक वैदिक बोलियाँ ही व्यक्ति-देश-काल-भेद के अनुसार विकसित होकर आज आधुनिक आर्य भाषाओ के रूप मे प्राप्त है।

भाषा की दृष्टि से जिसे हम सस्कृत-युग कहते है, भारतीय इतिहास मे उसे प्रागैतिहासिक युग कहा गया है। उस समय बुन्देलखण्ड की स्थिति क्या थी, इसकी जानकारी पुराणो से होती है। वैवस्वत मनु की वश परम्परा मे महाराज ययाति के पाँच पुत्र हुए—यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु और पुरु। साम्राज्य विभाजन मे यदु को चर्मण्यवती, वेत्रवती तथा शुक्तिमती की धाराओ से अभि-

सिचित प्रदेश प्राप्त हुआ। कालान्तर मे महाराज चिदि के नाम पर इस वश का नाम 'चेदि' पडा। इस प्रकार चेदि नाम शुरू-शुरू मे चम्बल और केन के बीच यमुना के दक्षिणी प्रदेश अर्थात् केवल उत्तरी बुन्देलखण्ड का था। आधुनिक बुन्देलखण्ड का दक्षिणी भाग उसमे कब से सम्मिलित हुआ, उसका कोई पुष्ट ऐतिहासिक निर्देश नही मिलता,[१] किन्तु बोली की एकता सिद्ध करती है कि चेदि लोग बहुत आरभकाल से ही जमुना-प्रदेश से दूर दक्षिण तक समूचे बुन्देलखण्ड मे पहुंच गए थे।

रामायण काल मे विन्ध्य अचल मे अनार्यो की अधिकाधिक बस्तियाँ थी। निषाद, गुह, शवर आदि जातियो तथा ताडका, सुबाहु, मारीच, कबन्ध आदि असुरो की क्रीडा-स्थली यही थी। पर साथ ही आर्यो के उपनिवेश भी स्थापित हो गये थे–अत्रि, बाल्मीकि, भरद्वाज, विश्वामित्र आदि आर्य-ऋषियो की यज्ञ-वेदिकाओ की पवित्र भूमि भी यही थी। इस प्रकार आर्य-द्राविड-सस्कृति का सधि-स्थल आधुनिक बुन्देलखण्ड (बघेलखण्ड) भी जान पडता है। आज भी इस क्षेत्र की कोल, भील, गोड, सहरिया, खेरुवा आदि अर्धविकसित जातियो मे उनकी अपनी भाषाएँ सुरक्षित है।[3] सभव है आधार (Substratum) रूप मे इनकी भाषाएँ भी बुदेली के विकास मे सहयोगी हुई हो और क्या आश्चर्य, यदि वैदिक भाषा का भारतीयकरण भी इसी प्रदेश मे हुआ हो!

---

१ इतिहास प्रवेश—जयचन्द्र विद्यालकार, पृ० ९५।

२ विष्णुधर्मोत्तर पुराण

'चैद्यनैषधयो' पूर्वे विन्ध्यक्षेत्राच्च पश्चिमे।
रेवायमुनोर्मध्ये युद्धदेश इतीर्यते।।'

३. मध्य प्रदेश का इतिहास—डा० हीरालाल, पृ० ५–६ —
मध्य प्रदेश मे कोई ४५ प्रकार की जगली जातियाँ पाई जाती है, इन सबमे गोडो की सख्या सबसे अधिक है। इनकी जनसंख्या करीब २२ लाख है। आर्यो ने इनको पशु समान समझ कर घृणासूचक गौंड की उपाधि दी जिसका यथार्थ अर्थ उनकी भाषा में ढोर (पशु) होता है।
सहस्रो वर्ष व्यतीत हो जाने के कारण बहुतेरे गौंड यह नही जानते कि रावण कौन है, पर वे अपने को अब भी रावणवंशी कहते है। कोई चार सौ वर्ष पूर्व जब इस प्रदेश मे गोडो का राज्य हुआ तब अपने सिक्को पर इन्होने पौलस्त्य वश अकित किया।

प्राकृत-युग (५०० ई० पू०—१००० ई०) इस युग के प्रथम चरण को (५०० ई० पू० २०० ई० पू०) भारतीय इतिहास मे 'जन-साम्राज्यो का युग' कहा गया है।[१] महात्मा गौतम बुद्ध ने धर्म-प्रचार के लिए लोकभाषाओ को अपनाया और अर्थशास्त्री कौटिल्य ने लोक-मत को राजनीति-शास्त्र मे स्थान दिया।[२] सम्राट अशोक ने अपने राज्य-सचालन मे उसी लोक-मत और लोक-भाषा का व्यावहारिक रूप प्रदर्शित किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे फैले हुए 'अशोक के शिलालेख' तद्युगीन लोक-भाषाओ के प्रामाणिक (Authentic) नमूने कहे गए है।[3]

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है 'पालि' का मूल-आधार किस क्षेत्र की भाषा है, विद्वान इस सम्बध मे एकमत नही है। सिहली-परम्परा पालि को 'मागधीक' भाषा कहती है। इसमे सन्देह नही कि बुद्ध जी के प्रवचन इसी क्षेत्रीय भाषा मे हुए होगे, परन्तु व्याकरणिक गठन उसे मध्यदेशीया कहने के लिए वाध्य करती है। यथा

१ प्राकृत-वैय्याकरणो द्वारा प्राप्त मागधी की प्रमुख भाषा-विशेषताएँ पाली मे नही मिलती।[४]

---

१ मध्यभारत का इतिहास - हरिहर निवास द्विवेदी, पृ० १६५ — 'सोलह जनपद' इस युग मे एक मुहावरा-सा बन गया था। उन सोलह मे ये आठ जोड़ियाँ थीं—१. अग-मगध २. काशी-कोशल ३. वृजि-मल्ल ४. चेदि-वत्स ५ कुरु-पांचाल ६. मत्स्य-शूरसेन ७ अश्मक-अवन्ति ८. गान्धार-कम्बोज।

२ तुलना कीजिये :— तस्मात्समानशीलवेषभाषाचारतामुपगच्छेत वह (राजा) अपने प्रजा वर्ग के समान ही शील, वेष, भाषा तथा आचरण का ग्रहण करें। कौटलीय अर्थशास्त्र-अनुवादक-प्रो० उदयवीर शास्त्री, पृ० ५८१

३. 'The Ashokan Inscriptions are the oldest and best contemporary records of M I A' Comparative Grammar of Middle Indo-Aryan Languages—Dr Sukumar Sen, P 5

४ The chief distinguishing features of Magadhi, as we know them from the Grammarians, are un-known to Pali Viz
i) The mutation of every r into l and every s into sh,
ii) The ending—e in nom. sing mas & neu of a stem
Pali Language and Literature Translated by B K. Ghosh, P. 3.

२ पाली का

1) गिरनार के अशोकी शिलालेख की भाषा[1] तथा
ii) विन्ध्य-क्षेत्र की पैशाची भाषा से निकट का सम्बन्ध है[2]।

इसके अतिरिक्त कुछ भाषा-इतर कारण भी प्रस्तुत किए जा सकते है,

1) साँची-भरहुत के बौद्धोपासना स्तूप अधिकाधिक सख्या मे इस क्षेत्र मे मिले है।

ii) महान् अशोक अपने पिता बिन्दुसार के राजत्वकाल मे अठारह वर्ष तक 'अवन्ति' का शासक बनकर इस प्रदेश मे रहा था और विदिशा की श्रेष्ठि-पुत्री से उसने विवाह किया था, उससे उसके सघमित्रा और महेन्द्र दो सतानें हुई थी । जब अशोक ने इन सघमित्रा और महेन्द्र को धर्म-प्रचार के लिए सिहल-द्वीप भेजा, तब स्वभावत:

---

१. i) Pāli, a purely Literary (religious) language cultivated in the South-West and the South and under a growing influence of Sanskrit, shows good affinity with the South-Western dialect of Asokan, Page, 14

ii) ये उज्जयिनी की उस भाषा में हैं जिसका पालि के साथ अधिक साम्य है, पाइअ सद्द महण्णव—भूमिका, पृष्ठ ३१, हरगोविंद त्रिविक्रम चन्द सेठ

२. सच तो यह है कि पालि भाषा का शौरसेनी और मागधी की अपेक्षा पैशाची के साथ ही अधिक सादृश्य है जो निम्न उदाहरणो से स्पष्ट जाना जा सकता है:—

		सं०	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
1) स्वरमध्यवर्त्ती	—क—	लोक	लोक	लोक	लोअ	लोअ
	—ग—	नग	नग	नग	णअ	णअ
	—च—	शची	सची	सची	सई	शई
	—ज—	रजत	रजत	रजत	रअद	लअद
ii) सर्वत्र	श, ष, स,	श, ष,स	स	स	स	श
iii) सर्वत्र	न	न	न	न	ण	ण

पाइअ सद्द महण्णव, पृष्ठ १४ १५,

> वे धम्मपद आदि बुद्धागम साहित्य को, जिसका दूसरी-तीसरी-सगीति के पश्चात् 'थेरवाद' रूप इस समय तक बन चुका था, मध्यदेशीया इसी शौरसेनी मे ही अपने साथ ले गए । वहाँ उसका सिहली-भाषा मे अनुवाद हुआ परन्तु सौभाग्य से गाथाएँ ज्यो की त्यो मूल शौरसेनी मे सुरक्षित रही । पीछे जब भारत मे इस साहित्य का लोप हुआ, तब बुद्धघोष ने इसी सिहली अनुवाद से उसका पुन पालि-अनुवाद किया और इस अनुवाद मे ये गाथाएँ ज्यो की त्यो लौट आई । इन गाथाओ को ही पालि कहा जाता है ।[1]

उक्त तथ्यो से ऐसा जान पडता है कि 'पालि' तद्युगीन 'दाशार्णी' (बुन्देली) का आश्रय लेकर ही विकसित हुई होगी और यही कारण है कि वह एक ओर शौरसेनी, दूसरी ओर अर्धमागधी तथा तीसरी ओर पैशाची प्राकृतो से समानता रखती है[2] ।

---

१ **भारतीय इतिहास की रूप-रेखा—जय चन्द्र विद्यालंकार, पृष्ठ ३७९**

2 i) The essentials of Pali phonology and morphology agree with Shauraseni of the second M I A period more than with any other form of M. I A (The Origon and Development of the Bengali language by Dr S K Chatterjee, Introduction 'Origion of Literary Pali' page 57) and 'Pali is the precursor of shaurseni' Indo-Aryan and Hindi by the same author.

ii) There are many remarkable analogies precisely between Arsa (Ardhamāgadhi) and Pali in vocabulary and morphology Pali, therefore, might be regarded as a kind of Ardhamagadhi Pali language and literature by Dr B K Ghose, Introduction, page 5

iii) **पाइअ सद्द महण्णव—पृष्ठ १४ तथा** History of Sanskrit language by A. B Keith, Page 29

प्राकृत-युग का दूसरा चरण लगभग २०० ई० पू० से ५०० ई० तक माना जाता है। भारतीय इतिहास मे यह युग 'हिन्दू-सस्कृति निर्माण-युग' कहा गया है। निरर्थक कर्म-काण्ड का विरोध करते हुए महात्मा गौतम बुद्ध ने जिस आचार-प्रधान धर्म को देकर आर्यावर्त मे एक नया जीवन फूँका था, उस मे अब मदता आने लगी थी। अन्तिम मौर्यो ने जब उस धर्म की आड मे अपनी कायरता को छिपाना चाहा, तब उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई और एक नए पौराणिक धर्म का अभ्युदय हुआ। बौद्ध धर्म यदि जनता के लिए था तो वैदिक धर्म का यह नया रूप भी उससे बढकर जनता का धर्म बनकर आया। इस नूतन सस्कृति के विधायक कहे गए है विदिशा के पुष्यमित्र शुग, उज्जयिनी के विश्रुत 'हिन्दू-सवत्-प्रवर्त्तक' महाराज विक्रमादित्य, उछेहरा (आधुनिक पन्ना के पास) के प्रसिद्ध वाकाटक सम्राट 'विन्ध्यशक्ति और प्रवरसेन'[1] तथा पद्मावती (आधुनिक पवाँया) के भारशिव नाग। निस्सदेह इस युग मे बुन्देलखड सस्कृति-विधायको से घिरा हुआ था।

इस युग का सस्कृत वाङ्मय अपने वैदिक वाङ्मय मे विषय और भाषा-शैली दोनो ही दृष्टियो से पर्याप्त भिन्नता रखता है। प्राकृत के प्रथम चरण से ही सस्कृत बोलचाल की भाषा न रह गई थी और अब तक तो भारत तथा वृहत्तर भारत मे यह शिष्ट-सुसस्कृत व्यक्तियो के विचार-विनिमय की भाषा हो गई थी और उसका यह रूप १६वी सदी तक साहित्यिको तथा वाङ्मय-कारो द्वारा सँवारा जाता रहा।

---

१ **वाकाटक वश :—द्विज. प्रकाशो भुवि विन्ध्यशक्ति। पुराणो मे इस राजवश को विन्ध्यक' या विन्ध्य देश का राजवश' कहा गया है। जिससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि ये लोग विन्ध्य प्रदेश के रहने वाले थे। विदिशा के नागो और प्रवरिक का उल्लेख करते समय भागवत् पुराण मे इन सब को एक ही वर्ग मे रखकर 'किलकिला के राजा लोग' कहा गया है, इसका अभिप्राय यही है कि उक्त पुराण मालवा, विदिशा और किलकिला को एक ही प्रदेश मानता है। इस प्रकार सभी सम्मतियो के अनुसार इस राजवश का स्थान बुदेलखण्ड मे ठहरता है।**

'अधकार युगीन भारत'—काशीप्रसाद जायसवाल, अनु० रामचन्द्र वर्मा, ना० प्र० सभा काशी, पृष्ठ १४४, १४५

पालि, जिसका विकास प्राकृत-युग के प्रथम चरण मे ही हो चुका था, मध्यदेश मे स्थित होने के कारण सरलता से प्रान्तीय स्तर से उठकर भारत की एक व्यापक भाषा बनने का गौरव प्राप्त कर सकती थी, परन्तु इस नए धर्मान्दोलन से, जिसे राजाश्रय प्राप्त था, उसे बडा व्याघात पहुचा और वह केवल बौद्ध-साहित्य की भाषा बनकर धार्मिक क्षेत्र मे ही सीमित रह गई। वैदिक धर्म की इन बदली हुई परिस्थितियो का प्रभाव बौद्ध-धर्म पर भी पडा। फलस्वरूप 'महायान' बौद्धो का एक नया सम्प्रदाय उठ खडा हुआ, जिसने महात्मा बुद्ध की चतावनी पर ध्यान न देकर[1] बौद्ध ग्रथो के लिए सस्कृत भाषा का आश्रय लिया। अत सस्कृत-प्रवेश (infiltiation) से भी पालि भाषा की व्यापकता सभव न हो सकी।

अश्वघोष, भास, शूद्रक, कालिदास प्रभृति कवियो के नाटको मे तथा अन्यान्य प्राकृत-वैय्याकरणो के ग्रन्थो मे पाई जाने वाली प्राकृते अपने बोलचाल के रूप का विकास अशोक के पूर्व ही कर चुकी थी। क्योकि अशोक के प्रसिद्ध शिलालेखो के अतिरिक्त, साँची एव भरहुत के प्राकृत-अभिलेख (inscriptions) जो कि भारत मे एक ही स्थान मे पाए जाने वाले प्राकृत-अभिलेखो मे सख्या मे सर्वाधिक है, २०० ई० पू० तक के है। ब्हूलर का मत है कि इन अभिलेखो की भाषा साहित्यिक पाली से बहुत कम भिन्नता रखती है और पद-रचना पाली तथा गिरनार- शिलालेख के ही समान है।[2] उक्त कथन से आभास मिलता है कि आलोच्य क्षेत्र मे पालि को जन्म देने वाली क्षेत्रीय प्राकृत का विकास हो रहा था। भारतीय कथा साहित्य का मूल-स्रोत गुणाढ्य की बड्डकहा (वृहत्कथा) इसी विकसित रूप का ही

---

१. **भिक्षुओ, बुद्ध-वचन को छद मे न करना चाहिए। जो करेगा उसे 'दुष्कृत' अपराध लगेगा अनुजानामि भिक्खवे, सकाय निरूत्तिया बुद्धवचन परियापुणित (अनुमति देता हू, भिक्षुओ, अपनी भाषा मे बुद्ध-वचन सीखने की। पालि महा व्याकरण-भिक्षु जगदीश काश्यप, भूमिका, पृष्ठ-६**

२. Buhler offers the following remarks on the language represented by these inscriptions, "The language of these inscriptions differ very little from the literary Pali and the word-forms are in general of the type of Pali and of Ashoka's Girnar-edict Historical Grammar of Inscriptional Prakrits-by Dr M A Mahendale, Page-148.

परिणाम कहा जा सकता है । ईसा की प्रथम सदी की यह रचना विन्ध्याटवी मे पाई जाने वाली जगलो जातियो की जन-कथाओ का एक सग्रह कही गई है । कथा सरित्सागर का यह उल्लेख, 'कि गुणाढ्य ने यह पैशाची विन्ध्यवासिनी स्थान के पश्चिम मे अवन्ति के आस-पास कही भूत-पिशाचो की बाते सुनकर सीखी थी[1], वररुचि के प्राकृत-प्रकाश का यह सूत्र 'पैशाची प्रकृति शौरसेनी'[2], तथा राजशेखर का यह श्लोकाश, 'आवन्त्या पारियात्रा सहदशपुरजै भूतभाषा भजन्ते'[3], एक साथ मिलाकर देखने से ज्ञात होता है कि पैशाची भी 'आलोच्य-क्षेत्र' की ही भाषा थी जो ईसा की आरभिक सदी मे 'जन-भाषा' का रूप प्राप्त कर चुकी थी ।

प्राकृत का तृतीय चरण, जिसे भाषाशास्त्रियो ने 'अपभ्रश-युग' कहा है, ५०० ई० से १००० ई० तक चलता है । इस काल मे राजसत्ता तो विभिन्न वशो मे हस्तातरित हुई पर गुप्तो द्वारा व्यवस्थित शासन-प्रणाली लगभग ज्यो की त्यो बनी रही । शासन के अन्तर्गत ग्रामो-नगरो आदि की पचायते स्थानीय प्रबन्ध स्वतत्रता से करती थी । व्यापारियो के 'निगम', कारीगरो की 'श्रेणियाँ' तथा शिल्पियो के 'सघटन' कमाधिक मात्रा मे अपना पुराना आदर्श अपनाए हुए थी, उनकी अपनी मुहरे थी । स म्राज्य 'देशो' अथवा 'भुक्तियो' मे विभाजित था । आलोच्य क्षेत्र (यमुना-नर्मदा का मध्यवर्ती प्रदेश) एक ऐसी ही सुगठित इकाई थी जिस पर सम्राट द्वारा नियत सामन्त शासन किया करता था । 'जेजा' कन्नौज-साम्राज्यान्तर्गत ऐसा ही एक सामन्त था जिसकी सुव्यवस्था की ऐसी धूम मची कि जब इस वश ने अपने को स्वतत्र घोषित किया, तब इसके नाम पर ही, जेजाक भुक्ति >जेजाहुति >जुझौति, इस प्रदेश का नाम चल पडा[4] । ठीकइसी प्रकार भाषा की आन्तरिक व्यवस्था मे भी कोई अभूतपूर्व परिवर्तन नही मिलता[5] ।

---

१. मध्यभारत का इतिहास-हरिहर निवास द्विवेदी, पृष्ठ-५२

२ दशम परिच्छेद. ।२।

३ काव्यमीमासा दशमोऽध्याय -

४ महोबा लेख—(इलाहाबाद के अजायबघर मे सुरक्षित)
'जिस प्रकार पृथु से पृथ्वी कहलाई, उसी प्रकार 'जेजा' से 'जेजाभुक्ति'।
बुदेलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास–गोरेलाल तिवारी, पृष्ठ ५०

५. तथा प्राकृतमेवापभ्रंश तस्य च लक्षणं लोकादेव सम्यगवसेयम् ।
नमिसाधु (१०६९ ई०), काव्यालकार वृत्ति

देश-काल-भेद के अनुसार जो परिवर्तन स्वाभाविक है वे ही इस युग की देन है । 'उकार' की प्रवृत्ति जो सस्कृत—अ से चलकर प्राकृत—ओ मे परिवर्तित होकर—उ बन रही थी, सबसे पहिले ३०० ई० मे आभीर क्षेत्रो (सिन्धु-सौवीर) मे परिलक्षित हुई थी।[१] यही प्रवृत्ति अन्य क्षेत्रो मे विकसित हुई तथा अन्य कतिपय विकसित प्रवृत्तियो को लेकर, वह अपभ्रश (अवहस, अवहट्ट) भाषा कहलाई। छठी-सातवी सदी तक इसका रूप निखर चुका था[२] और दसवी सदी तक यह देश-भेद के आधार पर कई क्षेत्रीय रूपो मे परिलक्षित की जा चुकी थी।[3] ऐसा होना स्वाभाविक है क्योकि अपने-अपने राज्यो को ही 'राष्ट्र' समझने वाली सकीर्ण राजनैतिक-इकाइयो मे देश बॅटता जा रहा था। फिर भी यह सकीर्णता अथवा प्रान्तीयता प्रधानत 'जन भाषा' मे रही। काव्य-भाषा मे यह देशी शब्दावली रूप मे ही स्थान पा सकी जो नगण्य नही। यह 'काव्य-भाषा' पश्चिमी क्षेत्र की अपभ्रश थी, परन्तु जैसा नमिसाधु कहते है—'क्वचिन्मागध्यापि दृश्यते'-स्वतत्र रूप से एक पूर्वी अपभ्रश का भी विकास हो रहा था।

भारतीय आर्य भाषाओ का तीसरा काल जिसे 'भाषा-युग' कहा गया है, १००० ई० से प्रारम्भ होता है। भारतीय जन जीवन मे यह युग राजनैतिक चेतना के ह्रास का युग था। भिक्षुओ के दल के दल तमाशबीन होकर देखते रहे और इधर अरबो ने सिध को विजय कर लिया। मिहिरभोज ऐसा प्रतापी सम्राट मुलतान को केवल इसलिए नही ले सका कि वहाँ के मुस्लिम शासको ने धमकी दी थी कि आगे बढोगे तो हम सूर्य मदिर तोड देगे। चालुक्यराज जयसिंह भी विजय-प्राप्ति के लिए सिद्धियो,

---

१ **हिमवत् सिन्धु सौवीरान् ये जनाः समुपाश्रिताः।**
उकार बहुला तज्ज्ञस्तेषु भाषा प्रयोजयेत् ।। भरत नाट्यशास्त्र १७ ६२.

२. "The different references to Ap Lit show that Ap. was rising slowly as an Abhir-dialect to that of literary importance during 300-600 A D Its importance went on increasing as centuries rolled on and it finally became equal in status to Sanskrit, Prakrit by 10th C A D It retained this to the end of 12th C A D"
Historical Grammar of Apabhransa by G V. Tagare, Page-9

३. **प्राकृतसकृतमागधपिशाचशौरसेनी च।**
षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रशः। रुद्रट, काव्यालंकार, २-१२

पर आश्रित थे । तब सामान्य जनता का क्या कहना, शासन के प्रति उनकी उपेक्षा स्वाभाविक थी । १०वी सदी तक ह्रास थोडा है, इसके बाद यकायक अधिक ।

धर्म-कर्म मे अधविश्वास बढने से धर्म के प्रति भी जागरूकता कम होती गई। यदि बौद्धावलम्बी वाममार्गी साधनाओ मे व्यस्त थे, तो पुराणधर्मी बाह्याडम्बरो मे प्रवृत्त । इस युग के धर्म-सम्प्रदायो की सख्या भारत की एक अभूतपूर्व घटना कही जा सकती है । विचारो की प्रगति रुक जाने से सामाजिक जीवन भी अत्यधिक विश्रृखलित हो गया। जातियो मे ऊँच-नीच का भाव, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, समुद्र-यात्रा-निषेध आदि सकीर्णताएँ भारत मे १०वी सदी से १६वी सदी तक धीरे-धीरे आई ।

इन परिस्थितियो का प्रभाव समाज को एक सूत्र मे बाँधने के माध्यम 'भाषा' पर पडना स्वाभाविक है। वस्तुतः इस सक्रान्ति-युग (१०वी सदी से १६वी सदी तक) की भाषा-विविधता भाषा शास्त्रियो के लिए विवाद का विषय बनी हुई है । तद्‌युगीन हि दी-भाषा की तीन धाराएँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है --

i) **राज दरबारी भट्ट–नायको द्वारा पोषित रासोग्रथो की भाषा** –आधारभूत शब्दावलि (Basic Vocabulary) तथा व्याकरणिक ढाँचा तो नव्य भारतीय आर्य भाषाओ का मिल रहा है, परन्तु प्राकृत-अपभ्रश-शब्दावली की प्रचुरता के कारण भाषा मे कृत्रिमता अधिक आ गई है । षड्‌भाषा के प्रति कवि की आस्था तथा हिन्दी के आदिकालीन निर्विभक्तिक प्रयोगो के कारण 'पृथ्वीराज रासो' की भाषा तो अपभ्रश के अधिक निकट पहुँच गई है ।[१]

ii) **भारतीय संतों द्वारा अपनायी गई सधुक्कडी-भाषा**—यह भारत की एक व्यापक काव्य-भाषा का प्रतिनिधित्व करती जान पडती है । चाहे महाराष्ट्र-सत नामदेव और तुकाराम हो या पजाब के गुरु नानक अथवा पुर्बिहा

१—पृथ्वीराज रासो की भाषा—डा० नामवरसिंह, पृष्ठ-३३

कबीर, सभी ने जिस भाषा का प्रयोग किया है उसका व्याकरणिक ढाँचा, प्रथम वर्ग की भाषा से बहुत भिन्न नही कहा जा सकता। फिर भी खडी बोली के विशेष पुट एव प्रान्तीय शब्दावली की प्रचुरता के कारण उन सबका काव्य जनसाधारण के अधिक निकट आ गया है। वस्तुत यह भाषा तीसरे वर्ग की क्षेत्रीय बोलियो की सूचना ऊँचे स्वर के साथ दे रही है।

111) **प्रान्तीय जनभाषाएँ**—९वी सदी से १२वी सदी तक के भारत मे न जाने कितने सामन्ती राज्यो का अभ्युदय हुआ—जेजाकभुक्ति (बुन्देलखण्ड) के चन्देले, छत्तीसगढ के कलचुरि, अवध के गहरवार, बिहार के पाल, बगाल के सेन, अजमेर के चौहान, मालवा के परमार, काठियावाड के चालुक्य और पूर्वी राजपूताने के कछवाहे—इस तथ्य को प्रमाणित करते है कि बहुत-सी प्राचीन उपजातियाँ और गण-गोत्र मिलकर नवोदित जातियो और क्षुद्र राष्ट्रो का रूप धारण कर रहे थे। इन रजवाडो के राजदरबारो मे चाहे कृत्रिम साहित्यिक भाषा को ही प्रश्रय मिला हो परन्तु जातियो की भिन्न इकाइयो के आधार पर भाषा इकाइयो का अभ्युदय अवश्य माना जा सकता है। यही कारण है कि इस युग मे एक ओर विद्यापति ने मैथिली को, सिद्धो ने मगही को, सूफी सतो ने अवधी को, ग्वालियर के चतुरो ने ग्वालियरी को और अमीर खुसरो ने खडी बोली को अपनाया। वस्तुत यह युग जनभाषाओ के अभ्युदय का था।

विकास के इस युग मे भी विन्ध्यक्षेत्रीय बुन्देली का स्वतत्र साहित्यिक विकास न हो पाया। इसका प्रधान कारण यही जान पडता है कि कलाप्रिय तोमरो के राज्य-केन्द्र ग्वालियर की भाषा 'ग्वालियरी' एक ओर ब्रज का तथा दूसरी ओर बुन्देली का साहित्यिक उत्तरदायित्व सँभाल रही थी। काव्यरसिक ओरछा भी 'ग्वालियरी' के अत्यधिक निकट था। अतएव बुन्देली का विशिष्ट रूप निखार मे न आ सका। फिर भी ब्रज भाषा के परवर्ती साहित्यिक रूप मे बुन्देली के योगदान को सरलता से समझा जा सकता है। यथा—

१ अपभ्रंश उकार-बहुला भाषा कही गई है। ब्रजी एवं अवधी के प्राचीन साहित्य मे भी भाषा की उक्त प्रवृत्ति स्पष्ट है। यह उकारात्मकता ब्रजी के वर्तमान स्वरूप मे भी पाई जाती है यथा : रामु का आ आवत्वै (= राम क्या यहाँ आता है [१]) । पर साथ ही, ब्रजी के प्राचीन रूप मे उक्त प्रयोग अकारान्त रूप मे भी उपलब्ध हो रहे है। तुलना मे प्रतिशत भी कम न बैठेगा। अतएव अनुमान किया जा सकता है कि ये अकारान्त प्रयोग ग्वालियरी बुन्देली के ही है जो कि साहित्यिक ब्रजी मे प्रविष्ट हो गए है।

२. ब्रजी के पुरुषवाची सर्वनाम-रूपो के आधार, मे- तथा ते- है पर उस मे मो- तथा तो- पर आधारित रूप भी प्रयुक्त हुए है, जो कि बुन्देली से ब्रजी मे गए हुए माने जा सकते है।

३ -बी तथा- नै मे अन्त होने वाली क्रियार्थक सज्ञाएँ प्राचीन ब्रजी मे पर्याप्त मात्रा मे प्रयुक्त हुई है। निस्सन्देह वे बुन्देली से ही वहाँ पहुची है। ब्रजी की सज्ञाएँ क्रमश -बो तथा–नौ मे अन्त होने वाली है।

४ बुन्देली का कारण-सूचक –ऐ में अन्त होने वाला कृदन्त ब्रज साहित्य मे मिल रहा है। ब्रज का अपना कृदन्त –ऐ ध्वनि मे अन्त होता है।

यह रही बुन्देली के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। अब हम उसके क्षेत्रीय रूपो पर भी तर्कपूर्ण विचार करेंगे।

किसी भी भाषा-क्षेत्र को उसकी क्षेत्रीय इकाइयो मे विभाजित करने के लिए, भाषा-विशेष की किन्ही ध्वनि, व्याकरण अथवा शब्द-सम्बधी प्रवृत्ति को आधार बनाकर विभाजक-रेखाएँ (isoglosses) खीची जा सकती है। इस प्रकार विभक्त होकर जितने सुगठित क्षेत्र बनेगे उतने ही उस भाषा के क्षेत्रीय-रूप कहे जा सकते है। इस प्रवृत्ति को आधार बनाकर देखने से हम समूचे बुन्देलखण्ड को तीन भागो मे बँटा हुआ पाते हैं —उत्तर-पूर्वी, उत्तर-पश्चिमी, दक्षिणी। हमने इन्हे भाषा-प्रवृत्ति के आधार पर ही नामाकित करने का प्रयत्न किया है, यथा–क्रमश खाँ, कौं, खो बोलियाँ। महामना ग्रियर्सन के नामो—लुधाँती, भदौरी, बनाफरी, खटोला आदि मे

१. 'उकारबहुला प्रवृत्ति की परम्परा और बृज की बोली', डा० अम्बाप्रसाद सुमन, भारतीय साहित्य, अप्रैल १९४०, पृष्ठ १८६

लोगों ने हीन-भावना के दर्शन किए है, अतएव भाषा-निष्कर्षो का ही सहारा लेना अधिक उचित समझा गया है। वस्तुत वह दृष्टिकोण भी अव्यावहारिक नही, क्योकि जातीय एकता की सुदृढ इकाइयो के आधार पर ही नामो को स्थायित्व मिलता है। 'बुन्देली' नाम का प्रचलन ऐसी ही प्रवृत्ति का परिचायक है।

क्षेत्रीय रूपो को स्पष्ट करने के लिए हम यहाँ बुन्देली की सामान्य व्याकरणिक विशेषताओ का उल्लेख करना चाहेगे। बुन्देली की ये निम्न विशेषताएँ दाशार्णी (धसान) द्वारा अभिसिंचित भू-प्रदेश मे भली-भाँति देखी जा सकती है। वस्तुत यह प्रदेश ही बुन्देलखण्ड का मध्यवर्ती और भाषा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। भारतीय इतिहास मे 'दशार्ण' जनपद का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। इस प्रदेश मे, चाहे तुर्क हो, चाहे मुगल, किन्ही का भी स्थायी प्रभाव न रह सका। अग्रेजो के आने पर भी 'सेन्ट्रल एजेन्सीज' (Central Agencies) के रूप मे इसने अपना भिन्न अस्तित्व बनाए रखा। यदि हम भाषाओ के नामकरण के लिए पुरातनोन्मुख हो यथा—कौरवी, पाचाली, कोशली—तो निस्सन्देह बुन्देली का सर्वाधिक उपयुक्त नाम 'दाशार्णी' होगा। इस 'दाशार्णी' की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है —

१. खडी बोली (-आ) और ब्रज (-औ) की तुलना मे यह ओकारात भाषा है—

बुन्देली	खडीबोली	ब्रज
माथो	माथा	माथौ
मोओ	मेरा	मेरौ
करों	कडा	करौं
गओ	गया	गयौ
ऐसो	ऐसा	ऐसौ

२ स्वर मध्यवर्त्ती एव शब्दात महाप्राण ध्वनियो के महाप्राणत्व का ह्रास बुन्देली की उल्लेखनीय प्रवृति है। यथा :—

गदा < गधा
जाँग < जाँघ
कई < कही
दूद < दूध

३. जहाँ तक भाषा की विविध व्याकरणिक विशेषताओ की सख्या का सम्बध है, बुदेली अपनी समीपवर्त्ती भाषाओ—एक ओर ब्रज और मालवी तथा दूसरी ओर बैसवाडी और बघेली - का ध्यान रखती हुई मध्यम-मार्ग का अनुसरण करती है। यथा —

अ सर्वनाम-रूप —

	ब्रज	बुन्देली	अवधी
(i)	या	ई	ए
	वा	ऊ	ओ
	का	की	के
	जा	जी	जे
(ii)	मेरौ	मोओ	मोर
	तेरौ	तोओ	तोर

ब सहायक-क्रियाए —

(i) वर्तमान

बुन्देली		बैसवाडी	
आँव	ऑय	आहिवँ	आहिन
आय	आव	आहि	आहिव
आय	ऑय	आही, आय	आहीँ

(ii) भूत

बुन्देली	ब्रज
तो, ते, ती, तीँ	(i) हतो, हते, हती, हतीँ
	(ii) हो, हे, ही, हीँ

(iii) भविष्यत्-रचना ऐतिहासिक-ह्-(स०-स्य-) पर आधारित है, किन्तु बाह्य प्रभावो के रूप मे ब्रज का -ग्- और अवधी का -ब्- भी सीमा-वर्त्ती क्षेत्रो मे देखे जा सकते है । (मानचित्र परिशिष्ट)

स. (i) वर्त्तमान काल की रचना -उ- विकरण लेने से होती है जबकि ब्रज मे -व् और बैसवाडी मे -ब्- विकरण से। यथा —

ब्रज	बुन्देली	बैसवाडी
आवतु	आउत	आबत

और (ii) ये वर्तमानकालिक रूप वचन एव लिग के अनुसार परिवर्तित नही होते, जैसे ब्रज और खडी बोली मे होते है —

	ब्रज	खडी बोली	बुन्देली
पु० एक व०	-तु	-ता	-त
स्त्री० एक व०	-ति	-ती	
पु० बहु व०	-त	-ते	
स्त्री० बहु व०	-तिँ	-तीँ	

४. क्रियार्थक सज्ञाए -बी एव -बु केवल बुन्देली क्षेत्र तक ही सीमित हैं।

५. निपात ई (=ही) एव ऊ (=हू) अनोखे ढग से जोडे जाते है जो अन्य भाषाओ मे नही है। यथा—राम ऊ चरन खो = रामचरण को भी आदि।

६ आय (< स० अय) भाषा मे उल्लेखनीय रूप से प्रयुक्त होता है।

७ बुन्देली का आदरार्थक रूप जू (=जी) लगभग १४वी सदी का है, हओ जू, काए जू, हाँ जू आदि।

खाँ बोली

'दाशार्णी' के आधार पर दी हुई 'बुन्देली' की विशेषताओ से स्पष्ट हो जाता है कि वह अपनी व्याकरणिक सयोजना मे एक ओर ब्रज और मालवी से तो दूसरी ओर अवधी और बघेली से भिन्नता रखती है। पर दाशार्णी के अतिरिक्त शेष बुन्देली क्षेत्र के बोली-रूप सीमावर्तिनी भाषाओ से प्रभावित है। विशेषकर इस कारण, जिस समय आधुनिक आर्य भाषाओ का विकास हो रहा था, उस समय राजनैतिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड सुगठित इकाई के रूप मे नही था। उत्तर-पूर्व मे चन्देलो का राज्य था जिनकी राजधानियाँ महोबा, कालिजर या खजुराहो थी। इस राज्य की पश्चिमी सीमा धसान नदी तक रही, कभी-कभी बेतवा तक। बुन्देली की खाँ-बोली की पश्चिमी सीमा भी बेतवा तक पहुचती है। नही कहा जा सकता कि इन राजनैतिक इकाइयो का

कहाँ तक प्रभाव भाषा के विकास मे पडता है । इसके पश्चात् बुन्देलो के चरमे विकास के अवसरो पर भी महोबा कभी बुन्देलो के अधिकार मे नही आया, कडा के मुसलमानी सरकार के अधीन रहा । महोबा का दक्षिणी-पूर्वी भाग जो आज भी 'बनपरी' (बनाफरी) कहलाता है तथा उत्तारवर्त्ती क्षेत्र–राजपूतो की प्रधानता के कारण जो रजपुतानौ कहलाता है, निश्चय ही क्रम से बघेली और बैसवाडी बोलियो से मिश्रित बुन्देली का स्वरूप प्रस्तुत करते है। इतना ही नही, यहाँ के ब्राह्मण भी शादी-विवाह मे पूर्वी भागो से बँधे हुए है। अतएव हम इस खाँ-बोली को दो भागो मे विभाजित कर सकते है—बेतवा तटवर्त्ती जलालपुर से वर्मा नदी के किनारे-किनारे यदि हम महोबा और पन्ना को मिलाएं तो निश्चय ही इस रेखा के पूर्व भाग की बोलियाँ उत्तर मे बैसवाड़ी और दक्षिण मे बघेली से प्रभावित कही जायेगी, तथा पश्चिमी भाग विशुद्ध बुन्देली का क्षेत्र कहा जाएगा । नीचे जो विशेषताएँ इस बोली की दी जा रही है, वे पूर्व भाग पर तो पूरी तौर से घटित होती है, साथ ही पश्चिमी भाग में भी कम नही है —

१. स्वरमध्यवर्त्ती तथा शब्दात महाप्राण ध्वनियाँ पूर्ण रूप से अल्पप्राण नही हुई है, जैसे —

कहनैं = कहना

कभत = कहता

मोहै = मुझको

२ प्रसरित सज्ञा-रूप भी कम मात्रा मे नही मिलते । (बैसवाडी से तुलनीय)

बैलवा = बैल

घुडवा = घोडा

बसुरवा = भगी

बसुरिया = भगिन

पडवा = भैस का बच्चा

३. निपात आय । (बघेली से तुलनीय)

४ कारण सूचक कृदन्त -ऐं । (बैसवाडी से तुलनीय)

कहैं सैं = कहने से
कहैं मैं = कहने मे
खाऐं कौ = खाने का

५ ए-, ओ-, जे-, के- सार्वनामिक रूप । (बैसवाडी से तुलनीय)

६ -बी या -हन भविष्यत्काल के उत्तम पुरुष बहुवचन रूपो की बैसवाडी से तुलना की जा सकती है । यथा—

हम आबी या आहन = हम आयेगे ।
हम करबी या करहन = हम करेग ।

७ 'आय' सहित वर्तमान कालिक सहायक क्रियाएँ ?[1]

८ शब्दादि मे महाप्राण सहित कारक चिह्न ।[2]

कौं बोली

विकास के इस युग मे (१००० ई०) बेतवा का उत्तरवर्त्ती प्रदेश कभी कछवाहो और कभी चौहानो के अधिकार मे रहा, तुर्की राज्य भी इसी उत्तरी मैदान तक सीमित था तथा अलाउद्दीन की विजय-यात्राएँ इसी उत्तरी बुन्देल-खण्ड-मार्ग से, जो कालपी होता हुआ झाँसी रेल-मार्ग से मिलता है, होती रही। इसके दक्षिणवर्ती प्रदेश मे मुगलो का राज्य कभी स्थायी न रह सका । इन राजनैतिक परिस्थितियो के कारण यह प्रदेश दशार्ण-प्रदेश से अलग रहा और शूरसेन प्रदेश के निकट होने के कारण इस प्रदेश मे आधुनिक ब्रज से समानता रखने वाली कुछ विशेषताएँ मिलती है । यथा —

१ सज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के औकारात रूप, जैसे —

माथौ = माथा
मोरौ = मेरा
बडौ = बडा

२.-ग्- प्रत्यययुक्त भविष्यत्-रचना ।

३. सार्वनामिक विकारी रूप बाय, जाय आदि

---

१. पद रचना, क्रिया, ५.

२ पद रचना, सर्वनाम-कारक चिन्ह

खौँ बोली

अब हम 'दाशार्णी' के दक्षिणी प्रदेश मे आयेगे जिसे खोँ-बोली कहा गया है। यह प्रदेश दक्षिण की ओर कुछ नुकीला होता गया है । उत्तर से दक्षिण को मिलाने वाले दो महा जन-मार्ग प्रसिद्ध थे । प्रयाग से इटारसी जाने वाला रेल-मार्ग एक की और ग्वालियर से इटारसी जाने वाला रेल-मार्ग दूसरे की सभावित सीमा का निर्देश कर रहा है । दूसरा मार्ग घूमता हुआ सम्भवत. पवाँया (प्राचीन पद्मावती) होता हुआ विदिशा और उज्जैनी को छूता था। वस्तुत इन दोनो मार्गो के बीच का प्रदेश ही खोँ—बोली का क्षेत्र है । हमे ज्ञात है कि विकास के उस युग मे इस प्रदेश पर कलचुरियो (प्राचीन चेदि वश) का राज्य था जिनकी राजधानियाँ तेवर (त्रिपुरी) तथा चदेरी (झाँसी जिला का दक्षिणतम भाग) थी। जान पड़ता है चन्देलो तथा कलचुरियो की राज्य-सीमाएँ ही खाँ और खो बोलियो की अनुमानित विभाजक रेखाएँ होगी। क्योकि खो का प्रयोग एक ओर ललितपुर, टीकमगढ, गुना क्षेत्र मे मिल रहा है तो दूसरी ओर सागर और विदिशा मे। इसके विपरीत खाँ का प्रयोग उत्तर मे दशार्ण के मुहाने से लेकर दमोह-जबलपुर की सीमा तक मिलता है। इस प्रदेश की पश्चिमी सीमा अव्यवस्थित रही है। धार-राज्य (बाद मे मालवा) सागर को अपने मे शताब्दियो तक समेटे रहा। १४वी सदी के प्रारंभिक दशक से ही मालवा मुसलमानो के सुनिश्चित अधिकार मे आ गया और उसकी पूर्वी सीमा सागर तथा चदेरी को छूती रही। स्वाभाविक है कि नवीनता के रूप मे भाषा-गत कुछ विशेषताएँ मालवी से समानता रखेगी।

इससे भी कही अधिक महत्वपूर्ण बात जो कि इस बोली-रूप मे मिल रही है, वह है खडी बोली हिन्दी की तीन व्याकरणिक विशेषताओ का इस क्षेत्रीय भाषा मे प्रवेश।

१—भविष्यत् कालिक रचना के लिए -ग्- कृदन्तीय रूपो का विकास।

२—विकारी बहुवचन प्रत्यय—ओँ।

३—स्त्रीलिंग –ऊ,–आ सज्ञाओ का मूल रूप बहुवचन प्रत्यय–ऐँ।

उक्त क्षेत्र की तद्‌युगीन सामाजिक परिस्थितियो पर विचार करने से इस पश्चिमी प्रभाव को समझा जा सकता है। प्रमुख कारण यह जान पड़ता है

कि "तुर्कों द्वारा उत्तर भारत के विजयकाल से उत्तर-भारत के (विशेषत पजाबी और पछाँही) मुसलमानो के साथ-साथ वहाँ हिन्दू (राजपूत, जाट, बनिया, कायस्थ आदि) भी पर्याप्त सख्या मे दक्षिण मे जा बसे ।"[1] उत्तरी भारत के खत्रियो के दक्षिण मे बसने की एक रोचक घटना का उल्लेख आचार्य विनयमोहन शर्मा ने किया है।[2]

वस्तुत 'दक्खिनी' के प्रभावस्वरूप ही उक्त व्याकरणिक विशेषताओ का प्रवेश बुन्देली मे हुआ है। वैसे उत्तरी भारत से सन्तो के दक्षिण-प्रवेश की परम्परा तो ग्यारहवी सदी मे ही शुरू हो गई थी। इस प्रवेश का राज-मार्ग वही था जिसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है, क्योकि कमाधिक मात्रा मे उपर्युक्त तीनो विशेषताएँ ग्वालियर-गुना (मालवा) और भिलसा होती हुई ही नर्मदा के दोनो काँठो मे फैली है और सागर की पश्चिमी सीमा को छू रही है।

---

१. ना० प्र० पत्रिका—'दखिनी हिन्दी का गद्य और पद्य'—श्रीराम शर्मा, पृष्ठ ७३।

२ "चौदहवीं सदी में बहमनी साम्राज्य के शासक मुहम्मद प्रथम ने अपनी रियासत से सोने का सिक्का चलाना चाहा पर दक्खिन के सुनार उस सिक्के को पाते ही गला देते थे, इसलिए मुहम्मद ने राज्य भर के सुनारों को मरवा डाला और उत्तर भारत से खत्रियों को ला बसाया।"

ध्वनिविचार

१. उच्चारण-विधि को ध्यान मे रखते हुए बुन्देली की दस भिन्न स्वर-ध्वनियो को चार्ट मे निम्न प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है —

ई ऊ

इ उ

ए ओ

ऐ अ औ

आ

१-२. इसमे सन्देह नही कि शब्द-रचना मे इ, ई का, उ, ऊ का और अ, आ का अर्ध-मात्राकालीन अभिन्न अग है, यथा पानी-पनिहारिन, नाऊ-नउआ, परन्तु इस आधार पर ध्वनिग्रामो की सख्या घटाकर उपर्युक्त दस ध्वनियो के स्थान पर सात स्वर तथा एक दीर्घमात्राबोधक ध्वनिग्राम रखकर भाषणध्वनियो का विश्लेषण वैज्ञानिक नही कहा जा सकता, क्योकि शब्द-रचना-स्तर पर ही इ, ए का तथा उ, ओ का भी ह्रस्व-रूप बनकर प्रयुक्त होता है, यथा पेरना — पिराई, गोडना—गुडाई। अतएव स्पष्ट है कि इन ध्वनियो मे मात्रा-काल का अन्तर उतना नही है जितना कि उच्चारण-स्थान का। उपर्युक्त दसो स्वर ध्वनियो को अलग मानकर चलना वैज्ञानिक तो है ही, साथ ही परम्परागत भी।

२. शब्दो के किसी एक अक्षर मे स्वर-ध्वनियो की सहिति तीन-रूपो मे विद्यमान है। एक को हम स्वर अनुनासिकता (Nasalization), दूसरे को सयुक्त रूप (Diphthongal) तथा तीसरे को मूल रूप कह सकते है। प्रथम एव द्वितीय की चर्चा आगे विस्तार से की गई है। मूलरूपो को पुन दो भागो मे विभक्त किया जा सकता है जो कि काल-भेद के अनुसार ह्रस्व एव दीर्घ कहे जा सकते है, अ, इ, उ स्वर ह्रस्व एव शेष आ, ई, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ दीर्घ है।

३ उपर्युक्त सभी स्वर ध्वनियो के लघुतम अन्तर रखने वाले भेदात्मक शब्द-युग्मों को किसी भी मात्रा मे सग्रहीत किया जा सकता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

अ	पर	=	लेकिन
आ	पार	=	किनारा
इ	पिरा	=	झाड़ू की टोकरी
ई	पीरा	=	बच्चा पैदा होते समय का दर्द
उ	पुरा	=	मुहल्ला
ऊ	पूरा	=	घास का एक छोटा गट्ठा
ए	पेरना	=	ईख पेरना
ऐ	पैरना	=	तैरना
ओ	पोर	=	गाँठ
औ	पौर	=	मकान का पहिला कमरा
इ ई	पिरा	=	झाड़ू की टोकरी
ए-ऐ	पीरा	=	बच्चा पैदा होने समय का दर्द
	पेरा	=	पेडा
	पैरा	=	पैसा रखने का गोलक
उ-ऊ	कूरा	=	कूडा
ओ-औ	कौरा	=	कौर
	दुर	=	नाक का आभूषण
	दौर	=	दौड (सज्ञा)
	पूरा	=	चारे का बडल
	पोरा	=	गाँठ

वस्तुत लघुतम ध्वनि-सामग्री मे अन्तर रखने वाले शब्द-युग्म शब्द की सभी सीमाओ मे मिल जाते है और इस प्रकार उक्त दसो स्वर-ध्वनियों की ध्वनि-ग्रामीयता सुनिश्चित है।

४ ध्वनिग्रामो का उच्चारण-परिचय तथा उनके सस्वनो (Allophones) का शब्द की विभिन्न सीमाओ मे वितरण स्पष्ट करना यहाँ अभीष्ट है ·

४-१ /अ/ मध्यस्वर। इसके तीन सस्वन स्पष्ट है :—

(1) [अ̱] अग्रीकृत मध्यस्वर। यह य एवं ह मे अन्त होने वाले सवृत्ताक्षर मे प्रयुक्त होता है, यथा :

[क् अ̱ ह् न् आ] = कहना

[ब् अ य् आ] = बया = एक चि
[ग् अ य् आ] = गया = तीर्थ-विशेष

(ii) [अं] अर्धमात्राकालीन मध्यस्वर, जबकि यह सयुक्त स्वर स्थिति मे आक्षरिक हो, यथा :--

[ग अं इॅ या] = गइया = गाय
[क् अं उॅ बा] = कउवा = कौआ

(iii) [अ] ह्रस्व, मध्यस्वर, शेष सभी स्थितियो मे इसका प्रयोग सम्भव है, यथा --

[कर] = करना (आज्ञार्थ)
[कहत] = कहता (वर्तमान)
[गओ] = गया

यहाँ वह परम्परागत विवाद भी उल्लेखनीय है कि राम, चल आदि शब्दो को स्वरान्त माना जाए अथवा व्यजनान्त। वस्तुत विश्लेषण की सुविधा जिसमे हो, वही मार्ग श्रेयस्कर है । हमे इस सम्बन्ध मे दो बातो पर ध्यान दिलाना है –

(i) शब्दान्त मे इस अ का उच्चारण कर्णगत नही । लिपि परम्परा का निर्वाह कर रही है, पर लिपि भाषा के लिए साधन है, साध्य नही । शब्द के मध्य मे भी ऐसी ही कुछ असगत स्थितियाँ भाषा-परिवर्तन के कारण आ उपस्थित हुई है, यथा

चलता एव उल्टा में दोनो ही 'ल' समान-समय मे उच्चरित होते है फिर एक स्वर-सहित और दूसरा स्वर-रहित क्यो ? उच्चारण मे चुनना एव चुन्ना (नाम-विशेष) मे तथा सुनती एव सुन्ती (सुमित्रा का अपभ्र श) मे कोई अन्तर नही ।

(ii) शब्दान्त मे 'अ' ही क्यो, सभी ह्रस्व स्वरों—इ और उ,का भी भाषा में लोप मिलता है। शान्ति, साती, साधु, साधू, मति, मती बनकर आते है ।

इन आधारो पर राम, चल आदि शब्दो को व्यजनान्त मानकर चलने मे सुविधा है ।

४-२ /आ/ विवृत्त पश्च स्वर। ह्रस्व अ एवं दीर्घ आ के लघुतम भेदात्मक युग्म इस प्रकार हैं

आदि / अड / (= हठ) / आड / (= पर्दा)
मध्य / हर / (= हल) / हार / (= खेत, बन, बीहड आदि)
अन्त / भट / (= ब्राह्मण जाति) / भटा / (= बैंगन)

४-६ / इ / तथा / ई / सवृत्त अग्रस्वर। शब्दान्त मे ह्रस्व इ का प्रयोग नही मिलता। बुन्देली मे शब्द-आदि मे भी भेदात्मक युग्म उपलब्ध नही। मध्य के उदाहरण इस प्रकार है --

/ जिन / (= सम्बन्धवाची सर्वनाम)
/ जीन / (= विशेष कपडा)
/ पिस / (= पीसा जाना—कर्मवाचीय प्रयोग)
/ पीस / (= पीसना—कर्तृवाचीय प्रयोग)

[इॅ] एक विलम्बित अनाक्षरिक उच्चारण और भी है जो कि उसी अक्षर अथवा सलग्न परवर्त्ती अक्षर मे पश्च स्वरो - अ, - आ, - ओ के पर-भाग मे प्रयुक्त होने पर सुनाई पडता है। यथा बइअर (बईअर), गइआ (गईआ), जइओ (जईओ) ,भइऔ (भईऔ) । व्याकरणिक दृष्टि से ऐसा जान पडता है कि ये सभी पद दो तत्वो—मूलशब्द तथा प्रत्यय—से मिलकर बने हैं। इसलिए इन सबका विलम्बित इ भाषा मे इय् बनकर प्रयुक्त होता है। परिणामत लोग उक्त शब्दो को बइयर, गइया, जइयो, भइयौ रूप मे ही लिखते है। इस सन्धि-नियम की पुष्टि की जा सकती है यथा लड़की + आँ (बहुवचन प्रत्यय--हिन्दी) = लडकियाँ, घोडी + आ (ह्रस्वार्थक) = घुडिया। इसी प्रकार बाई (स्त्री के लिए सामान्य शब्द यथा बाई हरौ) + *अर = बइयर

* गाई + आ (ह्रस्वार्थ) = गइया (= गाय)
* जा + ई + ओ (मध्यम पु०) = जइयो (जाना)
* भाई + औ (सम्बोधन) = भइयो (= भाइयो)

इस बिलम्बित रूप को हम यदाकदा - य्य्- रूप मे भी लिखा हुआ पाते हैं, यथा

बय्यर, गय्या, भय्यौ

४-४ / उ/तथा/ऊ / सवृत्त पश्च स्वर; शब्दान्त मे ह्रस्व उ का प्रयोग नही मिलता। अन्यत्र प्रयुक्त भेदात्मक-युग्म इस प्रकार है :

आदि	/ उन /	/ ऊन /
मध्य	/ पुरा /	/ पूरा /

[उॅ] विलम्बित अनाक्षरिक उच्चारण जो कि सलग्न परवर्त्ती अक्षर के पर-भाग मे पश्च-स्वरो—अ, आ, ओ, औ के अवस्थित होने पर सुनाई पडता है, यथा महुअर (महूअर), कउआ (कऊवा), नउओ (नऊऔ)। इन रूपो को यदा कदा महुवर, कव्वा, नव्वौ आदि रूप मे लिखा देखते है। श्रुति की प्रधानता—आ के साथ विशेषत. है अन्यत्र कम।

४-५ /ए/ अर्धसवृत्त, अग्र, दीर्घस्वर। इसके तीन सस्वन सुनाई पड जाते है।

[एॅ] अनाक्षरिक, यदि उसी अक्षर मे पर भाग मे -ओ हो

द्योता = [देॅओ ता] = देवता
द्योर = [देॅओ र] = देवर
क्योला = [केॅओ ला] = कोयला
क्योटा = [केॅओ टा] = केवट
न्योता = [नेॅओ ता] = नेवता

[ए̱] ह्रस्व स्वर जिसका प्रयोग-है विभक्ति-प्रत्यय के साथ होता है : यथा—

जे̱है = जिसको
ते̱है = तिसको, उसको
के̱है = किसको
ए̱है = इसको

वस्तुत लिपि मे इसके लिए कोई वर्ण नही है इसलिए इसके अकित करने के लिए समीपस्थ वर्ण-चिह्नो द्वारा विविधता अपनाई गई है, यथा :

जेहै जिहै ज्यहै
तेहै तिहै त्यहै

केहै किहै क्यहै
एहै : इहै : यहै

[ए] दीर्घ आक्षरिक स्वर। शेष सर्वत्र प्रयोग मे आ रहा है, यथा

/एट/ = एक गाँव
/मेड/ = खेत का सीमाभाग
/गए/ = गए

४-६ / ओ / अर्धसवृत्त, पश्च, दीर्घ स्वर। इसके भी तीन सस्वन उल्लेखनीय है।

[ओ॑] अनाक्षरिक, यदि उसी अक्षर मे परभाग मे ए हो, यथा क्वेला [को॑ए-ला]

[ओ] ह्रस्व स्वर, जिसका प्रयोग - है विभक्ति-प्रत्यय के साथ संभव है, यथा

मोहै = मुझको
तोहै = तुझको
ओहै = उसको

इन रूपो के लेखन मे 'ए' ह्रस्व की तरह ही विविधता है, यथ

मोहै मुहै म्वहै
तोहै तुहै त्वहै
ओहै : उहै वहै

/ ओ / दीर्घ, आक्षरिक, शेष सर्वत्र प्रयोग मे आ रहा है, यथा .
/ओस/ /मोड/ /गओ/ आदि।

४-७. / ऐ / अर्ध विवृत्त, अग्र स्वर। यह उच्चारण मे सयुक्त (अ + ए ह्रस्व) है अथवा मूल स्वर, इस प्रकार का विवाद हिन्दी की बोलियो मे पाए जाने वाले 'ऐ' स्वर के साथ लगा हुआ है, अतएव यहाँ भी इसके उच्चारण की प्रवृत्ति निश्चित की जानी चाहिए। मुझे ऐसा जान पडता है कि आगरा के पश्चिम की बोलियो मे यथा कौरवी, बाँगरू एव पजाबी मे वह मूलस्वर है, अन्यत्र सयुक्त स्वर। विभिन्न क्षेत्रो से आए हुए हिन्दी के विद्यार्थियो से वर्णमाला को सुनकर सरलता से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इसकी सयुक्तता के भी दो मूल्य है १. ऐ = अ + ह्रस्व ए २. ऐ = अ + इ। बुन्देली की वर्णमाला का एकाकी 'ऐ' तो 'अइ' रूप मे ही उच्चरित होता है, पर भाषा मे उसके दो विभिन्न सस्वन कर्णगत होते हैं:

[ऐ] मूलस्वर जो कि एकाक्षरी पदो मे तथा शब्दान्त मे प्रयुक्त होता है, यथा .

1 है, पै, कै, आदि ।

11 करै आदि ।

[ऐ] सयुक्त स्वर जो कि अ + ह्रस्व ए के सयोग से उच्चरित होता है, का प्रयोग शेष सभी स्थानो मे पाया जाता है, यथा

/पैसा/ [पए्सा]

/बैर/ [बए्र]

४-८ / औ / अर्ध विवृत्त, पश्च स्वर । यह भी ऐ की तरह ही विवादपूर्ण स्थिति मे है । हम इसके भी दो सस्वन स्वीकार करते है —

[औ] मूल, जो कि एकाक्षरी पदो तथा शब्दान्त मे प्रयुक्त होता है, यथा :

i /कौ/ (= का) /मौ/ (= मुँह),

11 करौ, तारौ

[औ] सयुक्त (अ + ह्रस्व ओ) अन्यत्र प्रयोग मे आता है, यथा

/ कौन / [कओन] = कौन

/ कौनो / [कओन्ओ] = कोना

५. स्वर अनुनासिकता शब्दभाण्डार एव पदरचना दोनो ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण है । यह अनुनासिकता लगभग सभी स्वरो के साथ सभी स्थानों पर मिल जाती है, यथा :

	आदि	मध्य	अन्त
अँ	अँधरौ	कँधा	×
आँ	आँखी	काँख	दिनाँ (= दिन)
इँ	इँचनै (= खिँचना)	ढिगाँ (स्थान)	×
ईँ	ईँचनै (= खीचना)	पीँठ (पीठ	गईँ
उँ	उँचाई	मुँदगै (छिपना)	×
ऊँ	ऊँचौ	मूँदनै (छिपाना)	कऊँ (= कही)
एँ	एँड ~ ऐँड	गेँड्वा ~ गैँड्वा (= तकिया)	×
ऐँ	एँठ ~ ऐँठ	× ~ ऐँगर	हैँ, कहैँ
ओँ	ओँठ ~ औँठ	होँठ ~ हौँठ	×
औँ	× ~ औँक	× ~ पौँडा	हौँ, कहौँ

की दृष्टि से इस अनुनासिकता पर विचार नासिक्य व्यजनो के साथ किया गया है।

६. बिना किसी श्रुति के उच्चरित दो समीपस्थ स्वर यदि एकाक्षरी सिद्ध हो तो हम उस स्वर सहिति को सयुक्त-स्वर (Diphthongs) कहेगे और यदि उनकी स्थिति भिन्नाक्षरीय है तो फिर इस स्थिति को स्वर-योग (Vowel-Combination) मात्र कहा जायगा। प्रथम स्थिति मे (= सयुक्त स्वर) उन दो स्वरो मे से केवल एक ही आक्षरिक होगा, दूसरा अनाक्षरिक। इस प्रकार आक्षरिक एव अनाक्षरिक स्वरो के सयोग से ही सयुक्त स्वरो का उच्चारण होता है।[1]

इस सिद्धान्त के आधार पर बुदेली शब्दो मे प्रयुक्त स्वर-सयुक्तता (Diphthongisation) निम्न प्रकार की मिलेगी

	अ	आ	इ–ई	उ–ऊ	ए–ऐ	ओ-औ
अ			√	√	√	√
आ			√	√	√	√
इ–ई		√	√			
उ–ऊ		√	√			
ए–ऐ			√		√	√√
ओ–औ			√		√√	√

१ Bloch & Trager—Outline of Linguistic Analysis, Page-34

'When two vowels are uttered without hiatus, each may be the peak of a separate syllable or the two vowels may belong to the same syllable The decisive factor is usually the distinction of the stress--whether each vowel is pronounced with a separate impulse of stress or whether a single impulse extends over both In the latter case, either the first or the second vowel may be the syllabic, the other is said to be non-syllabic.... ......A combination of a syllabic or a non-syllabic vowel is a diphthong,'

i	-अइ-	गइ-या	=	गाय
ii	-अउ-	कउ-वा	=	कौआ
iii	-अए-	अए सा	=	ऐसा
iv	-अओ-	अओ-रत	=	औरत
v	-आइ-	आइ-यो	=	आना
vi	-आउ-	नाउ-वौ	=	नाई (सबोधन, बहुवचन)
vii	-आऐ-	आऐ (आय)	=	आए
		राऐ-तो (रायतो)	=	मट्ठे से बना खाद्य पदार्थ
viii	-आओ-	आऔ (आव)	=	आओ
		साऔ-कौ (सावकौ)	=	मौका
ix	-इइ-	पिइ-यो	=	पीना
x	-उइ-	कुइ-या	=	छोटा कुआँ
xi	-एऐ-	लेऐ (लेय)	=	ले
xii	-एऔ-	लेऔ (लेव)	=	लो
xii	-ओइ-	सोइ-ओ	-	सोना
xiv	-ओऐ-	सोऐ (सोये)	=	सोए
xv	-ओऔ-	सोऔ(सोव)	=	सोओ
xvi	-एइ-	खेइ-यो	=	खेना
xvii	-इआ-	निआ-री	=	अलग
xviii	-उआ-	जुआ-री	=	जुआरी
xix	-एओ-	केओ-ला	=	कोयला
xx	-ओए-	कोए-ला	=	कोयला

व्यंजन ध्वनियाँ

८. बुदेली भाषा मे व्यवहृत निम्न व्यजन-ध्वनियो को स्पष्ट रूप से ग्रहण किया जा सकता है —

	कठ्य	कोमल तालु	तालु	कठोर तालु	वर्त्स्य	दन्त्य	दन्त्योष्ठ्य	द्वयोष्ठ्य
स्पर्श	+	क ख ग घ	+	ट ठ ड ढ	+	त थ द ध	+	प फ ब भ
स्पर्श-सघर्षी	+	+	च छ ज, झ	+	+	+	+	+
सघर्षी	ह	+	+	+	स	+	+	+
नासिक्य	+	ङ	ञ	ण	न, न्ह	+	+	म, म्ह
लुण्ठित	+	+	+	+	र, र्‍ह	+	+	+
उत्क्षिप्त	+	+	+	ड़, ढ़	+	+	+	+
पार्श्विक	+	+	+	+	ल, ल्ह	+	+	+
अर्धस्वर	+	+	य	+	+	+	व	+

९. उक्त ध्वनियो को एक अन्य ढग से भी व्यवस्थित किया जा सकता है। इसके लिए ध्वनियो की व्यवहार-पद्धति को विशेष रूप से आधार बनाया गया है, सम्भव है इस प्रकार की व्यवस्था विशुद्ध उच्चारण की दृष्टि से कुछ त्रुटिपूर्ण सिद्ध हो —

	कण्ठ्य	तालव्य	मूर्धन्य	दन्त्य	ओष्ठ्य	
स्पर्श	क	च	ट	त	प	I
	ग	ज	ड/ड़	द	ब	
नासिक्य				न	म	II
तरल आदि			र	ल		
सघर्षी	ह			स		III

[इन चार्टो मे प्रत्येक व्यजन हलन्त-चिह्न-युक्त समझा जाना चाहिए]
उपर्युक्त चार्ट आवश्यक निर्देशो की अपेक्षा रखता है —

महाप्राणत्व की मुखरता की दृष्टि से भाषा की समस्त ध्वनियो को तीन वर्गो मे विभक्त कर दिया गया है

स्पर्श महाप्राण तत्त्व से सयुक्त एव वियुक्त—दो भिन्न व्यजन ध्वनियो की कोटि रखने वाला वर्ग ।

तरल महाप्राण ध्वनियो की स्थिति सदेहास्पद ।

सघर्षी : महाप्राण तत्त्व सघर्षण मे विद्यमान है अतएव महाप्राण ध्वनि रहित वर्ग ।

महाप्राण व्यजन ध्वनियो के सम्बन्ध मे बुन्देली भाषा के लिए एक तथ्य उल्लेखनीय है कि ये सब अल्पप्राण होने की प्रवृत्ति रखती है । शब्द के आदि मे यह प्रवृत्ति न मिलेगी पर अन्यत्र इस विकास के लक्षण सरलता से देखे जा सकते है । शब्दान्त मे महाप्राण तत्त्व सहित एव रहित लघुतम शब्द युग्म खोजने पर ही मिल पाते है । परिगणना करके यह भी देखा गया है कि सघोष महाप्राण के अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति अन्य महाप्राण वर्ग की तुलना मे अपेक्षाकृत अधिक है । अल्पप्राणीकरण के कुछ उदाहरण इस प्रकार है

हॉत (हाथ), जीब (जीभ), कँदा (कँधा), पीँट (पीठ), जॉग (जॉघ), हॉप (हॉफ), भूँक (भूख), सूदौ (सीधा), दूद (दूध), गदा (गधा), लाब (लाभ) आदि ।

ii उच्चारण-प्रयत्न की दृष्टि से तालु स्थानीय ध्वनियाँ स्पर्श-सघर्षी ठहरती है, परन्तु शब्द अथवा पद रचना मे उनका योग ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार अन्य स्पर्श-ध्वनियो का, साथ ही, देश मे परिव्याप्त वर्णमाला मे वर्णो के क्रम की परम्परा भी उसी का समर्थन करती आ रही है, अतएव इन्हे भी स्पर्श-वर्ग मे रखा गया है ।

iii वर्त्स्य ध्वनि न एव स का प्रयोग क्षेत्र यत्किचित परिवर्तनो ङ,ञ,ण तथा श, ष) को स्वीकार करता हुआ दन्त से लेकर कण्ठ्य भाग तक है । इसीलिए उक्त ध्वनियो का प्रयोग-क्षेत्र चार्ट मे अपेक्षाकृत विस्तृत है ।

iv य, व मे व्यजनत्व की अपेक्षा स्वरत्व अधिक है, इसलिए उन्हे छोड दिया गया है ।

स्पर्श ध्वनियाँ

१० **कंठ्य** इन ध्वनियो के उच्चारण मे जिह्वा का **पश्च** भाग कोमल तालु को स्पर्श करता है। घोषत्व एव प्राणत्व की भिन्नता रखने वाले लघुतम शब्द-युग्म सिद्ध करते है कि भाषा मे चार कण्ठ्य स्पर्श ध्वनिग्राम है —

/ क / काल
/ ख / खाल खुरवा = कटोरा
/ ग / गाल
/ घ / घुरवा = घोडा

प्राणत्व /क-ख/ दुकत = छिपता
दुखत = दर्द करता

घोषत्व /क-ग/ चुकाउत = चुकाता
चुगाउत = चुगाता

शब्दान्त मे अवस्थित महाप्राण-ध्वनि अपना महाप्राणत्व खोकर अल्पप्राण होने की प्रवृत्ति रखती है, अतएव शब्दान्त मे लघुतम शब्द-युग्मो का प्राय अभाव है।

११. **तालव्य ध्वनियाँ** च, छ, ज, झ उच्चारण मे स्पर्श सघर्षी है। उनकी भिन्न ध्वनिग्रामीय स्थितियो को स्पष्ट करने वाले लघुतम शब्द-युग्म इस प्रकार है —

/ च / / चाल /
/ छ / / छाल /
/ ज / / जाल /
/ झ / / झाल / = नहर का पानी जहाँ जोर से नीचे गिरता है।

/च-छ/ / काँच /
/ काँछ / = धोती का पिछला हिस्सा जो फेंटे मे खोसा जाता है।

/च-ज/ / बचो / = बचना (भूतकाल)
/ बजो / = बजना (भूतकाल)

इन ध्वनियो मे सघर्षी तत्त्व की मात्रा कम नही है, इसका स्पष्टीकरण इस तथ्य से किया जा सकता है कि /च/ तथा /छ/ ध्वनियाँ सघर्षी /स/ ध्वनि से वैकल्पिक सम्बन्ध रखती है। ध्वनि-मोचन मे सघर्ष स्पष्ट है —

साँचउँ	~	साँसउँ	=	सचमुच
सौचाव	~	सौसाव	=	बच्चे की टट्टी धुलाओ
साँचे	~	साँसे	=	ढालने वाले साँचे
सिढियाँ	~	छिडियाँ	=	सीढियाँ

१२ **मूर्धन्य एव उत्क्षिप्त ध्वनियाँ :** घोषत्व एव प्राणत्व को बुदेली ध्वनियो का अभिन्न अग स्वीकार करते हुए मूर्धन्य ध्वनियो मे ट, ठ, ड, ढ ये चार स्वतन्त्र ध्वनिग्राम जान पडते है जिनकी उच्चारण-विधि निम्न प्रकार है —

जिह्वानीक कठोर तालु को सबलता के साथ स्पर्श करता है। ध्वनियो का उच्चारण-स्थान भी वर्त्स्य से लेकर मध्य तालु तक फैला हुआ है। जिह्वा-परिवेष्टन भी शब्दादि मे अपेक्षाकृत कम है।

ड, ढ ध्वनियो को भी उक्त वर्ग के साथ स्थान मिलना चाहिए, यद्यपि उनका उच्चारण-प्रयत्न निस्सन्देह भिन्नता लिये हुए है। इनके उच्चारण मे जिह्वानीक मूर्धा-तालु को कठोरता से स्पर्श तो करता ही है, साथ ही जिह्वा का परिवेष्टन भी महत्वपूर्ण है। स्पर्श के उपरान्त जिह्वा झटके के साथ अपने स्वाभाविक स्तर तक आती है। इस उत्क्षेपण-क्रिया को ध्यान मे रखकर इन्हे उत्क्षिप्त ध्वनियाँ कहा गया है। ड, ढ एव ड, ढ इन दोनो वर्गो के उच्चारण-प्रयत्न मे महान अन्तर होते हुए भी, एक साथ रखने के दो कारण है —

1 उक्त वर्ग की ध्वनियाँ एक दूसरे की पूरक है, अर्थात् ड, ढ शब्द की जिन परिस्थितियो मे प्रयुक्त होती है, उन क्षेत्रो को छोडकर ही ड, ढ का प्रयोग सम्भव है। इन पूरक-ध्वनियो के प्रयोग-क्षेत्रो की व्यवस्था निम्न प्रकार है —

ड, ढ का प्रयोग शब्द के आदि भाग मे होता है, यदि शब्द के मध्य मे सभव है तो केवल द्वित्व-स्थिति मे अथवा नासिक्य व्यजन के पूर्वभाग मे अवस्थित होने पर, शब्द के शेष क्षेत्रो मे ड, ढ का प्रयोग ही हो सकता है, अर्थात्

	आदि	मध्य			अन्त
		द्वित्व	नासिक्य व्यजन—	शेप	
ड, ढ	√	√	√	×	×
ड, ढ	×	×	×	√	√

ii दोनो वर्ग समसामयिक शब्द रचना तथा ऐतिहासिक शब्द-विकास मे एक दूसरे से बँधे हुये है यथा —

डण्ड़ा — डॅडौका (= छोटा डण्डा)

दण्ड > डाॅड

पाण्डेय > पाॅडे

१२-१ ऊपर तालिका मे दी गई सामग्री के आधार पर सरलता से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि [ड, ढ] एव [ड, ढ] दो भिन्न वर्गीय ध्वनिग्राम नही है अपितु किसी एक ही वर्ग के दो भिन्न सस्वन है परन्तु इस तथ्य को इस रूप मे स्वीकार करने मे कठिनाइयाॅ है —

1 [ड, ढ] एव [ड, ढ] ध्वनियो के दोनो ही वर्ग भाषा मे प्रयोग-बहुल है, अतएव छोटे-छोटे बच्चे भी ड एव ड का तथा ढ एव ढ का विशुद्ध एव अलग-अलग उच्चारण करने मे समर्थ है ।

ii विदेशी शब्दावली की पैठ हो जाने के कारण भाषा मे कुछ ऐसे भी शब्द-युग्म मिलने लगे है जो उनकी भिन्न ध्वनिग्रामीय सदेहपूर्ण स्थिति को समाप्त करने मे समर्थ हो रहे है, यथा :—

1 हाड   11 भेडिया

रोड   रेडियो

निश्चय ही समीपवर्ती ध्वनियो मे वे तत्त्व विद्यमान नही है, जो ड को ड मे अथवा ड को ड मे परिवर्तित कर दे । इसलिए उपर्युक्त तर्कों के आधार पर टवर्गीय ध्वनियो के अन्तर्गत इन द्वन्द्वो—ड-ढ, ड़-ढ़ ध्वनियो—को भिन्न ध्वनि-ग्रामीय माना जा सकता है ।

[ड], ल के पूर्वभाग मे स्थिति होकर मूर्धन्य[ल] के रूप मे उच्चरित होता है। यथा [उळ्ला] = उडला=अनाज की एक किस्म।

छोटे डण्डे के लिए, 'डॅड़ौका' शब्द का प्रयोग होता है जिसे साधारणत: लोग उच्चारण को ध्यान मे रखकर 'डॅणौका' लिख जाते है पर इस 'ण' को जो कि अन्यत्र केवल वर्गीय व्यजनो के पूर्व भाग मे ही प्रयुक्त होता है, 'डँ' के रूप मे ही स्वीकार किया जाना चाहिए।

१२-२ नीचे कुछ लघुतम शब्द-युग्म लिये जा रहे है —

शब्दादि — /टाट/, /ठाट/, /डाट/, /ढाट/ (= cork)
(ड, ढ का प्रयोग शब्द के आदि भाग मे नही होता)

शब्द-मध्य —1 स्वरमध्यवर्ती

(निरनुनासिक) / पटा / = फुसलाइये
/ पठा / = भिजवाइये
/ पढा / = पढवाइये
(ड, ढ का प्रयोग सम्भव नही)

(अनुनासिक) /कौँडौ/ = आग जलाने का एक स्थान
/ कुँढी / = एक भोजन पात्र
(ड, ढ का प्रयोग सम्भव नही)

ii द्वित्त्व — /गड्डा/ (=गडला),
/गड्ढा/ (= गढा)
(ड, ढ का द्वित्त्व सम्भव नही)

iii नासिक्य व्यजन के साथ —

/ कन्डा / (= गोबर का उपला), /पण्डा/, /लम्डा/ (= लडका)
(ढ के पूर्व नासिक्य व्यजन से युक्त शब्द भाषा मे उपलब्ध नही)

शब्दान्त —

प्राणत्व /ट-ठ/ /पाट/ (= किनारा) /पाठ/
घोषत्व /ट-ड/ /चन्ट/ (= होशियार) /चन्ड/ (= प्रचण्ड)
/ट-ड/ /छॉट/ /छॉड/ (= छोडना)

१२-३. यत्र-तत्र कुछ अपवादो की ओर सकेत किया जा सकता है, यथा —

कुडौल, सुडौल, डुग्डुगी, ढेकाढाई आदि मे स्वरमध्य मे ही ड, ढ का प्रयोग मिल रहा है, परन्तु आगे विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि यह यौगिक शब्दावली है। कु -, सु-, डुग-, ढेका - आदि के पश्चात जकचर (juncture) ध्वनिग्राम देकर इन अपवादो को नियमानुकूल बनाया जा सकता है।

१३. दन्त्य व्यजन —इस वर्ग के अन्तर्गत भी चार भिन्न ध्वनिग्राम मिल रहे है, जिनके लिये शब्द के आदि तथा मध्य कही से भी लघुतम शब्द-युग्म एकत्र किये जा सकते है —

आदि /तान/ /थान/ /दान/ /धान/
मध्य /मताई/ /मथाई/

१४ ओष्ठ्य व्यजन —यहाँ भी अन्य वर्गो की भाँति चार ध्वनिग्राम है। दन्त्य वर्ग की भाँति शब्दान्त को छोडकर अन्यत्र लघुतम शब्द-युग्म सरलता से मिल जाते है।

आदि /पार/ /फार/ /बार/ /भार/
मध्य /नपा/ (आज्ञार्थ = नापना) /नवा/ (आज्ञार्थ-झुकाना)
/फ/ के दो सस्वन कहे जा सकते है [फ] = द्वयोष्ठ्य स्पर्श
[फ] = दन्त्योष्ठ्य सघर्षी

दोनो ही सस्वन भाषाभाषियो के लिए अति सुलभ है, क्योंकि फारसी-अरबी शब्दावली ग्रामवासियो मे भी घर कर गई है। इन दोनो की प्रयोग-सीमाएँ इस प्रकार है —

[फ] = शब्द-आदि और शब्द के मध्य मे
[फ] = शब्दान्त मे

विदेशी शब्दो मे पाया जाने वाला [फ] शब्द के मध्य मे आकर बुदेली मे द्वयोष्ठ्य स्पर्श हो गया है जबकि शब्दान्त मे इसका उच्चारण सघर्षी ही सुनाई देता है —

[रफा-दफा] [सफा] [अलफा] परन्तु
[साफ], [माफ]

नासिक्य व्यंजन

१५ ध्वनि-निर्माण मे नासिका-तत्त्व का योग स्वर तथा व्यजन, ध्वनियो के दोनो ही वर्गों के साथ सम्भव है। नासिक्य व्यजन तो होते ही है, स्वर भी सानुनासिक हो सकते है। उच्चारण-प्रक्रिया दोनो की एक ही है—'अन्दर से आती हुई श्वास कोमल तालु के झुकने से नासिका विवर होकर निकलती है, साथ ही आवश्यक स्वर के लिये जिह्वा का स्पदन होता है और सानुनासिक स्वरो की निष्पत्ति होती है'। नीचे नासिका-योग से निष्पन्न सम्पूर्ण बुन्देली ध्वनियो का अध्ययन अपेक्षित है। यहाँ यह बतला देना अप्रासागिक न होगा कि हिन्दी की तुलना मे बुन्देली के अधिकाधिक शब्दो मे यह नासिक्यीकरण उल्लेखनीय है। शरीर-अगो की द्योतक शब्दावली उदाहरणस्वरूप ली जा सकती है।

हाँत = हाथ
पाँव = पैर
पीँठ = पीठ
घूँटा = घुटना
घिँची, घाँटी = गला

मूँड, ऊँठा, उँगरियाँ, एँडी, जाँघ, कँधा, पौँद, मूँ (मौँ), नौँ, नाँक, काँन मूँछ, दाँत, द्याँय (= शरीर), रोएँ, आदि।

१६. भाषा मे पाई जाने वाली अनुनासिक ध्वनियो को हम इस प्रकार सग्रहीत कर सकते है :—

अर्ध-अनुस्वार (ँ) साधारणत शिक्षित समुदाय के बीच स्वरो की अनुनासिकता स्पष्ट करने वाली नासिक्य-ध्वनि को इसी नाम से अभिहित किया जाता है। अभी हम इसे इसी रूप मे स्वीकार किये लेते है। इस ध्वनि की उपस्थिति शब्दो मे अर्थगत भेद लाती है, यथा :—

बाट = रास्ता
बाँट = तौलने के माप
सास = सास
साँस = श्वास
बास = सुगधि
बाँस = बाँस

और भी,

मौडी (एक वचन) — मौडीं (बहु वचन)
दी (एक वचन) — दीं (बहु वचन)

ङ् जैसे सङ्कर, सङ्गै, सङ्खिया आदि के उच्चारण मे श्वास कोमलतालु के स्थान पर रुक कर (रोकी जाकर) नासिका विवर की ओर उन्मुख होती है।

ञ् जैसे पञ्चा (= छोटी धोती), पञ्जा (= ताश का पत्ता)। श्वास, तालु-स्थान पर रुककर नासिकोन्मुख होती है।

ण् जैसे टण्टी, डण्डी। श्वास, टवर्गीय ध्वनियो के उच्चारण-स्थान पर रुककर नासिकोन्मुख होती है।

न्̱ जैसे सन्तौ, चन्दा। इस ध्वनि के उच्चारण मे श्वास दन्त स्थान पर रुक कर नासिकोन्मुख होती है।

न् जैसे नाम, अन्न, जन्म, आन। वर्त्स-स्थानीय नासिक्य ध्वनि।

म् जैसे मान, जुम्मौ, जम्ना, आम। ओष्ठ स्थानीय नासिक्य ध्वनि।

(अ) य, र, ल, व के पूर्व भाग मे नासिक्य व्यजन ध्वनि वाला कोई शब्द सामान्य बोलचाल की भाषा मे नही जान पड रहा है। विदेशी 'डन्लप' मे पाई जाने वाली ध्वनि वर्त्स स्थानीय 'न' से भिन्न नही कही जा सकती।

(ब) स के पूर्व मे उच्चरित ध्वनि जैसे ससार, ससै, कस, हस आदि की नासिक्य ध्वनि यद्यपि सघर्षीपन लिये हुए है, फिर भी न के अत्यधिक समीप है।

(स) ह के पूर्व भाग मे उच्चरित नासिक्य-व्यजन ध्वनि से युक्त शब्दो का भी भाषा मे पूर्ण अभाव जान पडता है। हिन्दी के सिहासन, सिंहल, आदि शब्द बुन्देली मे क्रमश सिंघासन, सिघल रूप मे पाए जाते है, यथा :—

ठाकुर जू कौ सिङ्घासन (सिङ्गासन) लेताव।
डाक्टर सिङ्घल आए ते।

उपर्युक्त दी हुई सामग्री को निम्न चार्ट मे इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है —

	आदि	मध्य							अन्त
		–क, ख, –ग, घ,	–च, छ, –ज, झ,	–ट, ठ –ड, ढ,	–त, थ –द ध,	–प, फ –ब, भ,	–न,	–म,	
ङ्	+	√	+	+	+	+	+	+	+
ञ्	+	+	√	+	+	+	+	+	+
ण्	+	+	+	√	+	+	+	+	+
न्̱	+	+	+	+	√	+	+	+	+
न्	√	+	+	+	+	+	√	√	√
म्	√	+	+	+	+	√	√	√	√

ऊपर की चर्चा से स्पष्ट है कि ङ् से लेकर न्̱ तक तथा टिप्पणी अ, ब स, मे गिनाए गए नासिक्य व्यजन पूरक स्थिति (Complementary positions) मे प्रयुक्त हुए है। इसी को आधुनिक भाषाशास्त्री वर्गीय नासिक्य ध्वनि (Homorganic nasal sound) कहते है, वस्तुत. इसी के लिए देवनागरी लिपि मे अनुस्वार ( ) चिह्न है। परन्तु उच्चारण विधि के अनुसार यह नासिक्य ध्वनि अधिकाश स्थानो मे वर्त्स स्थानीय न् ध्वनि से अधिक निकटता रखती है, यथा :—

सत — सन्त (तवर्ग)
घटा — घन्टा (टवर्ग)
चचल — चन्चल (चवर्ग)
ससार — सन्सार (-स)

इसीलिए हम इस अनुस्वार को न् का एक सस्वन (Allophone) मान सकते है। इस सस्वन के लिए यदि कोई परम्परावादी भिन्न लिपि-चिह्न चाहता है तो हमे कोई आपत्ति नही।

१७. परिणामत. बुन्देली मे ध्वनिग्रामीय स्तर पर ठहरने वाली नासिक्य ध्वनियाँ तीन ही है अनुनासिक स्वर, न् तथा म्। अनुनासिक तथा निरनुनासिक स्वरो मे अर्थ-भेद लाने वाले शब्दयुग्मो की चर्चा की जा चुकी

है, ऐसा भी सभव है कि नासिक्य व्यजन न् अथवा म् ही स्थान विशेष पर कभी अनुनासिक स्वर और कभी नासिक्य व्यजन का स्वरूप धारण कर लेते हो। भाषा-प्रवाह मे ऐसे उदाहरणो की कमी नही है, यथा —

[पाण्डेय] /पान्डेय/ > पाँडे
[पञ्च] , पन्च / > पाँच
[वश] / वन्श / > बाँस
, कम्प / परन्तु / काँप /

इसलिए देखना यह है कि ये नासिक्य व्यजन (न् एव म्) कही अनुनासिक स्वरो के विरोध (Contrast) मे आते है, अथवा नही। ऐसे कतिपय उदाहरण यहाँ सग्रहीत किये जा रहे है, यथा —

आदि	/ माँग /	=	बालो मे सिन्दूर-रेखा
	/ नाँग /	=	साँप
	/ आँग /	=	नौ माह के पूर्व का गर्भ
अन्त	/ मैँ /	=	प्रथम पुरुष, एक वचन
	/ मैँन /	=	मोम
	/ दीँ /	=	दीमक
	/ दीँन /	=	गरीब
मध्य	/ हन्स /	=	पक्षी विशेष
	/ हँस /	=	क्रिया-विशेष
	/खौन्चा/	=	फेरी लगाकर बेचने वाले का सामान।
	/खौँचा/	=	मुट्ठी भर अनाज

आदि एव अन्त के लिए सग्रहीत उदाहरणो से वस्तु-स्थिति का ठीक-ठीक पता लगाना सम्भव नही है, मध्य मे अवश्य ये दो जोडे (सम्भव है और हो) नासिक्य व्यजन एव अनुनासिक स्वर मे स्पष्ट विरोध (Contrast) उपस्थित कर रहे है। दूसरे, आदि एव अन्त के उदाहरणो से यह भी निष्कर्ष निकल आता है कि वहाँ भी विरोधी शब्द-युग्म दे सकना बुन्देली भाषा-भाषियो के लिए कठिन नही हैं, यथा :—

नाम – आँग
नाक – आँक
मैँ – मैन
दीँ – दीन

इस प्रकार बुन्देली की ये तीन ध्वनियाँ न, म ँ स्वतन्त्र ध्वनिग्राम है। न और म के भेदात्मक युग्म बहुलता से मिलेंगे —

आदि	—	नाल
		माल
मध्य	—	कनाई
		कमाई
अन्त	—	कान
		काम

१८. ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि ङ्, ञ्, ण् शब्द के आदि और अन्त मे प्रयुक्त नही होते। मध्य मे भी केवल वर्गीय व्यजनो के पूर्व भाग मे ही इनकी स्थिति है। इतर व्यजनो के साथ प्रयुक्त होने पर -ङ्- अथवा -ग्ँ-, -ञ्- अथवा -ज्ँ- मे सन्देह होने लगता है, यथा —

राँग्बो–राङ्बो, राँज्बो–राञ्बो, माँग्बो–माङ्बो। यदि उच्चारण की दृष्टि से द्वितीय स्थिति है तो मान्बो, रान्बो आदि की तुलना मे आकर ङ् और ञ् की स्वतन्त्र ध्वनिग्रामीय स्थिति सिद्ध होती है, अतएव हम प्रथम स्थिति को ही मानकर चलने मे सुविधा का अनुभव करते है, दूसरे ङ् अथवा ञ् के बाद एक जकचर (Juncture) भी है जो कि भिन्न वर्गीय व्यजनो को इन ध्वनियो से अलग करता है, ठीक उसी प्रकार जिस तरह

चुन्नै (= 'चुन्ना' को) को
चुननै (= पसन्द करना) से।

१९. न्ह एव म्ह व्यजन-गुच्छ भाषा मे मिल जाएँगे। इनको न् + ह अथवा म् + ह कहकर दो व्यजनो का योग कहा जाये अथवा महाप्राण व्यजन कहकर इन्हे एक इकाई रूप मे स्वीकार किया जाए, इसका उल्लेख आगे व्यजन-संयोग शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।

अर्धस्वर

२० सस्कृत मे य,र,ल,व ध्वनियो को अन्त स्थ व्यजन कहा गया है। स्पष्ट है कि इनकी स्थिति मध्यवर्ती है, चाहे वर्णमाला मे—स्पर्शोष्मणा अन्तर्मध्ये तिष्ठन्तीत्यन्त स्था , चाहे उच्चारण-प्रयत्न मे—पूर्ण एव ईषत् की तुलना मे 'नेम स्पृष्टा ' कहे गए है और चाहे इस दृष्टि से कि ये भाषा मे कभी स्वर और कभी व्यजन बनकर व्यवहृत होते है; पर यहाँ इनको दो वर्गो मे विभक्त कर दिया गया है।

(i) **अर्धस्वर**—य, व, जो कि व्यजनत्व की अपेक्षा स्वरत्व की मात्रा अधिक रखते है।[१]

(ii) रलयो अभेद के आधार पर **लुण्ठित** एव **पार्श्विक**।

२१ सघोष 'य' के उच्चारण मे जिह्वाग्र कठोर तालु की ओर (अर्थात् जहाँ से अग्र—सवृत्त अथवा अर्धसवृत्त—स्वरो की निष्पत्ति होती है) अग्रसर होती है और तत्काल ही परवर्ती स्वर के उच्चारण-स्थान की ओर घूम जाती है। यही कारण है कि परवर्त्ती स्वर-सयोगो से इसमे उच्चारण-भेद आ जाता है। सघोप 'व' के उच्चारण का स्वरूप भी ऐसा ही है। यह स्थान-विशेष के आधार पर कही द्वयोष्ठीय और कही दन्त्योष्ठीय ठहरता है। इसके उच्चारण मे जिह्वा का पश्च-भाग या तो पश्च—सवृत्त अथवा अर्धसवृत्त स्वर के उच्चारण-स्थान की ओर बढता है और शीघ्र ही परवर्त्ती स्वर की ओर मुड जाता है। इस प्रकार यह भी परवर्ती स्वरसयोगों के अनुसार श्रुति-भेद रखता है।

२२. उपर्युक्त उच्चारण-विधि से स्पष्ट है कि ये ध्वनियाँ अनाक्षरिक स्वर है। सयुक्त स्वरो की चर्चा करते समय इन स्वर-सयोगो का आवश्यक विवरण दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त श्रुति रूप मे भी इन दोनो ध्वनियो की अवस्थितियो की परिगणना इसप्रकार है :—

---

१. i) 'तालु चित्रो से प्रकट होता है कि हिन्दी 'य, व' के उच्चारण में व्यजनात्मक की अपेक्षा स्वरात्मक अश अधिक है।'

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, भारतीय साहित्य, अप्रैल १९५६

ii) In fact y, v behave much more like the vowels than the consonant.

Dr. M Khan
'A phonetic & phonological study of the word in Urdu. Page 9

(i) /अ ... आ/ / गया / = एक शहर
/ हया / = शर्म
/ बया / = एक चिडिया
/ तवा / = लोहे का एक बर्तन
/ पवा / = एक गाँव
/ जवा / = जौ

[व श्रुति ब के रूप में भी विकसित हुई है और ये शब्द तबा और जबा भी हो गए है।]

(ii) /इ अ, आ, ओ, औ ऐ / पश्च स्वरो के साथ ही अधिक स्पष्ट कही जा सकती है।

/ गइया / = गाय
/ भइयौ / = भाई लोगो (सम्बोधन)
/ जइयो / = जाना (बहुवचन)
/ पियत ~ पिअत / = पीता हू
/ पियै ~ पिऐ / = पीए

(iii) /उ अ, आ, औ, ओ, ऐ / आ, औ को छोडकर अन्यत्र स्पष्ट नही कही जा सकती है।

/ कउवा / = कौआ
/ नउवौ / = नाई लोगो (सम्बोधन)
/ कउवन ~ कउअन / = कौओं
/ छुवौ ~ छुऔ / = छुइए
/ छुवै ~ छुऐ / = छुए

(iv) /आ, ओ, ए आ, ऐ/ खाँ-क्षेत्र को छोड़कर अन्यत्र व श्रुति स्पष्ट है जो कि वैकल्पिक ब रूप रखती है, पर खाँ-क्षेत्र मे परवर्त्ती ऐ अनाक्षरिक स्वर बन जाता है, यथा —

/ आवै ~ आबै / (आय—खाँ क्षेत्र) = आए
/ रोवै ~ रोबै / (रोय—खाँ-क्षेत्र) = रोए
/ खेवै ~ खेबै / (खेय—खाँ-क्षेत्र) = खेए
/ आवा-जाई / = आना-जाना
/ सोवा-साई / = सोना आदि काम
/ खेवा-खाई / = खेना आदि काम

(v) / आ औ / खाँ-क्षेत्र मे यह श्रुति सभव है —

/ आऔ ~ आव /=आओ

उपर्युक्त निष्कर्षों को निम्न चार्ट मे इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है —

	अ	आ	इ-ई	उ-ऊ	ए-ऐ	ओ-औ
अ	+	य/व	+	+	+	+
आ	+	व	+	+	* य/व	व
इ-ई	य	य	+	+	य	य
उ-ऊ	व	व	+	+	य	व
ए-ऐ	+	व	+	+	* य, व	+
ओ-औ	+	व	+	+	* य/व	+

कुल सोलह श्रुति-स्थितियाँ है जिनमे य, पाच से, व, सात से तथा य, व चार स्थानो से सम्बन्धित है । तारांकित स्थानीय भिन्नता रखते हैं, य खाँ और व शेष क्षेत्र से सम्बन्धित श्रुति है ।

२१-१ जकचर (juncture) चाहे अल्प हो अथवा विलम्बित, के पश्चात इन ध्वनियो का उच्चारण अधिक ग्राह्य है, यथा

शब्दादि / याद / = स्मरण

/ यार / = दोस्त

/ या ~ जा / = यह

/ वा - बा / = वह

शब्द मध्य / लत यानै / = लात मारना

/ कर वानै / = करवाना

/ कुल यानै / = छेद करना

साथ ही,

शब्दादि (व्यजन पश्चात्)

/ क्यारी / = क्यारी

/ द्वार / = चद्दर

/ क्यौडा / = केवड़ा

अनिवार्य रूप से सर्वत्र इन ध्वनियो के पश्चात्–आ अथवा–औ स्वर ही मिलेंगे, जो कि अपनी विवृत्त-स्थिति के कारण अति मुखर स्वर हैं । कम मुखर स्वर के पश्चात् अति मुखर स्वर व्यवहृत होने पर श्रुति की संभावना अधिक है अतएव य, व श्रुति ध्वनियाँ ही ठहरती है ।

लुण्ठित एवं पार्श्विक

२२ सस्कृत-व्याकरण का 'रलयो अभेद' वाला सूत्र अब भी पुराना नही पडा है। बुन्देली मे शब्दो के र अथवा ल ध्वनि से युक्त वैकल्पिक प्रयोग प्राय मिल जाते है, यथा सोरा ~ सोला = सोलह। व्याकरण-सम्बद्ध पदो मे भी कही र और कही ल का प्रयोग सरलता से मिल रहा है, यथा

फल (सज्ञा)	परन्तु	फर (क्रिया)
दौल्ला = बडी टोकरी	परन्तु	दौरिया = छोटी टोकरी

दोनो की एक साथ चर्चा करने का यह एक कारण है। अन्य कारणो के लिए इनकी उच्चारण-पद्धति देखी जा सकती है —

/ र् / सघोष, वर्त्स्य, लुण्ठित। जिह्वानीक तालु के वर्त्सभाग का स्पर्श करता है। आदि स्थानीय होने पर यह स्पर्श सबल तथा दो या तीन पलोटें लेकर होता है, अन्यत्र स्पर्श सामान्य है, साथ ही पलोटे भी एक या दो ही होती है।

/ ल् / सघोष वर्त्स्य, पार्श्विक। इस ध्वनि के उच्चारण मे जिह्वाग्र तालु का स्पर्श 'इ' स्थान की ओर जाकर करता है, परन्तु जिह्वा के शेष-भाग द्वारा उत्पन्न किए हुए खोखलेपन के पार्श्व भागो से वायु बाहर निकल जाती है।

उत्क्षिप्त ध्वनि ड जिसकी चर्चा विषय-क्रम १२ मे की जा चुकी है, भाषा मे यदा कदा 'र' ध्वनि के साथ वैकल्पिक प्रयोग रखती हुई जान पडती है। यथा ·

करोड ~ करोर
मरोड ~ मरोर
सड ~ सर

अतएव ध्वनिग्रामीय स्थिति पर विचार करने के लिए इस प्रयोग-साम्य पर भी ध्यान रखना होगा।

आदि, मध्य एव अन्त स्थानीय लघुतम शब्द-युग्म इस प्रकार है '—

/र ~ ल/	रार	=	एक चिपचिपा पदार्थ
	लार	=	लार
	भारौ	=	किराया
	भालौ	=	भाला

करौं = कडा
कल्लौ = घडे का नीचे का हिस्सा
बेर = फल-विशेष
बेल = फल-विशेष
/र ~ ड/ तार = तार (wire)
ताड = वृक्ष-विशेष
गारौ = घिसो
गाडौ = गाडो

२२-१ ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्वरमध्यवर्ती र के लोप की प्रवृत्ति भी उल्लेखनीय है। यदि आज की भाषा से पचास वर्ष पूर्व की भाषा की तुलना कर ली जाए, तो उक्त तथ्य की पुष्टि सरलता से हो जायगी।

सर्वनाम मोओ < मोरो = मेरा
तोओ < तोरो = तेरा
तुमाओ < तुम्हारो = तुम्हारा
हमाओ < हमारो = हमारा

संज्ञा चरखाई < चरखारी = एक रियासत का नाम
बसवाई < बसवारी = एक गाँव का नाम
प्याएलाल < प्यारेलाल = व्यक्ति-विशेष का नाम

[लिखित भाषा मे अब भी 'र' का प्रयोग सुरक्षित है]

साए < सारे = अभद्र भाषा मे
गाईं < गारीं = गालियाँ
छिइँयाँ-बुकइँयाँ < छिरियाँ बुकरियाँ = छेरी-बकरी

विशेषण भाई < भारी
काई माटी < कारी माटी = काली मिट्टी

अव्यय अँगाईं-पछाईं < अगारीं-पछारीं = अगाडी-पछाडी

क्रिया भओ धओ रान दे < भरो धरो रहन दे = भरा (हुआ) रखा रहने दो।
दर्रा माएँ चलो आ < दर्रा मारे चला आ = बिना रुके चले आओ
पई रइयो < परी रहियो = पडी रहना
ठाओ रौ < ठारो (ठाड़ो) रौ = खडा रह

संघर्षी

२३ / स् / वर्त्स्य, अघोष, सघर्षी ध्वनि है। इसका प्रयोग शब्द के सभी भागो मे सभव है।

शब्दादि	सत्तू, सात
शब्दान्त	बीस, रास (=राशि)
स्वरमध्यवर्त्ती	किसा, रासौ, हीँसा (=हिस्सा)
द्वित्व	रस्सी, लस्सी

२४. / ह / अलिजिह्वीय सघर्षी ध्वनि है। इस ध्वनि के घोषत्व एव अघोषत्व के सम्बन्ध मे विवाद है। अघोष महाप्राण ध्वनियो के साथ अघोष ह का ही उच्चारण सभव है पर अन्यत्र घोष ह ही उच्चरित होता है। इसके उच्चारण मे स्वरतत्रियाँ झकृत होती रहती है जब कि एक त्रिकोणीय द्वार से वायु सघर्ष करती हुई गुजरती है।[1] ध्वनिग्रामीय स्थिति-स्पष्ट करने वाला आवश्यक शब्द-युग्म इस प्रकार है

सार = गाय-बैल बाँधने की जगह
हार = चरागाह आदि

अधिकाश बुदेली-क्षेत्र से स्वरमध्यवर्ती ह का लोप ऐतिहासिक दृष्टि से पुष्ट है, यथा .

दई < दही (कही-कही धई)
गोऊँ < गोहूँ (=गेहूँ)

तथा शब्दान्त मे अर्धस्वर रूप मे अवशेष उल्लेखनीय है :—

देँय < *देँह <देह
बाँय < बाँह <बाहु
भौँय < *भौँह

खाँ-क्षेत्र मे स्वरमध्य मे भी अर्धस्वर की स्थिति विद्यमान है, यथा :

/ कअत / ~ / कात / = कहत = कहता हूँ
/ दोअनै / ~ / दोनै / = दोहनै = दोहना

---

1 A voiced h can be made For this sound the vocal cords vibrate along a considerable part of their length, while a triangular opening allows the air to escape with some friction
Phonetics in Ancient India by W S. Allen Page 35-36.

व्यंजन-सयोग

[Consonant-Cluster]

२५. सस्कृत एव ऑग्ल भाषा की तुलना मे बुन्देली मे व्यजन-सयोग की प्रवृत्ति अत्यल्प है। पदादि एव पदान्त मे योगनिष्ठ होने वाले व्यजन विरल है, पर पद-मध्य मे इनकी सख्या कम नही कही जा सकती। त्रि-व्यजनात्मक सयोग तो भाषा के लिए अपवाद स्वरूप ही कहे जायेगे, सामान्य प्रवृत्ति तो दो व्यजनो की सयुक्तता ही है। व्यजन-सयोग सम्बन्धी उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार है :—

त्रि-व्यजनात्मक सयोग .

ये पद-मध्यगत सयोग दो अक्षरो मे विभक्त होकर ही प्रयुक्त होते है। व्यजन-क्रम इस प्रकार है

(1) वर्गीय नासिक्य + स्पर्श + अन्त स्थ
 –न्द्र– (-n.dr-) पन्द्रा = पन्द्रह
 –न्त्य–(-n ty-) रुन्त्याई = बेईमानी

(11) स्पर्श + स्पर्श (= द्वित्व) + अन्त स्थ
 –द्द्य–(-d.dy-) जिद्द्याना = जिद्द करना

(111) सघर्षी + स्पर्श + अन्त स्थ (य, व)
 –स्क्य–(-s.ky-) मुस्क्यान = मुसकराहट
 –स्क्व–(-s kv-) मस्क्वानैं = मसकवाना

(1V) पार्श्विक + पार्श्विक + अन्त स्थ (य, व)
 –ल्ल्य–(-l.ly-) दुपल्ल्याऊ = दो पल्लो वाली
 –ल्ल्व–(-l.lv-) चिल्ल्वानै = चिल्लवाना

(v) पार्श्विक + सघर्षी + अत स्थ (य, व)
 –ल्ह्य –(-l hy-) उल्ह्यावनै = उकसाना

द्वि-व्यंजनात्मक संयोग

आदिस्थानीय . ड़, ढ इस सयुक्तता मे भाग नही लेते। साथ ही, य, व को को छोडकर शेष सभी व्यजन पूर्वभाग मे अवस्थित होकर य, व के साथ सयुक्तता ग्रहण करते है। इस प्रकार प्रथम अक्षर का ध्वनि-क्रम क्य्(व्)अ–

[क् = व्यजन, अ = स्वर] रहता है। आक्षरिक परवर्त्ती स्वर भी -आ अथवा -औ ही सभव है।

ग्यास	=	एकादसी
ह्याव	=	ताकत
व्याव	=	विवाह
ख्वार	=	चद्दर

अन्त स्थानीय अन्त-सयुक्तता के व्यजन-क्रम इस प्रकार है

1) द्वित्व य, व, ङ, ह् व्यजन कभी द्वित्व रूप मे प्रयुक्त नही होते। महाप्राण व्यजनो की द्वित्वता मे प्रथम अवयव अल्प प्राण रहता है। इस द्वित्त्व-प्रक्रिया के अन्त मे एक क्षीण वाह्य-श्रुति सुनाई पडती है। [पदान्त मे ह्रस्व एव दीर्घ स्वरो का विरोध (contrast) नही है, ऐसा हम अन्यत्र कह चुके है, इसलिए इस अन्तिम विरोध-विमुक्त ध्वनि को श्रुति-रूप मे ही स्वीकार करते है]

झट्ट	[ɟhaṭ tə]	= शीघ्र
उजड्ड	[uɟad ḍə]	= गँवार
सत्त	[sat tə]	= सचाई

11) नासिक्य + स्पर्श

चण्ट	[can ṭə]	= होशियार
बन्द	[ban.də]	= बन्द
हन्स	[han sə]	= हस

मध्यस्थानीय . इस स्थान के व्यजन-सयोग सयोग की सघनता के आधार पर दो भागो मे विभक्त किए जा सकते है —

अ- जिनके उच्चारण मे व्यजन की तीनो आवश्यकताएँ—स्पर्श, ग्रहण तथा मोचन—की पूर्ति पूर्णत नही हो पाती। इसमे 'द्वित्त्व', वर्गीय नासिक्य + स्पर्श व्यजन तथा किसी पूर्ववर्ती व्यजन के साथ -य,-व के सयोग आते है। इसकी तुलना अन्त-स्थानीय व्यजन-सयोग के साथ की जा सकती है।

ब - जिनके उच्चारण की प्रक्रिया लगभग पूरी हो जाती है, पर कोई मध्ववर्त्ती श्रुति नही सुनाई देती । भाषा के रचनात्मक गठन की दृष्टि से इसके निम्न तीन वर्ग निर्धारित किए जा सकते है । लिपि मे जो प्रचलित वर्ण-सगठन है, वस्तुत वह इसी रचनात्मक गठन का ही अनुकरण करता जान पडता है ।

1) शब्द-वाह्य-सयोग (Interword Consonant Cluster) नाम अथवा कृदन्तीय शब्दावलि की अन्तिम व्यजन ध्वनि के साथ परसर्गीय शब्दावलि के आदि-स्थानीय व्यजन के सयोग की प्रवृत्ति को हमने उक्त सज्ञा दी है । उच्चारण-प्रयत्न तथा मोचन-प्रक्रिया की दृष्टि से यह सयोग नीचे गिनाए हुए अन्य सयोगो से भिन्न नही कहा जा सकता । यथा

	–न् + त–
मन तक	मन् + तक = मन भर तक (शब्द-वाह्य-सयोग)
सुन्तन	सुन् + तन = सुनने मे (अतश्शब्द-सयोग)
	–म् + का
काम कौ	काम् + कौ = काम का (शब्द-वाह्य-सयोग)
झुम्का	झुम् + का = झुमका (अन्य सयोग)

11) अन्तश्शब्द-सयोग (Intraword Consonant Cluster) प्रकृति एव प्रत्यय के सन्धि-स्थल पर उत्पन्न व्यजन-सयोग को उक्त सज्ञा दी गई है । वस्तुत इस तथा उपर्युक्त व्यजन-संयुक्तता मे कोई मध्यवर्त्ती स्वर श्रुति सुनाई नही पडती, साथ ही, पूर्व तथा पर-भागीय व्यजनो के लिए प्रयुक्त उच्चारणीय अवयव अपनी मोचन (release) तथा स्पर्श (obstruction) प्रक्रिया मे भी कोई अन्तर नही लाते । यथा :

चल्नै	—	चलनै	=	चलना
अत्पई	—	अदपई	=	आधा पाव
कर्बो	—	करबो	=	करना
चल्वाव	—	चलवाओ	=	चलवाओ
लत्याव	—	लतयाव	=	लात मारो

iii) अन्य (Miscellaneous) इसके अन्तर्गत देशी-विदेशी, तत्सम-तद्भव आदि उन सभी शब्दो के व्यजन-सयोग आ जाते है, जो बुन्देली रचनात्मक दृष्टि से प्रकृति एव प्रत्यय मे अलग-अलग विभक्त नही होते । यथा ˙

कम्टी = बाँस की पतली छडे
उल्टौ = उल्टा
बस्ती = आबादी
सक्सा = एक शाक
सख्ती = कडाई
लप्टा = बेसन से बना एक खाद्य पदार्थ
मस्काँ = चुपके से
बन्का = छोटा बन
बर्मा = लोहे का हथियार
सीक्चा = खिड़की
बन्गा = लकडी के चीरे
चुस्ती = फुर्ती

[इनमे से कुछ को अन्तश्शब्द-सयोग मे ले जाया जा सकता है ।]

२६. व्यजन स्युक्तता से सम्बन्धिन एक प्रश्न और भी है कि महाप्राण व्यजनो ख घ आदि को एक इकाई के रूप मे स्वीकार किया जाना चाहिए अथवा संयुक्त-व्यजन (यथा क् + ह) रूप मे । वस्तुत भाषा का इतिहास उन्हे मुख > मुँह (क् तत्त्व का लोप) तथा भूख > भूक (ह् तत्त्व का लोप) के उदाहरणो से दो भिन्न ध्वनि-तत्त्वो के रूप मे स्वीकार करता है, पर समसामयिक भाषा का शुद्ध विश्लेपण जिन नियमो से सुस्पष्ट हो, वही रूप स्वीकार किया जाना चाहिए । हम निम्न कारणो से महाप्राण व्यजनो को एक इकाई रूप मे स्वीकार करते है —

1) उच्चारण-प्रयत्न की दृष्टि से दोनो तत्त्वो का एक साथ ही उद्वमन होता है; जबकि सामान्य व्यजन-गुच्छो मे पूर्वापर सम्बन्ध स्पष्ट रहता है ।

ii) महाप्राण व्यजन ध्वनियाँ भाषा के आदि, मध्य तथा अन्त मे उसी प्रकार स्वतत्रता से व्यवहृत होती है, जिस प्रकार महाप्राण रहित व्यजन ध्वनियाँ ।

iii) शब्दादि मे त्रि-व्यजनात्मक गुच्छ नही है अर्थात् क् क् क् अ (cccv) का क्रम नही है, पर यदि इन्हे व्यजन गुच्छ स्वीकार करते है तो केवल इनके लिए ही आक्षरिक वितरण मे अन्तर स्वीकार करना होगा, यथा ख्वार (क्क्क्अ-) = चद्दर

iv) भाषा की धातुओ का अन्त सयुक्त व्यजन मे नही होता फिर महाप्राण ध्वनियो के लिए जो धातु के अन्त मे आती है, यथा √चौख- = चूसना आदि, उक्त नियम को क्यो अपवाद-गर्भित बनाया जाए ।

v) लिपि परम्परा तथा भारतीय वैय्याकरण इन्हे एक इकाई रूप मे ही स्वीकार करते है ।

२७ हमने व्यजन-समूह का वर्गीकरण करते समय न्ह, म्ह, ड़्ह, ल्ह, व्यजनो का एक अलग वर्ग निर्धारित किया है (विषय-क्रम ६) । वस्तुत. इन्हे ख घ आदि की तरह एक इकाई वीकार किया जाना चाहिए अथवा न् + ह' ' का योग । यह प्रश्न यहाँ विचारणीय है ।

हमारी उच्चारण-पद्धति जो कि अक्षर-वितरण के आधार पर स्पष्ट होती है, निश्चित निष्कर्ष नही दे पाती । यथा

i) तुम्हैं— तुम्.हैं = तुमको
कन्हइया—कन् हइ या = कृष्ण

इस प्रकार के उच्चारण का भ्रम तो अवश्य हो जाता है पर यह अक्षर-वितरण उतना स्वाभाविक नही, जितना कि

ii) तुम्है — तु-म्है = तुमको
कन्हइया—क-न्हइ-या = कृष्ण

पर इससे भी कही अधिक स्वाभाविक उच्चारण निम्न प्रकार का है —

iii) तुम्है — तुम्-म्है = तुमको
कन्हइया — कन्-न्हइ-या = कृष्ण

कुछ और उदाहरण दिए जा सकते है

कुल्ल्हड — कुल् ल्हड = मिट्टी का एक छोटा पात्र
चिन्ह — चिन्-न्ह = निशान
करहइया — कर्-र्हइ-या = कढाई

परन्तु भाषा-विश्लेषण और लिपि के वर्ण सगठन की दृष्टि से प्रथम दो वर्गो मे से एक चुनना है। प्रथम के अनुसार दो व्यंजनो के योग तथा द्वितीय के अनुसार ये एक इकाई, महाप्राण व्यजन ठहरते है।

काव्य-शास्त्रीय मात्रा-गणना हमारे द्वितीय कोटि के उच्चारण का समर्थन करती जान पडती है और इस प्रकार हम इन्हे महाप्राण व्यजन स्वीकार कर सकते हैं —

तुम्हइ विचारि कहहु नरनाहा
। ।। ।ऽ। ।।। ।।ऽऽ = १६
पुन्य पुञ्ज तुम्ह पवन कुमारा
ऽ। ऽ। ।। ।।। ।ऽऽ = १६

यदि इन 'म्ह' के 'म्' को पूर्व अक्षर के साथ उच्चारण करे तो उस अक्षर के लिए दीर्घ मात्रा माननी होगी और इस प्रकार चौपाई की १७ मात्राएँ हो जाएँगी जो कि सिद्धान्त के प्रतिकूल होगा।

भाषा मे पाए जाने वाले लघुत्तम शब्द-युग्मो (Minimal pairs) को यदि हम निम्न प्रकार व्यवस्थित करे तो ये महाप्राण व्यजन सिद्ध हो सकते है —

नन्ना = नन्-ना = बडा भाई
नन्हौ = नन्-न्हौ = छोटा
करइया = क-रइ-या = करने वाला
करहइया = क-र्हइ-या = कढाई
उन्हन = उ-न्हन = उन्हो-
उन्हन = उन्-न्हन = कपड़ो-

अक्षर-वितरण

[Syllabication]

२८. वक्ता अपने वक्तव्य-प्रवाह मे कही थोडा और कही अधिक विराम लेता चलता है, यह मोड वह सामान्यत अर्थ की दृष्टि से देता है, पर भाषा मे अनिवार्यत. श्वास-प्रक्रिया पर भी आधारित विराम स्थल होते है। हर श्वासाघात के बाद स्वल्प विराम अनिवार्य है। इस एक श्वासाघात मे भाषण की जितनी ध्वनियाँ सिमट कर इकाई बनाती है, उस इकाई को अक्षर (syllable) कहते है। ये इकाइयाँ प्रत्येक भाषा की अलग-अलग होती है। उनके उच्चारण मे यत्किंचित परिवर्तन होने से चाहे अर्थ मे अन्तर न पडे, पर उन भाषा-भाषियो के बीच वह उच्चारण हास्यास्पद होगा। जैसे, 'दशमलव' शब्द का उच्चारण दश्-म-लव् रूप मे भी कर दिया जाता है, जबकि हिन्दी का विशुद्ध उच्चारण द-शम्-लव् है। रियासत का उच्चारण दो तरह से होता है, यथा, र्या-सत् तथा रि-या-सत्। प्रथम उच्चारण हिन्दी भाषा-भाषियो के लिए सभवत शुद्ध कहा जायगा। इस प्रकार भाषा को सीखने के लिए भाषा-विशेष के अक्षर-वितरण को समझना अनिवार्य है। बुन्देली शब्दो की लघुतम एव वृहत्तम अक्षर-सख्या कितनी है तथा बहु अक्षरीय शब्दो में पाए जाने वाले व्यजन गुच्छ किस प्रकार भिन्न-भिन्न अक्षरो मे वितरित हो जाते है, और, साथ ही, शब्द अथवा पद की सीमाओ के साथ अक्षर की सीमाएँ किस प्रकार सम्बन्धित है, आदि, नियमो का उल्लेख करना यहाँ अभीष्ट है :—

एकाक्षरी शब्द—[अ = स्वर, क् = व्यजन]

i) अ — इस कोटि मे इने गिने सर्वनाम रूप तथा क्रिया-पद आयेंगे। स्वर सदैव दीर्घ ही रहेगा—

आ	तैं आ	= तू आ
ऊ	ऊ आओ	= वह आया

ii) क् अ — इस कोटि की शब्दावलि पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध है। यहाँ भी स्वर दीर्घ ही मिलेगा।

खा	तैं खा	= तू खा
मै	मैं आओ	= मै आया

iii) अ क् : प्रचुर मात्रा मे शब्दावलि विद्यमान है।
आम्, ईं‍ट्, ऊँट, ओस आदि

iv) क् अ क् भाषा की रीढ इसी ध्वनि-क्रम वाली शब्दावलि है। चल्, कर्, रुक् आदि

v) क् क् अ क् अत्यल्प शब्द उपलब्ध हो रहे है। द्वितीय व्यजन अर्धस्वर-य अथवा-व ही प्रयुक्त हुए है।
ख्वार = चादर
प्यार = प्रेम

vi) (क्) अ क् क् सीमित शब्दावलि। (विषय क्रम २५)

द्वि-अक्षरी शब्द—

i) अ-अ — आओ
ii) क् अ-अ — खाओ
iii) अ-क् अ — ईँटा
iv) क् अ-क् अ — चलो
v) क् क् अ-क् अ — क्यारी
vi) क् अ-क् अ क् — चलत्
vii) क् अ क्-क् अ — चल्तो

त्रि-अक्षरी शब्द—

i) क् अ-क् अ-क् अ — गे-ड्-वा = तकिया
ii) क् अ-क् अ-क् अ क् — स-मे-टत् = समेटता है
iii) क् अ-क् अ क्-क् अ — स मेट्-तो = (यदि) समेटता
iv) क् अ क्-क् अ क्-क् अ — सम्-झाव्-तो = (यदि) समझाता
v) क् अ-क् अ क्-क् अ — बु-लाव्-नै = बुलाना
vi) क् अ क्-क् अ-अ क् — लत्-या-उत् = लात मारता है
vii) क् अ क्-क् अ-क् अ — गुन्-ता-डौ = अनुमान
viii) क् अ क्-क् क् अ-अ क् — खुर्-च्वा-उत् = खुरचता है
ix) क् अ क्-क् क् अ क्-क् अ — खुर्-च्वाव्-नै = खुरचवाना

चतुराक्षरी शब्द—

i) क् अ-क् अ क्-क् अ क्-क् अ — स-मझ्-वाव्-नै = समझवाना
ii) अ-क् अ क्-क् अ-अ — ऊ-धम्-या-ऊ = ऊधमयाऊ

इस प्रकार त्रि-अक्षरी तथा चतुराक्षरी शब्द भाषा मे मिल जायेगे, पर पंचमाक्षरी शब्द सभवत कोई न होगा। अक्षर मे ध्वनि-वितरण सम्बन्धी नियम इस प्रकार है :—

१. स्वर-मध्य मे आया हुआ व्यजन परवर्ती स्वर के साथ उच्चरित होता है। यथा

अकल — अ-कल् = बुद्धि
उतै — उ-तै = वहाँ

२. आदि-व्यजन-गुच्छ परवर्ती निकटस्थ स्वर के साथ, अन्त-व्यजन गुच्छ निकटस्थ पूर्ववर्ती स्वर के साथ तथा मध्य-व्यजन-गुच्छ मे प्रथम व्यजन पूर्ववर्ती तथा शेष, परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होगे। यथा .

क्यारी	—क्या-री	क् क् अ-क् अ
उजड्ड	—उ-जड्ड	अ-क् अ क् क्
कल्लू	—कल्-लू	क् अ क्-क् अ
उड्ला	—उड्-ला	अ क्-क् अ
कर्ह्याई	—कर्-ह्या-ई	क् अ क्-क् क् अ-अ
सम्झाव्नै	—सम्-झाव्-नै	क् अ क्-क् अ क्-क् अ
समझ्वाव्नै	—स-मझ्-वाव्-नै	क् अ-क् अ क्-क् अ क्-क् अ

३ शब्द के आदि मे जिस प्रकार की ध्वनियाँ प्रयुक्त होती है, वैसा ही क्रम अक्षर के आदि मे भी सभव है। यथा

i) ड (ढ) से शब्दारभ नही होता।
ii) क् क् मे द्वितीय व्यजन अनिवार्यतः अर्धस्वर होगा।

४. पदाश (morpheme) की सीमा से अक्षर की सीमा मेल खाए, यह आवश्यक नही, पर मेल खाने मे कोई बाधा नही।

सम्झो = समझ् + ओ (पदांश-सीमा)
= सम् + झो (अक्षर-सीमा)
चल्ता = चल् + ता (पदाश-सीमा)
= चल् + ता (अक्षर-सीमा)

५. शब्द-सीमा से अक्षर की सीमा अवश्य मेल खाती है, पर यह आवश्यक नही है कि अक्षर की सीमा से शब्द की सीमा भी मेल खाए।

शब्द-संगम

[Word Juncture]

२९. अक्षर-सीमा को स्पष्ट करते हुए दो प्रकार के विराम-स्थलो की ओर सकेत किया गया है । एक तो, हमारी उच्चारण प्रक्रिया का स्वाभाविक अग है, जिसे अक्षर-सीमा कहा गया है, दूसरे, अर्थ को ध्यान मे रखकर भी वक्ता अपने वक्तव्य-प्रवाह मे यथावश्यक विराम लेता चलता है, इसी को हम 'सगम' (juncture) की सज्ञा दे रहे है । यथा हिन्दी—-

किस्सा = कहानी
किस + सा = किसके समान

दोनो के उच्चारण मे सामान्यत अन्तर नही है, पर पढे-लिखे व्यक्ति 'किस-सा' अलग-अलग लिखे जाने के कारण अवश्य विराम लेते हुए उच्चारण करते पाये जायेगे । पर, उच्चारण समान होते हुए भी अलग-अलग लिखे जाने का कारण भी दोनो का अर्थ-वैभिन्य ही है । इस प्रकार उच्चारण द्वारा सुस्पष्ट न होते हुए भी हमे इस विराम को परिकल्पित करना पड़ता है । यह सदैव अक्षर की सीमा से पूरी तौर से मेल खाता है । समूची भाषा के लिए इस सगम के दो-चार भेदो की परिकल्पना करनी पड सकती है । हम शब्द-स्तर पर दो सगम (juncture) अनिवार्य समझते है —

i) प्रत्यय-सगम (Morphemic juncture)
ii) शब्द -सगम (Word juncture)

प्रत्यम-सगम ध्वनिग्राम-सख्या (Inventory of Phonemes) को घटाने मे सहायक होता है । यथा .

/कु + डौल/ = /कुडौल/, ड एव ड भाषा मे परिपूरक-स्थिति मे प्रयुक्त होते है । यहा ड स्वरमध्य मे स्थित है जो कि भाषा के लिए अपवाद है (विषयक्रम-१२) । अतएव अर्थ को ध्यान मे रखते हुए पूर्व-शब्द-खण्ड 'कु' को प्रत्यय-सगम द्वारा अलग करके शब्द का आरंभ 'डौल' से मान सकते है ।

/कलमैं/ (= कलम का बहुवचन) तथा /कल + मै/ (= आराम मे) शब्दो

मे प्रथम का ल् निर्मुक्त (unreleased) तथा द्वितीय का, विमुक्त (released) है। इस प्रकार दो ल ध्वनिग्राम होगे और यदि सगम-सीमा की परिकल्पना (postulation) कर ली जाती है तो एक ध्वनिग्राम से ही काम चलाया जा सकता है। यह प्रवृत्ति केवल इसी व्यजन-ध्वनि के साथ नही है, अपितु अन्य स्वर तथा व्यजन भी उदाहरण रूप मे प्रस्तुत किए जा सकते है।

/चुन्नै/ (=चुन्ना को) तथा /चुन + नै/ (=चुनना) मे भी ध्वनि-निर्मुक्त तथा विमुक्ति का प्रश्न है। इसलिए यहाँ द्वितीय मे भी सगम-स्थिति स्वीकार की जा सकती है।

शब्द-सगम, योगरूढ समस्त पदो की दो स्वतन्त्र पदो से अर्थ-भिन्नता दिखलाने के लिए प्रयुक्त होता है। यथा, हिन्दी /करुनानाथ/ (=दीनो के मालिक अर्थात् ईश्वर) से /करुना + नाथ/ (=करुना नाम की लडकी, जो अपना उपनाम 'नाथ' अपने सम्प्रदाय के आधार पर जोडे हुए है)। बुन्देली मे भी इस प्रकार के प्रयोग मिल जायेगे। यथा

/रामपरसाद/ (=व्यक्ति-विशेष का नाम)
/राम + परसाद/ (=राम के प्रसाद से)

/पन्नालाल/ (=व्यक्ति-विशेष का नाम)
/पन्ना + लाल/ (=पन्ना लाल रग का है)

पद विचार

संज्ञा

१. लिग-वचन-कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करने के लिये बुन्देली सज्ञाएँ यत्किवित् रूप-परिवर्तन करती है। उन सबकी चर्चा इस अध्याय का विषय है, परन्तु इसके पूर्व सज्ञाओ के प्रातिपदिक-रूपो (प्रति-पद मे पाए जाने वाले समान-अशो) का निर्धारण आवश्यक है। इस प्रकार सज्ञा-पद-रचना से सम्बन्धित चार बातो --- प्रातिपदिक अश, लिंग तथा वचन-विधान और कारक-प्रक्रिया -- पर नीचे विचार किया जा रहा है।

प्रातिपदिक अंश

२. लिग, वचन तथा कारक-विभक्ति-प्रत्ययो से संयुक्त बुन्देली सज्ञा-पदो मे से प्रातिपदिक अश निकाल लेना निर्विवाद नही कहा जा सकता, यथा—

पु० एक०	स्त्री० एक०	स्त्री० बहु०	पु०बहु०
मौड्–ा	मौड्–ी	मौड्–ीँ	मौड्–ा
हिन्न्–ा	हिन्न्–ी	हिन्न्–ीँ	हिन्न्–ा
पन्ह्–ा	पन्ह्–इया	पन्ह्–इयाँ	पन्ह्–ाँ

उपर्युक्त तथा अन्यान्य ऐसे ही उदाहरणो के आधार पर यदि निश्चित किया जाए कि --आ पुल्लिग,–ई(+ या) स्त्रीलिग तथा स्वर-अनुनासिकता –ँ बहुवचन के विभक्ति-प्रत्यय है तो प्रातिपदिक अश मौड्, हिन्न्, पन्ह् ठहरते है, परन्तु इनको इस नये रूप मे स्वीकार करने मे दो बाते सामने आती है —

i) उपहृत-अश भाषा मे कही स्वतन्त्र शब्द के रूप मे प्रयुक्त नही होते।

ii) उपहृताश कही सानुनासिक, कही निरनुनासिक स्वर, कही एकाकी, कही द्वित्व व्यजन, साराशत अनेक ध्वनि-रूपो मे अन्त होने वाले है; यथा—

सु–आ		=सुआ
कुँ–आ		=कुआ
पान्–ई		=पानी
पन्ह्–आ	—पन्हा	=जूता
पत्–औ	—पतौ	=पता
पत्त्–आ	—पत्ता	=पत्ता

फलस्वरूप प्राप्त प्रातिपदिक-रूपो को पद-रचना की दृष्टि से वर्गीकृत करना असम्भव हो जायेगा। साथ ही,

iii) भाषा मे श्लेषार्थी (homonymic) अशो की प्रचुरता हो जायेगी, जैसे—

पेड्–औ = पेड	सार्–औ	= साला
पेड–आ = पेडा	सार्	= गाय-बैलो को बाँधने का कमरा या घर
तार्–औ = ताला		
तार् = तार		

उपर्युक्त विधि के अनुसार प्रातिपदिक अशो (Base forms) को निर्धारित करना अव्यवहारिक होगा। अतएव पुल्लिग हो अथवा स्त्रीलिग, कर्त्ता एकवचन का सज्ञा-पद प्रातिपदिक-रूप मे स्वीकार करना होगा अर्थात् उपर्युक्त उदाहरणो मे बुन्देली संज्ञाओ के प्रातिपदिक-रूप होगे—मौडा-मौडी, हिन्ना-हिन्नी, पन्हा-पन्हइया तथा पेड-पेडा, तारौ--तार, सारौ-सार, आदि।

३. यहाँ एक बात का और निर्णय करते चलना अप्रासागिक न होगा। मौडा, हिन्ना, पन्हा आदि मे यदि –आ पु०–प्रत्यय है तो सारौ, भतीजौ, गाडौ मे–औ कौन-सा प्रत्यय होगा क्योकि –इ(+ या),–आ तथा –औ, दोनो ही से स्त्री-प्रत्यय के रूप मे सुसम्बद्ध है यथा सारी, भतीजी, गाडी आदि। बुन्देली भाषा का इतिहास इस बात का साक्षी है कि यह –औ संस्कृत के –क· (यथा श्यालक >सारौ) का विकसित रूप है, जोकि लिंग-वचन एवं कर्त्ता का सम्मिलित विभक्ति-प्रत्यय है। यह प्रत्यय इस रूप मे न केवल सज्ञा-पदो के सयोग मे मिलता है अपितु विशेषण, सर्वनाम तथा कृदन्त-रूपो मे भी पर्याप्त मात्रा मे उपस्थित है। इस प्रकार भाषा-विश्लेषण तथा भाषा-इतिहास दोनो ही दृष्टियो से यह –औ प्रत्यय तीनो – लिग-वचन तथा कारक –का सम्मिलित विभक्ति-प्रत्यय है, और–आ प्रत्यय जोकि अन्यत्र भाषा मे प–

प्रत्यय के रूप मे अतिव्यवहृत है, वहाँ भी एकमात्र पु० प्रत्यय ही स्वीकार किया जाना चाहिये। इसके अन्य उदाहरण इस प्रकार है—

पु०	स्त्री०	
चुट्टा	चुट्टू	= चोरी करने वाला (वाली)
खब्बा	खब्बू	= अधिक खाने वाला (वाली)
उचक्का	उचक्कू	= शैतानी करके भागने वाला (वाली)
ललत्ता	ललत्तू	=और खाने की लालसा रखने वाला (वाली)

भाषा-इतिहास की दृष्टि मे इस निष्कर्ष मे कठिनाई हो सकती है पर भाषा-विश्लेषण सुविधाजनक होगा।

४ ऊपर निश्चित किया गया है कि सज्ञाओ का कर्त्ता, एकवचन वाला रूप ही प्रातिपदिक अश है। इस प्रकार बुन्देली मे प्रातिपदिको के निम्न प्रकार सम्भव है—

i) व्यजनान्त —घर, बार (=बाल) आदि पुल्लिग तथा बात, लात आदि स्त्रीलिग शब्द इसी वर्ग के अन्तर्गत रखे जाएँगे (ध्वनिविचार ४–१.)। वस्तुत बुन्देली की अधिकाधिक शब्दावलि इसी के अन्तर्गत सिमट जाएगी।

ii) आकारान्त—इस कोटि के अन्तर्गत –आ और –इया मे अन्त होने वाले शब्द लिये जा सकते है, यथा दद्दा, कक्का, मौडा, घूका (पु०), चिरइया, बिलइया, घुकइया, दौरिया (स्त्री०)

iii) ईकारान्त— इस कोटि के अन्तर्गत पर्याप्त शब्दावलि आ जाती है, यथा बाई (=माँ) लुगाई (=स्त्री), दवाई (=दवा) आदि स्त्री० तथा धोबी, हाथी पु०। इकारान्त शब्दो का बुन्देली मे सर्वथा अभाव है। जहाँ-कही कुछ सस्कृत शब्दावलि ह्रस्वरूप मे लिखी मिल जाती है, वहाँ भी उच्चारण मे दीर्घ रूप ही उपलब्ध होता है, यथा शान्ती (शान्ति), कान्ती (कान्ति), हरी (हरि), पती (पति), मती (मति) और कभी-कभी जात (जाति), पाँत (पाँति)।

iv) ऊकारान्त—बिन्नू (=बहिन), गऊ (=गाय), नाऊ (=नाई) दाऊ आदि प्रचुर शब्द मिल जाएँगे। ह्रस्वान्त शब्दो के सम्बन्ध मे यहाँ भी दुहराया जा सकता है कि सस्कृत-ग्रहीत उकारान्त शब्द दीर्घ-रूप मे ही उच्चरित होते है। यथा साधू, प्रभू, (पिरभू) आदि, साथ ही, कभी-कभी साव (=साहु), असाध (=असाधु)।

v) एकारान्त—इनेगिने शब्द ही मिल सकेगे, यथा · दुबे, चौबे आदि।

vi) ऐकारान्त—इस कोटि मे भी शब्दो की कमी है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है कै (=उल्टी), जै (=जय), तै (=तय)

vii) ओकारान्त–अत्यल्प शब्द उपलब्ध है। भओ (=जन्म), यथा बा भओ करन गई = वह जन्म देने गई। चोओ (=धुली दाल का छिलका), खाबो, पीबो आदि क्रियामूलक सज्ञाएँ, मोओ, तोओ आदि कतिपय सर्वनाम तथा को परसर्ग भी इसी के अन्तर्गत आएँगे।

viii) ओ/औकारान्त—इस विभाजन के लिए परिशिष्ट मे दिया हुआ भाषा-मानचित्र भी दृष्टव्य है।

तारो ~ तारौ (=ताला), गोडो ~ गोडौ (=पैर),
दोरो ~ दोरौ (=द्वार), चौंपौ(=चौपाया),
माथौ (=मस्तक)

४-१. यहाँ यह निर्देश अनावश्यक न होगा कि कुछ शब्द एक ही क्षेत्र मे द्विविध प्रातिपदिक (Base) रखते है, वस्तुत इस प्रवृत्ति का प्रधान कारण परिनिष्ठित हिन्दी का व्यापक प्रभाव है। जैसे

घामौ ~ घाम (=धूप)
पतौ ~ पता
पेडौ ~ पेड
मौडौ ~ मौडा
बनियौ ~ बनिया
बैला ~ बैलवा

लिंग-विधान

५ पद-रचना की दृष्टि से बुन्देली-सज्ञाओ को, चाहे वे जड का बोध कराने वाली हो, चाहे चेतन का, दो वर्गो मे विभाजित करके देखा गया है—पुल्लिग एव स्त्रीलिग । नपुसक लिग के अभाव मे जड वस्तुओं को उपर्युक्त दो मे से किसी एक वर्ग के अन्तर्गत रखकर पद-रचना होती है अतएव भाषा की लिग-प्रक्रिया प्राकृतिक लिग पर आधारित नही कही जा सकती, वह व्याकरणिक ही अधिक है। वस्तुत: वचन एव कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करने वाले विभक्ति-प्रत्ययो की दो कोटियाँ है । एक कोटि, एक प्रकार के शब्दो मे जुडती है जिसे पुल्लिग सज्ञा कह देते है और दूसरी, दूसरे प्रकार के शब्दो मे, जिसे स्त्रीलिग सज्ञाएँ कहा जा सकता है । परन्तु जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि ऐतिहासिक विकास के कारण इन विभक्ति-प्रत्ययो को सज्ञा-पदो से सर्वत्र निकाल पाना सम्भव नही है। कर्त्ता, एकवचन के रूपो को ही प्रातिपदिक अश स्वीकार कर लिया गया है । इसलिए इन बदली हुई स्थितियो मे हम शब्दो के रचना-तत्त्वो के अनुसार (morphologically) लिग के सम्बन्ध मे सुनिश्चित व्याकरणिक नियम नही दे सकते । लिग-निर्णय के लिये तो अधिकाश स्थानो पर शब्दो के प्रयोग (syntactically) पर ही ध्यान देना पडता है । अतएव यहाँ बुन्देली सज्ञाओ के लिग-विधान से सम्बन्धित दोनो विधाओ—शब्द-रूप एव शब्द-प्रयोग—का स्पष्टीकरण आवश्यक है ।

शब्द-रूप

i) ओ/औ मे अन्त होने वाली सम्भवत सभी संज्ञाए पुंल्लिग ठहरती है --

छैरो	= छाया (हिन्दी प्रतिरूप)
पहरौ ~ पारौ	= चौकीदारी
घामौ ~ घाम	= धूप
धोकौ	= धोखा

ii) ईकारान्त सज्ञाएँ अधिकाशत: स्त्री० होती है । धोबी, कोरी जोशी आदि पेशेवर जातियो की द्योतक शब्दावलि अपवाद ठहरती है ।

दवाई = दवा
उघन्नी = ताली
लुगाई = स्त्री
करह्याई = कमर
राही = आराम (फारसी राहत)

111)–आ (–वा) कारान्त सज्ञाएँ अधिकाशत पुल्लिग ही है और -इया-कारान्त स्त्रीलिग .

पु० घुडवा = घोडा
बैला ~ बैलवा = बैल
चिरवा = नर-चिडिया
बिलरा = नर-बिल्ली
करह्या = कमर
कुँआ = कुआ
पुआ = मीठी-पूडी

स्त्री० घुडिया, गइया, चिरइया, बिलइया,
कुइया (=छोटा कुआ) टुइयाँ (=मैना) आदि ।

1V)–ऊकारान्त सज्ञाएँ स्त्री० तथा पुल्लिग दोनो ही कोटियो मे समान रूप से मिलेगी, यथा

स्त्री० बिन्नू = बहिन
चक्कू = चाकू
बिच्छू = बिच्छू
खब्बू = अधिक खाने वाली

पुं० नाऊ = नाई
डाँकू = डाकू
दाऊ = बडा भाई
सावजू = साहु + जू

नियमो की सख्या जितनी ही आगे बढाई जाएगी उतने ही अपवाद सामने आएँगे । तथ्य तो यह है कि बुन्देली-सज्ञाओ का लिग-निर्णय शब्द-प्रयोग से ही सम्भव है । अतएव नीचे उसी को स्पष्ट किया जा रहा है ।

शब्द-प्रयोग

अन्यान्य प्रकार के विशेषण-रूप—कृदन्तीय, सार्वनामीय, परसर्गीय—अपने विभक्ति-प्रत्ययो द्वारा अनिर्णीत शब्दो मे लिग का निश्चय कराते है। कुछ ऐसे स्थल इस प्रकार है —

दो समानार्थी शब्द—ठौर, जघा (=जगह)

बौ ठौर अच्छो है। (पु०)
बा जघा अच्छी है। (स्त्री०) } = वह स्थान अच्छा है।

दो समान वाहन—बस, मोटर

बस आ पौची। (स्त्री०)
मोटर आ पौचो। (पु०) } = मोटर आ पहुँचा।

सम-ध्वन्यान्त शब्द—(देशी तथा विदेशी)

कलफ (= माँडी), अलफ (= विपत्ति)
कमीच कौ कलफ (पु०) = कमीज की माँडी
ऊ की अलफ (स्त्री०) = उसकी विपत्ति
हॉत (= हाथ), पॉत (= पक्ति)
ऊ कौ हॉत (पु०) = उसका हाथ
ऊ की पॉत (स्त्री०) = उसकी पक्ति

श्लेषार्थी शब्द —बार

कित्ती बार = कितनी दफा
मूँड के बार = सिर के बाल
सोर हो रओ = शोर हो रहा है।
सोर उठ गई = सूतिका दिवस पूरा हो गया।

लगभग समान-वस्तु द्योतक शब्दावली—

चाँउर अच्छे है = चावल अच्छे है
दार अच्छी है = दाल अच्छी है

परन्तु

अच्छौ दार-भात = अच्छे बने हुए दाल-चावल
अच्छी खिचरी = अच्छा बना हुआ दाल और चावल का मिश्रित खाद्य

नर-मादा-समूह द्योतक शब्दावली —

नार निकल गई = पशुओ का झुण्ड
लें ड की लें ड ठाँडी = पक्ति की पक्ति खडी है
भीर जुरी
हजम्मौ जुरो } = भीड इकट्ठी है ।

साराशत यह कहा जा सकता है कि लिग-निर्णय के लिये शब्द-रूप पर नही, अपितु शब्द-प्रयोग पर विश्वास किया जाना चाहिये । ऐसे भी प्रयोग प्राय सुनने मे आते है जहाँ सज्ञा का भिन्न स्त्रीलिग शब्द-रूप होते हुए भी पु० शब्द का प्रयोग कर दिया जाता है और उत्पन्न होने वाले भ्रमनिवारण के लिये पूर्वापर भाग मे कही स्त्रीलिग विशेषण रखकर काम चला लिया जाता है । यथा—

अहीर, चमार, बसोर आदि पु० शब्दो के स्त्री० रूप क्रमश अहीरिन, बसोरिन, चमारिन लोक-प्रसिद्ध है परन्तु,

दई की खाई अहीरै (=दही खाई हुई अर्थात् पुष्ट अहीरिनै)
बा बसोर झारन गई = वह बसोरिन झाडने गई
बा चमार पीसन आई = वह चमारिन पीसने आई

वचन-विधान

६. बुन्देली सज्ञाएँ वचन-विधान की दृष्टि से दो रूप रखती है । एक रूप, वस्तु के एकत्व का बोधक होता है और दूसरा, एक से अधिकत्व का । इन्ही को क्रम से सज्ञा का एकवचन और बहुवचन रूप कहा जाता है । वस्तुत' जैसा ऊपर कहा जा चुका है, सज्ञा-पदो मे पाये जाने वाले वचन के विभक्ति-प्रत्ययो को कारक-सम्बन्धो के द्योतक विभक्ति-प्रत्ययो से अलग करके नही देखा जा सकता । इसलिए इन विभक्ति-प्रत्ययो को सामूहिक रूप से पद-रचना के प्रकारो (Declentional Types) के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है । यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वचन-प्रक्रिया की इस सश्लिष्ट (synthetic)

विधा के अतिरिक्त एक विश्लिष्ट (analytical) विधा भी है[१]। अर्थात् इन सज्ञाओ मे यत्र-तत्र कही अनिवार्य और कही वैकल्पिक रूप से स्वतत्र शब्दो के योग से अनेकत्व का बोध करा दिया जाता है। यह बहुवचन-द्योतक शब्दावलि इस प्रकार है—लोग, -और-, -हर-, -सब जन-। ये शब्द सर्वनाम-रूपो मे विशेष रूप से तथा सज्ञा शब्दो मे यदा-कदा लगते है,

यथा—— तुम लोग — औरै अइयो = माँ आदि आएँगी।
बाई हरैं आहैं = तुम लोग आना

कारक-विधान

७ 'ए बेसिक ग्रामर ऑव मॉडर्न हिन्दी' (A Basic Grammar of Modern Hindi) के रचयिता ने कारक की जो परिभाषा दी है वह आधुनिक आर्य-भाषाओ के लिये अधिक समीचीन कही जा सकती है। कारक, सज्ञा (अथवा सर्वनाम) का वह रूप है जो कि वाक्य के किसी अन्य शब्द से अपना सम्बन्ध प्रकट करे। वस्तुत इन सज्ञा-रूपो के द्वारा जो सम्बन्ध स्पष्ट किये जाते है, वे तो अनेक है और अनेक प्रकार के है। जैसे, कर्त्ता-कृतित्व का, साधन -साध्य का, सम्बन्ध-सम्बन्धी का, अधिकार-अधिकारी का, आधार-आधेय का, आदि, परन्तु हिन्दी तथा उसकी क्षेत्रीय बोलियो मे किसी भी सज्ञा के किसी एक वचन मे दो या तीन से अधिक रूप देखने मे नही आते। इसलिये बुन्देली मे दो या अधिक से अधिक तीन कारक ही कहे जा सकते है।

मूल रूप—सज्ञा का यह वह रूप है जिसे हमने ऊपर प्रातिपदिक रूप मे स्वीकार किया है, यथावत् रह कर ही यह कुछ कारक सम्बन्धो को (जैसे कर्त्ता, कर्म) स्पष्ट करने मे पूर्ण समर्थ है, इसलिए इसे मूल रूप या मूल कारक कहा जा सकता है। उदाहरणत:

पेडौ गिर परो = पेड गिर पडा (कर्त्ता)
पेडौ गिरा देव = पेड गिरा दो (कर्म)

---

१. Synthetic (सश्लिष्ट) को Morphological (पदात्मक) और Analytical (विश्लिष्ट) को Syntectical (वाक्यात्मक) न कह सकेंगे। क्योकि ये तत्त्व अभिधार्थी (शब्द) नही रह गए है और न अभी व्याकरणार्थी (प्रत्यय) बन पाए है।

पानी बहत = पानी बहता है (कर्त्ता)
पानी ल्याव = पानी लाओ (कर्म)

भाषा-इतिहास के विद्यार्थी को यह न भूल जाना चाहिये कि ये मूल रूप बुन्देली प्रातिपदिक निर्णय की दृष्टि से है, वस्तुत इन मूल रूपो मे सस्कृत-युग के विभक्ति-प्रत्ययो के अवशेष सजीव है और उन्ही की शक्ति पर ये रूप अपने कर्त्ता और कर्म के सम्बन्धो को स्पष्ट कर रहे है।

विकारी रूप—सज्ञाओ के ये वे रूप है जो मूल रूप अथवा प्रातिपदिक रूपो की तुलना मे कुछ परिवर्तित जान पडते है। परिवर्तन की इसी प्रवृत्ति को लक्षित करके इनको 'विकारी' रूप की सज्ञा दी गई है। वस्तुत इन रूपो मे भी सस्कृत के कतिपय अन्य विभक्ति-प्रत्ययो के अवशेष उपस्थित है जिनके प्रभाव से ये रूप मूल रूपो से भिन्न हो गये है। दूसरे, अब उन विभक्ति-प्रत्ययो मे कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करने की शक्ति न रह गई थी। फलस्वरूप इन रूपो ने कुछ परसर्गीय शब्दो—नै, खौ, सै आदि के योग से विभिन्न कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करने की प्रवृत्ति अपनाई है, यथा

मोड्-आ नै मारो तो (-आ + नै) = लडके ने मारा था
गोड्-ए खौ सैक डारौ (-ए + खौ) = पैर को सेंक डालो
बातन सै का होतो (-न + सै) = बातो से क्या होता

इस स्पष्टीकरण के पश्चात् अब हम यह कहने की स्थिति मे है कि सज्ञा के मूल रूपो को, सश्लिष्ट और विकारी रूपो को, विश्लिष्ट कारक कहा जाए। सश्लिष्ट, जिसमे कारक-सम्ब्रन्धो को स्पष्ट करने वाले तत्व जुडे हुए है और विश्लिष्ट, जिनमे ये तत्त्व परसर्गीय रूप मे अलग से जोडने पडते है।

सम्बोधन रूप—मानवी कोटि की सज्ञाओ के एक तीसरे रूप देखने मे आते है।

लडकौ इतै अइयो = लडको! इधर आओ।

यह दूसरी बात है कि लाक्षणिक रूप मे निम्न प्रकार के प्रयोग भी सुनाई पड़ जाएँ —

ए घुडओ! कितै हुदरत फिरत = ए घोडो! **कहाँ** कूदते-फिरते हो (लड़को को सम्बोधित करते हुए)

साथ ही, यह भी उल्लेखनीय है कि एकवचन के रूप विकारी रूपो से भिन्न नही है, बहुवचन मे अवश्य सर्वत्र -औ जुडा मिलेगा ।

	एक०	बहु०
पुल्लिग	मौडा	मौडौ
स्त्रीलिंग	मौडी	मौडियौ

७-१ भाषा मे सज्ञाओ के एक प्रकार के रूप और उपलब्ध हो रहे है जो कि प्रातिपदिक रूपो की तुलना मे अवश्य ही 'विकारी' कहलायेगे परन्तु कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करने के लिए वे सश्लिष्ट-योजना अपनाए हुए है, यथा

कर्म तथा संप्रदान

एक०	गोडै सेक डारौ	= पैर सेक लो
	पेडै सीच आव	= पेड को सीँच आओ
	मौडै सुबा देव	= लडके को सुला दो
	(मोहै) कामै जानै	= मुझे काम पर (=के लिए) जाना है ।
	(मोहै) रामै भजनै	= मुझे राम का भजन करना है

अपादान

बहु०	भूखन मरो	= भूख से मर गया

कर्म तथा अधिकरण

एक०	ऊ घरै है	= वह घर मे है
	गामैं गओ	= गाव (को) गया
	रातै आओ	= रात मे (को) आया
	मेलै जइयो	= मेले मे (को) जाना
बहु०	हमैं कालकन जानै	= हमको कालका देवी के मन्दिर मे जाना है ।
	बद्रीनाथन चलौ	= तीर्थ बद्रीनाथ चलो
	मरघटन गओ	= मरघट ले जाया गया
	रातन जगो	= रातो जागता रहा

उदाहरणो की उपलब्धि तो किसी भी सीमा तक हो सकती है परन्तु इनमे कर्म-कारकीय सम्बन्ध ही विशेष रूप से सजीव है । अन्य सम्बन्ध

ऐतिहासिक अपवाद ही कहे जाएँगे। स्पष्टत ये रूप विकारी है। साथ ही, इसमे भी सदेह नही कि ये सश्लिष्ट कारक ही है। वस्तुत ये रूप मध्य-स्थिति मे है। भाषा की गति से सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्लिष्ट कारक प्रयोगो की बाढ इन रूपो को शीघ्र ही समाप्त कर देगी। एकवचन रूपो के वैकल्पिक प्रयोग अनायास मिल जाते है, यथा—

गोडै सेक डारौ ~ गोडे खाँ सेक डारौ
पेडै सीच आव ~ पेड़े खाँ सीच आव
मौडै सुबा देव ~ मौडा खाँ सुबा देव
कामै जानै ~ काम के नानै जानै
घरै चोर घुसो ~ घर मैं चोर घुसो

पद-रचना के प्रकार
(Declentional Types)

८. लिंग विधान की दृष्टि से बुन्देली-सज्ञाओ को दो वर्गो मे विभाजित करके देखा गया था—पुल्लिग एव स्त्रीलिग। इन दोनो के पद-रचनात्मक विभक्ति-प्रत्यय भी अलग अलग है, अतएव पद-रचना के भी दो प्रकार अति स्पष्ट हो जाते है—

प्रथम— इसके अन्तर्गत सभी पुल्लिग सज्ञाए आ जाती है। इसके भी दो उपविभाग किये जा सकते है। एक विभाग का प्रतिनिधित्व करने वाला सज्ञा शब्द है—पेडौ तथा दूसरे का,--घर।

द्वितीय—इसके अन्तर्गत सभी स्त्रीलिग-बोधिनी सज्ञाए आ जाती हैं। इन सज्ञाओ को भी रचनात्मक प्रत्ययो की भिन्नता के आधार पर दो भागो मे बाँटा जा सकता है। एक भाग का प्रतिनिधित्व करेगी—बात और दूसरी का,—मौड़ी। इस प्रकार कुल चार वर्ग हुए।

८-१. वर्गीकृत सज्ञाओ के प्रतिनिधि इस प्रकार है

पेड़ौ / पेड़ो वर्ग

	एक०	बहु०
मूल रूप (सश्लिष्ट)	पेडौ	पेड़े
वि० रूप (विश्लिष्ट)	पेड़े	पेड़ेन

इस वर्ग के अन्तर्गत वे सभी संज्ञाए आ जाती है जो कि सानुनासिक या निरनुनासिक –ओ अथवा–औ (–व) मे अन्त होने वाली है, यथा .

i) गोडौ (=पैर), तारौ (=ताला), दोरौ (=दरवाजा), गरौ (=गला), माथौ (=मस्तक), चौपौ (=चौपाया), कौंडौ (=चौपाल का अग्नि-स्थान), चारौ (=चारा) गाड़ौ (=बडी गाडी), आदि। अपवाद, मौ (=मुह) घर-वर्ग की तरह

ii) सिरोपाव (सिर + पाग), चलाव, बधाव आदि। अपवाद, व्याव (= विवाह) घर वर्ग की तरह

टिप्पणी — विकारी बहु० प्रत्यय -एन के साथ -अन भी यदा-कदा मिल जायगा। इसका कारण -अन प्रत्यय का बाहुल्य हो सकता है पर जहाँ श्लेषार्थी शब्द है वहाँ सतर्कता स्वाभाविक है। यथा

तारन (तार का बहु०)
तारेन (तारौ का बहु०)
पेडन (पेडा का बहु०)
पेडेन (पेडौ का बहु०)

८-२.

घर वर्ग

	एक०	बहु०
मूल रूप (सश्लिष्ट)	घर	घर
वि० रूप (विश्लिष्ट)	घर	घरन

इस वर्ग के अन्तर्गत शेष सभी पुल्लिग सज्ञाए आ जाती है। अपवाद रूप मे कुछ सज्ञाए है जिनको 'दद्दा वर्ग' मे रखकर स्पष्ट किया गया है—

i) साँप, बार (=बाल), दाँत, हाँत (=हाथ),

ii) -आ (-या, -वा) मे अन्त होने वाले, उन्हाँ (=कपडा), लत्ता (=फटा कपडा), कुत्ता, पुआ (=मीठी पूडी) सुआ (=तोता), जवा (जौ), घुडवा, कुदवा (=कोदौ), गेड़ुवा (=तकिया) धुबिया, कुरिया, मलिया आदि।

iii) -ई, -ऊ मे अन्त होने वाली—धोबी, कोरी, माली, नाऊ, डाँकू, साधू, बारू (=बालू)

iv) -ए मे अंत होने वाली सज्ञाए—चौबे, दुबे,

८-३ निम्न व्यजनान्त वर्ग के अन्तर्गत अधिकाश स्त्रीलिग सज्ञाएं आ जाती है।

बात वर्ग

	एक०	बहु०
मूल रूप (सश्लिष्ट)	बात	बातै
वि० रूप (विश्लिष्ट)	बात	बातन

i) सामान्य—जामुन, बइयर (=औरत) रात, चीज, लात, दार (=दाल) आदि।

ii) स्त्री-प्रत्यय -इन मे अन्त होने वाली—मालिन, कोरिन, चमारिन, गडरिन, जोशिन आदि।

८-४ शेष सभी स्त्रीलिग सज्ञाओ की पद-रचना निम्न प्रकार होगी।

मौडी (=लड़की) वर्ग

	एक०	बहु०
मूल रूप (सश्लिष्ट)	मौडी	मौडीँ
वि० रूप (विश्लिष्ट)	मौडी	मौडिन ~ मौडियन

साथ ही,

i) -ईकारान्त—दवाई (=दवा), लुगाई (=स्त्री), ककई (=कघी), बिही (=अमरूद की तरह का फल), कुरती (=स्त्रियो की एक पोशाक), खलीती (=जेब) म्यारी (=छप्पर मे लगने वाली आधार लकडी)

ii) -इयाकारान्त—गइया, घुकइया (=छोटी टोकरी), बिलइया (=बिल्ली), चिरइया (=चिडिया), बुकरिया (=बकरी), छिरिया (=छेरी), उँगरिया (=अँगुली), आदि।

iii) -ऊकारान्त—बिच्छू, चक्कू (=चाकू),

iv) -आकारान्त—फुआ

टिप्पणी — -ऊकारान्त एव -आकारान्त शब्दो का मूल रूप बहु० का विभक्ति-प्रत्यय (ँ) पूर्वापर शब्दो द्वारा बहुवचनत्व प्रकट होने पर विलुप्त रहता है।

८.५ दद्दा वर्ग—पद-रचना का स्वतत्र प्रकार तो नही कहा जा सकता, फिर भी परिजन शब्दावलि, पुल्लिग तथा स्त्रीलिग, दोनो के मध्य की रूप-रचना रखती है अत भिन्न वर्ग निर्धारित किया गया है। यथा

दद्दा (=पिताजी, बड़े भाई)

	एक०	बहु०
मूल रूप (सश्लिष्ट)	दद्दा	दद्दा हरै
वि० रूप (विश्लिष्ट)	दद्दा	दद्दा हरन ~हन

सारौ (=साला)

मूल रूप (सश्लिष्ट)	सारौ	सारे हरै (अभद्रता द्योतक)
वि० रूप (विश्लिष्ट)	सारे	सारे हरन ~हन

बिन्नू (=बहिन)

मूल रूप (सश्लिष्ट)	बिन्नू	बिन्नू हरै
वि० रूप (विश्लिष्ट)	बिन्नू	बिन्नू हरन ~ हन

इस वर्ग की विशेषताये इस प्रकार है—

i) यह वर्ग बहुवचनत्व का नही अपितु सम्बन्धी-वर्ग का ज्ञान कराता है। यथा दद्दा हरै आए ते=पिताजी, चाचा जी, बडे भाई आदि आए थे।

ii) बहु० मे हर- का योग सज्ञा-परसर्गीय शब्दावली की भाँति होता है और यह सदैव विकारी एकवचन रूप मे ही जुडता है।

iii) लालाजू (=साला, बहिनोई, देवर, दामाद, आदि), बऊ (=दादी तथा बहू), नन्ना, नानी, मताई =माताजी), बाई (=माताजी), कक्का, मम्मा, दाऊ आदि।

iv) दिमान जू, दरोगा जू, राजा साब, रानी सायबा, लाला जू (=पटवारी), पडिज्जू, आदि।

v) माते जू (सम्मानित लोधी), दुबे जू, चौबे जू।

vi) धोबी, माली, सुनार, चमार, बसोर, आदि शब्द कक्का दद्दा, नन्ना आदि शब्दो के साथ प्रयुक्त होते है। क्योकि धोबियन, मालियन, चमारन आदि रूपो मे हेयार्थ का का बोध होने लगता है।

९ ऐसी भी शब्दावलि भाषा मे कम नही है, जो कि पद-रचना मे अपूर्ण है, अर्थात् या तो शब्द केवल एकवचन मे अथवा बहुवचन मे ही प्रयुक्त होते हैं। व्यक्तिवाचक एव भाववाचक सज्ञाए, सूर्य-चन्द्र ऐसी अनन्य शक्तियाँ तथा धात्वर्थक वस्तुये सामान्यत एकवचन मे ही प्रयुक्त होती है। देवस्थान एव मरघट तथा बीमारियो एव मिठाइयो के नाम प्राय बहुवचन रूप ही रखते है। पर यह कहना कठिन है कि इनका इसके विपरीत प्रयोग हो ही नही सकता।

एक० i) लटोरै बुलाव (=लटोरा को बुलाओ) परन्तु लटोरन खाँ बुलाव, न होगा क्योकि सामान्यत एकत्र व्यक्तियो मे कई का नाम लटोरा न होगा। फिर भी, 'लटोरा हरन खाँ बुलाव' प्रयोग हो सकता है। यहाँ अर्थ होगा—लटोरा तथा उसके साथियो को।

ii) भराव (=भराई), चढाव (=चढाई), बतकाव (=बातचीत) आदि भाववाचक सज्ञाए एक० रूप रखेगी पर जब चढाव (=चढाया) बधाव (=बधाया) जातिवाचक सज्ञाए हो जायेगी तब बहुवचन प्रयोग रखने लगेगी। इसी प्रकार -ओकारान्त जैसे खाबो, पीबो, चलबो आदि क्रिया-भाव-सूचक सज्ञाये भी एकवचन रूप रखती है और ये पेडो / पेडो वर्ग के अन्तर्गत आयेगी।

iii) सूरज, सूरज मै, सोनौ, सोने मै आदि प्रयोग ही सामान्य है, पर,

परलै काल के बारऊ सूरजन मै,
=प्रलय काल के बारहौ सूर्यो मे

तथा,

सबरिन के सोनन मे तामो मिलो।
=सबके सोनो मे ताम्बा मिला हुआ है।

आदि प्रयोग व्याकरण-च्युत नही कहे जा सकते।

iv) -ओकारान्त विशेषण (सामान्य, सार्वनामिक तथा कृदन्तीय) पेडौ-वर्ग के अन्तर्गत एक० मे रूप-रचना करते है।

बहु० 1) 'बद्रीनाथै चलौ' प्रयोग उतना स्वाभाविक नही, जितना कि 'बद्रीनाथन चलौ' =बद्रीनाथ (तीर्थस्थान) चलो।
माटी मरघटन लै चलौ=लाश मरघट ले चलो

ii) माता निकरी(=चेचक निकली है), मातन पूजनै(=चेचक शान्त करने वाली देवी को पूजना है।) आदि प्रयोग अति सामान्य हैं।

१०. सज्ञा पदो से सम्बन्धित ऊपर किये गये विश्लेषण को तथा उनके रचनात्मक विभक्ति-प्रत्ययो को एक साथ ही इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है
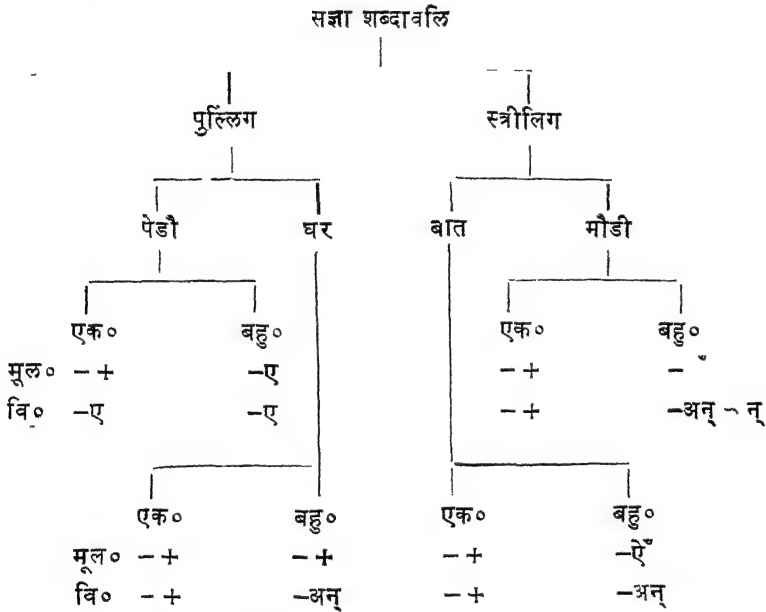
टिप्पणियाँ i) सम्बोधन के विभक्ति-प्रत्ययो की योजना सीमित है। अतएव यहाँ स्थान नही दिया गया है।

ii) दद्दा-वर्ग सभी का एक सम्मिलित रूप है अतएव अलग से स्पष्ट करने की आवश्यकता नही समझी गई है।

iii) -न मे अन्त होने वाले बहु० विकारी रूप खौं-क्षेत्र के कुछ अशो मे -ओ मे अन्त होते है। (देखिए, भाषा मानचित्र)

IV) -इकारान्त स्त्रीलिग शब्दो का मूल रूप बहु० केवल अनुस्वार के योग से सम्पन्न होता है जब कि गुना-क्षेत्र मे उसका बहुवचनान्त प्रत्यय -ऐं है, अर्थात् रूप-रचना मे शब्द, बात-वर्ग के अनुगामी है, जैसे बुकरिऐं, गइऐं उँगरिऐं ।

११ विषय-क्रम १० मे गिनाए गए विभक्ति-प्रत्ययो की प्रयोग सीमाएँ (morphological conditioning) स्पष्ट है, यहाँ प्रातिपदिक रूपो मे पाए जाने वाले ध्वनि-परिवर्तनो को निम्न प्रकार नियमित किया जा सकता है।

I) -ए तथा -एन प्रत्ययो के जुडने पर प्रातिपदिक के अन्तिम स्वर का लोप हो जाता है, यथा :

पेडौ—पेड् + -ए अथवा-एन

II) अन्यत्र, अनुनासिक स्वर को छोडकर यथा मौडी—मौडीं, अन्य विभक्ति-प्रत्ययो के जुडने पर प्रातिपदिक के अन्तिम दीर्घ स्वर –आ, -ई, -ऊ क्रमश ह्रस्व रूप धारण कर लेते है, यथा

गइया — गइयन
लत्ता — लत्तन
मौडी — मौडिन
चक्कू — चक्कुन

पर यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भाषा का एक स्त्री-प्रत्यय -न भी ह्रस्वीकरण की यही प्रवृत्ति रखता है, यथा धोबी—धोबिन। इसलिए श्लेषार्थी-स्थिति से छुटकारा पाने के लिए -ई तथा -ऊ क्रमश -इय् तथा -उव् मे परिणित हो जाते है, यथा

धोबी — धोबियन
माली — मालियन

पर आगे चलकर सादृश्य की इस प्रवृत्ति ने मौडियन, चक्कुवन, दबाइयन, लुगाइयन, बहियन, बिन्नुवन आदि रूपो को भी चला दिया है और अब कहा जा सकता है कि यह सन्धि-नियम स्वाभाविकता पा चुका है।

III) स्त्री-प्रत्यय -न मे अन्त होने वाले शब्दो का -इ- स्वर किसी भी विभक्ति-प्रत्यय के जुडने पर विलुप्त हो जाता है। यथा .

मालिन + ऐं = माल्नैं
धोबिन + ऐं = धोब्नैं
मालिन + अन = मालनन
धोबिन + अन = धोबनन

पर, स्त्री-प्रत्यय -इन मे अन्त होने वाले शब्दो का -इ- तथा विभक्ति-प्रत्यय का -अ- स्थान-परिवर्तन (meta thesis) की प्रवृत्ति रखते हैं। यथा -

चमारिन + अन = चमारनिन
बसोरिन + अन = बसोरनिन

कारक प्रत्यय

१२ कारक सम्बन्धो को स्पष्ट करने के लिए नै, कै, सै आदि जिन शब्दाशो का प्रयोग किया जाता है, उनके लिए परसर्ग अथवा अनुसर्ग शब्द का प्रयोग मिलता है, जो कि पोस्ट पोजीशन (post position) का शाब्दिक अनुवाद कहा जा सकता है। यह पोस्ट पोजीशन (पर स्थिति, यथा—घर से) भी प्रीपोजीशन (पूर्व स्थिति, यथा–from the house) के आधार पर गढा गया है। वस्तुत हिन्दी-व्याकरण-ग्रन्थो मे पाया जाने वाला शब्द—उपसर्ग, वाच्यार्थों मे नवीनता लाने वाली एक अर्थ-प्रक्रिया है, यथा—संहरति, विहरति, प्रहरति, आदि, जब कि परसर्ग अथवा अनुसर्ग केवल व्याकरणिक मूल्य ही रखते हैं, इसलिए 'सर्ग' के आधार पर गढे हुए ये शब्द अनुपयुक्त जँच रहे हैं। अतएव हमने इन शब्दाशो को कारक-प्रत्यय के रूप मे ही स्वीकार किया है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि सुन्दरता, लडकपन आदि शब्दो मे - ता एव - पन की जो संयोगी प्रवृत्ति परिलक्षित हो रही है, वह इन प्रत्ययो मे नही है। ये तो अपने तथा प्रकृति के बीच मे कई शब्द जोड़ लेते है।

१३. इन प्रत्ययो की ऐतिहासिकता पर विचार करने से पता चलता है कि प्राकृतयुगीन ध्वनि-परिवर्तनो के फलस्वरूप पदो मे एकरूपता (Homonymic position) उत्पन्न हुई, जिसने अर्थ मे अस्पष्टता ला दी, (यथा—रामा > रामा, रामान् > रामा, रामात् > रामा)। इस स्थिति को दूर करते हुए प्राकृत युग मे स्वतन्त्र पदो की संयोजना से कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट किया जाने लगा यथा— दारिआए केरिआए। उन्ही स्वतन्त्र शब्दों के

अवशेष-चिह्न ये कारक-प्रत्यय है, जो अपनी ध्वनि-सम्पत्ति मे क्षीण हो गये है और मूलार्थों को खो चुके है । फलत इनको विकास देने वाले मूल प्राकृतयुगीन पदो को पहिचानना अति कठिन हो गया है । और यह तब तक सभव नही जब तक प्रभूत मात्रा मे मध्यकालीन साहित्य-सम्पदा उपलब्ध न हो, साथ ही, वर्तमान क्षेत्रीय रूपो की सम्यक् गवेषणा न हो ।

१३-१ इतिहास की इस कठिनाई को निम्न उदाहरणो से इस प्रकार समझाया जा सकता है—

पाँच रुपइयन लै का करहौ = पाँच रुपयो से क्या करोगे ?
बौ छत मे निकर गओ = वह छत से निकल गया ।

उक्त उदाहरणो मे लै और मे जब तक 'लेकर' और 'होकर' के अर्थ का आभास देते चलते हैं, तब तक इनका सम्बन्ध क्रमश स० धातु लग् तथा भू से जोडना सरल है, पर जब ये केवल 'से' के अर्थ की अभिव्जना ही करा सकेंगे तब उक्त धातुओ से अर्थ-परम्परा का निर्वाह जोड सकना सर्वथा सभव न हो सकेगा । 'भू' धातु का सम्यक् प्रयोग भाषा मे शेष नही रह गया है ।

१४ जैसा कि ऊपर कहा गया है कि प्राकृत युग मे पदो की एकरूपता बढ गई थी, वस्तुत सस्कृतकालीन किसी एकवचन के आठ पद क्रमश क्षीण होते-होते आधुनिक युग मे दो या कही-कही तीन ही रह गए है, अतएव वे व्यापक सम्बन्ध जो कि आठ पदो से अभिव्यक्त होते थे, दो या तीन पदो से कैसे प्रकट होते ? परिणामत उन दो या तीन पदो ने एक दूसरी विधा अपनाई और स्वतन्त्र शब्दो से कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करना प्रारम्भ कर दिया । स० मे आठ पद थे अतएव आठ कारक कहलाए, बुदेली मे तीन पद है, अतएव हम तीन कारक कह सकते है (विषयक्रम—७) यथा—मूल, विकारी तथा सम्बोधन ।

१५. प्रत्ययों के आधार पर कारक-सबधो को स्पष्ट करने की यह विधा बहुत ही सजीव है, अतएव इन की सख्या निर्धारित करना भी कठिन ही है । फिर भी जिन शब्दो या शब्दांशो ने अपने वाच्यार्थों को समाप्त कर केवल व्याकरणिक अर्थों तक ही सीमित कर लिया है, उनको ही 'प्रत्ययो' के अन्तर्गत परिगणित किया गया है और उन्ही की चर्चा करना यहाँ अभीष्ट समझा गया है ।

नैं —कर्त्ता कारक
खोँ ~ खाँ ~ कौ —कर्म कारक
सैं —करण-कारक और अपादान
क— —सम्बन्ध तथा कुछ अन्य
पै, मैं, लौ —अधिकरण तथा कुछ अन्य

नै—

भाषा मे इसका प्रयोग सकर्मक क्रिया तक ही सीमित है। साथ ही, क्रिया के उस कर्त्ता के साथ, जब कि वह भूतकालिक अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग मे आती है।

मौडा खात है = लडका खा रहा है
मौडा खैहै = लडका खाएगा
मौडा नैं खाओ = लडके ने खाया

[मौडा नैं रोटी खाई, मौडा नैं आम खाओ, मौडा नैं आम खाए, आदि वाक्यो की ऐतिहासिकता से पता चलता है कि इस समय जो 'कर्म' क्रिया को प्रभावित कर रहे है, अपने पूर्व जन्म मे 'कर्त्ता' थे (बालकेन रोटिका खादिता. आदि) और इस समय जो 'कर्त्ता' बना बैठा है, वह पूर्वजन्म का 'करण' है, इसलिए इसे ही इस जन्म मे कर्तृत्व शक्ति के लिए 'नैं' की आवश्यकता पडी। इसी को ध्यान मे रख कर इस प्रत्यय को कर्त्तृसूचक (Agentive) प्रत्यय कहा गया है। सभवत विकास की इसी प्रक्रिया को ध्यान मे रखकर पं० किशोरीदास बाजपेयी ने नैं का सम्बन्ध स० तृतीया -एन विभक्ति से जोडने का प्रयत्न किया है।]

सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने 'भाषासर्वे' मे इस 'नैं' के बुदेली प्रयोग की चर्चा करते हुए कहा है कि इसका प्रयोग अकर्मक क्रिया तथा वर्तमान-कालिक प्रत्यय के साथ भी होता है। यथा—

बा नैं बैठो = वह बैठा
बा नैं चाउत तो = वह चाहता था

पर मुझ इस प्रकार के प्रयोग सुनने को नही मिले।[1] संभव है, परिनिष्ठित हिन्दी के प्रवाह ने ऐसे प्रयोगो को बहा दिया हो।

१. जिल्द ९, भाग १, पृष्ठ ९४

खौं ~ कौं ~ खाँ—

कर्म-कारकीय इस प्रत्यय की महत्ता इसलिए भी है कि इसके आधार पर विभक्त बुदेली के क्षेत्रीय रूपो का अध्ययन किया गया है। (परिशिष्ट, भाषा मानचित्र)

खो—अँगारी की साल हम पण्डित जू खो बुलाएँगे।
कौ—पर की साल हम सब जनै प० जू कौं बुलैहे।
खाँ—अँगारू की साल हम औरै प० जू खाँ बुलैहै(बुलैबी)

सै—

सै (कौ क्षेत्र मे सौ) माध्यम (अर्थात् करण कारक), अलगाव (अर्थात् अपादान कारक), तुलना सूचक स्थितियो आदि मे प्रयुक्त होता है। यथा—

हँसिया सै काट डारौ =हँसिया से काट डालो
पेडे सै गिर परो =पेड़ से गिर पडा
ऊ हम सब सै लौरौ आय=वह हम सब से छोटा है

क—

ऐतिहासिक दृष्टि से इसके विभिन्न रूप चाहे भिन्न मूल स्रोतों से विकसित हुए हो, पर रचना तथा भाषा मे प्रयोग की दृष्टि से इनको दो भागो मे विभक्त करके अध्ययन किया जा सकता है —

विशेषणवत्–कौ, की, के—जिसकी रूप रचना पु० मे पेडौ तथा स्त्री० मे मोडी की तरह होगी। यथा—

पु० राम कौ पेडौ = राम का पेड
राम के पेड़े = राम के पेड़
राम के पेड़े मैं = राम के पेड मे

स्त्री० राम की उघन्नी = राम की ताली
राम की उघन्नीं = राम की तालियाँ
राम की उघन्नी मैं = राम की ताली मे

इसका प्रयोग 'अधिकार, स्रोत, कारण, आदि सम्बन्धो के स्पष्टीकरण के लिए किया जाता है। विकारी एक वचन के रूप में यह कुछ अन्य परसर्गीय

शब्दो के पूर्व भाग मे लगकर अन्यान्य कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करता है। उसके अधिकाधिक प्रयोग 'अव्यय' के अन्तर्गत स्पष्ट किए गए है। यहाँ सम्प्रदान का प्रयोग दृष्टव्य है।

राम के लानैं = राम के लिए

अव्ययवत्– कै – यथा, नै, सै, मै आदि, इसका प्रयोग सतान आदि के उत्पत्ति-सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए होता है। यथा—

राम कै तीन मौड़ी है = राम के तीन लडकियाँ है।
राम कै एक मोडी है = राम के एक लडकी है।
राम कै मौडा भओ = राम के लडका हुआ
राम कै मौडी भई = राम के लडकी हुई

मै, पै, लौ—

मैं—यह सामान्यत: स्थान (अन्दर या बाहर) तथा समयावधि सूचक है। यथा—

ऊ घर मैं है = वह घर मे है।
जा किताब दो दिनॉ मैं बँची = यह पुस्तक दो दिन मे बाँची जा सकी।

पै—यह सामान्यत स्थान-सूचक (ऊपर या नीचे) है। कही-कही कर्मवाचीय वाक्य में माध्यम (करण-कारक) के रूप मे भी प्रयुक्त होता है। यथा–

खटोली पै गेँडवा धरो = चारपाई पर तकिया रखी है
मो पै जौ काम न हुइऐ = मुझ से यह काम न होगा

लौ—अपने-अपने क्षेत्रीय-रूपो लौ, लौक, लुक आदि के साथ स्थान तथा समय की अन्तिम सीमा के सम्बन्धो को स्पष्ट करता है। यथा—

मोय घर लौ जानैं = मुझे घर तक जाना है
कै दिनन लौक काम करहौ = कितने दिन तक काम करोगे

विशेषण

१ विशेषण शब्दो को अर्थ की दृष्टि से गुण, परिमाण, सकेत, निश्चय, अनिश्चय, सख्या आदि भेद-प्रभेदो मे विभक्त करके देखा जा सकता है। पर, लिग-वचन-कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करने वाले विभक्ति-प्रत्ययो की सयोजना मे ये सज्ञा तथा सर्वनाम शब्दो से भिन्न नही कहे जा सकते। इसीलिए इन सब—सज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण-शब्दो को 'नाम' के अन्तर्गत परिगणित किया गया है। वस्तुत सयोजना की इस दृष्टि से विशेषण तो सज्ञाओ के और भी निकट है, स्यात् इसीलिए इनको गुणवाचक सज्ञाएँ भी कह दिया गया है। समसामयिक रूप-रचना की दृष्टि से हम विशेषण पदो को दो वर्गो मे विभक्त कर सकते है—

i) रूपान्तरित (Inflected)
ii) अ-रूपान्तरित (Uninflected)

भाषा-प्रवाह ने सस्कृत-युग के रूपान्तरित विशेषणो मे से कुछ को अरूपान्तरित करके छोड दिया है और अब वे बुन्देली मे अव्ययवत् प्रयुक्त हो रहे हैं, पर वाक्य मे शब्दो की स्थानापन्नता (Substitution) तथा शब्द-क्रम (Word-order), साथ ही, शब्दो के अर्थ का गौरव उन्हे विशेषण-वर्ग के अन्तर्गत पहुचा देता है।

२-१. रूपान्तरित वर्ग के अन्तर्गत -ओ तथा -औ मे अन्त होने वाले शब्द आते हैं; (इनके सहयोगी -ई मे अन्त होने वाले स्त्रीलिंग शब्द है) यथा

हरीरौ (=हरा), पीरौ (=पीला), लीलौ (=नीला) कारौ (=काला), साजौ (=अच्छा), बुरओ (=बुरा), नौनो (=अच्छा), नौखौ (=अनोखा) करौं (=कडा), कौरौ (=मुलायम), लम्मौ (=लम्बा) चौंरौ (=चौडा), नओ (=नया), नुनखरौ (=अधिक नमक वाला), गरओ (=भारी), हरओ (=हल्का), गदरो (=अधपका), बडौ (=बड़ा), छोटौ (=छोटा), लौरौ (=लहुरा), सूदौ (=सीधा), टेडौ (=टेढा) लटौ (=बुरा), मुक्तौ (=अधिक), न्यारौ (=अलग), डेड़ौ (=बाँया) ड्योड़ौ (=डेढ़ गुना), पराओ (=दूसरे का), बिरानौ (=दूसरे का), बारौ (=कम उम्र का) भूंको (=भूखा), रूखौ (=रूखा), तातौ (=गरम) आदि।

उपर्युक्त शब्दो की रूप-रचना पु० मे पेडौ/पेडो (सज्ञा, विषय-क्रम८-१.) तथा स्त्री० मे मौडी (सज्ञा,विषय-क्रम८-४.) की तरह होगी । साथ ही, सन्धि-नियम भी वे ही होगे जिनकी चर्चा सज्ञा (विषय-क्रम ११) मे की जा चुकी है ।

	पुल्लिग	हरीरौ (=हरा)
		हरऔ (=हल्का)
मूल०	एक०	हरीरौ / हरऔ बाँस
	बहु०	हरीरे / हरए बाँस
विकारी०	एक०	हरीरे / हरए बाँस मैं
		हरीरे / हरए बाँसन मैं
	स्त्रीलिंग	हरीरी (=हरी)
		हरई (=हल्की)
मूल०	एक०	हरीरी / हरई नकरिया (=लकडी)
	बहु०	हरीरीं / हरईं नकरियाँ (=लकडियाँ)
विकारी०	एक०	हरीरी / हरई नकरिया मै
	बहु०	हरीरी / हरई नकरियन मैं

बहु० प्रत्यय केवल मूलकारक का ही मिलता है । वहाँ भी, यदा-कदा स्त्रीवर्गीय प्रत्यय का लोप हो जाया करता है । वस्तुत. पूर्वापर मे प्रयुक्त शब्दों से बहुवचनत्व प्रकट हो जाता है परिणामत इन पदो से उक्त विभक्त्यात्मकता का लोप हो गया है ।

२.२. शेष सभी विशेषण अरूपान्तरित हैं अर्थात् व्यजनान्त तथा -आ, -ई (केवल वे जो अपना पु०-वर्गीय रूप -ओ/-औ मे नही रखते), -ऊ मे अन्त होने वाले विशेषण सज्ञा का अनुकरण करने के लिए लिंग-वचन-कारक-सम्बन्धी कोई विभक्ति-प्रत्यय नही अपनाते । कारण, परवर्त्ती संज्ञा पदो मे वे सभी विभक्ति-प्रत्यय जुडे मिल जाते हैं । यथा :

		पु० करिया (=काला)
मूल०	एक०	करिया उन्हा (=काला कपडा)
	बहु०	करिया उन्हाँ (=काले कपडे)
विकारी०	एक०	करिया उन्हा सैं (=काले कपड़े से)
	बहु०	करिया उन्हन सै (=काले कपड़ो से)

स्त्री० करिया (=काली)

मूल०	एक०	करिया सुपेती	(=काली रजाई)
	बहु०	करिया सुपेतीँ	(=काली रजाइयाँ)
विकारी०	एक०	करिया सुपेती सैं	(=काली रजाई से)
	बहु०	करिया सुपेतिन सैं	(=काली रजाइयो से)

और भी,

पु० तथा स्त्री० बिलात (=अधिक, कई)
बिलात चाँउर (=चावल) ~ दार (=दाल) ~ लुगवा (=आदमी) ~ लुगाईं (=स्त्रियाँ)
बिलात चाँउरन मैं ~ दारन मैं ~ लुगवन मैं ~ लुगाइयन मैं आदि ।

इस वर्ग के अन्तर्गत परिगणित शब्दावलि निम्न प्रकार है

जादाँ (=अधिक, कई), तनक (=कम), बढियल (=बढिया), मुलाम (=मुलायम), लरम (=नरम), भौत (=अधिक, कई), दूनर (=दुहरा), चउवर (=चौहरा), चुट्टा (=चोरी करने वाला), चुट्टू (चोरी करने वाली), अठाई (=शरारती), कुल्ल (=बहुत), लाल, तिहाई (=⅓ भाग), नठिया (=शैतान, एक गाली), खपसूरत (=खूबसूरत),

३-१. पद-रचना की दृष्टि से नवीनता न रखते हुए भी सख्यावाचक शब्दावलि अपनी प्रयोग-बहुलता के कारण उल्लेखनीय तथ्य उपस्थित करती है। उनका परम्परागत विभाजन निम्न प्रकार है—

गुणनात्मक

i) एक, दो, तीन, चार, पाँच, छै, सात, आठ, नौ, दस, गेरा, बारा, तेरा, चउदा, पन्द्रा, सोरा, सत्रा, अठारा, उनैस, बीस ।

ii) बीस के आगे सामान्यतः लोग, विशेषकर बूढी स्त्रियाँ, 'बिसी' के आधार पर गणना करती हैं, जैसे·

चार बिसी = अस्सी
चार कम दो बिसी = छत्तिस.

iii) ठोस वस्तुओ की गणना मे 'गंडा' शब्द का प्रयोग होता है—

बीस गडा = सौ
पाँच गंडा = पचीस

iv) अनाज तौलने मे चौरी (=लगभग एक सेर), पैली (=लगभग ९ सेर) तथा मना (=लगभग एक मन) शब्दो का प्रयोग चलता है यथा—

इकैस पैली, चार चौरी आदि

v) लेन-देन मे प्रचलित सिक्कों के नाम निम्न प्रकार है—
पइसा, अधन्ना (=दो पइसा), इकन्नी, दोन्नी, चौन्नी, अठन्नी, रुपइया। बालूसाई पइसा और गजासाई रुपइया ग्वालियरी बादसाहत के सिक्के थे, जो अब प्रचार मे नही है।

क्रमात्मक

i) पूर्ण-क्रम-द्योतक शब्दावलि—

पैलौ ~ पहलौ, दूसरौ, तीसरौ, चौथौ, इसके पश्चात् का क्रम -मौं (=-वाँ) प्रत्यय का योग धारण करता है, यथा · पाँचमौं, छटमौं, सातमौं, आठमौं, नमौं, दसमौं आदि। ये सभी शब्द -औकारान्त विशेषण की तरह रूपान्तरित होते हैं।

ii) खण्ड-क्रम के लिए प्रचलित शब्द—
आधौ (=आधा), तिहाई (=$\frac{१}{३}$), चौथयाई (=$\frac{१}{४}$), पौनौं (=$\frac{३}{४}$), सबाओ (=१$\frac{१}{४}$), ड्यौढौ (=१$\frac{१}{२}$), ढाई ~ अढाई (=२$\frac{१}{२}$), इसके पश्चात् साढे तीन, साढे चार आदि।

iii) तिथि-गणना की शब्दावलि—
परमा (=प्रथमा, परवा भी चलता है, पर केवल त्यौहार-वाली परमा के लिए), दूज (=द्वितीया), तीज (=तृतीया), चौथ (=चतुर्थी), तत्पश्चात् -ऐं प्रत्यय की योजना होती है, यथा

पाँचैं, छटैं, सातैं, आठैं, नमैं, दसैं, ग्यास (इकादसी भी चलता है, पर केवल त्यौहार के लिए), द्वादसी, तेरस, चउदस, पूनौं (शुक्ल पक्ष) अमाउस (कृष्ण पक्ष)

गुणनात्मक

i) स्पष्टीकरण के लिए दो का आधार लिया जा सकता है—

दो एकम	=दो
दो दूनी	=चार

दो	तिया ~ तिरका ~ तिरके	= छै
दो	चौका ~ चौके ~ चौकौ ~ चौक	= आठ
दो	पचे ~ पँचे ~ पनाँ	= दस
दो	छक्का ~ छक्के ~ छके ~ छौक	= बारा
दो	सत्ते ~ सते	= चउदा
दो	अट्ठे ~ अठे	= सोरा
दो	नमे ~ नमाँ	= अठारा
दो	धाम	= बीस

साथ ही,

दो	पउए	=	अद्धा
दो	अद्धे	=	एक
दो	पौने	=	डेड
दो	सवाम	=	अढाई
दो	डेडे	=	तीन
दो	अढाम	=	पाँच
दो	हूँटे	=	सात
दो	ढौँचे	=	नौ
दो	पौँचे	=	गेरा

ii) गुणनात्मक शब्द ताश के खेल मे पत्तो के नामो के रूप मे सामान्य सज्ञा बन गए हैं—इक्का, दुक्की, तिक्की, चौका, पजा, छक्का, सत्ता, अट्ठा, नहा ~ नहला, दहा ~ दहला ।

iii) गुणनात्मकता-द्योतक कुछ प्रत्यय भी बहुलता से प्रयुक्त हो रहे है—-गन-, -हर-, -अर ; यथा

दुगनौ, तिगनौ, चौगनौ, पँचगनौ
इकारौ, दुहरौ, तिहरौ, चौहरौ
दूनर, तीनर, चउअर

४. सर्वनाम की तरह सख्याचक भी भाषा की आधार भूत (Basic) शब्दावलि के अन्तर्गत परिगणित है । वस्तुत इन शब्दो की सुदीर्घ परम्परा ने इन्हे ध्वनि-सम्पत्ति से क्षीण बना दिया है । परिणामतः विभिन्न-युगीन नए प्रत्ययो की योजना से इन के प्रातिपदिको मे कई ध्वनि-रूपान्तर उपलब्ध होते हैं । दूसरे, संस्कृत की लिंग-वचन तथा कारक से सम्बन्धित पदावलि अनेकरूपता

लिए हुए थी, उनमे से कतिपय ही विकसित होकर बुन्देली मे आ सके हैं, अतएव भिन्न स्रोतो के कारण ही बुन्देली प्रातिपदिकों की सख्या बढ गई है। कालान्तर मे सादृश्य ने भी अपना प्रभाव दिखलाया होगा। इन सब कारणो से हम उक्त पदो के लिए ध्वन्यात्मक (phonological) सम्बन्धो की अपेक्षा शब्दात्मक (mophological) सम्बन्ध ही अधिक प्रामाणिक रूप मे प्रस्तुत कर सकते है; फिर भी--

आ, ई, ऊ, क्रमशः ह्रस्व अ, इ, उ, मे परिणत हो जाते है तथा ए, ओ क्रमश इ तथा उ मे बदलते है। ऐ एव औ का परिवर्तन अ मे ही होता है। ये ह्रस्व रूप प्रत्यय-सयुक्त अथवा सामासिक पदो मे पद के प्रथम अवयय बनकर प्रयुक्त होते है। यथा :

ए->इ-	इकतिस	=	एक + तीस
	इकैस	=	एक + ईस (= बीस)
	इक्काईँ	=	अकेला
	इकन्नी	=	एक + आना
	इक्का	=	एक विन्दु वाला ताश का पत्ता
	इकारौ	=	इकहरौ
ओ->उ-	दुक्की	=	दो विन्दुवाला ताश का पत्ता
	दुसरतौ	=	तीसरी बार वर का वधू-गृह पहुचना
	दुगनौ	=	दो + गुना
	दुकेलौ	=	अकेलौ के सादृश्य पर
आ->अ-	पँचपन	=	पाँच + पचास
	सत्रा	=	सात + रह (<दश)
	अठारा	=	आठ + रह (<दश)

समसामयिक भाषा-विश्लेषण की दृष्टि से इनके प्रकृति एव प्रत्यय स्पष्ट नही कहे जा सकते अतएव अधिक उदाहरण देना उपयुक्त नही जँचता।

४-१. सख्यावाचाक विशेषणो के कुछ अन्य ध्वनि-रूपान्तर अर्थ को ध्यान मे रखते हुए नीचे व्यवस्थित किए गए है

एक	[अक-]	पूर्व-प्रत्यय के रूप मे केवल 'अकेलौ' शब्द मे।
दो	[दू-]	दूज, दूजा, दूनौ
	[दु-]	दुक्की, दुगनौ

तीन	[ती-]	तीज, तीजा, तीनर, तीसरौ
	[ति-]	तिहाई, तिहरौ, तिगनौ, तिक्की
	[तिर्-]	तिरका, तिरासी, तिरेपन
	[ते-]	तेरा, तेइस
	[तै-]	तैतिस
चार	[चौ]	चौपार (=चौपाल), चौथ, चौगनौ, चौका, चौहत्तर, चौखट, चौखूंटौ
	[चौँ]	चौँतिस, चौसट
	[चव् ~ चउ-]	चउअर, चवालिस, चउदा,
	[चौर्-]	चौरासी, चौरानबे
पाँच	[पँच्-]	पँचगनौ, पॅचपन
	[पच्-]	पचाइत, पचा (=पाँच हाथ की दो धोतियाँ), पचानवे
	[पज्-]	पजा (=ताश का पत्ता]
	[पच्-]	पचपन, पचीस, पचासी
	[पँय्-]	पैतीस, पैसट पैतालिस
	[पन्द्र-]	पन्द्रा
छै	[छय-]	छयालिस, छयासी,
	[छअ-]	छत्तिस, छक्का, छटे, छप्पन
	[छा-]	छानबे
सात	[सर्-]	= सरसट
	[सै-]	= सैतिस, सैतालिस
आठ	[अठ]	= अठारा, अठासी
	[अर्]	= अरसट, अरतिस
नौ	[न-]	= नमै
	[नव्-]	= नवासी
दस	[दह्-]	= दहाम ~ धाम, दहाई ~ धाई
	[दा-]	= चउदा
	[रा-]	= सोरा, सत्रा

सर्वनाम

१ सर्वनाम जैसा कि शब्द-विशेष मे स्पष्ट हो रहा है, यह एक प्रकार की नाम (=सज्ञा) शब्दावलि है । पुनरुक्ति की नीरसता से बचने के लिए ही इसका विधान जान पड़ता है। अर्थ ही नही, अपितु सर्वनामो की रचनात्मक गठन भी नाम-शब्दो से बहुत भिन्न नही कही जा सकती। लिंग-वचन एव कारक से सम्बन्धित यदि एक प्रकार के विभक्ति-प्रत्यय सज्ञाओ मे लग रहे है, तो दूसरे प्रकार के, सर्वनामो मे। विभक्ति-प्रत्ययो की इन दो कोटियो के आधार पर 'नाम' के दो वर्ग भी अनिवार्य कहे जायेगे— अर्थात् सज्ञा तथा सर्वनाम । पाणिनीय व्याकरणिक परम्परा मे वह नाम-शब्दावलि जो कि सर्व' से प्रारम्भ होती है, 'सर्वनाम' कहलाई, पर हिन्दी-व्याकरण की दृष्टि से यह पारिभाषिक शब्द दूर जाकर भी बहुलता से प्रयुक्त हो रहा है।

२ प्रकृति मे विभक्ति-प्रत्ययो की सयोजना की दृष्टि से नाम एव सर्वनामो की कथित एकरूपता के बीच अनेकरूपता के भी दर्शन किए जा सकते है। सर्वनाम पदो के प्रातिपदिक (प्रकृति) रूपो का निर्धारण कठिन है, सज्ञाओ मे जैसे पेडौ, बात, घर आदि का आधार बनाकर उनके विभक्ति-प्रत्ययो का उल्लेख किया जा सकता है; वैसा सर्वनाम रूपो के साथ कर सकना सभव नही है । यदि एकवचन एव बहुवचन दोनो के लिए भिन्न-भिन्न प्रातिपदिक निर्धारित करे, तो भी विश्लेषण मे किसी प्रकार की सुविधा नही जान पड़ रही है। प्रकृति के साथ साथ विभक्ति-प्रत्ययो की जटिलता भी स्पष्ट है। यथा

i) मै (एक०) प्रकृति म-

परन्तु

हम (बहु०) प्रकृति ह-

ii) मैं, (एक०) प्रकृति म-
मोहै (एक०) प्रकृति मो-

प्रातिपदिक तथा विभक्ति-प्रत्ययो की इस अनेकरूपता से यह स्पष्ट होता है कि बुन्देली सर्वनामो के ये सभी रूप विभिन्न प्रकृतियो से आ-आकर सम्बद्ध हो गए है।

३ विभक्ति-प्रत्ययो की समानता को देखते हुए हम बुन्देली सर्वनामो के निम्न तीन वर्ग निर्धारित कर सकते है —

मै-तै—अर्थ की दृष्टि से इन्हे पुरुषवाचक सर्वनाम—उत्तम पुरुष एव मध्यम पुरुष—कहा जाता है।

यौ-वौ-जो-सो-को—जिन्हे क्रमश निकटवर्त्ती, दूरवर्त्ती सकेत-वाचक, सम्बन्ध, सह-सम्बन्ध तथा प्रश्नवाचक सर्वनामो की सज्ञाएँ दी गई है।

शेष—स्फुट सर्वनाम शब्दावलि।

४. पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम-मध्यमपुरुष)

	एक०	बहु०
मूल०	मै, तै	हम, तुम
वि० (सामान्य)	मो, तो	हम, तुम
(सम्प्रदान)	मोय, तोय	हमैं, तुमै
(सम्बन्ध)	मो(र-)-, तो(र-)-	हमा (र-)-, तुमा (र-)-

टिप्प० i) एकवचन के स्थान पर बहुवचन रूपो के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ रही है। मध्यम पुरुष इस प्रकार के प्रयोग मे उत्तमपुरुष से आगे बढ गया है। तब फिर यह स्वाभाविक है कि बहुवचन के रूप विश्लिष्टात्मकता ग्रहण कर ले। इस प्रकार बुन्देली मे बहुवचन द्योतक कुछ शब्दावलि बढती जा रही है। यथा :

–लोग, –सब जन–, हर–, और– आदि। इनके प्रयुक्त होने पर विभक्ति-प्रत्यय प्रकृति मे न जुडकर इन्ही शब्दों मे जुडते है —

–लोग —-इसमे विभक्ति-प्रत्यय 'घर' के लगेगे।
–सब जन —की रूप-रचना पुल्लिग मे 'दद्दा' की तरह (–सब जनैं-सब जनन) तथा स्त्रीलिंग में 'मौडी' की तरह (–सब जनीं, –सब जनिन) होगी।

–हर–, –और– की रूप-रचना मूल रूप मे (पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनो मे) स्त्रीलिंग 'बात' की तरह तथा

विकारी रूप मे पुल्लिग–हरन तथा स्त्रीलिंग मे –हरिन होगी । यथा —

बे लोग (हरैं, औरें) आउतीं हैं ।
बे सब जनैं आउत हैं ।

ii) कारक-चिह्न विकारी 'सामान्य' मे ही जुडेगे, केवल नैं मूल रूप एकवचन— मै, तैं के साथ जुडता है पर खो-क्षेत्र मे यह भी अपवाद नही मिल रहा है अर्थात् 'मो नैं' रूप भी मिलते है ।

iii) कौ एव खो क्षेत्र मे तैं के स्थान पर तू का प्रयोग विरल नही कहा जा सकता ।

iv) खाँ-क्षेत्र मे विकारी सामान्य रूप एकवचन मोह्–,तोह्- मिलता है (इस पर आवश्यक विचार इसी अध्याय के अन्तिम पृष्ठो में किया गया है)

v) सम्बन्ध कारकीय रूप, -र- प्रत्यय-युक्त है जिनमे विभक्ति-प्रत्यय पुल्लिग 'पेडौ', स्त्रीलिग 'मौडी' के लगते है और –रै एकरस रहता है । साथ ही इस -र- के पूर्व मूलरूप (प्रकृति) मे –आ– विकरण भी जुडा मिल रहा है । इस -र- के सम्बन्ध मे यह भी उल्लेखनीय है कि यह वर्तमान बोलचाल की भाषा से (केवल कौ-क्षेत्र को छोडकर) विलुप्त होता जा रहा है । वस्तुत स्वर-मध्यवर्त्ती -र- के लोप की प्रवृत्ति भाषा मे सुस्पष्ट है, उसी के परिणामस्वरूप 'र' के लोप से केवल विभक्ति-प्रत्यय ही शेष रह गये है । लोक-गीतो मे प्राचीनता के दर्शन किए जा सकते है; यथा :

हमारो > हमाओ
मोरो > मोओ

एक बात और, खाँ-क्षेत्र मे बलात्मक निपातो के साथ,

मोर्हई > मेरा ही
तोर्हऊ > तेरा भी मे महाप्राण की रागात्मकता ने 'र' को सुरक्षित कर रखा है ।

vi) सभी विकारी बहुवचन रूप खो-क्षेत्र मे 'तुम' के स्थान पर 'तुम्ह' मिलेगे। शब्दान्त मे यह महाप्राण तत्त्व विलुप्त रहता है, अन्यत्र सुस्पष्ट है; यथा—

तुम्हे, तुम्हाओ, तुम्हई (=तुम ही), तुम्हऊँ (=तुम भी) नियमत 'हम्ह' रूप बनता है पर समीपवर्त्ती अक्षरो मे 'महाप्राण' व्यजनो का प्रयोग सम्भव नही, अतएव सर्वत्र 'हम' रूप ही मिलता है।

५ इस वर्ग के अन्तर्गत परिगणित सकेतवाचक, सम्बन्ध एव सह-सम्बन्ध वाचक तथा प्रश्नवाचक सर्वनाम रूपो के विभक्ति-प्रत्ययो में एकरूपता पाई जाती है। जो अन्तर है, वह नगण्य है। इस तथ्य का निदर्शन निम्न चार्ट मे क्रमश व्यवस्थित बुन्देली, ब्रजी, हिन्दी, अवधी द्वारा किया गया है।

मूल०	एक०	यौ	वौ	जौन	सो,तौन	को
		जौ (जु)	बौ (बु)	जौन	सो,तौन	को
		येह	वोह	जो	+	कौन
		ए (ई)	ओ (ऊ)	जो	सो	को
	बहु०	ये	बै	जौन	तौन	को
		ये	वै	जौन	तौन	को
		ये	वे	जो	+	कौन
		ये	वै	जे	से,ते	के
वि०	एक०	ई	ऊ	जी	ती	की
		या	बा	जा	ता	का
		इस	उस	जिस	+	किस
		एह	ओह	जेह	केह	तेह
	बहु०	इन	उन	जिन	तिन	किन
		इनि	उनि	जिनि	तिनि	किनि
		इन	उन	जिन	+	किन
		इन्ह	उन्ह	जिन्ह	तिन्ह	किन्ह

६. सकेतवाचक (निकट एव दूरवर्त्ती)

एक०	मूल०	पुल्लिग	जौ,	बौ
		स्त्रीलिग	जा,	बा

	वि०	(सामान्य)	ई,	ऊ
		(सम्प्रदान)	इये,	उये
बहु०	मूल०		जे,	बे
	वि०	(सामान्य)	इन,	उन
		(सम्प्रदान)	इनै,	उनै

६ १. क्षेत्रीय रूपान्तर .

कौं-क्षेत्र

एक०	मूल०		कोई अन्तर नही।	
	वि०	(सामान्य)	जा(य),	बा(य)
		(सम्प्रदान)	जाय,	बाय
बहु०	मूल०		कोई अन्तर नही	
	वि०	(सामान्य)	इन,	बिन
		(सम्प्रदान)	इनैं,	बिनैं

खाँ-क्षेत्र

एक०	मूल०	पुल्लिग	यौ,	वौ	
		स्त्रीलिंग	या,	वा	
	वि०	(सामान्य)	ए-,	ओ-	(सर्वनाम-रूप)
			ई,	ऊ	(विशेषण-रूप)
		(सम्प्रदान)	एहै,	ओहै	
बहु०	मूल०		ये,	वे (वैं)	
	वि०	(सामान्य)	इन,	उन	
		(सम्प्रदान)	इन्हैं,	उन्हैं	

६-२ i) मूल० एक० रूपो मे पुल्लिग स्त्रीलिग के भिन्न रूप उल्लेखनीय है।

ii) खाँ-क्षेत्र मे संकेतवाचक सर्वनाम एव सकेतवाचक विशेषण अर्थात् विशेष्य-रहित एव विशेष्य-सहित, ये रूप अलग-अलग है, यथा :

ई आदमी खाँ = इस आदमी को

परन्तु ए खाँ = इसको

ऊ लुगाई सैं = उस स्त्री से

पर ओसै = उस से

iii) खाँ-क्षेत्र मे विकारी बहु० रूप 'इन्हन', 'उन्हन' (साथ ही, जिन्हन, तिन्हन, किन्हन) भी मिल जाते है। निश्चय ही 'इन्ह', 'उन्ह' को

एकवचनीय रूप समझकर उन्हे सज्ञा के विकारी विभक्ति-प्रत्यय -अन से युक्त कर दिया गया है ।

७. सम्बन्ध वाचक एव सह-सम्बन्ध वाचक :

एक०	मूल०		जौन,	तौन	[जो, सो]
	वि०	(सामान्य)	जी,	ती	[जौन, तौन]
		(सम्प्रदान)	जिये,	तिये	
बहु०	मूल०		जौन-जौन,	तौन-तौन	
	वि०	(सामान्य)	जिन,	तिन	
		(सम्प्रदान)	जिनै,	तिनैं	

i) क्षेत्रीय रूपान्तरो मे विभक्ति प्रत्ययो की भिन्नता सकेतवाची सर्वनाम-रूपो की ही भाँति है ।

ii) सह-सम्बन्धवाची रूप केवल लोक गीतो एव व्यवसायी कथा-वाचको मे ही मिल सकेगे । उनका स्थान दूरवर्त्ती सकेतवाची सर्वनाम-रूप ले रहे है; यथा ·

जौन निकर सकत होय बौ आँगू आवै (वर्तमान रूप)
किस्सा सो झूंटी बात सो मीठी (परम्परागत वाक्य)
जो निकर सकत होय सो आँगे आवै[१]

८ प्रश्नवाचक

एक०	मूल०		को	[कौन]	व्यक्तिवाची
			का	[कौन]	वस्तुवाची
	वि०	(सामान्य)	की	[कौन]	
		(सम्प्रदान)	किये	[कौनैं]	
बहु०	मूल०		को-को	[कौन-कौन]	व्यक्तिवाची
			का-का	[कौन-कौन]	वस्तुवाची
	वि०		काए, कौन		

८-१ i) क्षेत्रीय रूपान्तर पूर्ववत् है ।

ii) 'काए' के बाद 'नैं' कारक-चिह्न का प्रयोग सभव नही ।

iii) 'कौन' की भाषा-व्यापकता दृष्टव्य है; यथा

१. शिवसहाय चतुर्वेदी—हमारी लोक कथाएँ- पृष्ठ ३२

तोरी मती कोन्नै हरी धनसिंह = हे धनसिंह ! तेरी बुद्धि किसने नष्ट कर दी।

मोय कौन की करकै जात = मुझे किस की (स्त्री) बनाकर जा रहे हो।

iv) -ऊ प्रत्यय के जुडने पर उपर्युक्त सर्वनाम-रूप अनिश्चयात्मकता का अर्थ रखते है :—

काऊ	=	किसी (व्यक्ति अथवा वस्तु)
कोऊ	=	,, (,, ,,)
कौनउँ (कौन्हउँ)	=	,, (,, ,,)
कैऊ	=	कई (,, ,,)
क-छू (कुछू)	=	कुछ भी (वस्तु)

९. शेष—i) 'अपन' सर्वनाम रूप 'अपुन' तथा क्षेत्रीय 'अपनाँ' (खाँ-क्षेत्र) रूपान्तर के साथ विशेषत मध्यम पुरुष के लिए, पर साथ ही, उत्तमपुरुष का अर्थी बनकर प्रयुक्त हो रहा है। ऐसा भी जान पडता है कि यह कभी अन्य पुरुष के के लिए भी प्रयुक्त होता था, पर यह अर्थ अब स्पष्ट नही। इसके रूप बहुवचन मे ही मिलेगे। यथा

अपन काँ गए ते = आप कहाँ गए थे ?

अपन सैं तौ कछू नइँ बनत = आपसे कुछ नही बनता, अथवा मुझसे कुछ नही बनता।

ii) 'अपुन-तपुन'--ये शब्द वक्ता एव श्रोता दोनो को अपने मे समेट लेते है।

अपुन-तपुन तला की पार पै घूमबू = हम-तुम तालाब के किनारे घूमेगे।

iii) आपइँ-आप, अपनइँ-आप आदि सामासिक पद 'स्वयं एव' का अर्थ रख रहे है।

iv) निश्चय ही यह विशेषण-रूप अपनौ' (आ + न + अन्यान्य पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग वर्गीय विभक्ति-प्रत्ययो सहित) से ऐतिहासिक सम्बन्ध रख रहा है। इसी कोटि का एक सर्वनाम तथा विशेषण शब्द 'फलानौ' भी है जो हिन्दी मे 'अमुक', 'फलाँ' का अर्थी है।

१०. सूक्ष्म अर्थों की अभिव्यक्ति के लिए उपर्युक्त सर्वनामो की द्विरुक्ति अथवा दो-दो सर्वनामो के योग की प्रवृत्ति बढ रही है--

जो कोउ (जुकोउ)	=जो कोई (=कोई भी)
जौन कौनउ	= ,, (= ,,)
कौनउँ न कौनउँ	= कोई न कोई
कोउ-कोउ	= कोई कोई
का—का	= क्या क्या

कारक प्रत्यय

११. सर्वनाम के कारक-चिह्न वे ही है जो कि सज्ञाओ के लिए प्रयुक्त हो रहे है, फिर भी खाँ क्षेत्र मे इनके ध्वन्यात्मक रूपो मे जो अन्तर आ जाता है उसका स्पष्टीकरण यहाँ अभीष्ट है। इन कारक-चिह्नो के दो रूप उक्त क्षेत्र मे मिल रहे है —

कर्त्ता	नैं ~ न्हैं
कर्म	खाँ
करण-अपादान	सैं
सम्पदान	के ~ खे + लानैं
सम्बन्ध	कौ ~ खौ, के ~ खे, की ~ खी, कैं ~ खैं
अधिकरण	मैं ~ म्हैं
	पै ~ फै

वैकल्पिक रूपो मे जो महाप्राण युक्त रूप है, उनका योग कतिपय अपवादो को छोडकर सर्वनामो के एकवचन रूपो के साथ ही सभव है, अन्यत्र जैसे सज्ञा एकवचन व बहुवचन (क्रियार्थक सज्ञाओ सहित), विशेषण एकवचन व बहुवचन (कृदन्त रूपो सहित), अव्यय तथा सर्वनाम बहुवचन रूपो के साथ महाप्राण-रहित रूप प्रयुक्त हो रहे है। वस्तुत ये रूप पूरक-स्थिति मे प्रयुक्त होते हैं अर्थात् morphologically conditioned है, यथा—

नैं ~ न्हैं (कर्त्ता०) —ए-, ओ-, जे-, कें -न्हैं मारो।

पर मौडा, बडे, तुम, आप नैं मारो।

अपवाद मैंनैं मारो, तैंनैं मारो।

कौ ~ खौ ···(सम्बन्ध०)

ए-, ओ-, जे-, के- खौ मौडा ·· ··

पर मौडा, बड़े, राम, आप कौ मौडा · ·· ··

अपवाद मो-, तो- रूप जिनके अपने सम्बधकारकीय चिह्न है।

पैं ~ फैं ·· · (करण तथा अधिकरण)

मो-, तो-, ए-, ओ-, जे-, के- फैं

पर मौडा, बडे, तुम, आप पैं · ··

मैं ~ म्हैं · (अधिकरण) पैं ~ फैं की ही तरह।

[ख्वौ, फैं आदि रूप महाप्राण युक्त ही यत्र-यत्र लिखे हुए मिल जायेंगे, पर भिन्न लिपि-चिह्न न होने के कारण लोगो के मस्तिष्क मे नैं, मैं रूप ही बसे हैं, अतएव यहा वैकल्पिक रूप —न्है, म्है लिखे हुए न मिलेंगे]

११-२. कारक-चिह्नो के वैकल्पिक प्रयोगो मे पाये जाने वाले महाप्राण तत्त्व के ऐतिहासिक विकास पर विचार करने के पूर्व इन एकवचन सर्वनाम-रूपो के वैकल्पिक प्रयोगो पर भी ध्यान दे लिया जाए। ए-, ओ-, जे-, के- सर्वनाम रूपो का प्रयोग भाषा मे केवल कारक-चिह्नो से जुड़कर ही होता है, अन्यत्र अर्थात् इनके बीच मे किसी सज्ञा, विशेषण अथवा सश्लिष्ट-प्रत्यय के आने पर इनका ध्वन्यात्मक रूप ई, ऊ, जी, की, मिलता है, यथा :—

i) इ, ऊ, जी, की आदमी कौ

ii) इदनाँ, उदनाँ, जिदनाँ, किदनाँ तथा इतै, उतै, कितै, आदि।

अपवाद रूप मे एक प्रकार के प्रयोग और है जिनमे ए-, ओ- आदि रूप उपलब्ध हो रहे है, यथा—

एई कौ = इसी को

एऊ कौ = इसका भी

इसी प्रकार ओई, ओऊ, जेई, जेऊ कौ ·

इन अन्तिम उदाहरणो से स्पष्ट है कि ये कारक-चिह्न जब ए-, ओ-, जे-, के- के साथ जुडकर आते है, तभी महाप्राणत्व का योग हो जाता है, अन्यत्र नही। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुचते है कि उक्त रूप सभवत *एह्, *ओह्, *जेह्, *केह्, तथा साथ ही *मोह्, *तोह् है जो कि कारक-चिह्नो

से सश्लिष्ट होने पर अपनी महाप्राणता कारक-चिह्नो को सौप देते है। यथा —

एह् + कौ > एखौ
ओह् + कौ > ओखौ
मोह् + पै > मोफै

ऐसा जान पडता है कि ये रूप अपभ्रश-स्तर के हैं। इनमे प्रयुक्त ए, ओ ध्वनियाँ ह्रस्व ही जान पडती है। एह + कौ (।+।+ऽ) = एखौ (ऽऽ) अर्थात् विकास मे मात्राओ मे कोई अन्तर नही पडा।

१२. उपर्युक्त सर्वनाम-रूपो को आधार बनाकर कुछ विशेषण तथा अव्यय शब्दो की भी रचना हुई है (देखिए, पृष्ठ १०३)। रचनात्मक प्रत्यय प्रधानत -त्-, -त्-, -स्- है। साथ ही, कुछ सज्ञा शब्द भी (दिनाँ = दिन, तरह > तराँ ~ तनाँ) प्रत्यय-रूप धारण करते जा रहे है। सलग्न चार्ट मे इन सभी को व्यवस्थित किया गया है। कुछ उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार है

i) -औ/ओ मे अन्त होने वाले विशेषण हरीरौ / हरओ की तरह रूप-रचना रखते है। (विषय क्रम, विशेषण, २)

ii) सह-सम्बन्ध वाचक सर्वनाम पर आधारित रूपो का प्रयोग विरल है।

उदाहरण :

इत्तौ = इतना
ऐसौ = ऐसा
ऐसैं = इस तरह
ई तराँ = इस तरह
इदनाँ = इस दिन
अबै = अभी
ह्याँ = यहाँ
हिनाँ = यहाँ
इतै = इस ओर, यहाँ
जै = जितने
कै = कितने

		विशेषण			अव्यय				
सर्वनाम	प्रकृति	परिमाण	गुण	सख्या	रीति	काल I	काल II	स्थान	रीति-स्थान
निकट० येह	इ-‿ अ-‿ अय्-	इ-त्-औ	अय्-स्-औ	+	अय्-स्-ऐँ	इ-दनाँ	अ-ब्-ऐ	ह्-याँ (इ-हाँ) ह्-इ-नाँ (इ-ह्-नाँ)	इ-त्-ऐ
दूर० वोह	उ-‿ व्-	उ-त्-औ	वय्-स्-औ	+	वय्-स्-ऐँ	उ-दनाँ	+	ह्-वाँ (उ-हाँ) ह्-उ-नाँ (उ-ह्-नाँ)	उ-त्-ऐ
सम्बन्ध जौन	ज-‿ जि-‿ जय्	जि-त्-औ	जय्-स्-औ	ज्-अय्	जय्-स्-ऐँ	जि-दनाँ	ज् ब्-ऐ	ज-हाँ	जि-न्-ऐ जि-त्-आँय
सह० तौन	त-‿ ति-‿ तय्-	ति-त्-औ	तय्-स्-औ	त्-अय्	तय् स्-ऐँ	ति-दनाँ	त्-ब्-ऐ	त-हाँ	ति-त्-ऐ ति-त्-आँय
प्रश्न० कौन	क-‿ कि-‿ कय्	कि-त्-औ	कय्-स्-औ	क्-अय्	कय्-स्-ऐँ	कि-दनाँ	क्-ब्-ऐ	क-हाँ	कि-त्-ऐ कि-त्-आँय

क्रिया

१ साधारणत हिन्दी तथा हिन्दी-प्रदेश की अन्याय क्षेत्रीय बोलियो के क्रिया-पदो मे काल, वाच्य, अर्थ, पुरुप, वचन तथा लिग-द्योतक रचनात्मक प्रवृत्तियो का विधान रहता है। आवश्यक नही, कि प्रत्येक क्रिया-पद उक्त सभी विशेषताओ से युक्त हो, पर अनिवार्यत कई एक प्रवृत्तियाँ किसी एक पद मे परिलक्षित हो जाती है।

२. रूप-रचना की दृष्टि से बुन्देली क्रियाएँ दो वर्गों मे विभाजित करके देखी जा सकती है—

i) साधारण (Ordinary)
ii) यौगिक (Derivative)

और उक्त दृष्टि से बुन्देली का कोई एक क्रिया-पद अनिवार्यत निम्नलिखित किसी एक वर्ग मे रखा जा सकता है—

i) धातु (विभक्ति-प्रत्यय, शून्य)
ii) धातु + वचन-पुरुष-द्योतक विभक्ति-प्रत्यय
iii) धातु + लिग-वचन-द्योतक कृदन्तीय प्रत्यय
iv) धातु + कृदन्तीय प्रत्यय + सहायक क्रिया

बुन्देली के इन रचनात्मक तत्वो के सम्बन्ध मे अलग-अलग विस्तार से विचार किया जा सकता है।

धातु

बुन्देली धातुएँ दो वर्गों मे विभक्त है—

i) स्वरान्त
ii) व्यञ्जनान्त

स्वरान्त ये पुन दो वर्गों मे विभक्त है—मूल एव यौगिक। साथ ही, सभी दीर्घ स्वरो मे अन्त होने वाली है।

मूल : लगभग सभी दीर्घ स्वरो—अनुनासिक तथा निरनुनासिक—मे अन्त होने वाली, यथा—

√जा, √पी, √छू, √ले, √पै (=रोटी बनाना), √खो,
√सीं (=सीना), √टे (=तेज करना), √भॉ (=मथना)

यौगिक प्रेरणा प्रत्यय -आ अथवा -वा तथा नाम-धातु-प्रत्यय
-या से योग-निष्ठ होने वाली, यथा—
√खवा- (=खिला), √खववा- (=खिलवा),
√करा-, √करवा-,
√हथया-(=हस्तगत करना), हाथ से
√गरया-(=गाली देना), गारी से

व्यजनान्त ये भी पुन दो रूपो मे विभक्त है—मूल एव ह्रस्वीकृत
(weak grade)

मूल इन धातुओ का मूल स्वर ह्रस्व एव दीर्घ दोनो ही
प्रकार का हो सकता है। यथा

√काट, √ढील (=छोडना), √पेर (=कुचलना), √भौक
(=घुसेडना), √पूर (=भरना), √बोर (=डुबोना),
√कर, √चल, √सर (=सडना), √गिर आदि,

ह्रस्वीकृत (weak grade roots)—इन धातुओ का
धातु-स्वर सदैव ह्रस्व ही मिलता है। इनको यह सज्ञा
इसलिये दी गई है कि ये धातुएँ अपना एक अनिवार्य
प्रतिरूप जो कि दीर्घ धातु-स्वर वाला है, मूल धातुओ
(स्वरात अथवा व्यजनान्त मे रखती है। इस तथ्य
के आधार पर यदि हम कहना चाहे तो उन प्रतिरूप
मूल धातुओ को दीर्घ धातुएँ (strong grade roots)
भी कह सकते है।

३-१ ह्रस्वीकृत धातुएँ (weak-grade roots), जैसा कि ऊपर
सकेत किया गया है, दो वर्गो मे विभक्त हो रही है,

1) व्यजनान्त मूल धातुओ के ह्रस्व रूप, यथा :
√बाँध > बँध = बाँधना—बँधना
√पीस > पिस = पीसना—पिसना
√पूर > पुर = भरना—भर जाना
√पोँछ > पुँछ = साफ करना—साफ हो जाना

ii) स्वरान्त मूल धातुओ के ह्रस्व रूप, यथा ·

√गा > √गब = गाना
√खा > √खब = खाना
√पी > √पिब = पीना
√छू > √छुब = छूना
√खो > √खुब = खोना
√सीँ > √सिम = सीना
√माँ > √मम = मथना
√टेँ > √टिम = घिसना
√दोह > √दुभ = दुहना
√गोह > √गुभ = गूँथना
√कह > √कभ = कहना
√नह > √नभ = कधे पर जुआ रखना
√पै > √पब = रोटी बनाना

टिप्प० i) अनुस्वारान्त धातुओ का अनुस्वार ब् के साथ मिलकर म् मे परिवर्तित हो जाता है ।

ii) -ह मे अन्त होने वाली धातुएँ रूप-रचना मे स्वरान्त की प्रवृत्ति रखती है । इस प्रकार ब् और अन्तिम ह् मिलकर भ् ध्वनि मे परिणत हो जाते है ।

३-२ दीर्घ एव ह्रस्व अपश्रुति धातुओ (strong and weak grade roots) के धातु स्वरो के बीच सधि-नियमो (morphophonemic rules) की स्थापना इस प्रकार की जा सकती है

आ > अ
ई, ए > इ
ऊ, ओ > उ
ऐ > इ
औ > उ

३-३. साहित्यिक हिन्दी मे इन ह्रस्वीकृत धातुओ से बने क्रिया-रूपो का प्राय अभाव है । इनके कर्मवाचीय अर्थ की अभिव्यञ्जना का अर्थ हिन्दी मे सयुक्त क्रिया-रूपो ने ले लिया है । बुन्देली मे इन धातु-रूपो का प्रयोग बहुलता से होता है, यथा .

खब् + वा = खब्बा = खाने वाले
खब् + बू = खब्बू = खाने वाली
खब् + अइया = खबइया = खाने वाला
खब् + आई = खबाई = खिलाई (पिलाई)
खब् + आउत = खबाउत = खिलाता

इस मे सन्देह नही कि यह -ब्, धातु का एक अश ही है, परन्तु इसके दीर्घ प्रनिरूपो को देखकर सहसा इस ध्वनि-सन्धि की ओर ध्यान नही जा पाता। यदि काट- से कट- है, बाँध से बँध है तो खा- से ख- और जा- से ज- ही होना चाहिए, न कि खब- और जब-। पर यदि हम बुन्देली के अन्य क्रिया-पदो को सामने रखे तो इस सन्धि-नियम की गुत्थी बहुत कुछ सुलझ जाती है। उदाहरणत, आउत, गाउत का -उ- तथा आव्नै, गाव्नै का -व्- निश्चय ही इस -ब्- से सम्बन्धित है। साथ ही सूर एव तुलसी के आवत, गावत, आवै, गावै, पावै आदि तथा बाँदा की बोली के आबत, गाबत आदि क्रिया-पदो के -व्- एव -ब्- अश भी उक्त निष्कर्ष की पुष्टि कर रहे है। इस प्रकार हम दीर्घ धातुओ को खा-, जा-, आ-, गा-, रूप मे न मानकर * खाब्, *जाब्, * आब्, *गाब् रूप मे मान सकते है, जिनका ह्रस्व रूप नियमत. खब्-, जब्-, अब्- तथा गब्- हो सकना है, परन्तु इस -ब् का -उ- [यथा आउत, गाउत] अथवा -व्- [यथा आव्नै, गाव्नै] मे परिवर्तन ध्वनि-विज्ञान के सिद्धान्तो के निकट नही है। अतएव हम -ब्- के स्थान पर धात्वश मे -व्- को स्वीकार कर सकते है। इस प्रकार धातुएँ होगी—√खाव, √जाव, √गाव आदि, जो कि एक ओर -उ- अथवा -व्- मे तथा दूसरी ओर -ब्- मे परिवर्तन ले सकती है। इस निष्कर्ष को लेकर हमे अपने पूर्व-कृत वर्गीकरण (विषय क्रम ३) मे आवश्यक सशोधन करना होगा और बुन्देली की सभी मूल अथवा यौगिक धातुओ को व्यञ्जनान्त ही कहना होगा अर्थात् सभी स्वरान्त धातुए -व्कारान्त हो जायेगी। इस प्रकार दो लाभ होगे—

प्रधानत ३--३ मे गिनाए गए अधिकाधिक सज्ञा अथवा क्रिया-पदो मे पाए जाने वाले परस्पर सन्धि-नियम स्पष्ट होते है। दूसरे क्रिया-रूपो की ऐतिहासिकता की साक्षी मिल जाएगी, क्योकि इस प्रत्ययाश व् का विकास निस्सन्देह धातु तथा विकरण के मध्य विकसित श्रुति रूपो मे ही हुआ है। यथा:

स० खादति > प्रा० खाअइ > ब्रजी खावै

विश्लेषण के अन्य दो मार्ग हो सकते है :—

i) इन्हे प्रत्ययाश माना जाए, यथा आ + उत
ii) इन्हे विकरण माना जाए, यथा आ + उ + त

पर अन्य क्षेत्रीय रूपो को तथा भाषा के आन्तरिक गठन को ध्यान मे रखते हुए ये अधिक व्यावहारिक नही कहे जा सकते ।

४. अपने रचनात्मक वैभव से पूर्ण कुछ सहायक क्रियाएँ ऐसी भी है जिनका कार्य, कर्त्ता अथवा कर्म का भार सँभालने वाली प्रमुख क्रिया को सहयोग प्रदान करना ही है । कार्य प्रणाली के आधार पर इनको तीन भागो मे विभक्त करके देखा जा सकता है ।

i) विभिन्न 'अर्थो' एव 'कालो' की सूक्ष्माभिव्यक्ति मे सहयोग देने वाली क्रियाएँ । ये सख्या मे दो है:—√ह- √हो-, पर है, ये अपने सभी लिग, वचन, पुरुष के विभक्ति-प्रत्ययो के साथ । इनका प्रयोग कभी-कभी प्रमुख क्रिया के रूप मे भी हो जाया करता है । दोनो प्रयोग दृष्टव्य है—

बौ पढा है = वह विद्वान है (प्रमुख क्रिया)
ऊ नै पढो है = उसने पढा है (सहायक क्रिया)

ii) कर्मवाचीय अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए भी √जा-, √हो- इन दो क्रियाओ का सहयोग भाषा को मिला है । ये अपने तिडन्तीय एव कृदन्तीय प्रत्ययो के साथ प्रयोग मे आती है ।

iii) अभिधार्थो मे नवीनता लाने के लिए आधुनिक आर्य-भाषाओ की क्रियाओ ने अपनी कुछ सहगामिनी क्रियाओ से सहायता ली है । ये सहायक क्रियाएँ स्वतत्र अर्थ भी रखती है और कभी-कभी प्रमुख क्रियाओ से मिलकर उसमे नई अभिव्यक्ति का समावेश करती है । इस प्रकार मुख्य एव सहायक क्रियाओ से युक्त क्रियाओ को 'सयुक्त- क्रियाएँ' कहा जा सकता है ।

हम सहयोगी क्रियाओ के प्रथम वर्ग को ही सहायक क्रियाएँ कहेगे, क्योकि इन्होंने अपना अलग से अस्तित्व प्राय समाप्त कर किया है । दूसरा वर्ग मध्यवर्ती है तथा तीसरे वर्ग को 'सयुक्त- क्रियाओ' के अन्तर्गत लिया गया है ।

सहायक क्रियाएँ

५ 'हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास'(डॉ० उदयनारायण तिवारी) के पृष्ठ सख्या २५९ मे वर्तमान काल की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त बुन्देली सहायक क्रियाओ के रूपो को इस प्रकार सग्रहीत किया गया है—

	एक वचन		बहु वचन	
उत्तम पु०	i) हौ	ii) आँव	i) है	ii) आँय
मध्यम पु०	है	आय	हौ	आव
अन्य पु०	है	आय	है	आँय

वस्तुत बुन्देली भाषा की पद-वितरण पद्धति पर विशेष ध्यान न जाने के कारण ही यह भ्रमपूर्ण निष्कर्ष निकला है। इन दोनो कोटियो के रूपो की प्रयोग-सीमाएँ इस प्रकार निर्धारित की जा सकती है :—

प्रथम कोटि के रूप विशेषत अपूर्ण-क्रिया-रूप मे प्रयुक्त होते है। ऐसे वाक्यो मे पूरक शब्दो की आवश्यकता पडती है। यथा

मै ठाकुर आँव = मै ठाकुर हू।
वैं बनियाँ आँय = वे वैश्य है।

इन वाक्यो मे निषेधात्मक रूप से निश्चयात्मकता का भाव निहित है, अर्थात्, हमे कोई दूसरी जाति न समझ लीजिए। इन स्थानो पर द्वितीय कोटि के रूपो का प्रयोग साधारणत नही होता।

द्वितीय कोटि के रूपान्तर विशेषत सयुक्त कालो की रचना करते समय सहायक-क्रिया-रूप मे प्रयुक्त है। यथा :

मै जात हौ = मै जाता हूं
वैं खात है = वे खाते है
ऊ आउत है = वह आता है

इस प्रकार के वाक्यो मे प्रथम कोटि के रूपान्तरो का प्रयोग अत्यन्त विरल है। प्रयुक्त होने पर क्रियार्थ मे निश्चयात्मकता बढ जाती है।

रूपो की एक तीसरी कोटि भी कही जा सकती है जो कि ऐतिहासिक दृष्टि से प्रथम कोटि के रूपान्तरो के अत्यधिक निकट है। प्रश्नोत्तर वाली साधारण शैली मे इनका प्रयोग बहुधा होता रहता है। यथा—

तैं को आहै ? मै आँहों रामगुर।
तुम को आहौ ? हम आँहें फलाने।

स्वर मध्यवर्ती -ह्- का लोप बुन्देली का सामान्य लक्षण है। फलस्वरूप इन रूपो से प्रथम कोटि के रूपान्तरो का विकास बहुत ही स्पष्ट है। और भी, जब कोई अहीर अकड कर मद गति से कहता है कि मोखाँ नइँ जानत, का समज लओ नैनै, मै भैसाएं को दउवा आय हो।' नब सभी प्रकार के रूपो का समन्वय हो जाता है और विकास का यह क्रम निर्धारिन किया जा सकता है—

आय + हौ > आँहौँ > आँव, उत्तम पु० एक०

आय + है > आहै > आय, अन्य पु० एक०

आय + हैं > आँहैं > आय, अन्य पु० बहु०

यहाँ बैसवाडी-क्षेत्र मे प्रचलित इस प्रकार के दोहरे वर्ग-रूपो की चर्चा कर देना अनावश्यक न होगा।

		एक०	बहु०
i)	उत्तम पु०	आहिउँ	आहिन
	मध्यम पु०	आही	आहिउ
	अन्य पु०	आही, आय	आहीँ
ii)	उत्तम पु०	हउँ	हन
	मध्यम पु०	हइ	हउ
	अन्य पु०	हइ	हइँ

इन रूपो की प्रयोग सीमाएं भी सम्भवत वे ही है जो बुन्देली के लिए निर्धारित की जा चुकी है। फलस्वरूप द्वितीय कोटि के रूपो मे 'आय' के पूर्व योग से प्रथम कोटि के रूपो के विकास का अनुमान लगाया जा सकता है। 'है' अर्थ से होड़ लेने वाला यह 'आय' यदि सस्कृत 'अस्ति' से सम्बन्ध जोड लेता है तो उसकी व्युत्पत्ति की खोजबीन की ओर प्राय ध्यान नही जाता। वस्तुत हुआ ऐसा ही है।

स० अस्ति > प्रा० अत्थि > पुरानी हिन्दी आथि[1] > आहि[2] > आय।

इस प्रकार 'आय' का सम्बन्ध अस्ति से जोडना ध्वनि-नियम से परे नही, फिर भी यह आपत्ति की जा सकती है कि इस 'है' अर्थक 'आय' मे जिसका प्रयोग समाज मे बहुलता से होता रहा होगा, दूसरे 'है' अर्थक रूपान्तर के योग की क्या आवश्यकता थी ? इसके विपरीत यह अधिक तर्कसगत जान पडता है कि निषेधात्मकता, निश्चयात्मकता तथा सकेतात्मकता का बोधक यह 'आय' कोई सार्वनामिक रूप है जिसमे 'है' अर्थक सहायक-क्रिया-रूपो

१ जायसी ने अपने पद्मावत मे इसका 'है' अर्थ मे तीन बार प्रयोग किया है।

२. व्रज और बैसवाड़ी साहित्य में बहुलता से प्रयुक्त।

का योग हो गया है। अवधी क्रियाओं के पुरुष- वचन-भेदों को स्पष्ट करने वाले विभक्ति प्रत्यय, डॉ० बाबूराम सक्सेना के अनुसार, इन्ही सहायक क्रिया-रूपों के अवशेष-चिह्न है[1]। यथा

देखे + हउँ > देखेउँ
देखे + हन > देखेन > देखिन
आय + हउँ > आहिउँ
आय + हन > आहेन > आहिन

ठीक उसी प्रकार अन्य क्रिया-रूपो के साथ तो नही पर 'आय' के साथ अवश्य 'है' रूपान्तरों के योग की यह प्रवृत्ति बुन्देली मे परिलक्षित हो रही है।

बुन्देली की 'लुधाँती' (खाँ-क्षेत्रीय बोली) मे इस 'आय' का विशुद्ध अर्थ तथा विभिन्न प्रसगो मे इसके अर्थ पर भी विचार कर लेना चाहिए।

सकेतार्थक —'को आय' निश्चय ही यह वाक्य-खण्ड क्रिया-रहित सस्कृत-कोऽय का विकसित रूप है।

दिशा निर्देशक—कतिपय सर्वनाम रूपो के साथ 'आय' का योग हुआ है। यथा .

कौं जात दादी ? भाई, कहाँ जा रहे हो ?
क्याँय जात दादी ? = भाई, कहाँ जा रहे हो ?

परन्तु अर्थ मे 'किस ओर' का सकेत है। सभवत. नाँय, माँय, इताँय, उतांय रूप भी ऐसे ही हो।

सकेतार्थक + निश्चयार्थक—

ऊ आय गओ तो हारै = वह ही खेत को गया था।
ऊ हारै आय गओ तो = वह खेत को ही गया था।
ऊ हारै गओ आय तो = वह खेत गया ही था।

यह 'आय' पूर्ववर्ती निकटस्थ शब्द पर जोर डाल रहा है, उक्त वाक्यो के क्रमश विशुद्ध अर्थ होगे—

वह ही खेत पर गया था, दूसरा कोई नही।
वह खेत पर ही गया था, अन्यत्र कही नही।
वह खेत पर केवल चला गया था, कोई विशेष प्रयोजन न था।

यदि हम यहाँ 'आय' को 'है' अर्थी मानै, तो फिर भूतकालिक सहायक क्रिया 'तो' अनावश्यक ठहरती है।

---

१ Evolution of Avadhi, page 253.

'आय' के ठीक इसी प्रकार के प्रयोग सतना समीपवर्ती बघेली मे भी देखे जा सकते है । यथा

सिगटिनिया फेर कहिस कि तुम जानत्याहै इन मूडन केर मोल कि वैसे 'आय' हँसत्याहै । सिगटहवा कहिस कि सुन, हम जानित तो जरूर हयन पै बताउब ना । जो बताय दिहेन औरु कोउ सुन लिहिस तौ सब तार-व्यौत बिगर जई । सिगटिनिया कहिस कि तुम कुछु आय नही जनन्या, वैसै झूरै 'आय' डीग मरत्याहै ।[1]

उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि यह 'आय' सकेत गर्भित निश्ययार्थ बोधक है । निश्चयवाचक सर्वनाम रूपो की विवेचना करते हुए डा० तेस्सी-तोरी ने अपनी 'पुरानी राजस्थानी' मे लिखाहै—'ये सर्वनाम रूप 'ए', और 'आ'—दो प्रकृति के समूहो मे विभक्त है । इनके अर्थ मे कोई अन्तर नही है क्योकि दोनो से ही निश्चय का बोध होता है, अन्तर केवल इतना ही है कि 'आ' से निश्चय की अधिक मात्रा प्रकट होती है ।'[2] निश्चय ही प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी तथा आधुनिक गुजराती 'आ' से ही इस 'आय' की निकटता है, फलस्वरूप सस्कृत 'अय' या 'अदम्' से इसका ऐतिहासिक सम्बन्ध जोडा जा सकता है । प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओ मे सस्कृत के उक्त दोनो के रूपान्तरो का सम्मिश्रण मिलता है ।[3] अपभ्रंश साहित्य मे 'यह' अर्थक 'ए, एहु, एहिं' आदि रूपो के साथ-साथ 'आअ, आअहो, आअइ' आदि रूपो का बहुलता से प्रयोग मिलता है । बुन्देली और बैसवाडी के निश्चयार्थ बोधक 'आय' इसी अपभ्रंश रूप 'आअ' का विकसित रूप होना चाहिए और बुन्देली का,

आय + हौं > आँहौं > ऑव
आय + है > आहै > आय
आय + हौ > आहौ > आव

यह विकास क्रम होना चाहिए ।

६ अब सहायक क्रिया के है, हौ, आदि रूपो के प्रकृति एव प्रत्याशो पर भी विचार करना समीचीन होगा । तुलना के लिए हम यहाँ √चल् धातु के रूपो को प्रस्तुत कर सकते है । यथा .

१ हमारी लोक कथाएँ, सम्पादक– शिवसहाय चतुर्वेदी पृष्ठ ७८
२ पुरानी राजस्थानी, अनु० नामवर सिह, पृष्ठ १०९
३. पिशेल, प्राकृत भाषाओ का व्याकरण (अनु० डा० हेमचन्द्र जोशी) पृष्ठ ६३५ तथा
Historical Grammar of Apabhransha by Tagare page 244.

एक०	बहु०	एक०	बहु०
चलौ	चलैं	हौं	हैं
चलै	चलौ	है	हौ
चलै	चलैं	है	हैं

स्पष्ट है कि –ओ, –ऐ, –औ आदि प्रत्ययाशो का योग दोनो मे ही हुआ है। परिणामत उक्त रूपो मे पाई जाने वाली धातु-प्रकृति √ह् ठहरती है।

यहाँ एक बात और भी विचारणीय है कि जिस प्रकार √चल् धातु से कुछ और रूप भी प्रकट होते है, यथा— चलतो, चलत आदि -त-प्रत्यान्त रूप तथा चलो, चली आदि शून्य-प्रत्ययान्त रूप, उसी प्रकार उक्त प्रत्ययो सहित √ह् धातु का प्रयोग भाषा मे कहाँ और किस प्रकार हो रहा है ? बुन्देली मे अभी-अभी तक हतो, हते, हती रूप प्रचुरता से प्रयुक्त हो रहे थे, लोक-गीतो मे उक्त रूपो की भरमार है। परन्तु आज की बुन्देली मे प्रकृति 'ह' का लोप हो गया है और केवल प्रत्ययाश ही प्रकृति बनकर यथा जात्तो, जात्ती, गए ते आदि रूपो मे शेष रह गया है। स्वर-मध्य मे प्रयुक्त होने के कारण उनकी यह दशा हुई है। ध्वनि-सन्धि का यह परिणाम अस्वाभाविक नही कहा जा सकता। रहे, दूसरे प्रकार के रूप, जो कि 'ह' धातु मे शून्य प्रत्यय लगकर बनने चाहिए थे अर्थात् हो, ही, हे आदि। ये बुन्देली क्षेत्र मे प्रयुक्त हुए नही जान पडते। वस्तुत ये रूप शेखावाटी एव ब्रज क्षेत्र मे बहुलता से प्रयुक्त हुए है। इन रूपो के लोप के मूल मे अर्थ परिवर्तन-सम्बन्धी कारण निहित है जिन्हे इस प्रकार समझा जा सकता है।

पुरानी हिन्दी (ब्रज और अवधी साहित्य) मे वर्तमान काल के निश्चयार्थक चलौं, चलैं आदि रूप आधुनिक हिन्दी (अथवा बुन्देली) मे सम्भावनार्थक हो गए है। बहुत सम्भव है कि वर्तमानकालिक -त- प्रत्यय का इसमे कुछ हाथ हो, जो कि इस समय दो अर्थो के लिए प्रयुक्त हो रहा है—वर्तमान कालिक निश्चयार्थ तथा भूत सम्भावनार्थ। प्रथम अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए बुन्देली आदि सभी बोलियाँ ह्-धातु के मूल निश्चयार्थक प्रत्ययाशो (स०—ति > प्रा० -इ > हि०, विकरण—अ + इ = ए अथवा ऐ) को लेकर खडी है और द्वितीय अर्थ, यदि, अगर आदि सम्भावनार्थक पदो के साथ भूतकालिक अर्थ देता है, यथा—अगर वौ आतो। इस भूतकालिक अर्थ की अभिव्यजनात्मक प्रवृत्ति को लेकर हतो, हते आदि रूप भूतकालिक बने जो कि अब तो, ते आदि रूप मे शेष रह गए है। इनके उसी अर्थ मे प्रवेश

पा जाने के कारण, स्वाभाविक है कि भूतकालिक प्रत्ययाश युक्त हो, हे, ही आदि रूप भाषा मे न आ सके। इसके विपरीत शेखावाटी मे जहाँ पुराने वर्तमान काल के आवै, चलै आदि रूप है, हो के साथ अब भी वर्तमान कालिक निश्चयार्थ बने हुए है. वहाँ हो, हा, ही आदि भूतकालिक रूप ही स्थान पा सके है। पर वैसी स्थिति मे वहाँ हतो, हते आदि रूपो के प्रयोग के लिए स्थान न रहा।

- इस प्रकार ह् धातु से बने हुए सहायक क्रिया के रूप है, हौ, हो आदि कर्त्ता के पुरुष-वचन के अनुसार तथा हतो, हते, हती आदि कर्त्ता के लिग-वचन के अनुसार प्रभावित होते हुए प्रयुक्त होते है।

६ १ दूसरी सहायक क्रिया 'हो' है। यह अपने सभी विभक्ति-प्रत्ययो के साथ प्रयुक्त होकर भाषा के विभिन्न अर्थो (moods) को स्पष्ट करती है। वर्तमानकालिक पुराने निश्चयार्थक रूप जो कि अब सम्भावनार्थक हो गए है और जिनकी चर्चा 'है' के सबन्ध मे ऊपर की जा चुकी है, अपने दो रूप-भेदो के साथ भाषा मे व्यवहृत है। एक तो व्यजनान्त धातुओ के साथ, यथा—'ह्' धातु और दूसरे स्वरान्त धातुओ के साथ यथा—'हो' धातु।

ह्—	–औ	–ऐ
	–ऐ	–औ
	–ऐ	–ऐ
हो—	–वँ	–यँ
	–य्	–व्
	–य्	–यँ

पुरुष-वचन-विभेद रखते हुए ये रूप वर्तमान, भूत तथा भविष्यत्कालिक रूपो के साथ मिलकर 'सम्भावना' के अर्थो की अभिव्यक्ति करते है। यथा·

अगर बौ आउत होय = अगर वह आता हो (होवे)
अगर बौ आओ होय = अगर वह आया हो (होवे)
अगर उऐ आउनै होय = अगर उसे आना हो (होवे)

लिग-वचन-विभेद रखने वाले दूसरे प्रकार के रूप –त- प्रत्ययान्त हैं। यथा—होतो (पु० एक०) होते (पु० बहु०), होती (स्त्री० एक०) होती (स्त्री० बहु०)। ये रूप भी हतो की तरह भूतकाल मे प्रयुक्त होकर विधि (Conditional) अर्थ की अभिव्यजना कराते है; यथा—

बौ आउत होतो तौ · यदि वह आता होता तो
बौ आओ होतो तौ···· यदि वह आया होता तो···
उऐ आउनै होतो तौ यदि उसे आना होता तो

भाषा के सामान्य गठन के अनुसार लिग-वचन-विभेद रखने वाले तीसरे प्रकार के रूप –०–शून्य प्रत्ययान्त होने चाहिए, यथा— *होओ (=हुआ), *होई (=हुई), *होए (=हुए), *होईं (=हुईं)। खडी बोली हिन्दी मे ये रूप अर्थ–सम्बन्धी (modal) अन्तर स्पष्ट करने वाली सहायक क्रिया के रूप मे विकसित न हो सके और आज वे कृदन्तीय विशेषण बनकर प्रयोग मे आ रहे है, यथा—आता हुआ ·, आते हुए आदि। बुन्देली मे इनके स्थान पर भयो, भए, भई रूप विकसित हुए है, यथा—चलतमान भए, खेली भई गेद। मूलत दोनो एक है। सस्कृत की भू (भव-) धातु से भूतकालीन भयो आदि रूप और ध्वनि-परिवर्तन से होता, होय आदि रूप बने है।

उक्त सहायक क्रिया के चौथे प्रकार के रूप भविष्यत् कालीन सभावनार्थी है। ये पुरुष-वचन-विभेद रखते हुए क्षेत्रीय अन्तर भी रखते है। यथा—

	खॉ-क्षत्र	को-क्षेत्र	खो-क्षेत्र
एक०	होहौ	हुइयो	हुवो
	होहै	हुइऐ	हुवे
	होहै	हुइऐ	हुवे
बहु०	होहै	हुइऐ	हुवे
	होहौ	हुइऔ	हुवौ
	होहै	हुइऐ	हुवे

इस प्रकार हम कह सकते है कि व्याकरणिक मूल्यो (काल तथा अर्थ सम्बन्धी) को धारण करने वाली सहायक क्रियाएँ बुन्देली मे दो है—ह् तथा हो। दोनो ही पुरुष-वचन-विभेद रखने वाले तिङन्तीय तथा लिंग-वचन-विभेद रखने वाले वर्तमान कालिक कृदन्तीय प्रयोग रखती है। 'हो' के भविष्यत् कालिक तिङन्तीय रूप भी उपलब्ध होते है।

७. सहायक क्रिया-रूपो का अध्ययन करते हुए हमने उनकी उस प्रकृति (धातु) पर विचार किया जब वह अभिधार्थ (Lexical meaning) को छोडकर प्रधानत व्याकरणिक अर्थ (Grammatical meaning) की अभिव्यक्ति करती है। साथ मे उनके प्रत्ययाशो पर भी आवश्यकतानुसार दृष्टि डालनी पडी। अब यहाँ हम उन काल एव अर्थ द्योतक प्रत्ययाशो की

चर्चा करेगे जो कि उपर छूट गए है या आवश्यकतानुसार उन पर सम्यक् प्रकाश नही डाला जा सका है। रूप तथा काल-रचना की दृष्टि से हम बुन्देली क्रिया-पदो को निम्न तीन भागो मे विभक्त करके देख सकते है —

तिङन्तीय रूप अथवा काल—धातु + पुरुष-वचन-विभेद प्रत्यय

कृदन्तीय रूप अथवा काल - धातु + लिग-वचन-विभेद प्रत्यय

सयुक्त रूप अथवा काल— धातु + लिग-वचन-विभेद प्रत्यय + सहायक क्रिया-पद

तिङन्तीय काल

८. **वर्तमान सभावनार्थ**—

इन प्रत्ययाशो की चर्चा सहायक क्रिया ह्- तथा हो- दोनो के सन्दर्भ मे ऊपर की जा चुकी है (विषय क्रम ६-१)। व्यजनान्त धातुओ के साथ ये स्वरान्त रूप मे तथा स्वरान्त धातुओ के साथ सम्बन्धित अर्ध स्वरान्त (–औ > –व्, –ऐ > –य्) रूप मे परिवर्तित मिलते है।

८-१ **आज्ञार्थक**—आज्ञा का प्रश्न मध्यम पुरुष के साथ ही सभव है, इसलिए इसके रूप केवल वचन-भेद ही रखते है। प्राप्त सभी प्रत्ययाशो के उदाहरण चार वर्गो मे सग्रथित कर सकते है—

i) तू जा—एक०
तुम जाव—बहु०
ii) तू जइए—एक०
तुम जइयो—बहु०
iii) तू जैत—एक०
तुम जैव—बहु०
iv) अपुन जैबी—बहु०

प्रथम वर्ग के उदाहरण तात्कालिक आज्ञा का अर्थ देते है, अतएव इनको वर्तमान आज्ञार्थक कह सकते है। प्रत्ययाश इस प्रकार है—

एक०	बहु०
+	–औ (–व्)

अर्थात् एक वचन मे धातु रूप ही प्रयुक्त होता है और बहुवचन मे व्यजनान्त धातुएँ -औ तथा स्वरान्त धातुएँ -व प्रत्यय स्वीकार करती है।

द्वितीय वर्गीय प्रयोग बढ कर प्रथम वर्ग का स्थान लेते जा रहे है।

इनमे आज्ञा का स्थान प्रेमपूर्ण आग्रह ले लेता है। प्रत्ययांश इस प्रकार है—

एक०	बहु०
–इए	–इओ

1) दीर्घ स्वरान्त धातुएँ अपने धातु-स्वर को ह्रस्व कर लेती है।

11) मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम तू (तै) के प्रयोगो की क्षीणता ने एकवचन के रूपो मे भी कमी ला दी है। यथा—

करकै नेह टोर जिन दइग्रो, दिन-दिन और बढ़इग्रो।
जैसे मिलै दूद मै पानी, ऊसई मनै मिलइयो॥
हमरो ग्रौर तुमारौ जौ जिव, एकईं जानै रइग्रो।
कात ईसुरी बॉय गए की, खबर बिसर जिन जइओ॥[1]

तृतीय वर्गीय प्रयोग विशुद्ध आज्ञार्थक ही है, पर वे आगे आने वाले समय मे किए जाने वाले कार्य की आज्ञा की सूचना देते है, अतएव इन्हे भविष्यत् आज्ञार्थ कहना चाहिए। प्रत्ययाश इस प्रकार है—

एक०	बहु०
–इत	–इव

1) इन प्रत्ययाशो का प्रयोग खॉ-क्षेत्रीय है, अन्यत्र द्वितीय वर्गीय प्रयोग ही मिलेगे।

11) इन प्रयोगो की तुलना मे द्वितीय वर्गीय प्रयोग अधिक विनम्रता द्योतक है।

111) सन्धि-नियम इस प्रकार है —
दीर्घ स्वरान्त धातुओ के –आ एव –ए स्वर, प्रत्यय के -इ स्वर से मिलकर –ऐ मे परिवर्तित मिलते है और –ई तथा –ऊ धातु-स्वर क्रमश –इ और –उ हो जाते है, यथा—

जा–	तै	जैत, तुम जैव
ले–	तै	लैत, तुम लैव
छू–	तै	छुइत, तुम छुइव
पी–	तै	पिइत, तुम पिइव

१ गौरीशंकर द्विवेदी 'शकर', ईसुरी प्रकाश, पृष्ठ ५८

चतुर्थ वर्गीय प्रयोग आग्रह के सूचक ही है, आज्ञा का भाव नही के बराबर है। इसमे कृदन्तीय प्रत्यय की योजना है, इसलिए इसकी चर्चा आगे की गई है।

८-२ **भविष्यत् निश्चयार्थ** :—

भविष्यत् रूपाशो की भौगोलिक सीमाएँ प्रदर्शित करने वाला भाषा-मानचित्र अन्त मे दिया गया है। यहाँ उनके भाषा मे प्रयुक्त होने वाली सीमाओ की चर्चा की गई है।

खाँ–क्षेत्र

एक०	उत्तम पु०	-इहौ ~ -ह्यौ ~ -हौ
	मध्यम पु०	--इहै ~ --ह्यै ~ --है
	अन्य पु०	–इहै ~ ह्यै ~ –है
बहु०	उत्तम पु०	–इहै ~ –ह्यै ~ –है
	मध्यम पु०	–इहौ ~ -ह्यौ ~ –हौ
	अन्य पु०	–इहै ~ –ह्य ~ –है

i) सभी व्यजनान्त धातुएँ द्वितीय वर्गीय रूपाश प्रयोग मे लाती है, यथा चलह्यो, चलह्यै । वस्तुत प्रथम वर्गीय प्रत्यय की -इ-, स्थान-परिवर्तन करके -य्- रूप मे परिवर्तित होकर आती है।

ii) प्रथम एव तृतीय वर्गीय रूपाश वाली धातुएँ एक दूसरे की पूरक (morphologically conditioned) है। --आ एव --ए मे अन्त होने वाली कतिपय स्वरान्त धातुएँ प्रत्ययाश के --इ स्वर से मिलकर --ऐ मे परिवर्तित हो जाती है। यथा —

मै जैहौ (=जाऊँगा), मै खैहौ (=खाऊँगा), मै लैहौ (=लूँगा), मै दैहौ (=दूँगा)। ऐहौ (=आऊँगा) और पैहो (=पाऊँगा) भी आहौ और पाहो के साथ-साथ कभी सुनने को मिल जाते है। अन्यथा शेष धातुएँ तृतीय वर्गीय रूपाश ही रख रही है।

कौ–क्षेत्र

व्यजनान्त तथा स्वरान्त, दोनो ही वर्ग की धातुएँ उपरि परिगणित प्रथम वर्गीय प्रत्यय ग्रहण करती है। दीर्घ स्वरान्त धातुएँ अवश्य प्रत्यय जुडने पर ह्रस्वान्त हो जाती है।

खों--क्षेत्र

एक०	उत्तम पु०	1 --अहौ	11 -हौ	i --औ ii	(--वँ)
	मध्यम पु०	--अहै	--है	--ऐ	(--य्)
	अन्य पु०	--अहै	--है	--ऐ	(--य्)
बहु०	उत्तम पु०	--अहै	--है	--ऐ	(--यँ)
	मध्यम पु०	--अहौ	--हौ	--औ	(--व्)
	अन्य पु०	--अहै	--है	--ऐ	(--यँ)

i) व्यजनान्त धातुओ मे प्रथम वर्गीय तथा स्वरान्त मे द्वितीय रूपाशो का योग होता है ।

कृदन्तीय काल

९ क्रिया-रचना मे काल की अभिव्यक्ति कराने वाले तीन प्रत्यय है जो कि कर्त्ता अथवा कर्म से सम्बन्ध रखते हुए लिग-वचन-विभेद रखते है, इन्ही क्रिया-पदो को कृदन्तीय काल कहा गया है। वस्तुत ऐतिहासिक दृष्टि से ये रूप क्रिया से बने हुए विशेषण थे जो कि समय की अभिव्यक्ति कराने के कारण क्रिया-पद-रचना के अग बन गए । सामान्य विशेषण-प्रयोगो से सम्बन्धित उदाहरण इस प्रकार है —

उद्देश्यात्मक—चलत बैला खो अरई न गुच्चौ = चलते हुए बैल को अरई मत लगाओ ।

विधेयात्मक—बे जात दिखानीँ = वे जाती हुई दिखलाई दी ।
बे पढे लिखे है = वे पढे लिखे है।
बौ पढो लिखो है = वह पढा लिखा है ।

पर, जब 'सोउत बैलवा' (= सोता हुआ बैल), 'बैलवा सोउत है' —इस गठन मे आ जाता है, तब उसी को हम वर्तमान कालिक क्रियापद की सज्ञा दे देते हैं ।

९-१. —त— सामान्यत यह प्रत्यय वर्तमानकाल की अभिव्यक्ति कराता है। लिंग-वचन-विभेदक प्रत्ययो की उपस्थिति और अर्ध-उपस्थिति के आधार पर हम इनको निम्न भागो मे विभक्त करके देख सकते है ।

i) पु० एक० —नो   पु० बहु० —ते
स्त्री० एक० —ती   स्त्री० बहु० —तीँ

इस रूप मे ये प्रत्यय अपेक्षाव्यजक (Conditional phrases) यदि ·· तो के साथ प्रयुक्त होते है और भूतकालिक अर्थ की ओर झुकते है ।

अगर हम हींसा-बाँट कर लेते तौ=यदि हम हिस्सा कर लेते तो. .

बे गारीं सुनाउतीं पै तुम लौगन नै=वे (औरते) गाना सुनातीं पर तुम लोगो ने .

तै अब लौ लौट आउतौ, अकेलै जातो भर=तू अब तक लौट आता पर जाता तो ।

11) पु० एक० –तु पु० बहु०—त
स्त्री० एक० –ति स्त्री० बहु०—तिँ

ये प्रत्यय-रूप प्राचीन हिन्दी साहित्य मे प्रचुरता से प्रयुक्त हुए है, पर बुन्देली शब्दो की प्रवृत्ति ह्रस्व स्वरान्त नही है, अतएव सभी रूपो के अन्त मे केवल –त ही रह गया । स्त्री० बहु० के रूप अवश्य यदा-कदा –तीँ रूप मे सुन पडते है जिनकी –इ की सुरक्षा अतिरिक्त बल देकर की गई है । (देखिए, सज्ञा विषय-क्रम ४) ।

मुलक की मौंडीं आउतीं ~ आउत=बहुत-सी लडकियाँ आतीं ।

वे लुगाईं आउत-जात रहतीं ~ रहत =वे स्त्रियाँ आती-जाती रहती है । परन्तु प्राचीनता की सुरक्षा करने वाले लोक सहित्य मे—

ऐसी घनी आउतीं-जातीं गैल मिलै न चौरें ।[1]

अँखियाँ जब काऊ सैं लगतीं, सब सब रातन जगतीं ।
झपतीं नईं झीम न आवैं, काँ उसनीदें भगतीं ।।
बिन देखें सें दरद दिमानी, पके खता सी दगतीं ।
ऐसौ हाल होत है 'ईसुर' पलकन पलतर दबतीं ।।[2]

९-१. इन प्रत्ययो के साथ धातु-रूपो मे कुछ परिवर्तन भी आवश्यक है, जिन्हे हम निम्न प्रकार व्यवस्थित कर सकते है ।

1) सभी व्यजनान्त धातुएँ –अ– स्वर विकरण रूप से स्वीकार करती है, यथा--
चाल् + अ + त = चालत (सामान्य)
खब् + अ + त = खबत ह्रस्वीकृत)

---

१. **गौरीशंकर द्विवेदी 'शकर', ईसुरी प्रकाश, पृष्ठ ४४**
२ **वही, पृष्ठ २२**

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि –ई तथा –ऊ मे अन्त होने वाली स्वरान्त धातुएँ क्रमश –इय्– तथा –उव्– मे परिवर्तित हो जाती है और फिर स्वभावत –अ– विकरण स्वीकार करती है। यथा—

पी– पियत

छू– छुवत

ii) स्वरान्त धातुएँ—मूल एव यौगिक—(खा, जा आदि कतिपय अपवादो को छोडकर) जिन्हे विषय-क्रम ३-५ मे –व् मे अन्त होने वाला सिद्ध किया जा चुका है, अपना –व, –उ मे परिवर्तित कर लेती है। यथा—

रोव् + त = रोउत

खबाव् + त = खबाउत

iii) –ह् मे अन्त होने वाली व्यजनान्त धातुओ का धातु-स्वर अधिकाशत –आ, –ओ अथवा –अ है। अन्तिम वर्ग की धातुएँ –अ विकरण तथा शेष, स्वरान्त धातुओ की तरह रूप-रचना रखती है, यथा—

कह् + अ + त = कहत (कअत, कात)

नह् + अ + त = नहत

दोह् + उ + त = दोहुत (दोउत)

चाह् + उ + त = चाहुत (चाउत)

iv) गुना-क्षेत्र मे धातुएँ किसी प्रकार का परिवर्तन स्वीकार नही करती, यथा—

कर्त = करता

पीत = पीता

करात = कराता

९-२. इस प्रत्यय से बने क्रिया-पदो की आवृत्ति से कार्य की अपूर्णता का भी बोध होता है। ये रूप कर्त्ता के विधेयात्मक विशेषण बनकर आते हैं।

मैं खात-खात थक गओ = मै खाते-खाते थक गया

ऊ रोउत-रोउत आओ = वह रोते-रोते आया

९-३ वस्तुत ये कृत प्रत्यय क्रियार्थी संज्ञा-रूप मे भी प्रयुक्त होते है। इनसे बने रूप पु० मे घर तथा स्त्री० मे बात की तरह रूप-रचना रखते है, अर्थात्

वि०   एक० –त   बहु० –तन

ऊ मोए खान मै आ गओ = वह मेरे खाने (खाते समय) मे आ गया

ऊ मोए खातन मै आ गओ = वह मेरे खाने (खाते समय) मे आ गया

बहुवचनान्त प्रयोगो का बाहुल्य है ।[1]

९-४. प्राचीन ब्रजभाषा साहित्य[2], बुन्देली-लोक-साहित्य[3] तथा खो-क्षेत्र के उत्तरी भाग मे इस –त प्रत्यय से युक्त एक तीसरे प्रकार के रूप भी उपलब्ध हो रहे है । ये वर्तमानकालिक अभिव्यक्ति के ही द्योतक है, यथा—

जा बात सुनियत = यह बात सुनते है (सुनी गई है)
जौ काम करियत = यह काम करते है (किया जाता है)
अभइँ खइयत = (हम) अभी खाते है ।
कइयाँ चढ जइयत = (हम) गोदी मे चढ जाते है ।

इन प्रयोगो मे हमे 'भावे प्रयोग' की गन्ध मिलती है । यहाँ सुनने, करने, खाने और जाने की क्रियाओ पर बल दिया गया है, कर्त्ता की सत्ता गौण है । कर्त्ता यहाँ केवल 'हम' ही उपलब्ध होता है । ब्रज साहित्य मे अवश्य कर्त्ता के पुरुष की अनेकरूपता है, यथा—

रहिमन करुए मुखन को चहियत यही सजाय—

---

१. लरकन संग हँसत खेलत मै, ढील आइयत गइयाँ ।
ज्वानी मै बाहर कौ कड़तन, सब घर होत लरइँयाँ ।। ईसुरी प्रकाश, पृष्ठ ४२.
चलतन परत पैजना छनके, पाँउन गौरी धन के ।
सुनतन रोम रोम उठ आउत, धीरज रहत न तन के ।। ईसुरी प्रकाश, पृष्ठ ४४
पतरे सोने कैसे डोरा, रजउ तुमारे पोरा ।
बड़ी मुलाम पकरतन, धरतन, लग न जाय मरोरा ।। ईसुरी प्रकाश, पृष्ठ ३४

२. मदन गुपाल मधुपुरी हू तजि, सुनियत अनत सिधारे ।
पं० किशोरीदास बाजपेयी, ब्रजभाषा व्याकरण, पृष्ठ १९६

३. सब से भली बैस लरकइयाँ, दैयं न रओ गुसइंयाँ ।
हँस लिपटाय सबई सै बोलत, चढ़ जइअत ते कइंयाँ ।।
लरकन संग हंसत खेलत मै, ढील आइयत गइंया ।
ईसुरीप्रकाश, पृष्ठ ४२

यहाँ 'यही सजाय' कर्त्ता के रूप मे प्रयुक्त है। निस्सन्देह ये कर्मवाचीय अथवा भाववाचीय प्रयोग है और इन रूपो के –इय– अश का सम्बन्ध सस्कृत के कर्मवाचीय प्रत्यय –इय– यथा दीयते, क्रियते से जान पडता है । इम प्रकार 'चलिअ', करिअ, आधारो मे ही –त प्रत्यय जुडकर ये रूप बने है। वस्तुत वर्तमान बुन्देली मे ये रूप समाप्त होने के मार्ग मे है और उनके स्थान पर कर्तृवाचीय रूपो का प्रयोग सुलभ है, यथा—

हम जा बात सुनत = हम यह बात सुनते है।
हम जौ काम करत = हम यह काम करते है।

ऐसा जान पडता है कि विनयार्थी अथवा आज्ञार्थी रूपो, यथा—सुनियो, अइयो, आइए, आदि मे भी यही सस्कृत कर्मवाचीय –इय– प्रत्यय है।

१० –ओ– यह भूतकालिक अर्थ की अभिव्यक्ति कराता है। विश्लेषण से जान पडता है कि इन पदो मे प्रत्यय तो शून्य ही है, –ओ (पु० एक०) –ई (स्त्री० एक०), ए (पु० बहु०) ईं (स्त्री० बहु०) प्रत्यय तो लिग-वचन-द्योनक प्रत्यय है, जिनकी चर्चा स्थान-स्थान पर की जा चुकी है।

१०-१ निम्न अपवादो को छोडकर सभी स्वरान्त एव व्यजनान्त धातुएँ बिना किसी परिवर्तन के लिग-वचन-द्योतक प्रत्ययो के साथ प्रयुक्त होती है, यथा—

√खा	खाओ,	खाई,	खाए	खाईं
√कर	करो	करी	करे	करीं
√खब्	खबो	खबी	खबे	खबीं
√कह्	कहो	कही	कहे	कहीं

अपवाद—i) √जा धातु का धात्वादेश –ग– है यथा—
गओ, गई, गए, गईं

ii) –ई तथा –ऊ मे अन्त होने वाली धातुएँ क्रमश –इय्, –उव् मे परिवर्तित होती है, यथा—

√पी—पियो (पिओ), पियी (पिई), पिये, (पिए) पियीं (पिईं)
√छू—छुओ (छुवो), छुई, छुए, छुईं

iii) ले और दे धातुओ का तथा –ऐ मे अन्त होने वाली धातुओ के धातु-स्वर –अय् मे परिवर्तित हो जाते हैं, पर अन्तिम –य् श्रुति सुनाई नही देती। इस प्रकार—

√ले	लओ,	लई,	लए,	लईं
√दे	दओ,	दई	दए	दई
√बै	बओ	बई	बए	बईं
√पैं	पओ	पई	पए	पईं

११ भूतकालिक अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए कतिपय धातुएँ अपना अलग प्रत्यय –न– रखती है। इनके भी लिग-वचन द्योतक प्रत्यय वही है—अर्थात् —ओ, ई, ए, ईं। इस प्रत्यय से बने हुए कुछ क्रिया-रूप कर्तृवाची और कुछ कर्मवाचीय है—

कर्तृ०
ऊ चिल्लानो = उसने जोर से आवाज की
ऊ खिन्स्यानो = वह नाराज हुआ
ऊ डिरानो = वह डर गया
ऊ मुस्क्यानो = वह मुस्कराया
बा बतानी = उसने बात की
बा चिमानी = वह चुप हो गई
बे रिसाने = वे रूठ गए

कर्म०
गइया पल्हानी = गाय का दूध नीचे उतरा
हिन्ना दिखाने = हिरन दिखाई दिए
अवाज सुनानी = आवाज सुनाई दी
दार बढानी = दाल समाप्त हो गई
मूड पटानो = सर-दर्द कम हुआ
दूध मिरानो = दूध ठण्डा हो गया
रुपइया सेर बिकानी = रुपए की सेर भर बेची गई

१२. भविष्यत्कालिक अर्थ की अभिव्यजना के लिए कुछ क्षेत्रो मे (परिशिष्ठ, भाषा मानचित्र) --ग-- प्रत्यय जोडा जाता है। इस प्रत्यय की प्रकृति अन्य कृदन्तीय प्रत्ययो से भिन्न कही जा सकती है। इसमे सन्देह नही कि अन्य उपर्युक्त प्रत्ययो के सदृश यह लिग-वचन द्योतक प्रत्यय है, पर यह प्रत्यय सीधे धात्वश मे न जुडकर तिडन्तीय पदो (धातु + तिडन्तीय प्रत्यय) मे जुडता है। ऐसा जान पडता है कि आधुनिक आर्य भाषा-युग तक यह कोई स्वतत्र पद था जो ऐतिहासिक विकास-प्रक्रियावश परम्परागत तिडन्तीय पदो मे घुलमिल गया है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार भाषा की कुछ अन्य सहायक क्रियाएँ इस विकास क्रम की ओर अग्रसर हो रही है, यथा—

जान + हतो = जात्तो (बुन्देली)
जातु + है = जात्वै (ब्रज)

ऐतिहासिक भूमिका के साथ इस प्रत्यय को अच्छी तरह समझा जा सकता है। सस्कृत मे इस अर्थ मे --स्य--(- इष्य--) मध्य प्रत्यय रहता था। वस्तुत यही --इह-->--अह--(- ah--) > ० (zero) [मध्यमवर्त्ती --ह-- के लोप से] होता हुआ विलुप्त हो गया और अब केवल सस्कृतयुगीन तिङन्तीय प्रत्ययो के अवशेष ही शेष रह गए है। यथा—

√**कर**

एक०	उत्तम	करिहौ > *करहौ + गो > *कर्हौंगो > करौंगो
	मध्यम	करिहै > *करहै + गो > *कर्हैगो > करैगो
	अन्य	करिहै > *करहै + गो > *कर्हैगो > करैगो
बहु०	उत्तम	करिहै > * करहै + गे > *कर्हैगे > करैगे
	मध्यम	करिहौ > *करहौ + गे > *कर्हौगे > करौगे
	अन्य	करिहै > * करहैं + गे > *कर्हौंगे > करैंगे
एक०	उत्तम	*जाइहौ > *जाहौ + गो > *जाऔंगो > जाउँगो
	मध्यम	*जाइहै > *जाहै + गो > *जाऐगो > जायगो
	अन्य	*जाइहै > *जाहै + गो > *जाऐंगो > जायँगो
बहु०	उत्तम	*जाइहै > *जाहैं + गे > *जाऐंगे > जायँगे
	मध्यम	*जाइहौ > *जाहौ + गे > *जाऔंगे > जावगे
	अन्य	*जाइहै > *जाहै + गे > *जाऐंगे > जायँगे

सस्कृत मे भविष्यत् तथा वर्तमान कालिक निश्चयार्थ के रूपो के तिङन्तीय प्रत्यय समान थे। आधुनिक युग तक आते-आते भविष्यत् का --स्य-- जब विलुप्त हो गया तो दोनो पद-रूपो मे भेद कर पाना असभव था। भाषा ऐसे श्लेषार्थी (Homonymic) रूपो का बहिष्कार करती रहती है। परिणामत अर्थ की सुरक्षा के लिए पुराने भविष्यत् कालिक रूपो ने अपने साथ स० गतः से विकसित— गो, गी, गे आदि रूपो को सहायक क्रिया की भाँति अपना लिया होगा जो धीरे-धीरे उक्त रूपो के अभिन्न अग बन गए। 'मुबारक' का निम्न प्रयोग हमारे निष्कर्ष की पुष्टि करता है —

मै कह्यो, रंग न फाबिहैगो, कह्यो फाबिहै, लागै मुबारक अंग है

वस्तुतः जिस समय 'फाबिहै' से 'फाबै' होने लगा होगा, उसी समय भ्रम-निवारण के लिए –गो जुडा होगा, परिणामत कुछ समय तक फाबिहैगो और फाबैगो

साथ-साथ चलते रहे होगे। सभव यही है कि पहले ये —गो आदि रूप क्रिया-पदो मे सहायक रूप मे ही प्रयुक्त हुए होगे, पर अब इनको सहायक क्रिया रूप मे स्वीकार करना सभव नही है। ये दोनो मिलकर एक क्रियापद बनाते हैं।

यह–गो बुन्देली भाषा के लिए एक अभिनव प्रवृत्ति (innovation) है। जैसा कि परिशिष्ट के भाषा-मानचित्र मे स्पष्ट किया गया है, ३०-४० मील की यह पट्टी उत्तर से दक्षिण समस्त पश्चिमी क्षेत्र मे पाई जाती है। इसका सास्कृतिक तथा सैनिक अभियानो के सुप्रसिद्ध मार्ग पर पाया जाना बतला रहा है कि यह कौरवी की ही प्रवृत्ति है जो कि ब्रज को रौंदती हुईं यहाँ तक बढ़ आई है। स्वरमध्यवर्ती –ह्– के लोप ने इसके विकास मे सहयोग दिया है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि कुरु, ब्रज, पचाल क्षेत्र मे यह–गो (–गा) वर्तमान पर भी अधिकार जमा रहा है यथा भइया घर मे हैगे = भाई घर मे है। परिनिष्ठित हिन्दी मे पिछले बीस वर्षो से यह–गा, कीजिए, पीजिए आदि विध्यर्थक पदो मे भी लग रहा हे। वस्तुत भाषा के आन्तरिक गठन मे तथा बोली क्षेत्रो मे यह–गा प्रवेश पाता जा रहा है। वर्तमान के क्षेत्र मे घुसने का कारण मुझे यह जान पडता है कि ध्वनि–क्षीण 'है' जो कि ऐ रूप मे विकसित होकर क्रियापाद से सश्लिष्ट (यथा जात्वैं) होने की प्रवृत्तिअपनाने जा रहा था, अपनी सुरक्षा के लिए—गा को समेट लेता है।

भूतकालीन–गा ही क्यो अपनाया गया, यह एक प्रश्न हो सकता है। कोई समुचित समाधान तो नही पर, एक उत्तर हो सकता है। जिस प्रकार ब्रजभाषा मे ष ध्वनि नही थी जब कि वर्णमाला मे वर्ण था, दूसरी ओर भाषा मे ख वर्ण रव (=आवज) रूप मे पढा जा कर भ्रम उत्पन्न कर रहा था; इसलिए निष्क्रिय ष वर्ण को ख ध्वनि के लिए प्रयोग किया जाने लगा। ठीक इसी प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि गा (गत > गअ > गा) गयौ, गया, गवा आदि आ जाने पर निष्क्रिय हो गया होगा जब कि दूसरी ओर श्लेषार्थी स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इसलिए भाषा ने इस–गा को समेटकर काम चलाया होगा। वस्तुत बहुलता से प्रयुक्त होने वाली क्रियाएँ–है, हो (काल, अर्थ के लिए), जाना (कर्मवाचीय अर्थ केलिए) करना (पूर्वकालत्व के लिए) इसी प्रकार व्याकरणिक अर्थो के लिए पकड ली गई है। अर्थ की महत्ता इतनी अधिक नही है, सयुक्तक्रियाओ के सन्दर्भ मे इसे जाना जा सकता है। मार

खाना, पैसा खाना मे खाने का तथा बेवकूफ बनाने मे बनाने की कौन सी क्रिया स्पष्ट है ।

सयुक्त काल

१३. कार्य की पूर्णता–अपूर्णता तथा भिन्न भिन्न अर्थो (moods) की अभिव्यक्ति के लिए भाषा ने सयुक्त क्रिया-रूपो की योजना अपनाई है । ऊपर चर्चित कृदन्तीय रूप –त तथा शून्य (विषय-क्रम ९, १०) तथा सहायक क्रियाएँ (विषयक्रम ५, ६) मिलकर इस वर्ग की पूर्ति करती है । इन पदो को हमने सयुक्तकाल कहा है । ये रूप सयुक्त क्रियाओ से भिन्न है तथा दो भागो मे विभक्त किए जा सकते है—

वर्तमानकालिक –त् + सहायक क्रिया
भूतकालिक –०– + सहायक क्रिया

ये पुन दो रूपो मे विभक्त है—

(अ) i) –त + √ ह ·· (तिडन्तीय प्रत्ययो सहित) अपूर्ण वर्तमान

ii) –त + √ ह -त– (लिग-वचन-द्योतक प्रत्ययो सहित) अपूर्ण भूत

iii) –त + √ हो त– (लिग-वचन-द्योतक प्रत्ययो सहित) अपूर्ण सदिग्ध भूत(Conditional)

iv) –त + √ हो-ह– (तिडन्तीय प्रत्ययो सहित) अपूर्ण भविष्यत्

v) –त + √ हो-य (तिडन्तीय प्रत्ययो सहित) अपूर्ण सदिग्ध भविष्यत्

(ब) i) –०– + √ ह- (तिडन्तीय प्रत्ययो सहित) पूर्ण वर्तमान

ii) –०– + √ ह-त (लिग-वचन-द्योतक प्रत्ययो सहित) पूर्ण भूत

iii) –०– + √ हो-त–(लिग-वचन-द्योतक प्रत्ययो सहित) पूर्ण सदिग्ध भूत

iv) –०– + √ हो-ह— (अपने तिडन्तीय प्रत्ययो सहित) पूर्ण अनुमानित भूत

v) –०— + √ हो-य (तिडन्तीय प्रत्ययो सहित)पूर्ण भूत

क्रियार्थक सज्ञाएं एव विशेषण

[Infinitives & Participles]

१४ एकाधिक स्थानो पर कहा जा चुका है कि सस्कृत धातुओ मे अनेकानेक कृत प्रत्यय जुडते थे और जिनसे बने हुए शब्द भाषा मे सज्ञा, विशेषण आदि रूपो मे व्यवहृत होते थे तथा अन्य प्रातिपदिको की तरह लिग-वचन एव कारकीय विभक्तियाँ धारण करते थे। भाषा-प्रवाह मे अवशिष्ट विभक्ति-प्रत्यय सहित सज्ञा रूपो को जिस प्रकार मूल एव विकारी रूपो की सज्ञाएँ दी गई थी, उसी प्रकार इन रूपो को भी मूल एव विकारी—इन दो रूपो मे व्यवस्थित किया जा सकता है, पर कही-कही इनके अतिरिक्त एकाध रूप और उपलब्ध हो जाते है, साथ ही, विकारी रूपो के साथ परसर्गो का प्रयोग अनिवार्य नही।

१५. क्रियार्थक सज्ञाओ के निर्माण मे तीन प्रत्यय प्रधान है 1 –ब—ii)–न–iii) –०– (शून्य)। ये सभी मूल अथवा यौगिक धातुओ मे जुडते है।

ब— इससे बने क्रिया-पद केवल एक वचन मे ही उपलब्ध है। सभी कारक-सम्बन्धो को स्पष्ट करने के लिए इनका प्रयोग बहुलता से होता है—

	एकवचन	बहुवचन
मूल	–बो	+
विकारी	–बे	+

-बो	घूमबो अच्छो होत	= घूमना अच्छा होता है
	मै पैरबो सीकत	= मै तैरना सीखता हू
-बे	मोय खाबे मै काए कौ सँकोच	= मुझे खाने मे किस(बात)का सकोच
	मोय खाबे खो जानै	= मुझे खाने के लिए जाना है
	जादाँ खाबे सै पेट बिगर गओ	= अधिक खाने से पेट खराब हो गया
	कौनउँ खाबे की चीज ल्याव	= कोई खाने की चीज लाओ
	तोए खाबे नै काम बिगार दओ	= तेरे खाने ने काम बिगार दिया
	खाबे के नानै ल्याव	= खाने के लिए लाओ

खाँ-क्षेत्र को छोडकर अन्यत्र सयुक्त- क्रिया पदो के प्रथम अवयव के रूप मे भी इनका प्रयोग होता है, यथा—

बौ सुन्बे लगो = वह सुनने लगा

बौ खाबे आउत = वह खाने (के लिए) आता है

इस प्रत्यय से मूलत सम्बन्धित दो रूप और भी उपबब्ध है— –बू, –बी। इन्होने भाषा मे कुछ भिन्न अर्थ विकसित कर लिया है।

–बू की दो प्रयोग स्थितियाँ है, साथ ही इसका प्रसार-क्षेत्र मध्यवर्ती बुन्देली तक ही सीमित है—

i) कर— क्रिया पदो के साथ सयुक्त क्रिया पद के प्रथम अवयव के रूप मे।

परबू करै दूध पीबे कौं, सास के संगै सइँयाँ

'परबू' के साथ वैकल्पिक रूप मे 'परबो' और 'परो' पदो का प्रयोग भी सभव है, यथा—

भर-भर देवो करै दूर सै, देखत हमे तरइँयाँ

निस्सन्देह परो >परू, आओ >आऊ आदि रूपो की तरह परबो' ही 'परबू' रूप मे विकसित हुआ होगा।

ii) श्रोता तथा वक्ता दोनो को समेटने वाले (inclusive) सर्वनाम-रूपो के साथ भविष्यत् काल की अभिव्यजना करने के लिए —

अपुन-तपुन नुमास देखबे चलबू = हम-तुम नुमायश देखने चलेगे।

हम-तुम तला की ढी पै घूम्बू = हम-तुम तालाब की पार पर घूमेगे।

-बी— ये प्रयोग खाँ क्षेत्र तक ही सीमित है। ये उत्तम पुरुष बहुवचन कर्त्ता के साथ भविष्यत् निश्चयार्थ तथा मध्यम पुरुष बहुवचन कर्त्ता के साथ भविष्यत् आज्ञार्थ (विनयार्थ) की अभिव्यक्ति कराते है, यथा :

हम काम करबी = हम काम करेंगे
अपुन चिठिया जरूर कर कै लिखबी = आप पत्र अवश्य लिखना
अपुन बरात मे अबस कै आबी = आप बरात मे अवश्य आना

भविष्यत् कालिक इस –ब– को विकास देने वाले सस्कृत —तव्यत् (स० कर्त्तव्य = करने योग्य = करना चाहिए, दातव्य = देने योग्य = देना चाहिए) के अर्थ-विकास-क्रम को गोरखनाथ के पद्यो मे छमिबा = क्षमा करना चाहिए, करिबा = करना चाहिए, से प्रारम्भ होकर तुलसी (१६वी सदी) एव बिहारी (१७वी) के प्रयोगो से स्पष्ट किया जा सकता है।

दारिका परिचारिका करि पालबी करुनामयी[1]

=हे करुनामय राम ! हमारी विनय है कि पुत्री सीता को दासी रूप मे स्वीकार कर पालन करे अर्थात् पालन करना चाहिए।

मेरियौ सुधि द्यायबी कछु करुन कथा चलाइ[2]

=करुणा मिश्रित कथा के साथ आप हमारा स्मरण दिलाएँ अर्थात् दिलाना चाहिए।

कौन भाँति रहिहै बिरदु, अब देखबी मुरारि[3]

=हे मुरारि ! हमे देखना है अर्थात् हम देखेगे कि आपका बडप्पन किस प्रकार सुरक्षित रह सकेगा।

इस प्रकार तव्यार्थी' रूप 'योग्य', 'चाहिए' होते हुए भविष्यत् कालीन बने है।

१६ –न– इस प्रत्यय से बनी हुई न जाने कितनी सज्ञाएँ भाषा मे प्रयोग मे आ रही है। खान-पान, लेन-देन आदि भाववाचक सज्ञाएँ तो है ही, जातिवाचक सज्ञाएँ भी है। जैसे—छजना=छानने वाला, खदना=खोदा हुआ गडा आदि, पर यहाँ इस प्रत्यय से बने उन क्रिया-पदो से तात्पर्य है जो रूप-रचना मे तो सज्ञाएँ है, पर कार्य क्रिया का कर रही है। इस प्रत्यय को भी हम सज्ञाओ की तरह मूल एव विकारी रूपो मे व्यवस्थित कर सकते है—

	एकवचन	बहुवचन
मूल	नै	+
विकारी	न	+

हिन्दी मे इस स्थान पर -ना और -ने तथा ब्रजी मे -नौ और —न प्रत्यय मिलते है। मूल रूप है तथा हो क्रिया-पदो के सम्पर्क मे प्रयुक्त होता है जिनमें वास्तविक कर्त्ता, कर्म के परिधान मे मिलता है। यथा—मोहे जानै है। वस्तुत ऐतिहासिक दृष्टि से यहाँ 'जानै' रूप ही कर्त्ता है और 'मेरे द्वारा जाने का काम होना है' इस अर्थ मे उक्त वाक्य का सगठन हुआ है। विकारी रूप का प्रयोग सयुक्त-क्रिया-पद रचना मे ही सभव है। सहायक

---

१. तुलसी, रामचरितमानस—बालकाण्ड, दोहा ३२५-३२६
२. तुलसी, विनय-पत्रिका—पद संख्या ४१
३. संपादक, जगन्नाथ रत्नाकर, बिहारी रत्नाकर, दोहा ३१

क्रियाएँ विशेष रूप से जो इस प्रत्यय से बने क्रिया-पदो के पश्चात् प्रयोग मे आती है,—लग, जा, आ, दे, आदि है।

यथा—

ऊ जान लगो = वह जाने लगा
ऊ लेन आउत = वह लेने आता है
ऊ खान जात = वह खाने जाता है
ऊ सोउन देत = वह सोने देता है

इस –न के पूर्व आने वाले विकरण सम्बन्धी नियम ठीक वे ही है, जिनकी चर्चा –त के साथ ऊपर की जा चुकी है।

नै– यह प्रत्यय मूल तथा यौगिक, दीर्घ तथा ह्रस्वीकृत—सभी धातुओ मे जुडता है, यथा—

हमे माता पूजनै है = हमको शीतला माई पूजना है।
माता पुजनै है = माता पूजी जानी है।
हमे माता पुजवावनै है = हमको माता पुजवानी हैं।

दूसरे इस प्रत्यय से बने क्रियार्थी पद मे यदि कर्त्ता, वाक्य मे प्रयुक्त नही है, यथा—सबकै जानै परत = सबके यहाँ जाना पडता है, तो उसे विकारी रूप मे अधिकृत रखते है, यथा—

मोय जानै है = मुझे जाना है
हमै जानै है = हमको जाना है
रमेश खो जानै है = रमेश को जाना है

उपर्युक्त उदाहरणो से जान पडता है कि क्रिया-विशेष पर बल दिया गया है, कर्त्ता (doer) तथा कर्म (object) पर नही।

खो-क्षेत्र मे एक विशिष्ट प्रकार के प्रयोग भी उपलब्ध हो रहे है, यथा—

हमे आँगित पडित नेहरू खौ बुलावनै =
हम आगे की साल प० नेहरू को बुलायेगे।
हमे जानै = हम जाएँगे

इन उदाहणो से तो ऐसा जान पडता है कि सस्कृत का अनीयर् प्रत्यय भी ठीक तव्यत् की भाँति भविष्यार्थ की ओर बढ रहा है।

१७. क्रियार्थक सज्ञा का एक तीसरा वर्ग है जिसका कृदन्तीय प्रत्यय शून्य कहा जा सकता है। सभव है, भूतकालिक शून्य कृदन्त ही एक भिन्न अर्थ मे

विकसित हो गया हो। ये क्रिया-पद भी मूल एव विकारी, इन दो रूपो मे व्यवस्थित किए जा सकते है। यथा—

	एकवचन	बहुवचन
मूल	खाओ	+
विकारी	खाए	+

मूल रूप का प्रयोग सयुक्त-क्रिया-पद-रचना तक ही सीमित है। कुछ प्रयोग दृष्टव्य है —

मुहै खाओ आउत = मुझे अब खाया ही आता है।
हमै खाओ आउत = हमे अब खाया ही आता है।
बाय जाओ चइए = उसे जाना चाहिए।
बिनै जाओ चइए = उन्हे जाना चाहिए।

यहाँ स्पष्ट है कि समसामयिक दृष्टि से यह भूतकालिक कृदन्त प्रत्यय –शून्य से अर्थ भिन्न रखने वाला प्रत्यय है क्योकि भूतकालिक रूप 'गओ' बनता है, 'जाओ' नही।

ऊ खेलो चाउत = वह खेलना चाहता है।
बे खेलो चाउत = वे खेलना चाहते है।
बौ जाओ करत = वह जाया करता है।
बे जाए करत = वे जाया करते है।

विकारी रूप का विभक्ति-प्रत्यय अनुनासिक एव निरनुनासिक दोनो ही रूपो मे प्रयुक्त मिलता है। यथा—

खाए सै काम बिगर जैहै = खाने से काम बिगड जाएगा
खाँयँ सै काम बिगर जैहै = खाने से काम बिगड जाएगा

ध्वनि-विचार अध्याय विषय-क्रम ५ मे स्पष्ट किया जा चुका है कि ए अनुनासिक होने पर ऐं हो जाता है और यह भी भाषा का सधि-नियम है कि पूर्व भाग मे दीर्घस्वर होने पर 'ऐ' तथा औ अर्धस्वर य, व मे बदल जाते है (विषय-क्रम ६-१)। अनुनासिक एव निरनुनासिक रूपो का वैकल्पिक प्रयोग बुन्देली-लोक-साहित्य मे प्रचुरता से मिल सकेगा। यथा—

ऐसे नर के ईसुरी जस गगा कौ होवै[1]

× × ×

इतनउ मौत होत है, ईसुर मरें जिऐं पछतैहै[2]

---

१. **ईसुरी प्रकाश, पृष्ठ ४२,**

२. **ईसुरी प्रकाश पृष्ठ ४६**

विकारी रूपो के साथ परसर्गो का प्रयोग अनिवार्य सा है। वस्तुत लगभग सभी कारक सम्बन्ध— कर्त्ता से लेकर अधिकरण तक —इन विकारी रूपो के सहयोग से प्रकट किए जा सकते है। यथा—

ऊ के हँसै नै काम बिगार दओ = उसके हँसने ने काम बिगाड दिया।

ऊ के हँसै सै काम बिगर गओ = उसके हसने से काम बिगड गया

ऊ के बुलाँयँ को ठेकौ मैने नइँ लओ = उसके बुलाने का ठेका मैने नही लिया।

खायँ मै काए की सोच-सरम = खाने मे किस बात की लज्जा।

मै काम करैं खो आओ हौ = मै काम करने को आया हू।

यह बात उल्लेखनीय है कि बुन्देली के मध्य क्षेत्र मे इन विकारी रूपो का स्थान विकारी –बे रूप लेते जा रहे है।

१८. क्रियार्थक सज्ञा के एक चौथे प्रकार के रूप भी परिगणित किए जा सकते है। ये रूप ध्वनि-सम्पत्ति मे क्रिया के धातु-रूप से समानता रखते है। यथा—

हमै खेल आउत = हमको खेलना आता है।

हमै खाना बना आउत = हम खाना बनाना जानते है।

हम इन प्रयोगो को पूर्वकालिक प्रयोगो से भिन्न-रूप मे स्वीकार कर सकते है, क्योकि पूर्वकालिक प्रयोग का गठन उद्देश्यात्मक (Subjectival) होता है, जबकि उपर्युक्त प्रयोग विधेयात्मक गठन (objectival) लिए हुए है; यथा—

ऊ खेल आउत = वह खेलकर आता है।

ऊ खाना बना आउत = वह खाना बनाकर आता है।

१९. क्रियार्थक विशेषण (participles) की सम्यक् चर्चा ७–२. मे की जा चुकी है। यहाँ दो प्रत्यय-रूपो की चर्चा अभीष्ट है।

i) क्रियार्थक सज्ञा का विकारी रूप –ऐं, के बाद परसर्गो का अभाव रहता है। ये प्रयोग संयुक्त-क्रिया पद रचना मे सहायक होते है। यथा—

जे मौडा खाँयँ जात = ये लडके परेशान करते हैं।

जौ मोडा खॉय लेत = यह लडका परेशान करता है

तुम हँसै जाव = तुम हँसे जाओ।

मै उऐ बुलाऐं आउत = मै उसे बुलाए लाता हूं।

ii) इसी से सम्बन्धित एक कारण-सूचक-कृदन्त का प्रयोग भी है, जो कि स्वय परसर्ग रूप धारण करता जाता है । यथा—

ऊ के मारै हम कउँ नइँ जा पाउत = उसके कारण हम कही नही जा पाते ।
घोडा मारै ऊ आ पौंचो = घोडा दौडाए वह आ पहुचा ।

२०. किन्ही दो क्रिया-पदो का यदि एक ही कर्त्ता है, तो पहले की हुई क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते है । इस क्रिया-पद की रचना के आधार दो है —मात्र धातु रूप, धातु + परसर्ग रूप— कै । प्रथम आधार सयुक्त-क्रिया-पद रचना मे ही दिखाई देता है, दूसरे का प्रयोग व्यापक है ।

प्राचीन बुन्देली मे पूर्वकालिक कृदन्त का सश्लिष्टात्मक प्रत्यय –इ (व्यजनान्त धातुओ मे) तथा –य (स्वरान्त धातुओ मे) जुडता था जो कि आज भी यत्र तत्र वैकल्पिक रूप मे —आ धातु से बने क्रिया पद से सयुक्त होने पर परिलक्षित किए जा सकते है । यथा—

ऊ कर याओ = करि + आओ, वह करके आ गया

'हो' धातु से बने दो पूर्वकालिक कृदन्त रूप विश्लेषण की अपेक्षा रखते हैं । उदाहरण इस प्रकार है—

ऊ छत होनीँ ~ होरीँ निकर गओ = वह छत होकर निकल गया ।

हो + नीँ = यहाँ -नीँ —सभवत राजस्थानी –कन का अवशेष है । तथा—

हो + रीँ = यहाँ -रीँ– निस्सन्देह पूर्ववर्ती ब्रज-हिन्दी का 'करि' का अवशिष्ट रूप है । करि के प्रथम व्यजन लोप ने –रीँ तथा द्वितीय व्यजन लोप ने —कै रूप प्रदान किया है ।

२१ ऊपर धातुओ का विभाजन करते हुए हमने उन्हे दो वर्गो मे विभक्त किया था—मूल एव यौगिक । प्रथम वर्ग को पुन सामान्य एव ह्रस्वीकृत, इन दो भागो मे बाँट दिया था । अभी तक क्रिया-पद-रचना से सम्बन्धित जिन विभक्ति एव कृदन्तीय प्रत्ययो की चर्चा की गई है, वे अधिकाशत सामान्य धातुओ मे ही जुडकर विभिन्न काल एव कृदन्तीय रचना मे समर्थ होते है । पर ह्रस्वीकृत मूल एव यौगिक धातुओ मे वे सभी विभक्ति एवं कृदन्तीय प्रत्यय जुडकर एक भिन्न अर्थ की अभिव्यजना कराते है, जिन अर्थो को हम दो वर्गों मे विभक्त कर सकते है—

१, कर्मवाचीय एव भाववाचीय (Passive and Reflexives) मूल ह्रस्वीकृत धातुओ मे सभी विभक्ति एव कृदन्तीय प्रत्ययो के योग से इन रूपो की निष्पत्ति होती है।

२ प्रेरणा रूप (Causatives) मूल ह्रस्वीकृत धातुओ मे - आ अथवा --वा के योग से ये रूप बनते है।

एक अन्य वर्ग के रूप भी है, जिन्हे नामीकृत (Denominatives) कहा जा सकता है। ये भी नाम (सज्ञाओ) के ह्रस्वीकृत रूपो मे --या जुड़कर तथा इस प्रकार निष्पन्न धातु-रूपो मे उक्त विभक्ति तथा कृदन्तीय रूपो के जुडने से बनते है ।

कर्मवाचीय एव भाववाचीय —भाषा का स्वाभाविक प्रवाह तो कर्तृ-वाचीय प्रयोग ही है, पर कर्म एव भाववाचीय क्रिया-पदो की कमी नही है। हिन्दी क्षेत्र की अन्यान्य बोलियो की तुलना मे सभवत बुन्देली मे यह प्रवृत्ति प्रमुखता लिए हुए है। यही कारण है कि कर्मवाचीय अभिव्यक्ति के लिए इस भाषा मे 'जाना' के योग से सयुक्त क्रिया-पदो की रचना विरल बनकर ही रह गई है। सामान्य तथा ह्रस्वीकृत ध तु-रूपो के पारस्परिक ध्वनि व्यवस्था सम्बन्धी नियमो की चर्चा विषय-क्रम ३-२ मे की जा चुकी है। कुछ उदारहण इस प्रकार है—

सामान्य	काट्	खा -	कह—	सीँ—
ह्रस्वीकृत	कट्	खब्	कभ्—	सिम्—

कर्तृ मैं पेड काटत हौ = मै पेड काटता हू
कर्मकर्तृ पेड कटत है = पेड कट रहा है
कर्तृ ऊ आटा चालत है = वह आटा छान रहा है
कर्मकर्तृ आटा चलत है = आटा छन रहा है

वस्तुत इस प्रकार के प्रयोगो को वैयाकरणो ने कर्मकर्तृ प्रयोग कहा है क्योंकि इस प्रकार की वाक्य-रचना मे कर्म की प्रधानता रहती है, कर्त्ता छिपा रहता है। यथा—

जा रस्ता खीब चलत = यह रास्ता खूब चला करती है
जौ उन्हा खीब बिकत = यह कपडा खूब बिकता है
उन लोगन कौ खाना खबत = उन लोगो द्वारा खाना खाया जा रहा है
(वे लोग खाना खा रहे है)

राम नॉगपास मै बॅंध गए = राम नागपाश मे बँध गए अर्थात् उन्होने अपने आप को नागपाश मे बँधवा लिया।

चौका रोज पुतत = रसोई घर रोज धोया जाता है।

गइया दुभत = गाय दुही जा रही है।

इन क्रिया-पदो के कर्तृवाचीय रूप क्रमशः चाल-, बेच-, खा-, बाँध-, पोत-, दोह- होंगे। कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि-

i) ह्रस्व धातु-रूप ने कर्तृ प्रयोग पर भी अधिकार कर लिया है। ऐसी स्थिति मे सामान्य रूप या तो भाषा से (अ) विलुप्त हो गया है, या (ब) अत्यन्त सीमित क्षेत्र मे पहुच गया है (स) या उसने अपना अर्थ ही बदल लिया है-

(अ) राख > रख, चाख > चख, दूक > दुक, दूख > दुख, ताक > तक

मैं मौडी खॉ रखै (< राखै) लेत हौ = मै लडकी को अपनी रक्षा मे लिऐ लेता हू

मै चखै (< चाखै) लेत हौ = मै चखे लेता हू

इसी प्रकार प्राचीन ब्रज साहित्य मे अन्य दीर्घ प्रयोग सरलता से मिल जाएँगे।

(ब) चाल. चल यथा-मै आटा चालत हौ = मैं आटा छान रहा हू।

(स) मर मार यथा मै मरत हौ = मै मृत्यु को पा रहा हू।
मै मारत हौ = मै पीट रहा हू।

लुट लोट यथा मै लुटत हौं = मै लुट रहा हू।
मै लोटत हौ = मैं लोट रहा हू।

वस्तुत बसात (बास) गँधात (गध) दिखात (दीखता) आदि कर्मवाचीय क्रिया-पद इसी ह्रस्वीकृत धातु-रूपो से बने हुए है।

मोहै बसात है = मुझे बास आ रही है।
मोहै गँधात है = मुझे गन्ध आ रही है।
मोहै दिखात है = मुझे दिखाई दे रहा है।

सयुक्त क्रिया-पद-रचना द्वारा भी कर्मवाचीय गठन सभव है। कर्तृवाचीय अभिव्यक्ति को कर्मवाचीय रूप देने के लिए क्रिया के भूतकालिक कृदन्तीय पद में 'जानै' सहायक क्रिया के रूपो का योग किया जाता है। यथा-

कर्तृ०	चरवाहौ गइया लगाउत	=नौकर गाय दुह रहा है।
कर्म० कर्तृ	गइया लग रई	=गाय दुही जा रही है।
कर्म०	गइया लगाई जा रई	=गाय दुही जा रही है।
कर्तृ०	हम मैफर खात	=हम शहद खा रहे है।
कर्म० कर्तृ	मैफर खबत	=शहद खाई जा रही है।
कर्म०	मैफर खाई जा रई	=शहद खाई जा रही है।

'हो' सहायक-क्रिया के योग से भाववाचीय अर्थ की भी अभिव्यक्ति सभव है। यथा--

खाबो अथवा खबाई होत=खाना खाया जा रहा है।
बरात कौ चलबो होय, महराज !
=हे महाराज ! बरात चले।

प्रेरणार्थक क्रिया

यौगिक धातु का निर्माण सामान्य धातु के ह्रस्वीकृत रूप मे –आ अथवा –वा जोडकर किया जाता है, यथा—

खा–नै = सामान्य
खब–नै = ह्रस्वीकृत
खबा–नै = प्रेरणार्थक (प्रथम)
खबवा–नै = प्रेरणार्थक (द्वितीय)

इन यौगिक धातुओ के आधार पर रूप-रचना उतनी ही विशाल है, जितनी कि सामान्य धातुओ के आधार पर ऊपर दिखलाई जा चुकी है। यथा—

चल धातु

	सामान्य	प्रेरणा (प्रथम)	प्रेरणा (द्वितीय)
वर्तमान	चलत	चलाउत	चलवाउत
भूत	चलो	चलाओ	चलवाओ
भविष्यत्	चलहौ	चलाहौ	चलवाहौ
क्रियार्थक संज्ञा	चलनै	चलानै	चलवानै
पूर्वकालिक कृदन्त	चल	चला	चलवा
भाववाचक सज्ञा	चली	चलाई	चलवाई

ह्रस्वीकृत धातु रूपो, जिनमें ये प्रेरणा-प्रत्यय जुड़ते हैं, के निर्माण-सम्बन्धी सधि-नियम ऊपर दिए जा चुके है (विषय-क्रम ३–३)। अशोक नगर (गुना-क्षेत्र) के प्रेरणा-रूपो के निर्माण सम्बन्ध मे कुछ अन्तर है, जो कि निम्न उदाहरणो से समझा जा सकता है। यथा—

सामान्य	ह्रस्वीकृत	प्रथम प्रेरणा	द्वितीय प्रेरणा
पीत (पीता)	पिबत	पिबात	पिब्बात
खात (खाता)	खबत	खबात	खब्बात

मध्य बुन्देली के एक क्षेत्र मे (ललितपुर, जिला झाँसी) प्रथम प्रेरणा के प्याउत, खवाउत रूप भी उपलब्ध हुए है।

नामीकृत Denominatives

ये यौगिक धातुएँ नाम (संज्ञा अथवा विशेषण) शब्दो के ह्रस्वीकृत रूपो में –या प्रत्यय जोड़कर बनाई जाती है और फिर इनकी रूप-रचना 'आ' धातु की तरह चलती है। यथा—

हँतयाउत, हँतयावनै = (हाँत > हँत) = हाथ मे आना।
गरयाउत, गरयावनै = (गारी > गर) = गाली देना।
लडयाउत, लडयावनै = (लाड > लड) = लाड करना।
कुलयाउत, कुलयावनै = (कोल > कुल) = छेद करना।
मटयाउत, मटयावनै = (माटी > मट) = मिट्टी से धोना।
लतयाउत, लतयावनै = (लात > लत) = लात मारना।
उँगरयाउत, उँगरयावनै = (उँगरिया > उँगर) = अँगुली से इशारा करना।
खुदयाउत, खुदयावनै = (खोद > खुद) = खोद-खोद कर पूछना
पतयाउत, पतयावनै = (पत) = विश्वास करना।
मँझयाउत, मँझयावनै = (माँझ > मँझ) = बीच से निकलना।

संयुक्त क्रिया

२२. बुन्देली (अथवा अन्य अधुनिक आर्य भाषाओ) के क्रिया रूपो की सयुक्तता से हम कही व्याकरणिक (Grammatical) और कहीं अभिधा तथा लक्षणा मूलक (Lexical & Stylistic) अर्थों की अभिव्यक्ति करते हैं। मुख्य क्रिया मे ह– तथा हो– के योग से काल-रचना, जा– बन– के योग से कर्मवाचीय अभिव्यक्ति और आ–, जा–, पर– आदि क्रिया-रूपो के योग से अभिधार्थो की सिद्धि की जाती है। व्याकरणिक अर्थो को स्पष्ट करने वाली सयुक्तता की चर्चा इस अध्याय का विषय रहा है; अब यहाँ अभिधार्थों के लिए प्रयुक्त क्रिया-सयुक्तता का अध्ययन अभीष्ट है।

टी० जी० बेली ने सयुक्त क्रियाओं को परिभाषित करते हुये लिखा है, "विशुद्ध संयुक्तता वही है जहाँ परवर्त्ती क्रिया अपना अर्थ खो देती है, और

यदि वह अपना अर्थ नही खोती तो ऐसी स्थिति मे वे दो भिन्न क्रियाएँ हैं, सयुक्त क्रियाएँ नहीं।'[1]

उक्त कथन का स्पष्टीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है—

बा मौड़ी रोटी खा गई=वह लड़की रोटी खाकर गई
बा मौड़ी पैसा खा गई=वह लड़की पैसा निगल गई

प्रथम वाक्य मे कर्त्ता एक के बाद दूसरे कार्य मे प्रवृत्त है जबकि दूसरे मे दोनो क्रियाओ के योग से एक भिन्न अर्थ की अभिव्यजना है। अतएव प्रथम क्रिया-सयुक्तता वाक्य-गठन की विधा समझी जाएगी जबकि दूसरे वाक्य का, खा + जाना = खा जाना, एक क्रिया-पद के अन्तर्गत परिगणित किया जाना चाहिए।

बौ रोउत जात = वह रोता हुआ जाता है
बौ रोउत जात = वह रोता ही जाता है (फुसलाने पर भी नही मानता)

प्रथम वाक्य मे 'रोउत' विधेयात्मक विशेषण है यह वाक्य का Participial Construction है। दूसरे मे, कर्त्ता के कार्य की अर्थात् रोने की ही सूचना है, कम या अधिक का प्रश्न है।

बौ हँस परो = वह हँस पड़ा
बौ उठ बैठो = वह खडा हो गया

इन दोनो वाक्यो मे निश्चय ही परवर्ती क्रियाएँ अपना अर्थ खो चुकी हैं अतएव 'सयुक्त-क्रियाएँ' ही कहलाएँगी। जबकि,

बौ निकर आओ = वह निकल आया
बौ खान जात = वह खाने जाता है

इन दोनो वाक्यो मे निश्चय ही—निकल कर आया (पूर्वकालत्व गठन) तथा खाने के लिए जाता है (सज्ञा गठन) अर्थों की अभिव्यक्ति की प्रधानता है अतएव सयुक्त-क्रिया-पद रचना के बाहर का गठन कहा जाना चाहिए।

बौ थम गओ = वह रुक गया
बौ चल बसो = वह मर गया

---

1. In real compounds, the second verb loses its usual meaning When second verb retains its meaning, we have not a compound but two verbs.

Hindustani Grammar, page 19.

निश्चय ही बुन्देली की दृष्टि से ये क्रिया-रूप 'सयुक्त क्रिया पद' कहलाएँगे पर यदि गम् धातु का 'जाने के साथ प्राप्त करने का' अर्थ भी स्वीकार कर लिया जाए जो कि सस्कृत युग मे लाक्षणिक रूप मे विकसित हो चुका था तो हम प्रथम वाक्य को— थमने को प्राप्त हुआ—यह अर्थ लेकर वाक्य का सज्ञात्मक गठन, कहने को बाध्य होगे । वस्तुत 'मरना' किसी अन्य स्थान पर चलकर बसना ही तो है, यदि यह व्युत्पत्तिपरक अर्थ सामने रखा जाए तो यह भी वाक्य का पूर्वकालत्व गठन कहलाएगा। इससे सिद्ध होता है कि सयुक्तता की यह विधा वाक्य-गठन से पद-गठत की ओर बढकर ही सगठित हुई है। इसलिए वर्तमान बुन्देली या हिन्दी मे इस ऐतिहासिक सयुक्तता का क्रमिक वैविध्य सरलता से देखा जा सकता है। हम नीचे इस क्रम को प्रौढ़ता से शिथिलता की ओर जाकर वर्गीकृत कर रहे है—

i) ल्यानै (लेनै + आनै) । योग प्रमाण-सिद्ध है—भूतकाल की सकर्मक क्रियाएँ कर्म के अनुसार लिग-भेद रखती है, पर यह क्रिया अपवाद है, यथा मै किताब ल्याओ, मै कागद ल्याओ। इस प्रकार स्पष्ट है कि अकर्मक 'आनै' के प्रभाव-स्वरूप यह अपवाद बनकर रह गया है। ये दो क्रियाएँ पूर्ण-ऐक्य की स्थिति मे है।

ii) जाउँगो (= जाऊँगा), जात्तो (=जाता था) तथा जाकै (=जाकर) मे गा, तो और कै क्रमश प्रत्यय की स्थिति मे पहुच गए है।

iii) काल-अर्थ-रचना-सहयोगी ह–, हो अभी परसर्गीय स्थिति मे रहकर अपनी सयुक्तता व्यक्त कर रही है।

iv) सक-क्रिया मुख्य क्रिया से असयुक्त रहकर भी भाषा मे स्वतत्र रूप से प्रयोग मे नही आती। इसने अर्थ का भी पूर्ण समर्पण नही किया है।

v) इस वर्ग में वे सभी क्रियाएँ है जो भाषा मे स्वतत्र अस्तित्व भी रखती है पर मुख्य क्रिया के साथ आकर 'जहत् स्वार्था' हो जाती है और लाक्षणिक रूप मे एक नए अर्थ को अभिव्यजित करने लगती है। यथा— लगनैं, शुरू करने के अर्थ मे, जानै, समाप्त करने के अर्थ मे, बैठनै, अपने ठीक विपरीत उठने के अर्थ मे, आदि।

vi) सज्ञा-विशेपण शब्दो (Nominal) को आधार बनाकर करनै, के योग से सयुक्त-क्रिया-पदो की एक बहुत बड़ी सख्या सामने आ गई है। यह विकास की दृष्टि से आधुनिक है और अभी उसका गठन वाक्यात्मक ही अधिक है।

vii) तीन या चार क्रिया पदो की सयुक्तता विकास की दृष्टि से अति आधुनिक कही जाएगी।

क्रिया-सयुक्तता भाषा की एक जीवित-प्रक्रिया है इसलिए सयुक्तता मे सहयोग देने वाली सहायक क्रियाओ की सम्पूर्ण सूची प्रस्तुत करना तो सभव नही है, फिर भी द्वितीय अवयव वनकर आने वाली कुछ क्रियाओ की परिगणना यहाँ कराई जा सकती है आ–, जा–, ले–, दे–, पर–, डार–, उठ–, बैंठ–. लग–, चुक–, सक–, चाह–, हो–, पा–, खा–, कर–, भर–, दिख– (देख–), दौड–, चल–, मच–, उड–, धर–, फिर–, रह–, मर–, मार–, मिल–, धमक–, पटक–, पहुच–, वन–, भाग–, गिर–, घाल– आदि।

हिन्दी की इन सहायक क्रियाओ की समसामयिक सयोग की शिथिलता एव प्रौढता को परिलक्षित करके तीन भागो मे विभक्त करके देखा जा सकता है—

अ. लग–, सक–, चुक–, चाह–

इन क्रियाओ ने अपना अर्थ पूर्ण रूप से मुख्य क्रिया को अर्पित नही किया है। यथा

मै सोचन लगो = मै सोचने लगा
मैं खा सकत = मै खाने की शक्ति रखता हू
मै खा चुको = मैने खाना खा लिया है

वस्तुतः इन क्रियाओ ने लाक्षणिक रूप से अपने अर्थ का विकास तो कर लिया है, पर मुख्य क्रिया से अपना अस्तित्व अलग बनाए रखा है।

ब. आ- जा–, उठ-बैठ–, ले– दे–, डार– पर—

अर्थ-समर्पण की दृष्टि से तो ये सहायक क्रियाएँ ही है पर विरोधी क्रियाओ के साथ जुड कर आने की इनकी प्रवृत्ति उल्लेखनीय है। इसीलिए इनको एक अलग वर्ग बनाकर रख दिया गया है। निस्सन्देह इसके पीछे प्रयोक्ताओ के विचारों के सयोजन की प्रक्रिया काम कर रही है।

बौ आ गओ = वह आ गया

[इसमे आकर जाने का भाव नही है, अपितु प्रतीक्षा के बाद आने की पुष्टि है]

बो उठ बैठो = वह खडा हो गया

[बैठने का अर्थ नही, विरोधी अर्थ की पुष्टि है]

बरी दै दईं = बडिआ दे दी
बरी दै लईं = बडियाँ बना ली
बरी लै दईं = बडियाँ खरीद दी
बरी लै लईं = बडियाँ खरीद ली

[अन्तिम दो उदाहरणो से जान पडता है कि ये क्रियाएँ आत्मने पद तथा परस्मैपद की क्षति की पूर्ति कर रही है। प्रथम मे पुनरुक्ति से तीव्रता का विधान है]

दूद गिरा डारो = दूध गिरा दिया
दूद गिर परो = दूध गिर पडा

[प्रथम मे कर्तृत्व और द्वितीय मे कर्मवाच्य का गठन है]

तीव्रता के भाव प्रदर्शन के लिए समानधर्मा क्रियाएँ मिलकर आती ही है, साथ ही विपरीतधर्मा भी आ जाती हैं। क्रमश उदाहरण दिए जा सकते है।

बो निकर गओ = वह निकल गया

[निकर- (<स० √क्रम = चलना) तथा गओ (<स० √गम् = जाना) समानधर्मा हैं।]

बो रुक गओ = वह रुक गया

[रुकना तथा जाना विपरीत धर्म है]

इन दोनो अर्थ-विकास-स्तरो के बीच एक प्रकार के वाक्य और आते हैं—

बो जग गओ = वह जाग गया

बस्तुत सोकर जागने पर किसी कार्य मे सलग्न होने की प्रवृत्ति का परिचय देने के लिए 'गया' आया होगा जो कि अब अभिधार्थी न होकर लक्षणा के अन्तर्गत पहुच गया। इसके पश्चात् ही 'रुक जाने' की स्थिति आती है जिसमे 'आने' का भाव बिल्कुल समाप्त हो गया है।

स. इस वर्ग के अन्तर्गत शेष सभी सहायक क्रियाएँ आ सकती है।
मुख्य क्रिया के पद-स्वरूप को निम्न चार्ट द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

धातु +	कृदन्त +						नाम +
	-त +	- ० - +			-न- +		
		विशेषण	सज्ञा		सज्ञा		सज्ञा, विशेषण +
			मूल ~ विकारी	रूढ	मूल	विकारी	
आ	आउत	आओ आई आए	आओ ~ आए	आऐं	आउनै	आउन	मना + कर

चार्ट व्याख्या की आकांक्षा रखता है—

धातु रूप—

बुन्देली मे धातु का मूल-रूप तथा प्रत्यय-रहित पूर्वकालिक कृदन्त का रूप एक ही है, अतएव हम इसे दो मे से किसी एक नाम से उद्धृत कर सकते हैं। वस्तुतः अर्थ की गहराई पर उतरने पर भी हम सर्वत्र किसी एक निष्कर्ष पर नही पहुच पा रहे हैं। जैसे— ऊ जा सकत (=वह जा सकता है), ऊ खा चुको (=वह खा चुका), ऊ हँस रओ (=वह हँस रहा है), आदि वाक्यो की मुख्य क्रिया मे पूर्वकालत्व बिल्कुल नही समझ पड़ता, जबकि, ऊ निकर आओ (=वह निकल आया), ऊ नें लै दओ (=उसने ले दिया), ऊ गिर परो (=वह गिर पड़ा), आदि मे उक्त अर्थ की सगत बिठला लेना कोई कठिन नही है। ऐसा जान पडता है कि इस वर्ग की सयुक्त-क्रियाएँ दो भिन्न स्रोतो से आई हैं। एक तो पूर्वकालिक रूपो से (निकरि> निकर, सुनि>सुन) तथा दूसरे शून्य प्रत्यय-युक्त कृदन्त रूपों से। वस्तुतः मुख्य क्रिया असदिग्ध रूप मे इस समय धातु रूप मे ही है। यह भी उल्लेखनीय है कि आधे से अधिक सयुक्त पद-रचना धातु-रूपों के साथ ही होती है। साथ ही निर्विवाद सयुक्त-क्रिया—पदत्व यहीं मिलेगा।

बौ खेल आउत = वह खेल आया करता है

बौ खेल आओ = वह खेल (कर) आ गया (पूर्वकालत्व स्पष्ट है)

मोहै खेल आउत = मै खेलना जानता हू (संज्ञा भाव स्पष्ट है ।

खाना खा आओ = (वह) खाना खा (कर) आ गया,

पूर्वकालत्व स्पष्ट है परन्तु—

खाना खब आओ = खाना खाया जा चुका ।

बाय रो आओ = उसे रो आया (रोने से अपने को न रोक सका)

कृदन्तरूप—यह पुन तीन वर्गों मे विभक्त हो सकता है—

-त + जौ काम हमाए इतै होत आओ

= यह काम हमारे यहाँ (वर्षों से) होता आया है

जौ काम हमाए इतै होत रात

= यह काम हमारे यहाँ (आवश्यकतानुसार) होता रहता है

जौ काम हमाए इतै होत जात

= यह काम हमारे यहाँ (पहले भी) होता आया है और (आज भी) चल रहा है

जा बीमाई बढत जात = यह रोग बढता जाता है

मोसैं चलत बनत = मुझ से चलते (हुए) बनता है

[यहाँ बन -लाक्षणिक अर्थ से शिथिल सहायक क्रिया बना है]

आव, खेल जा = आ, खेल जा

[जाने का भाव बिल्कुल समाप्त है]

बौ खेल गओ = वह खेल (कर) गया

बौ खेल जात = वह (अक्सर) खेल जाया करता है

बाय खेल जानै = उसे (अक्सर) खेल जाया करना है

कर्त्ता अथवा कर्म के अनुसार यह प्रत्यय लिंग–वचन–विभक्ति-प्रत्यय रखता है । यथा :

बौ घुसो आउत = वह घुसते ही आ रहा है

[आने का भाव समाप्त होने के मार्ग पर है]

बौ मरो जात = वह मरने ही को है

बौ आओ जात = वह आने ही वाला है

काम करो गओ = काम किया गया

बात करी गई = बात की गई

-सज्ञार्थ मे यह मूल रूप रखता है—

मोहै खेलो चइए = मुझे खेलना चाहिए

बौ खेलो चाउत = वह खेलना चाहता है

बौ जाओ चाउत= वह जाना चाहता है

[इसका विशेषणार्थ रूप 'गओ' होता]

बौ जाओ करत = वह जाया करता है

बे जाओ करत = वे जाया करते हैं

बा जाओ करत = वह जाया करती है

तुलना कीजिए—

बौ जाए करत = वह जाया करता है

वे जाए करत = वे जाया करते हैं

बा जाए करत = वह जाया करती है

-अव्यय रूप, जिसका विभक्ति प्रत्यय –ऐ ही रहता है कही सज्ञा और कही विशेषण का अर्थ देता जान पड़ता है—

जे लरका हमैं खाऐं जात= ये लडके हमको बड़ा परेशान करते हैं ।

[खाऐं = खाए हुए]

किताबै धरै राव=किताबें रखे (हुए) रहो

बौ मारैं डारत =बौ मारे (हुए) डालता है

बौ पिऐं रात =वह (शराब आदि) पिए (हुए) रहता है

मैं पढ़ैं लेत = मैं पढ़े (हुए) लेता हू

मैं खाऐं जात = i) मैं खाए (हुए) जा रहा हू =खाता जा रहा हू

ii) मैं खा (कर) जा रहा हू

इसे मूल एव विकारी दो सज्ञा रूपो मे विभक्त किया गया है । -नैं का प्रयोग ह–, हो– कालार्थवाची सहायक क्रिया रूपो के साथ ही प्रधानत. होता है, परन्तु आ–, पर– क्रियाएँ ऐसी हैं जिनके योग से बने क्रियापद 'सयुक्त क्रिया' के अन्तर्गत आएँगे । यथा—

बाय जानैं परत = उसे जाना पड़ता है

मोहैं लाउनैं परत=-मुझे लाना पड़ता है

[यहाँ पर– का लाक्षणिक अर्थ ही बदला है, इसलिए इसे शिथिल सयुक्तता के अन्तर्गत ही ले सकेगे]

मौडिन खाँ खेलनै आउत=लडकियो को खेलना चाहिए

–न का प्रयोग व्यापक है। पर पा–, आ–, दे–, लग–, चाह–, बैठ– चल– धातु क्रिया-रूपो के साथ ही—

मै नईं जान पाउत = मैं जाने नही दिया जाता

तुलना कीजिए—

मैं नईं जा पाउत = मैं (स्वय) नही जा पाता
मैं खेलन चाउत = मैं खेलने ही वाला हू

तुलना कीजिए—

मैं खेलो चाउत = मैं खेलना चाहता हू
बौ खेलन जात = वह खेलने (के लिए) जाता है

तुलना कीजिए—

बौ खेलै जात = i) वह खेल (कर) जाता है
ii) वह खेलना जारी रखे है

बौ सोउन बैठो = वह सोने ही जा रहा है
बौ खान लगो = वह खाने लगा
बौ खान आउत = वह खाने आता है

वस्तुत इस क्रिया-सयुक्तता मे सज्ञा वाक्याश का गठन अधिक है।

नाम आधारी—सज्ञा, विशेषण तथा कभी-कभी अव्यय रूपो को साथ लेकर कोई-कोई सहायक क्रिया एक क्रिया-भाव की अभिव्यक्ति करती है। इस क्रिया-ऐकत्व को ध्यान मे रखकर इनको भी सयुक्त क्रिया के अन्तर्गत परिगणित कर लिया गया है। इनमे से कुछ तो कर्तृवाचीय गठन मे ही प्रयुक्त होती हैं और कुछ कर्मवाचीय अभिव्यक्ति के लिए ही आती है। द्वितीय मे वास्तविक कर्ता विकारी रूप धारण किए रहता है। क्रमश उदाहरण इस प्रकार हैं—

(अ)

मैनै माफ कर दओ = मैंने क्षमा कर दिया
बानै मार खाई = उसने मार खाई
बौ बेकार मूंड खपाउत = वह व्यर्थ परेशान होता है
बौ मूंड मारत फिरत = वह व्यर्थ परेशान होता है
बानै नाम धराओ = उसने बदनामी करा ली

(ब)

मोहै दुख होत = मुझे दुख होता है
मोहै याद आउत = मुझे (उसकी) याद आती है
मोहैं दिखाई देत = मुझे दिखलाई देता है
मोहैं सुनाई देत = मुझे सुनाई पड़ता है

तृतीय तथा चतुर्थ अवयव बनकर भी सहायक क्रियाओ की योजना होती है। तृतीय अवयव मे कर–, जा–, दे–, सक–, ले–, चाह–, आदि क्रियाएँ प्रमुख है। चतुर्थ अवयव मे तो सभवत कर– क्रिया-रूपो को ही स्थान मिलता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

बौ खात चलो जात = वह खाता ही जाता है
तैं काम कर लए कर = तू काम कर लिया कर
तैं इतैं खेल जा सकत = तू यहाँ खेलने आ सकता है
यौ काम होत चलो आओ = यह काम (वर्षो ने) होता चला आया है
तैं एखाँ खा लेन दए कर = तू इसको खा लेने दिया कर

जैसा कि अन्यत्र कहा गया, इस सयुक्त क्रिया–पद–रचना से सूक्ष्म भावो का निदर्शन होता है। वस्तुत जो कार्य सस्कृत ने अपने उपसर्गो से लिया यथा—आहरति, विहरति, सहरति तथा जो कार्य अग्रेजी अपने प्रीपोजीशन्स (Prepositions) यथा—get up, get down, get on, get into, से ले रही है, वही कार्य हिन्दी अथवा बुन्देली आदि भाषाएँ अपनी सहायक क्रियाओ से लेती है। परन्तु जिस प्रकार सस्कृत वैयाकरणो ने उपसर्गों की सख्या का तथा कमाधिक मात्रा मे उनके अर्थो का निर्धारण कर लिया था वैसा कर पाना बुन्देली की बढती हुई विश्लिष्टात्मकता के कारण सभव नही है। फिर भी—

बौ खान लगो = वह खाने लगा (प्रारम्भिकता)
बौ जा सकत = वह जा सकता है (शक्यता)
बौ नइँ जा पाउत = वह नही जा पाता (अशक्यता)
बौ रोउत जात = वह रोता ही जा रहा है (निरन्तरता)
बौ दिखो चाउत = वह देखना चाहता है (इच्छार्थकता)
बौ खा चुको = वह खा चुका (पूर्णता)
बौ पढो करत = वह पढता रहता है (स्वभाव-सूचक)
चार बजो चाउत = चार बजना चाहते हैं (तात्कालिकता)
बानैं लै दओ = उसने ले दिया (परार्थक)
बानैं लै लओ = उसने ले लिया (स्वार्थक)
बौ गिर परो = वह गिर पडा } (अवशार्थक)
बौ उठ बैठो = वह उठ बैठा }

अव्यय

१. 'यन्न व्ययेति तदव्ययम्' की व्याख्या से स्पष्ट है कि अव्यय एक प्रकार की नाम शब्दावलि है। यह तथ्य भाषा-इतिहास से भी प्रकट होता है। वस्तुत संस्कृत तथा हिन्दी मे प्रचलित चिरम्, पूर्णतया, सर्वत आदि, नाम-शब्दो के क्रमश. द्वितीया, तृतीया तथा पचमी कारक-विभक्ति-युक्त पद ही हैं. पर इन्होने अपनी विभक्त्यात्मकता समाप्त करके एकरूपता अपना ली है। अतएव अविभक्तक (Indeclinables) कहला रहे है। अपनी इस अविभक्त्यात्मकता के कारण ये व्याकरणिक सम्बन्धो को स्पष्ट करने के लिए वाक्य मे प्रयुक्त दूसरे पदो का आश्रय लेते हैं—वस्तुतः आधुनिक भाषाशास्त्रियो ने इसीलिए इन शब्दो को वाक्यान्तर्गत परिगणित शब्द-वर्गो (Syntactical classes) के अन्तर्गत रखा है।

२ अर्थ को ध्यान मे रखते हुए हम इन शब्दो को निम्न भागो मे विभक्त करके अध्ययन कर सकते है—

i) क्रियाविशेषण
ii) समुच्चय बोधक
iii) निपात
iv) परसर्ग
v) विस्मय बोधक

क्रियाविशेषण

३ सुविधानुसार ये भी चार वर्गों मे विभक्त किए जा सकते है—काल, स्थान, दिशा, रीति वाचक। कतिपय स्पष्टत. सर्वनाम-रूपो पर आश्रित हैं, अतएव उन्हे सर्वनाम-विषय-क्रम १२ मे स्पष्ट किया जा चुका है। नीचे शेष वर्गों की एक सामान्य-सूची प्रस्तुत की जा रही है :—

३.१. कालवाचक

आज ~ आझई (<आज + ही)
रोज ~ रोजीना (<रोजाना)
कल्ल ~ काल = बीता हुआ अथवा आगे आने वाला दिन
परौं = परसो, बीता हुआ अथवा आगे आने वाला, कल के बाद का अथवा पहिले का, दिन

आसौ = इस चालू वर्ष मे

पर ~ पार = बीते हुए अथवा आने वाले वर्ष मे

अँगाईं (<अँगारीं) ~ अँगाऊँ (अंगारूँ) ~

अँगें = आगे

अँगित = आगे आने वाले अथवा बीते हुए वर्षो मे

बेरा ~ बेराँ = (<बेला), समय

भ्यानैं = (<विहानहिँ) आगे आने वाला प्रात काल

अँदयाईं = (<अँधेरे मे ही) आगे आने वाला प्रातःकाल

सकारैं = (<सकाल) आगे अथवा बीते दिन का प्रात.काल

सौकारूँ = (<सकाल) बहुत सबेरे

उलायतैं = जल्दी

दाईं ~ दारीं = बार, दफा

देर ~ घेर ~ झेल (<*घ्येर) = देर

धारक = कभी-कभी

हर हरजाँ = अक्सर

अथऐं = (<अस्त) संध्या समय

दुफाईं = दोपहर के समय

[तुलना कीजिए, दुफाई = दोपहर]

रातैं = रात के समय

इखयाऊ = अन्त में

३.२. स्थानवाचक

अँगाईं (<अगारीं) ~ अँगाऊँ (<अँगारूँ) ~

आँगें ~ आँगूं = आगे

पछाईं (<पछारीं) ~ पछाऊँ (<पछारूँ) ~

पाछैं ~ पाछूं = पीछे

सबरे हार = सर्वत्र

ऐंगर = समीप

दूर = दूर

बाहर = बाहर

अन्तैं = अन्यत्र

नाँ = यहाँ

राजा के नाँ गए=राजा के यहाँ गए

माँ = वहाँ

तीरै = पास

३ ३. **दिशावाचक**—स्थान-वाचक अव्ययो मे दिशा-सूचक शब्दो के अथवा यत्रतत्र बलात्मक निपात 'आय' के योग से अथवा परसर्ग खाँ (खो, कौ) के पर-भाग मे प्रयुक्त होने से उक्त अभिप्राय की सिद्धि हो जाती है । यथा-

i) दिशा सूचक शब्द—

कोद ~ कोदीँ ~ कुदाईँ = ओर
ओरीँ = ओर
डिब्बे हाँत कुदाईँ = बायें हाथ की ओर
झाँसी कुदाईँ = झाँसी ओर
हमाई ओरीँ = हमारी ओर

ii) आय के योग से

इतायँ = इस ओर
उताँय = उस ओर
नाँय = इस ओर
माँय = उस ओर

नाँय गई, माँय गई, पइसा भर जघा मैं बैठ गई=
यहाँ गई, वहाँ गई, पैसा भर स्थान पर रुक गई ।
अर्थात् लाठी

माँय के उपेक्षा-सूचक प्रयोग भी दृष्टव्य है—

चलौ परिए, माँय = चलो पडे + उपेक्षा
माँय, को जाय उतै = अरे ! कौन जाए वहाँ
माँय, मरन देव उऐ = अरे ! मरने दो उसे

iii) कर्म कारकीय प्रत्यय के साथ—

आँगूँ खाँ = आगे की ओर
पाछूँ खाँ = पीछे की ओर

३-४. **रीति वाचक**—

हरईँ-हराँ = धीरे-धीरे
मस्कई ~ मस्काँ = चुपके से
तराँ ~ तनाँ = तरह से

घाईं=तरह
तुरतईं=तुरन्त ही
जबरदस्तीं=ताकत से

समुच्चय बोधक

४ १ संयोजक—(Conjunctives)

और ~ औ= और
मैं औ ~ और ऊ गए ते = मैं और वह गए थे

नाँ=और

रात नाँ दिनाँ एक कर दओ=रात और दिन एक कर दिया ।
बा नाँ कक्को दोऊ जनै गए =वह और चाची दोनो गईं ।
टटी नाँ भुल्लीं, दोऊ आए=टण्टी और भुल्लीं दोनो आदमी आए

फिर ~ फिन (द्वितीय खाँ-क्षेत्र मे)
वो गओ फिन मैं आ गयो = वह गया, फिर मैं आ गया ।

४-२ विभाजक (Alternatives)

या या
या केसर या रामबाई कोऊ चलो जैहै
=या तो केसर अथवा रामबाई (दो मे से) कोई चला जाएगा ।

कै कै
कै घसीटा कै लटोरा कोऊ आ जैहै
=घसीटा अथवा लटोरा (दोनो मे से) कोई आ जाएगा ।

चाय चाय
चाय तै चाय तोओ हरवाव चलो आवै
=चाहे तू चाहे तेरा नौकर, कोई चला आए

धौं धौ
धौं बिन्नूं धौं तैं चली जइए
=या तो छोटी बहिन या तू चली जाना

ना ना

ना तो मैं ना ऊ सैं, कोऊ सैं न आहै

=ना तुझसे न उससे, किसी से न आएगा

नइँ ता ~ नइँ तौ ~ नइँ तर

रुक जाव नइँ तर काम न हुइऐ

=रुक जाओ, अन्यथा काम न बन सकेगा

४-३. बिरोध सूचक (Adversatives)

पै=लेकिन

खींब मनाओ, पै बा न आइ

=अच्छी तरह फुसलाया पर वह न आई

अकेलैं=लेकिन

हर हरजाँ कोशिश करी अकेलैं काम न बनो

=हर तरह प्रयत्न किया परन्तु काम न बना

४-४ अनुमोदक (Concessives)

घाल पै=हालांकी पर

घाल मौका न तो पै काम बन गओ

=यद्यपि उपयुक्त अवसर न था पर काम बन गया

स्यात तौ ~ ता=यदि तो

स्यात गाडी रुक गई तौ =यदि गाडी रुक गई तो

जौ तौ ~ ता=यदि . तो

जौ ऊ आ गओ तौ= यदि वह आ गया तो

कजन्त ~ कजन तौ ~ ता (जालौन जिला)

कजन्त ऊ आ गओ तौ =अगर वह आ गया तो .

कभी-कभी वाक्याश बदलकर इनमे से किसी एक शब्द से भी काम चला लिया जाता है यथा—

मौका न तो तै काम बन गओ ।

अथवा

काम बन गओ घाल मौका न तो ।

४-५. हेत्वर्थक—(Causatives)

कि=कि

ऊ ई सैं आओ तो कि ओ खाँ बुलाओ तो

=वह इसलिए आया था कि उसको बुलवाया था ।

काए सैं कि = क्योंकि

ऊ ई सैं आओ तो काए सैं कि ओ खाँ बुलवाओ तो

= वह इसलिए आया था कि उसको बुलवाया था

४-६. परिणाम सूचक—(Resultatives)

सो = इसलिये

कक्की आई सो बा चली गई = चाची आई इसलिए वह चली गई

ईसैं = इससे

कक्की आई ईसैं बा चली गई = चाची आई इसलिये वह चली गई

[हेत्वर्थक तथा परिणामसूचक शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त हो जाते हैं।]

निपात

५-१ स्वीकारात्मक

हओ = हाँ

बजारै जइयो, हओ जू = बाजार जाना, जी हाँ।

हाँ ~ हूँ = किसी चलती हुई किस्सा-कहानी मे हाँ-हूँ कहते जाना।

५-२. नकारात्मक

नईं = इनकार करना

जो काम करहो, का? नईं जू = यह काम क्या करोगे ? जी नहीं।

नाँ = नहीं

जो काम नाँ करियो = यह काम न करना

आँहाँ ~ ऊँहूँ = इनकार करना (स्वीकारात्मक निपातो मे आँ अथवा ऊँ का पूर्व प्रत्यय रूप मे योग)

ऊ आओ तो, का ? ऊँहूँ = क्या वह आ या था ? नही।

इतै कोऊ है, का? कोऊ नहियाँ = यहाँ कोई है, क्या? कोई नही है।

उतै को है ? कोऊ नहोय = उधर कौन है ? कोई नहीं है।

इन वाक्यों मे 'नहिं' का योग जान पड़ता है।

५-३. बलात्मक

i) आय (<सस्कृत अयम्) इनकी चर्चा क्रिया विषय-क्रम ५ में की जा चुकी है। यह पूर्वस्थ पद—चाहे व्यक्ति, वस्तु, क्रिया, स्थिति, किसी का भी द्योतक क्यों न हो, सभी मे, बलातमकता लाने के लिए जुडता है। यथा—

रमेश आय बजार सैं इतै आओ
= रमेश (कोई दूसरा नहीं) बाजार से यहाँ आया
रमेश बजार सैं आय इतै आओ
= रमेश बाजार से (किसी दूसरे स्थान से नहीं) यहाँ आया
रमेश बजार सैं इतै आय आओ
= रमेश बजार से यहाँ ही (अन्यत्र नहीं) आया
रमेश बजार सैं इतै आओ आय
= रमेश बाजार से यहाँ केवल आया है (विशेष प्रयोजन नहीं)

वस्तुत बलात्मकता लाने के लिए जो काम सुर-लहर (Intonation) करती है, उसी ही पूर्ति 'आय' कर रहा है।

ii) तौ(=तो)इसकी चर्चा ऊपर विषयक्रम ४—४ मे की जा चुकी है। इसने अन्य व्यक्ति, वस्तु अथवा क्रिया भावो से विरोध दिखलाते हुए बलात्मक अर्थ में भी प्रवेश पा लिया है। यथा—

मैं तौ आओ तो = मैं तो आया था (कोई दूसरा आया हो अथवा नहीं)
मैं आओ तौ तो = मैं आया तो था (पर जल्दी चला गया)
मैं बजारै तौ गओ तो = मैं बाजार तो गया था (पर लाना भूल गया)

वस्तुत. अभिप्राय की पूर्णता पूर्वापर सम्बन्धों से ही प्रगट होती है।

iii) तक (=तक), इसकी चर्चा आगे विषयक्रम ६ मे हो रही है, जहाँ यह स्थान अथवा काल की अवधि सूचना का प्रत्यय बनकर आता है। यहाँ इसका अर्थ 'भी' के निकट है। यथा—

राम तक आओ = राम भी आया (जिसकी आशा नहीं थी)

परसर्गीय रूप से तुलना कीजिये—

राम तक आओ = (वह व्यक्ति) राम के पास तक

राम आओ तक = राम आया भी (उसने केवल संदेशा ही नहीं भेजा)

राम बजार तक आओ=i) राम बाजार भी आया
(बलात्मक प्रयोग)
ii) राम बाजार तक आया
(परसर्गीय प्रयोग)

iv) ई (=ही) तथा ऊ (=भी) बहुलता से प्रयुक्त होने वाले बुन्देली अव्यय है। प्रथम पूर्वस्थ पद के केवलत्व (Restrictive sense) को तथा दूसरा उसके अभिव्यापत्व (Inclusive sense) को प्रगट करता है। ये कभी-कभी सह-सम्बन्धवाची सर्वनाम 'सो' को जो कि भाषा से विलुप्त-सा हो गया है, अपने मे समेट कर प्रयुक्त हो जाते है। ऐसी स्थिति मे 'सो' निरर्थक हो जाता है। यथा—

रामऊ आओ =राम भी आया
राम सोऊ आओ=राम भी आया

विभिन्न ध्वनि-वातावरणो में इनके प्रयोग इस प्रकार है—

बौ आउतई रात =वह आता ही रहता है
बौ रातऊ कै आउत=वह रात को भी आता है
दद्दऊ आए ते =दादा भी आए थे
दद्दई आए ते =दादा ही आए थे
मौडियऊ चली गई=लडकी भी चली गई
मौड़ियई चली गई =लड़की ही चली गई
मोऊ खा =मुझे भी
मोई खाँ =मुझे ही
तुम्हऊँ =तुम्हें भी
तुम्हईं =तुम्हे ही
दोऊ गए =दोनो गए
दोई गए =दो ही गए

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि व्यंजनान्त पदो मे अई तथा अऊ अन्यत्र ई एव ऊ का योग है। अन्यान्य स्थानो की भाँति ई तथा ऊ क्रमश इय् तथा उव् मे बदल जाते हैं।

बुन्देली के इन अव्यय रूपों की एक विशेषता है जो हिन्दी क्षेत्र मे अन्यत्र न मिल सकेगी। वह यह, कि ये समस्तपदो के प्रथम अवयव मे जुड जाया करते हैं। यथा—

रामऊचरन खाँ खबा दो = रामचरन को भी खिला दो
रामईचरन खाँ खबइयो = रामचरन को ही खिलाना
रातऊदिनाँ एक कर दओ = रात-दिन एक कर दिया

खो-क्षेत्र मे दोनो निपातो के प्रयोगों मे यत्किंचित अन्तर है। यथा—

परतऊँ नीद लग गई = पडते ही नींद आ गई
दोई आए ते = दोनो ही आए थे
रमेश सोई आओ तो = रमेश भी आया था

परसर्ग

६. इस वर्ग की कतिपय शब्दावलि जो कि भाषा मे विशिष्ट व्याकरणिक विधा बन कर छा गई है, कारक-प्रत्यय के रूप मे सज्ञा विषयक्रम १५ मे वर्गीकृत की गई है। यहाँ शेष उन परसर्गों की चर्चा अभीष्ट है जो कि नाम शब्दो के पर-भाग मे लगकर उनकी सीमा का निर्धारण तो करते ही है पर साथ ही, क्रिया-सीमा निर्धारण करने के लिए भाषा मे अन्यत्र 'अव्यय' बनकर भी प्रयुक्त हो जाया करते है। इनके निम्न भेद सभव है—

(अ) विकारी एक वचन, के (पु०) अथवा की, (स्त्री०) के साथ—
करण कारकीय सम्बन्ध द्योतन के लिए—

ओखे सघै = उसके साथ
ओखे माएँ = उसके मारे (=कारण)

अपादान कारकीय सम्बन्ध द्योतन के लिए—

उन लोगन के बिना कोऊ = उनके लोगो के बिना कोई ··
अपुन के सिवा कोऊ = आपके अलावा कोई ··

अधिकरण कारकीय सम्बन्ध द्योतन के लिये—

ओखे आँगूं-पीछूं = उसके आगे-पीछे (=किसी समय)
राम ख्याँ = राम के यहाँ

(ब) विकारी, के अथवा की, का प्रयोग वैकल्पिक—
अधिकरण कारकीय—

पथरा तरैं धरो = पत्थर के नीचे रखा है

करण कारकीय—

रमेश घाईं न करिए = रमेश की तरह न करना

(स) विकारी रूपो के बिना कारक-सम्बन्धो का द्योतन—ये रूप कारक प्रत्ययो के अधिक निकट कहे जाएँगे—

करणकारकीय—

तुम पाँच रुपइयन लै का करहौ=तुम पाच रुपयो से क्या करोगे

अपादान कारकीय—

छत भे निकर गओ=छत से निकल गया

मटका भर दओ=घडा भर दिया

अधिकरण कारकीय—

घर तक जानै=घर तक जाना है।

विश्मय बोधक

७. अव्यव-शब्दो की यह कोटि भाषा-सगठन मे स्वाभाविक अग बनकर नही आती, अर्थ की दृष्टि से स्वत पूर्ण होकर वाक्य के पूर्व भाग मे शब्दात्मक वाक्य बनकर अलग रखी रहती है। यह अतिशय प्रसन्नता, दुख, आकस्मिकता, विस्मय आदि अन्यान्य भावो को सुराघात की सहायता लेकर स्पष्ट करने मे समर्थ होती है। सहसा निसृत होने के कारण अथवा वक्ता के आवेगपूर्ण स्थिति मय होने के कारण जो ध्वनियाँ अनायास ही निकल पडती है, उनको कभी-कभी लिपि के मान्य वर्ण-चिह्नो द्वारा यथारूप अभिव्यक्त करने मे कठिनाई होती है। बहुधा प्रयुक्त शब्दावलि इस प्रकार है—

एजू=अरे भाई

एजू इतायँ अइयो=अरे भाई यहाँ आना

अरी (अई)+एरी~एजू =स्त्रियो द्वारा गाये जाने वाले गानो के टेक शब्द

इनमे पाया जाने वाला ए अतिशय रागपूर्ण तथा विलम्बित रहता है।

अरी (अई) दइया=दुख मय स्थिति

बाभा=वाह वाह

बाभा! भौत अच्छौ=वाह-वाह, बहुत अच्छा

ओ मताई=ओ माँ

ओ मताई! आउत हौं=ओ माता जी, आती हू

राम राम=हे राम

राम-राम ! भौत बुरओ भओ=हे राम बहुत बुरा हुआ

च-च=दुख है

च-च ! भौत बुरौ करो, ओखाँ माड्डारो
=दुख है, बहुत बुरा किया, उसको मार डाला

रामधई=राम दुहाई

रामधई ! मै नई गओ तो
=मैं राम की कसम खाता हू, मैं नही गया था

भलाँ ~ भलूँ=अच्छा !

भलूँ ! तै जरूर अइए=अच्छा तुम जरूर आना

बाअ ~ बाय

बाअ ! तैं आ गओ=वाह तू आ गया !

शब्द रचना

- १. 'धातु', 'प्रातिपदिक', 'ध्वनिग्राम' (Phoneme) जिस तरह भाषा-विश्लेषण के परिणाम है, उस तरह शब्द' तत्त्व नही । वह तो भाषा की एक ऐसी इकाई है, जो कि बाह्य-जगत से अपना सीधा प्रतीकात्मक सम्बन्ध रखती है । भारतीय भाषाविदो द्वारा गिनाए गये भाषा-तत्त्वो मे वह पद के सन्निकट है । शब्द मे व्याकरणिक प्रत्यय लगकर ही वह 'प्रयोगार्ह' बनता है अर्थात् बाह्य-जगत के द्योतक शब्द को भाषा के अन्त क्षेत्र मे प्रवेश करने के लिए कुछ सम्बन्ध-नियमो का निर्वाह करना पडता है । इस प्रकार, पद = शब्द + व्याकरणिक सम्बन्ध । शब्द से पद बनाने वाले विभक्ति-प्रत्ययो की चर्चा संज्ञा से लेकर क्रिया तक होती आई है अर्थात् लिंग, वचन, कारक (सुप्) तथा पुरुष, वचन, लिंग, काल, वाच्य, अर्थ आदि द्योतक (तिङ्०) विभक्ति-प्रत्यय क्रम से नाम एवं क्रिया की पद-रचना मे समर्थ है । उदाहरण के लिये यदि हम घर, घरन, घरुवा और घर-द्वार, ये चार शब्द लें तो 'घर' को हम व्याकरणिक दृष्टि से प्रातिपदिक तथा अन्य दृष्टियो से शब्द कहेगे । 'घरन' वचन -कारक-द्योतक विभक्ति लिये हुए है, अतएव पद हुआ । घरुवा (छोटे पौधो का थाला) 'एक छोटा सा घर', ह्रस्वार्थ-द्योतक प्रत्यय-युक्त शब्द बना जिसमे ठीक 'घर' की तरह पद-द्योतक विभक्ति-प्रत्यय लगाये जा सकते हैं । एक शब्द से दूसरा शब्द बनाने वाले इन्ही रचनात्मक प्रत्ययो की चर्चा यहाँ अभीष्ट है । 'घर-द्वार' मे पाये जाने वाले शब्दो को अलग-अलग भी प्रयोग किया जा सकता है, पर साथ-साथ प्रयुक्त करने से अर्थ मे एक प्रकार की नवीनता आ जाती है;

जैसे घर अच्छौ है = घर अच्छा है

द्वार (दोरौ) अच्छौ है = दरवाजा अच्छा है

घर-द्वार अच्छौ है = घर और दरवाजा अच्छा है

अर्थात्—जमीन-जायदाद अच्छी है ।

इसलिये इस 'घर-द्वार' शब्द को समस्त-पद अथवा समास-शब्द कहेगे । इसकी चर्चा भी संक्षेप मे की गई है ।

—संस्कृत के लिये कहा गया है कि उसके सभी शब्द किसी न किसी धातु पर आधारित हैं । वस्तुत यह बात सर्वांशत संस्कृत पर भी लागू नही होती

और हिन्दी के लिये जिसमे न जाने कितने विदेशी शब्द भी आ गये हैं, किस प्रकार धातु निर्धारित की जा सकती है ? संस्कृत के शब्द 'कर्म' को ही लीजिये। सस्कृत मे √कृ धातु स्पष्ट है पर काम, चाम, धाम, हिन्दी शब्दो का विश्लेषण करके क्या, 'का', 'चा', 'धा' धातु निकाली जा सकती हैं ? वस्तुत ऐसे तथा अन्यान्य विदेशी शब्दों को हम हिन्दी-व्याकरण की दृष्टि से 'अधातुज' मान कर ही चलेंगे। नीचे बुन्देली शब्दो की रचनात्मक विधा को चार्ट द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

धातुज ——┐ ┌——मूल शब्द (=प्रकृति)
│—शब्द-प्रकृति—│——यौगिक शब्द (= प्रकृति + प्रत्यय)
अधातुज——┘ └——समास शब्द (= प्रकृति + प्रकृति)
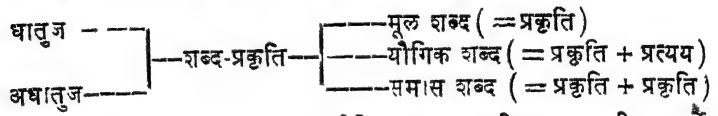
बुन्देली धातुओ को सामान्य, यौगिक तथा ह्रस्वीकृत, इन तीन वर्गों मे विभक्त किया गया है उन सभी पर आधारित शब्दो को धातुज कहा जा सकता है , यथा—

चरइया [चर सामान्य धातु + अइया = आई + आ] = चराई करने वाला अर्थात् चरने वाला

चरवइया [चराव् यौगिक धातु + अइया = आई + आ] = चराई कराने वाला अर्थात् चराने वाला

खबइया [खव् ह्रस्वीकृत + अइया = आई + आ] = खिलाई करने वाला अर्थात् खाने वाला

उक्त सभी शब्द यौगिक है तथा धातुज प्रकृति को लेकर खडे हैं। पर्याप्त संख्या मे मूल शब्द भी धातुज प्रकृति वाले मिलेंगे। पर वे सभी सामान्य धातु पर आधारित संज्ञा शब्द होगे। कुछ उदाहरण इस प्रकार है—

खेल [खेल- + ०] = खेल
मार [मार- + ०] = मार
दौड़ [दौड- + ०] = दौड
हार [हार- + ०] = हार
कसक [कसक- + ०] = कसक

सामासिक पदो मे भी धातुज प्रकृति पर्याप्त मात्रा मे प्रयुक्त हुई है, यथा—

घर-घुसा = घर मे घुसा (√घुस-) रहने वाला
दिन-लौटें = दिन के लौटने (√लौट-) पर अर्थात् शाम को
दौड़ा-पदौड़ी = इधर-उधर कूद-फांद करना, (दौड़-आ—प-दौड़ + ई)

अधातुज मूल शब्द बुन्देली मे असख्य मिलेंगे, राजा, रानी, काम, घर, ईंटा, पथरा, हाँत, पाँव आदि, जिनका विशेष-अध्ययन शब्दकोष ही करा सकता है। यौगिक शब्दो की भी कमी नही है, यथा—

कमाई [काम > कम + आई] = काम से प्राप्त अर्थात् आमदनी
बिरहानौ [बेर > बिर + हानौ] = बेर के वृक्षो का स्थान
चमरौरा [चमार > चमर + औरा] = चमारो के रहने का स्थान
हँतनी [हाँती > हँत + नी] = हथिनी

वस्तुत प्रत्यय जुडने मे सामान्य प्रकृति का ह्रस्वीकृत रूप ही रह जाता है। इस सम्बन्ध को क्रिया विषय-क्रम ३ २ में स्पष्ट किया जा चुका है। इस अधातुज कोटि मे आने वाली सामासिक पदावली भाषा में प्रचुर मात्रा में मिलेगी जिसके उदाहरण यथास्थान सग्रहीत हैं।

२ बुन्देली के कुछ प्रमुख प्रत्यय इस प्रकार हैं। निकटस्थ बोली रूपो का सहारा लेकर ऐतिहासिक विकास की ओर भी सकेत कर दिया गया है।

--आ (पुल्लिग) एव --ऊ (स्त्रीलिंग)— यह भाषा का सजीव एव सबल प्रत्यय कहा जा सकता है।

मरखा √मार ~ मर + क + ह् + आ = मारने वाला (बैल आदि)
मरखू √मार ~ मर + क + ह् + ऊ = मारने वाली (गाय आदि)
[तुलना कीजिये—बैसवाडी मरकहा]
मुता √मूत ~ मुत + आ = बहुत मूतने वाला
मुतू √मूत ~ मुत + ऊ = बहुत मूतने वाली
चुट्टा √ *चोर ~ चुर + *ट + आ = चीजें चुराने वाला
चुट्टू √ *चोर ~ चुर + *ट + ऊ = चीजें चुराने वाली

['चोरना' धातु सामान्य वर्ग की है जो कि बुन्देली मे प्रचलित नहीं, हिन्दी-क्षेत्र की कुछ बोलियो मे इसका यह रूप शेष है—साथ ही *ट प्रत्यय भी सजीव नही—किसी पुरानी सन्धि ने र और ट मे समीकरणत्व उपस्थित कर दिया है]

फिरत्ता √ फिर + त् + त् + आ = घूमने-फिरने वाला
फिरत्तू √ फिर + त् + त् + ऊ = घूमने-फिरने वाली
['त्' का द्वित्व हेय-अर्थवाची है]

घर-घुसा, घर-घुसू (घर में पडे रहने वाले), खब्बा, खब्बू (अधिक खाने वाले), ढिंगा, ढिंगू (आयु के अनुसार समझ न रखने वाले), लबरा, लबरू (झूठ बोलने वाले), उचक्का, उचक्कू (जो कुछ मन आया, कहने, करने वाले)।

–अइया–यह प्रत्यय भी सजीव है, स्त्रीलिग एव पुल्लिग दोनो मे प्रयुक्त होता है –

लिखइया √लिख + आई + आ = बहुत लिखाई करने वाला
सुबइया √सुब + आई + आ = बहुत सोने वाला
झरइया √झर + आई + आ = झाडने-फूंकने वाला

[ऐसा जान पडता है कि –आई– प्रत्यय भी दो भिन्न प्रत्ययो का योग है। इसमे –आ– प्रेरणार्थक है जो कि अपना अर्थ खो चुका है।]

–अइँयाँ–इस प्रत्यय का स्थान –बाल– (–वार–) लेता जा रहा है, विरल प्रयोग इस प्रकार हैं –

मौडा हुबइँयाँ है = लडका पैदा होने ही वाला है।
मैं जबइँयाँ तो = मै जाने ही वाला था।

[धातु-रूप निश्चय ही √हो>हुब्, √जा>जब् है]

–वार (–**आर**) निर्जीव प्रत्यय ही कहा जाएगा। इसका स्थान–अइया ने ले लिया है –

दिबार √दे>दिब + आर = देने वाला
लिबार √ले>लिब + आर = लेने वाला
पुछवार √पूछ>पुछ + वार = पूछने वाला
सुनवार √सुन + वार = सुनने वाला

–बार– (**–वार–**), यह प्रयोग–बहुल प्रत्यय है।

घरबारो घर + बार = घरवाला, घर का मालिक, अर्थात् पति
घरबारी घर + बार = घरवाली, घर की मालकिन अर्थात् पत्नी
गभवारो *गभ<गर्भ + वार = दूध पीने वाले बच्चे के समान
गभवारी *गभ<गर्भ + वार = दूध पीने वाली बच्ची के समान
लरकौरी *लरका + वार = लडका (लडकी) वाली, ऐसी स्त्री जिसके बच्चे अभी छोटे-छोटे है।
लरकौरो *लरका + वार = लडका (लड़की) वाला ऐसा पुरुष जिसके बच्चे अभी छोटे-छौटे है।

–हार– (**–आर–**) यह प्रत्यय बहुलता से प्रयुक्त होता है।

लकडहारो ~ लकडहाव (स्वर मध्यवर्ती –र– का लोप)
*लकड़ + हार = लकड़ी को काटने वाला
गैल्हारो ~ गैल्हाव (स्वर मध्यवर्ती –र– का लोप)
गैल + हार = गली चलने वाला

पिसन्हारी ~ पिसनारी (न्ह ~ न के प्रयोग मे क्षेत्रगत अन्तर है)
√पीस ~ पिस + न + हार (-आर-) = पीसने का काम करनेवाली (नौकरानी)

गुबरहारी गोबर ~ गुबर + हार = गोबर से कन्डे आदि बनाने वाली (नौकरानी)

रुटन्हारी ~ रुटनारी
√रोटी ~ *रुट + न + हार (-आर-) = रोटी बनाने वाली (नौकरानी)

नचन्हारी ~ नचनारी
√नाच ~ नच + न + हार (-आर-) = नाचनेवाली

पनहारिन पानी ~ पन + हार + इन = पानी भरने वाली

मनहारिन *मनि + हार + इन = मणियो (मूँगे आदि दानो) को बेचने वाली

-वाह- यह प्रत्यय अभी सामासिक स्थिति मे है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य है।

हरवाहौ हर + वाह = हल को वहन करने वाला अर्थात् हल चलाने वाला (नौकर)

चरवाहौ चारा ~ चर + वाह = चारा लाने के लिये, फिर गायो आदि को चराने के लिए रखा नौकर

गडवाहौ गाडी ~ गड्डा + वाह = गाडी हाँकने वाला (नौकर)

-ऊ- यह प्रत्यय सजीव नही कहा जा सकता है—शब्दावलि अवश्य मिल रही है। यथा—

खटाऊ — *खट + आ + ऊ = अधिक दिनो तक चलने वाला

उडाऊ — उड + आ + ऊ = उडाने-खाने वाला

-उवा- ऐतिहासिक दृष्टि से ऐसा जान पडता है कि दो, ऊ + आ कर्तृवाचक (agentive) प्रत्यय ही मिलकर एक हो रहे है

टहलुआ टहल + ऊ + आ = टहल (लीपना-पोतना) करने वाला

पारुआ पहर + ऊ + आ = पहरा देने वाला

जरुवा जर + ऊ + आ = जलने (ईर्षा करने) वाला

उवा- ह्रस्वार्थं प्रत्यय रूप मे-आ सबल है :

घरुवा = छोटे पौधो का थाला

जरुवा > जउवा = अँकुवा

—ई,—आ— निम्न शब्दो मे पाये जाने वाले ये प्रत्यय मूलत· कर्तृवाचक ही जान पडते है, पर अब वे जातिवाचक हो गए है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार धोबी, बढई आदि मे—ई प्रत्यय सजीव नही कहा जा सकता, पर है कर्तृवाचक ही। -न प्रत्यय के बाद इनका प्रयोग सम्भव है।

कतन्नी—कतर + न + ई = कतरन करने वाला- पात्र, कैंची
चलनी—चाल ~ चल + न + ई = चालन करने वाला पात्र
छजना—छाज ~ छज + न + आ = छाजन करने वाला पात्र
छन्ना —छान ~ छन + न + आ = छानन करने वाला कपडा
दोहनी—दोह् + न + ई = दोहन करते वाला पात्र

वस्तुत· ये प्रत्यय 'न' के साथ मिलकर जाति, एव भाव, सूचक सज्ञाओ की अधिकाधिक सर्जना करते है। ओढना, बिछौना, खिलौना, चढौना (जो चढाया जाए), चटनी, लेन, देन, चलन आदि शब्दो की सृष्टि होती है।

ह्रस्वार्थक तथा हेयार्थक

—इया— लघुतावाचक प्रत्यय, इसमे —ई स्त्रीवाचक तथा —आ हेयार्थक प्रत्यय का योग है, परिणामत —ई > —इय—।

डबिया < डब्बा + ई + आ [डब्बी = केवल जलाने की डिबिया के अर्थ मे रूढ हो गया।]
फुरिया < फोडा + ई + आ = छोटा फोडा
डडिया < डडा + ई + आ = छोटा डडा
दौरिया < दौल्ला = विशेष प्रकार की टोकरी
पन्हइया < पन्हा = जूते

—वा (—आ)

पुरवा < पुर (ह्रस्वार्थक)
चमरा < चमार (हेयार्थक)
कुरिया < कोरी (हेयार्थक)
कुढिया < कोढी (हेयार्थक)
नउवा < नाऊ (हेयार्थक)

यही प्रत्यय पालतू जानवरो आदि के लिये भी लग जाता है, पर इसमे से हीनता अथवा लघुता का भाव समाप्त हो गया है। प्रथम वर्ग मे पुल्लिग तथा द्वितीय मे स्त्रीलिंग शब्द सग्रहीत हैं—

घुडवा (< *घोडा) घुडिया (< *घोडी)
पड़वा (< *पाड़ा) पडिया (< *पडी)

चिरवा (<*चिरा) चिरइया (<चिरई)

सुँघरवा (<*सुँघरा) सुँघरिया (<*सुँघरी)=सुअर

चौखरवा (<*चौखरा) चौखरिया(<*चौखरी)=चूहा

बिलरा (<*बिलार) बिलइया (<*बिलरिया<*बिलारी)
=बिल्ली

नौरा (<*न्योरा) नौरिया =नेवला

हिन्नाँ (<*हिरन) हिन्निया =हिरन

अन्यत्र भी इसके प्रयोग देखे गए है—

डुकरा (<डुकर) डुकरिया=बूढा

लम्डा - लम्डिया = लडका - लडकी

—ला —

गड्डा + ला=गडला, छोटी-सी गाडी

खाट + ला=खटोला, छोटी-सी खाट

स्त्री-प्रत्यय

-न, -नी, -इन, -आन, -आनी प्रमुख है। जान पडता है कि —न प्रत्यय ही सस्कृत के प्रमुख प्रत्ययो —ई तथा —आ के कभी पूर्व, कभी पर भाग मे लगकर अनेकश प्रत्ययो का स्वरूप धारण कर लेता है। वस्तुत इन प्रत्ययो की प्रयोग-सीमाएँ निर्धारित करना बहुत कठिन है। इसके लिये तो लोक ही प्रमाण है। अभ्यास से सीखा जा सकता है कि किस शब्द मे कौन सा प्रत्यय लगेगा। फिर भी कुछ नियम इस प्रकार है -

—न— सामान्यत स्वरान्त पुलिलग शब्दो मे जुडता है परिणामत दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते है।

(अ) काछिन < काछी+न

धोबिन < धोबी+न

नाउन < नाऊ+न

बानिन < *बानी+न <बनिया

हलवाइन < हलवाई+न

(ब) बढैन < बढई+न (—अइ>ऐ)

लडैन < लडई+न=सिआरिनी

गडरैन < *गडरी+न=गडरिन

पटैन < *पटई (पटबा)+न=रेशमी तागो को बटने का काम करने वाली

(स) पडतान < पडित+आ+न

ठकुरान < ठाकुर+आ+न

–इन– सामान्यत. व्यजनान्त पुल्लिग शब्दो मे जुडता है यथा –

सुनारिन < सुनार+इन

लुहारिन < लुहार+इन

यदि इन व्यक्तियो के प्रति आदर का भाव है तो सुनारिन काकी, लुहारिन काकी आदि कहकर ही काम चलाया जाता है और यदि घृणा आदि का भाव प्रदर्शित करना है तो,

सुनरिया < सुनार+ई+आ

लुहरिया < लुहार+ई+आ

बसुरिया < बसोर+ई+आ

चमरिया < चमार+ई+आ

आदि कहते है । –ई प्रत्ययान्त सुनारी, लुहारी, चमारी आदि रूप भी मिल जायेगे ।

–नी इसके प्रयोग अत्यल्प है–

हॅतनी < हॉती=हाथी

उॅटनी < ऊॅट

–इनी इसके भी प्रयोग अत्यल्प है–

लरकिनी=*लरक+ई+नी=नई बहू

–आनी यह प्रत्यय सजीव नही कहा जा सकता ।

जिठानी < जेठ ~ *जिठ+आ+नी=जेठ (पति के बड़े भाई की) पत्नी ।

द्योरानी < देवर ~ द्योर+आ+नी=देवर (पति के छोटे भाई) की पत्नी

–ई प्रत्यय वस्तुत पुराना है, अतएव इसके सन्धि-नियम स्पष्ट नही है ।

कक्की, काकी, कक्को < कक्का, काका=चाची

मॉई < मामी < मम्मा+ई=मामी

लुगाई < लुगवा < लोग+ई=स्त्री

स्थान-वाचक

–आन– (–हान–)––यह सजीव प्रत्यय है ।

सुक्लानी < सुकुल =शुक्ल ब्राह्मणो की गली

दिछतानौ < दीक्षित=दीक्षित ब्राह्मणो का मुहल्ला

बढयानौ <बढई = बढई के काम करने का स्थान

कुरयानौ <कोरी = कोरियो के रहने का स्थान

चौधरयानौ <चौधरी = चौधरियो का मुहल्ला

लुधयानौ <लोधी = लोधियो का पुरवा

रजपुतानौ <राजपूत = राजपूतो की अधिकता जहाँ हो

सभवत निम्न शब्दो मे भी यही प्रत्यय जान पडता है –

ममानौ <मम्मा का घर

सिरहानौ <सिर की ओर का स्थान

–आँत (–याँत)

लुधाँत ~ लुधयाँत <लोध ~ लोधी = लोधियो के गाँव जहाँ अधिक हो।

कछ्याँत ~ कछवाँत <काछी = जहाँ काछी रह रहे हो।

कुरयाँत <कोरी = जहाँ कोरी रह रहे हो।

रठाँत <राठ = राठ के समीपवर्ती गाँव

–औरा– यह प्रत्यय सजीव कहा जायगा—

चमरौरा <चमार + पुरा = चमारो का मुहल्ला

ढिमरौरा <ढीमर + पुरा = ढीमरो का मुहल्ला

अन्य संज्ञाएँ

–आव– यह प्रत्यय बहुलता से प्रयुक्त हो रहा है। सम्भव है इसमे –आ– प्रेरणार्थक एव –व भावसूचक प्रत्यय हो।

जमाव जम–आव = भीड एकत्र होना

भराव भर–आव = गढ्ढा भरे जाने की आवश्यकता

चढाव चढ–आव = दुल्हिन के लिये भेट

चलाव चल–आव = द्विरागमन (सभवत. बुन्देलखण्ड मे पहिले विवाह मे पत्नी की बिदा न होती होगी

–ई– प्रेरणा-रूप प्रत्ययों के साथ के उदाहरण पर्याप्त है, यह प्रत्यय सजीव है—

सुबाई ~ सुबवाई √ सुब <सो– + आ (-वा) + ई = सोने का कार्य

भराई ~ भरवाई √ भर + आ (-वा) + ई = भरने का काम

सुनाई ~ सुनवाई √ सुन + आ (-वा) + ई = सुनने का काम

सिमाई ~ सिमवाई √ सिम ~ सी + आ (-वा) + ई = सिलाई

–याई (—आई) यह प्रत्यय भी बहुत चलता है। अर्थ मे हीनता का भाव निहित है—

पडित्याई ~ पडताई < पडित = पुरोहिती
लौँडयाई < लौँडा = लडकपन
धुबयाई < धोबी = धोने का कार्य
गुरयाई < गुड = मिठाई

–आस— इस प्रत्यय से बने अधिक शब्द नही मिलेगे—

मुतास < मूत ~ मुत + आस = मूतने की तीव्र इच्छा
कहास < कह + आस = कहने की तीव्र इच्छा
खबास < खा ~ खब + आस = खाने की तीव्र इच्छा
प्यास < पी ~ पि + आस = पानी पीने की इच्छा
भडॉस < भण + आस = कहने की इच्छा

–आँद— यह प्रत्यय विरलता से प्रयुक्त है।

खटाँद < खट्टा ~ खट + आँद = खट्टापन
तिलाँद < तेल ~ तिल + आँद = तेल की अधिकता सूचक

–क ~ —का सज्ञा-सूचक प्रत्यय है—

बैठक = एक प्रकार की कसरत
धमक = धम-धम की आवाज
खटका = खट-खट की आवाज से चिन्ता
कुल्का = कोल + का = छेद
टुल्का = *टोल + का = छेद
पट्का = पट + का = कपडा

सज्ञा वर्ग के अन्तर्गत तो अनेकानेक प्रत्यय आ सकते है, पर ऊपर कुछ विशेष सजीव प्रत्ययो की सख्या ही दी गई है। दूसरे खाबो-पीबो, घूम्बो मे पाया जाने वाला —ब प्रत्यय, लेन-देन, चलन, बोलन मे प्रयुक्त —न प्रत्यय, सज्ञा खपत, बचत आदि तथा अधिकाधिक विशेषणो की सृष्टि करनेवाला —त (—ता, —ती) प्रत्यय यहाँ सकलित नही है। वस्तुत इनकी विशेष चर्चा क्रिया–प्रकरण मे कर दी गई है।

विशेषण

कृदन्तीय विशेषण जो कि वर्तमान काल एव भूतकाल की रचना मे सहयोगी है, उनकी फिर से चर्चा अभीष्ट नही समझी गई है। और म

सर्वनाम मूलक विशेषणो मे पाये जाने वाले प्रत्ययो को ही दोहराया गया है। यथास्थान क्रिया एव सर्वनाम प्रकरण मे मिल जाएँगे।

–माँ— यह सजीव प्रत्यय है।

छटमाँ < *छट < षष्ठ = छठवाँ
नमाँ < नव = नवाँ
मिल्माँ < मिल = मिले हुए

–वाँ— यह प्रत्यय बहु प्रचलित है।

भरवाँ (भाँटा) = भरे हुए बैंगन की तरकारी
छटवाँ (के आम) = छाँटे हुए आम
जडवाँ (पैंजना) = जडे हुए (पैंजना)
जुडवाँ (मौडा) = जोडे के रूप मे पैदा होने वाले लड़के

–हा

पनहा (साँप) = पानी मे रहने वाला
कुरहा (हिसाब) = जबानी हिसाब (सभवत. कोरियो से सम्बन्धित)

–इल— अधिकता सूचक प्रत्यय कहा जायगा।

पथरैल < पथरा + इल = पत्थरो वाली
खपरैल < खपरा + इल = खप्परो वाली
कँकरैल < ककरा + इल = ककड वाली
गँठैल < गाठ + इल = गाँठो वाली
नसैल < नसा + इल = नशा करने वाला

–अक— लगभग का अर्थ दे रहा है। ऐतिहासिक सम्बन्ध सभवतः 'एक' से है।

पचासक आदमी = लगभग पचास आदमी
सेरक ~ सेराक दूध = लगभग सेर भर दूध
अत्पइयाक नेनूँ = लगभग आधा पाव मक्खन

–गुनौ— संस्कृत–गुण से सम्बन्धित यह प्रत्यय सख्यावाचक विशेषणो में बहुलता से जुड़ा हुआ मिलता है—

दुगुनौ = दो गुना
चौगुनौ = चार गुना
अठगुनौ = आठ गुना

—हरौ— यह प्रत्यय भी सख्यावाचक विशेषणो मे जुडता है—

दुहरौ	=	दुहरा
तिहरौ	=	तिहरा
चौहरौ	=	चौहरा

—अर— केवल दो, तीन तथा चार सख्याओ मे जुडता है ।

दूनर < *दोन+अर=दुहरा
तीनर <तीन +अर=तिहरा
चउअर < *चौ +अर=चौहरा

अन्य प्रत्यय

—क— वस्तुत यह प्रत्यय धातु-निर्माणक है, अनुकरणात्मक या लगभग समान भाव रखने वाली धातुओं का सृजन करता है । इस कोटि की धातुओ की सख्या अनगिनत है—

खुलक	=	बीच से निकल जाना
गुलक	=	कौंचना
चुलक	=	शरारत करना
बुलक	=	कुल्ला करना
मुलक	=	झाँकना
पटक	=	गिराना
हटक	=	रोकना
मटक	=	शरीर-अगों को साभिप्राय हिलाना
सटक	=	खिसक जाना
लटक	=	रुक जाना
भटक	=	रास्ता भूल जाना
चटक	=	उछाल मारना, प्रस्फुटित होना

३ शब्द रचनात्मक प्रक्रिया मे ऊपर प्रत्ययो की परिगणना करा दी गई है । ये सभी प्रत्यय शब्द के पर-भाग मे जुडकर एक नये अभिधार्थ की अभिव्यक्ति करते है । पूर्व भाग मे जुडने वाले प्रत्यय (=उपसर्ग) भी भाषा में हैं, पर शब्द-रचना की यह प्रवृत्ति सजीव नही कही जा सकती, परम्परागत उपसर्गों के अवशेष चिह्न मिलेंगे, जिन्हे 'उपसर्ग' रूप मे अलग करना प्राय सम्भव नही है । उखाडनै (उत्), पछाड़नै (प्र–) निकरनै (नि–) बिगारनै (बि–), औगुन (अव–), उकास (अव–) अजर-अमर (अ–) आदि

ऐसे ही उपसर्ग हैं। कुछ विदेशी उपसर्गो का प्रवेश अवश्य हुआ है, पर उनको भी सजीव कहना सम्भव नही है, जैसे नालाक (ना–), वेचैन (बे–), बच्चलन (बद्–) आदि, पर कुछ नये उपसर्गो का विकास होता दृष्टिगत हो रहा है। जैसे—

–अत्– (अद्–)—अत्पई <अध् ~ अद् ~ अत् = आधा पवा
अत्पको <अध् ~ अद् ~ अत् = आधा पका
अत्पर <अध् ~ अद् ~ अत् = न ऊपर न नीचे, अधर में
अद्चुरो <अध् ~ अद् ~ अत् = आधा पका हुआ

निम्न उपसर्ग सस्कृत मे विशेषण रूप मे ही मान्य था और कर्मधारय समास के अन्तर्गत परिगणित था।

–कु– कुचींदौं <कुत्सित + चित्त = गिरा हुआ चित्त वाला
कुलच्छ <कुत्सित + लक्षण = गिरा हुआ आचरण
कुभक्क <कुत्सित + भक = बुरी या अशुभ बात

–अन्– (अ–)— सस्कृत का ही अ–(अन–) प्रत्यय है।
अनमनौ = उदास
अनगिनती = बेशुमार
अलौनौ = बिना नमक के
अनवासौ = जो अभी तक प्रयोग मे नही लाया गया था।
अनसुनी = न सुना हुआ
अनगोए = बिना गूँथे हुए (बाल)

४ भारतीय आर्य भाषाओ मे एक ऐसा चक्र चलता हुआ मिल रहा है, जिससे वाक्य मे प्रयुक्त होने वाले कोई-कोई दो शब्द सामासिक रूप मे जुड़ते है और फिर पूर्व अथवा पर भाग के शब्द घिसघिसाकर क्रमश उपसर्ग एव प्रत्यय की कोटि मे आ जाते हैं। कालान्तर मे ऐसी भी स्थिति आ जाती है कि उपसर्ग और प्रत्यय को शब्द से पृथक नही किया जा सकता। कभी-कभी यह प्रत्ययात्मकता पद-रचनात्मक विभक्तियो मे विकसित हो जाती है, और इस प्रकार कल का सामासिक शब्द एक लम्बी यात्रा के पश्चात केवल एक साधारण पद रह जाता है फिर उनकी ध्वनि एव अर्थ-परम्पराओ का मेल बिठाना मुश्किल हो जाता हैं। इस तथ्य के उदाहरण स्थान-स्थान पर प्रस्तुत किये जा चुके है; यथा, सज्ञा, विषय क्रम १३, क्रिया, विषयक्रम ५, १२।

परिबर्तन के इस क्रम को निम्न चक्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—
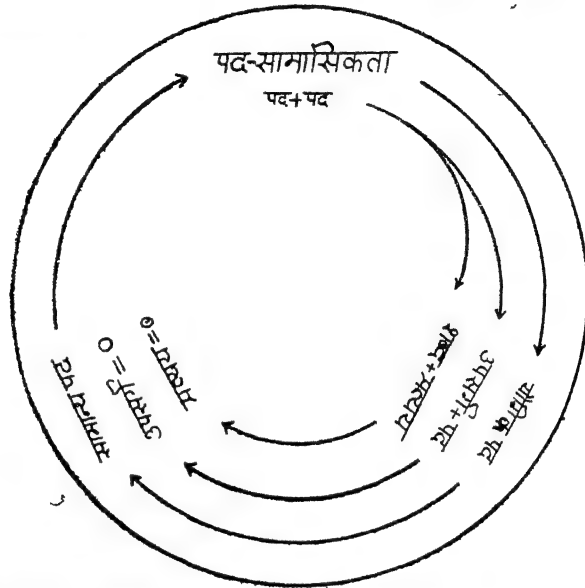
उक्त तथ्य निम्न रूप मे भी व्यवस्थित हो सकता है—

i) पद	+	पद	(सामासिकता)	अर्ध पक्व	
।		।		।	
उप०	+	पद	(यौगिक)	अत्पको	उद् + गमन्
।					।
०	+	पद	(मूल शब्द)	—	उगनैं
ii) पद	+	पद	(सामा०)	चर्मकार	दारिकायै कृते
।		।		।	
शब्द	+	परसर्ग / प्रत्यय	(यौ०)	।	दारिआए केडिआए दारिका को
।		।		।	
शब्द	+	०	(मूल०)	चमार	कदम्बक, जेहिक

५ सामासिकता के विकास की इस प्रवृत्ति को स्थान अथवा व्यक्तिनामो के आधार पर भलीभाँति स्पष्ट किया जा सकता है। वस्तुत: पुरा (रावतपुरा, लोदीपुरा), गवाँ (मझगवाँ, भटगवाँ), लाल (राधेलाल, प्यारेलाल), बाई (रामबाई, स्यामबाई), दुलइया (झनकदुलइया, गोईदुलइया) आदि सैकडो प्रत्यय इसी बहुव्रीहि समास की स्थिति से ही गुजर रहे हैं। बुन्देली से ऐसे

देशी-विदेशी-आगत प्रत्ययो की सूची दी जा सकती है जो कि अभी स्थिति मे है ।

—बालौ, बाली

इटाएबाली = इटावा से व्याहकर लाई जाने वाली (दुलहिन)
खुडे बालौ = खुडौ (= गाँव से बाहर बीहड की झोपडियाँ) मे रहनेवाला
नकरियन बालौ = लकडियों से सम्बन्ध रखने वाला

—दार—दारी

दानेदार सक्कर = दानो (दाना) +
नातेदार = नातौ (नाता) +
थानेदार = थानौ (थाना) +

—बाज

धोकेबाज = धोकौ (धोखा) +
नसेबाज = नसा (नशा) +

—लाल

बारेलाल = बारौ (= छोटा) + लाला (= पुत्र)
गोरेलाल = गोरौ (= गोरा) + लाला (= पुत्र)

—पन— बचपना, लौडपन आदि शब्दो मे तो यह प्रत्यय स्थिति मे ही है पर निम्न उदाहरणो मे उपर्युक्त कोटि निर्धारित की जानी चाहिए ।

मोटौपन, मोटेपन नैं
सूदौपन, सूदेपन नै

—दान

चूहेदानी = चूहा पकडने का एक बक्स

६ ऊपर विषयक्रम १. मे दिये गये विभाजन के अनुसार समास शब्द वे है, जिनके सयोगी अवयव भाषा मे स्वतन्त्र रूप से प्रयोग मे आते हैं। परन्तु पुनरुक्ति तथा ऐतिहासिकता की विकास-प्रवृत्ति के कारण ऐसी भी सामासिकता मिल जाएगी जिसे यौगिक शब्द के अन्तर्गत नही रखा जा सकता और न वह मुहावरो (phraseology) के अन्तर्गत ही आती है। वस्तुत यह सामासिकता बुन्देली मे दो पदो से अधिक की नही जान पडती । हम इन्हे निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं । अर्थ की दृष्टि से ये सभी अतिशय की सूचना देते हुए बहुव्रीहि स्थिति मे हैं । महामना टैगोर, डॉ० चटर्जी, श्री दामले, इन्हे द्वन्द्व के अन्तर्गत परिगणित करते है । प० कामता प्रसाद गुरू ने इन्हे समाहार द्वन्द्व कहा है ? इसमे प्रथम पद सामान्यत स्वतन्त्र रूप से भाषा मे प्रयुक्त मिलता है ।

पृष्ठ ४९५, ९६, ९७, हिन्दी व्याकरण, संशोधित संस्करण २००९,

ध्वनि समाहार

1) रोटी-ओटी = रोटी आदि खाद्य-सामग्री
आटा-साटा = आटा आदि सामान
अट-सट = व्यर्थ का

ऐसा जान पडता है कि प्रथम अवयव का प्रारम्भ यदि व्यजन से है तो पुनरुक्त पद का विधान व्यजन-सहयोगी स्वर से प्रारम्भ होगा और यदि प्रथम अवयव स्वर से शुरू होता है तो द्वितीय अवयव स् व्यजन को पूर्वभाग मे लेकर पुनरुक्ति अपनाएगा। कुछ अपवाद अवश्य मिलेगे। यथा—

झूँट-मूँट = झूठ
साँच-माँच = सचमुच
ढुल-मुल = अनस्थिर
टेढौ-मेढौ = टेढा

ii) हाँक-हूँक = (गाडी) हाकना, चलाना
मार-मूर = पीटना
पा-पू = पाना
पसार-पसूर = फैलाना
नोच-नाँच = नाखून से खरौंचना
पी-पा = पीना
झूम-झाम = झूमना
सो-सा = सोना
दौड़-दाड = दौड़ना
खेल-खाल = खेलना
देख-दाख = देखना
पैर-पार = तैरना
समेट-समाट = समेटना
पर-परू = पडना
चल-चलू = चलना

उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि द्वितीय उक्ति मे सामान्यत धातु-स्वर बदल जाता है। ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ स्वर अ मे, आ स्वर ऊ मे बदलने की प्रवृत्ति रखता है। धातु-स्वर -अ- वाली धातुएँ पुनरुक्ति के पश्चात् —ऊ अन्त स्वर का योग ग्रहण करती हैं। —इ, —उ, के लिये, आगे व्याकरण वर्ग देखिए।

iii) धक्कम-धक्का = धक्के की अतिशय स्थिति
अद्धम-अद्धा (आधौआध भी) = ठीक आधा

कुस्तम-कुस्ना = एक दूसरे को उठाने पटकने की स्थिति
टालम-टूल = टालने की विशेष पद्धति

नही कहा जा सकता कि उक्त प्रयोगो मे ऐतिहासिक विभक्ति-चिह्नो के अवशेष नही हैं।

iv) आमने-सामने, अडोस-पडोस, आस-पास, ऐडा-बेडा, इने-गिने, इर्द-गिर्द, मे प्रथम पद ध्वन्यात्मक रूप मे विकसित है और दौडा-पदौडी (प < प्र, सभवत उपसर्ग) हल्ला-गुल्ला, उलट-पुलट, उथल-पुथल, गलत-पलत, साँतौ-भाँतौ = शान्ति से बैठने वाला आदि इक्के-दुक्के प्रयोग अपनी-अपनी व्यवस्था किए हुए है।

व्याकरण समाहार—

एक ही शब्द के दो व्याकरणिक रूप तीव्रता का अर्थ स्पष्ट करते हुए साथ-साथ प्रयुक्त हो जाते हैं—

i) रोटी खा-खबा लेव = खाना खा डालो
दूद पी-पिबा लेव = दूद पी डालो
तनक चल-चला लेव = थोडा इधर-उधर चल लो
ऊनै सुन-सुना लओ = उसने सुन लिया
सब नै दिख-दिखा लओ = सबने देख लिया
कपडा नुँच-नुचा गओ = कपडे मे खरोच अधिक लग गयी।

ii) खबो-खबाओ बेला = ऐसा कटोरा जिसमे रखा खाना खाया जा चुका है।
खबी-खबाई बिलिया = ऐसी कटोरी जिसमे रखा खाना खाया जा चुका है।
फटो-फटाओ अलफा = फटा हुआ कुर्ता
फटी-फटाई कमीच = फटी हुई कमीज
पटी-पटाई सौदा = ऐसी चीजें किसका भाव तय हो चुका है

iii) खाओ-खबाओ आय = (वह जो) खा चुका है
गओ-गबाओ लौट आओ = गया हुआ (वह) लौट आया
गाईं-गबाईं गारी = ऐसे स्त्री-गीत जिनको गाया जा चुका है

iv) चला-चली मैं छूट गओ = चलने की जल्दी मे छूट गया
देखा-देखी आओ = (वह) दूसरे को देखकर आया

अर्थ-समाहार—

इसके अन्तर्गत i) लगभग समान अर्थ रखने वाले ii) अथवा विरोधी अर्थ वाले, देशी-विदेशी दो शब्द कालान्तर मे एकनिष्ठ होकर तीव्रता, अतिशयता

अथवा उसी के निकट कोई लाक्षणिक अर्थ विकसित कर लेते है। ऐसे प्रयोग बुन्देली अथवा हिन्दी क्षेत्र की अन्यान्य बोली-रूपो मे भरे पड़े है। अधिकाशत. इसका कोई पद लुप्त-प्रयोग वाला होता है।

1) काम-काज हो रओ = ∠कर्म + ∠कार्य, काम हो रहा है
खेल तमाशा हो रए = कई प्रकार के खेल हो रहे है।
काम-धाम नईं होत = ∠कर्म + ∠धर्म, काम नही होता
[धाम—लुप्त प्रयोग]
काम दद होत = ∠कर्म + ∠द्वन्द्व, काम हो रहा है
[दद—लुप्त प्रयोग, दुद चलता है]
चीज-बसत उठा ल्याव = चीज + वस्तु, गहने उठा लाओ
[वसत = चीज, लुप्त प्रयोग]
सपर-खोर लेव = सपरना + खोरना, नहा लो
[खोर-लुप्त प्रयोग]
देख-भाल लओ = देखना + भालना (स०), देख लिया
[भाल, लुप्त प्रयोग]
सूज-बूज अच्छी है = सूझना + बूझना, समझ अच्छी है
[बूज-लुप्त प्रयोग]
गोडा-पाई मचाऐं = गोडो (पैर) + पाँव (पैर),
इधर से उधर निकल रहा है
[पाई—लुप्त प्रयोग, पांव चलता है]
चल-फिर चुको = चलना + फिरना, घूम लिया
नाटक-नौरा करत फिरत = इधर से उधर घूमता फिरता है,
[नौरा-लुप्त प्रयोग]
करता-कामदार सबई आए = काम पर नियुक्त सभी आए
राम-रहीम भओ चइए = नमस्कार होते रहना चाहिये
दोसदारी हो गई = दोस्त + यार + ई, मित्रता हो गई
डाँट-डपट देव = डाँटना + डपटना, डाट देना
छीना-झपटी न कर = छीनना + झपटना, छीनो मत
उचका-कूँदी न कर = उचकना + कूदना, उचको मत
खेलत-कूँदत फिरत = खेलना + कूदना, खेलता फिरता है
औने-पौने मे ल्याव = ऊन (सं०) + पौने = ३/४
थोडे कम में ले आओ

उतै कथा-बारता होत = कथा + वार्त्ता = वहाँ धार्मिक कथाएँ होती है

[बारता—लुप्त प्रयोग, बारतालाप चलता है]

सज-धज अच्छी है = सजना + ध्वज = साज-समान अच्छा है

[दोनो लुप्त प्रयोग, साज, धजा अलग-अलग चलते है]

सोच-बिचार न करो = सोचना + विचारना = चिन्ता न करो

कपडा-लत्ता लौ नइँयाँ = कपडा + लत्ता = कपडे भी नही है

[लत्ता = फटे कपडे के अर्थ मे चलता है]

बासन-भाँडे लौ नइँ जुरे = बासन + भाण्ड = बर्तन भी नही इकट्ठे हो सके

[भाँडे लुप्त प्रयोग]

बिन्नाँ-सेली चलौ = बिन्नाँ (= छोटी ननद) + सेली < सहेली, मित्र चलो

बाल-बच्चन बाली है = बाल + बच्चा = बच्चो वाली है

[बाल लुप्त प्रयोग]

राह-रास्त पै लै आव = राह + रास्ता = ठीक रास्ते पर ले आओ

खीचा-तानी न करौ = खीचना + तानना = खीचिए नही

बीस-पचीस आदमी ते = लगभग पचीस आदमी थे

11) कहा-सुनी हो गई = झगडा हो गया

[कहने पर, सुनना भी पडा]

ऊँच-नीच कौ ख्याल न करौ = थोडा ऊँचा होगा अथवा
थोडा नीचा, इस पर ध्यान न दो

आबा-जाई होत = आना-जाना होता है (थोडा सम्पर्क है)

[व्याकरणिक प्रत्यय लुप्त]

उठा-बैठी न करौ = उठना-बैठना न करो (अधिक सम्पर्क न रखो)

कतिपय 'समस्त पद' ऐसे भी है जिनके सयोगी पद अर्थ की दृष्टि से तो पर्याप्त भिन्न है पर परवर्ती पद के लुप्त प्रयोग ने उनके स्वतन्त्र अस्तित्व के सम्बन्ध मे सन्देह उत्पन्न कर दिया है। ऐसे प्रयोगो, जैसे नकटा (नाक + कटा) पडोसी (प्रतिवेशी), लँगोटा (लिंग + पट्ट) आदि को हम यदि मूल अथवा यौगिक शब्द नही कह सकते, तो समास पद भी नही कहा जा सकता। बे योगरूढ़ पद की सज्ञा प्राप्त कर सकते है। यहाँ हम ऐसे कुछ उदाहरण दे रहे है जिनके लुप्त-पद यदि स्वतंत्र पद नही, तो उनके निकट अवश्य है। ऐसे ही पदो को 'उपपद' की सज्ञा दी गई है।

iii) सेर-खाँड सक्कर = लगभग सेर भर शकर
[खाँड ∠ खण्ड, लुप्त प्रयोग]

कौने-आँतर = कोने मे कही
[आँतर ∠ अन्तर, लुप्त प्रयोग]

हाथा-पाई = मारपीट
[पाई ∠ पात = √ गिर, लुप्त प्रयोग]

चिट्ठी-रसा = डाकिया
[रसा = ले जाने वाला, लुप्त प्रयोग]

पन-देवा = पानी देने वाला
[देवा का व्याकरणिक प्रत्यय विलुप्त है]

चरवाहौ = चारे को वहन करने वाला

हरवाहौ = हर को वहन करने वाला

नीचे परम्परागत पारिभाषिक शव्दावलि वाले कतिपय उन समास-शब्दो के उदाहरण दिए जा रहे है जो कि i) उभय पद प्रधान (द्वन्द्व) ii) द्वितीय पद प्रधान (तत्पुरुष, कर्मधारय) तथा iii) दोनो पदो के आधार पर विकसित कोई अन्य अर्थ रखने वाला (बहुब्रीहि), कहे गये है—

द्वन्द्व

बाई-दद्दा = माता-पिता

गिल्ली-डण्डा = गिल्ली तथा डण्डा
[एक खेल मे प्रयुक्त उपकरण]

पटा-बिल्लाँ = पाटा तथा बेलन

चूल्हौ-चकिया = चूल्हा + चकिया

परों-नरों = परसो तथा इसके बाद वाले दिनो मे

हाँत-पाँव = हाथ तथा पैर

तत्पुरुष कर्म —लाभ-काढ़ = लाभ को निकाल कर

मनन-बाँधो = मनो को बाँधने वाला

हाँती-डुब्बाँव = हाथी को डुबाने वाला

सेर-भरौ = सेर को भरने के बराबर

करण —मूं-माँगो = मुंह से माँगा हुआ

अपादान—देश-निकारौ = देश-निकाला

सम्बन्ध —दिन-लौटै = दिन के लौटने पर

राम-धुई = राम की दुहाई

अधिकरण—	रतजगौ	=	रात भर जागना
	घुडचढी	=	घोडे पर चढने की क्रिया
कर्मधारय —	अन्तगाँव	=	दूसरे गाँव को
	छै थोक	=	छै थोक (मुहल्लो) वाला गाँव
बहुब्रीहि—	राई-भरौ	=	राई के समान अर्थात् लडका
	चौटा-भरौ	=	चिउँटा के समान अर्थात् लडका
	तिलचट्टा	=	तिल्ली के चटकने का परिणाम, झिल्ली की बौंड़ी
	बिजरानी	=	ब्रज की रानी अर्थात् राधा या किसी स्त्री का नाम
	जगरानी	=	संसार की रानी अर्थात् सरस्वती या किसी स्त्री का नाम
	औघडदानी	=	बिना अवसर के दान देने वाले अर्थात् महादेव
	बाराबाट	=	बारह जगह हिस्सा बाँटना अर्थात् बरबाद करना
	मनमुटाव	=	मन का मोटा होना अर्थात् बैर

वाक्य रचना

१ वाक्य भाषा की एक सुगठित इकाई कही गई है। यह इकाई अपने अल्प-तम रू ा शब्दात्मक भी हो सकती है। आओ, बैठो, ऐसे ही शब्दात्मक वाक्य है। पर ‍भी-कभी व्यवहारिकता की सीमा लाँघ जाने वाले सौ-सौ शब्दो के भी वाक्य िखित भाषा मे मिल जायेगे। 'वाण' की कादम्बरी तथा 'सुबधु' का दशकुमारचरित इस प्रकार के वाक्यो के पुष्कल प्रमाण प्रस्तुत करने है। पर यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वाक्य शब्दो का समूह-मात्र नही है, उनकी गठन मे एक सुनियोजित व्यवस्था है। यह व्यवस्था ही वाक्य अथवा भाषा की रीढ है। शब्दो का चयन तो व्यक्ति-विशेष की शैलीगत विशेषता है। सम-सामयिक दृष्टि से एक स्थान की भाषा की सयोजित व्यवस्था मे परिवर्तन सभव नही। वाक्य का व्युत्पत्तिपरक अर्थ कथन की पूर्णता की ओर सकेत करता है। इस प्रकार वाक्य 'कथन की पूर्णता की परिचायक एक सुनियोजित व्यवस्था ही कही जाएगी।' आधुनिक भाषाशास्त्री अभिव्यक्ति की इस पूर्णता को आधार न बनाकर वाक्य को परिसीमित करने के लिए, समयाविधि-सूचक विरामो तथा शब्दो की आरोह-अवरोह-सूचक सुर-लहरी (Intonation patterns) का आश्रय लेते है। सुनिश्चित रूप से अत मे आने वाले पद भी सीमा निर्धारण कर सकते है। वस्तुत 'वाक्य' के अध्ययन का क्षेत्र उतना ही व्यापक जितना कि पद रचना का अकित किया गया है। पर यहाँ सक्षेप मे बुन्देली वाक्य-रचना की सामान्यताओ पर ही विचार किया जा रहा है।

विराम चिह्न

२ भाषा-प्रवाह मे जिन समयावकाशो की आवश्यकता होती है, उन्हे विराम स्थलो के रूपो मे स्वीकार किया गया है। ध्वनि-विचार, विषय-क्रम २९ मे ऐसे विरामो की चर्चा की जा चुकी है, जो क्रमश अक्षरो एव शब्दो के मध्य अनिवार्य समझे गए है। पद-सहितियो मे भी इन विरामो की आवश्यकता है पर वे केवल अर्थपरक नही, उनका अस्तित्व सुर-लहरी पर भी आधारित है। यथा—

1) भौनी बसोर खाँ बुलाव = (तुम) भौनी बसोर को बुलाओ

ii) भौनी, बसोर खाँ बुलाव = भौनी, (तुम) बसोर को बुलाओ

निस्सन्देह 'भौनी' के पश्चात् का यह अल्पविराम अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण है पर वाक्य के अर्थान्तरो को सुर के आरोह-अवरोह से भी स्पष्ट किया जा सकता है। और भी,

'बौ हारो-थको आय' वाक्य मे 'हारो-थको' पद 'बौ' के सम्बन्ध मे विधान कर रहा है, जब कि 'बौ हारो-थको आय, परतइँ सो गओ' वाक्य मे 'हारो-थको आय','बौ' के 'सोने' के कारण के रूप मे अकित है। वस्तुत यह अभिव्यजना एक अल्पविराम के माध्यम से ही सुस्पष्ट की जा सकती है। भाषा मे एक पूर्ण विराम, वाक्य की सीमान्त-स्थिति की आवश्यकता है। लिखित भाषा मे पाए जाने वाले अन्यान्य चिह्न जैसे डैश, सेमीकोलन, कोलन, आदि सभवत एक कथन से दूसरे कथन की भिन्नता प्रदर्शित कराने वाले अलकरण है। बोल-चाल की भाषा मे सुर-लहरी इस कार्य की पूर्ति करती रहती है। यथा—

बौ साऊकार बनकै चलत = वह, साहूकार बनके चलता है।

बौ साऊकार बनकै चलत = वह साहूकार, ढौग करता है।

'यशोदा और कृष्ण' केखौ लिखो है

= 'यशोदा और कृष्ण' पुस्तक किसकी लिखी हुई है।

'यशोदा' और 'कृष्ण' केखे लिखे है

= 'यशोदा' और 'कृष्ण' पुस्तके किसकी लिखी हुई है।

वस्तुत यह अन्तर परवर्त्ती पदों से सुस्पष्ट है अतएव उद्धरण-चिह्न (Inverted commas) की आवश्यकता केवल लिखित भाषा का अलकरण ही कहा जायगा।

सुर-लहर

३ सुर-लहर भी वाक्य के लाक्षणिक अर्थो की ओर सकेत करती है, पर उसको अकित करने के साधन सुलभ न होने के कारण बुन्देली स्वरलहरी से उत्पन्न केवल प्रश्न, आश्चर्य ,बलात्मकता अदि भावो को स्पष्ट करने वाले तत्त्वो को ही यहाँ स्पष्ट किया जा रहा है। वाक्य के सामान्य कथन को स्पष्ट करने वाला सुरलहर अवरोही होता है, यथा—

मै बजारै जात हौ = मै बाजार जा रहा हूँ

तुम रोटी बनइयो = तुम रोटी बनाना

पर 'प्रश्न' का अभिप्राय स्पष्ट करने वाला आरोह-अवरोह सर्वथा भिन्न है, यथा—

तै बजारैं चलिहत = क्या तू बाजार चलेगा ?

नईं जू = नही (सामान्य कथन)

नईं = क्या नही ?

अन्तिम शब्द-वाक्य मे 'आश्चर्य' का मिश्रण है। वस्तुत कभी-कभी वाक्य मे प्रश्न तो नितान्त गौण हो जाता है, आश्चर्य की प्रधानता ही परिलक्षित होती है। यहाँ का सुर-लहर विलम्बित कहा जा सकता है, यथा—

हाय राम! जा ज्वानी कैसैं कटहै

= हे राम! यह जिन्दगी कैसे कटेगी।

कभी-कभी प्रश्न-सूचक शब्द होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से वाक्य साधारण ही रह जाता है। यहाँ भी विलम्बित सुरलहर होगा। यथा—

अब तौहै का मारौं = अब तुझे क्या मारूँ।

उक्त सभी प्रकार के वाक्यो मे बलाघात का योग हो सकता है। प्रश्न-सूचक पद तो बलाघात युक्त होते ही है, उनके अभाव मे आवश्यकतानुसार अन्य पदो का बलाघात-युक्त प्रयोग किया जा सकता है। यथा—

मै बजारैं जाँव = क्या मै बाजार जाऊँ ?

मै बजारैं जाँव = क्या मै बाजार जाऊँ ?

मैं बजारैं जाँव = क्या मै बाजार जाऊँ ?

उपर्युक्त वाक्यो मे क्रमशः 'जाने', 'बाजार' (जाने), तथा 'स्वयं को' (बाजार जाने) की अनुमति माँगी गई है। कहना न होगा कि प्रश्न के अन्तर्गत 'अनुमति' का भाव भी सम्मिलित है। इस प्रकार सुरलहर के आधार पर गठित वाक्य बुन्देली मे तीन ही है—सामान्य, प्रश्नसूचक तथा विस्मयसूचक।

वाक्यों के प्रकार

४. जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, भाषा की स्वाभाविक गति मे तीन-चार शब्दों वाला वाक्य ही प्रयुक्त होता है। यथा, एक राजा ते। ओखी दो रानी

ती । पर कभी-कभी कथन मे तीव्रता लाने के लिए—एक राजा औ ओखी दो रानी ती, ऐसा भी सम्मिलित प्रयोग कर दिया जाता है ।-इसमे सयोजक तत्त्व तो रहता ही है, सुर-लहरी मे भी यदा-कदा अन्तर आ जाता है । रचना की इस विधा को ध्यान मे रखकर वाक्यो की निम्न कोटियाँ निर्धारित कर दी गई है—

साधारण वाक्य—जिनमे सामान्यत उद्देश्य एव विधेय, ये दो रचनात्मक सघटक (Constituents) अनिवार्य रूप से पाये जाते हैं ।

उद्देश्य—जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाए, यह कार्य (क्रिया) का सम्पादक कर्त्ता भी हो सकता है ।

विधेय—उद्देश्य के सम्बन्ध मे किया गया विधान, विधेय कहलता है ।

संयुक्त वाक्य—जिनमे उपर्युक्त रचनात्मक सघटनो वाले दो या दो से अधिक साधारण वाक्यो का योग रहता है । यदि ये वाक्य समान स्तर वाले है तो उनमे से एक मुख्य और दूसरा समानाधिकरण वाक्य कहलाएगा । और यदि इन वाक्यो मे कारण-कार्य-सा सम्बन्ध है तो एक मुख्य और दूसरे आश्रित उपवाक्य कहलाएँगे । अपने कथित सम्बन्धो के आधार पर वैयाकरणो ने इन्हे सज्ञा, विशेषण तथा क्रियाविशेषण उपवाक्यो मे विभक्त करके देखा है । वस्तुत इन साधारण वाक्यो मे रचना सम्बन्धी सामान्य लक्षणो—पद-क्रम, पद-अन्वय, पद-अधिकार—मे कोई अन्तर नही मिलता । हाँ, दोनो वाक्यो के मध्य प्राय समुच्चय बोधक विधान-चिह्नो, जिनकी चर्चा अव्यय, विषयक्रम ४, मे हो चुकी है, का योग अनिवार्य रहता है । सयुक्त वाक्यो मे मुख्य वाक्य पहले आता है, पर आवश्यक नही ।

५ उद्देश्य एव विधेय की स्थितियो को स्पष्ट करने वाले साधारण वाक्यो के कुछ वर्गीकृत उदाहरण इस प्रकार है । चिह्नित प्रथम वाक्य अथवा 1 से अकित वाक्य 'उद्देश्य' की सूचना देते है ।

कर्तृ प्रयोग

1) राम जात है = राम जा रहा है ।

राम अच्छौ है = राम अच्छा है ।

राम लड़का आय = राम लडका है ।

राम जैहैं = राम जाएँगे ।

राम गओ = राम गया ।

साथ ही, 'राम नै रोटी खाई' (=राम ने रोटी खाई) तथा 'राम नै मौडिन खाँ दिखो' (=राम ने लडकियो को देखा) आदि कारक-प्रत्यय सहित कर्त्ता एव कर्म के प्रयोग भी इसी के अन्तर्गत आएँगे।

कर्म-कर्तृ प्रयोग

ii) रोटी खबत है =रोटी खाई जा रही है।
रोटी अच्छी है =रोटी अच्छी है।
रोटी धरी आय=रोटी रखी हुई है।

कर्म-भावे प्रयोग

iii) (ऊ कौ) खाबौ हो रओ=(उसका) खाना हो रहा है।
(ऊ की) खबाई हो रई =(उसका) खाना हो रहा है।
(ऊ कौ) हाल बताओ गओ = (उसका) हाल बतलाया गया।
(ऊ की) बात बताई गई= (उसकी) बात बतलाई गई।

उपर्युक्त वाक्यो मे या तो 'राम' क्रिया का सम्पादक कर्त्ता है या फिर, 'राम' के सम्बन्ध मे कुछ विधान किया गया है। 'रोटी' वाले वाक्यो मे 'रोटी' के सम्बन्ध मे विधान है, अर्थात् यह वास्तविक कर्त्ता नही अपितु व्याकरणिक कर्त्ता है। तीसरे वर्ग के 'खाबो' एव 'खबाई' के सम्बन्ध मे कुछ कहा गया है, अतएव व्याकरणिक कर्त्ता है। ऐतिहासिक दृष्टि से कर्म एव भाववाचीय गठन रखने वाले साधारण वाक्यो का एक प्रकार और भी बुन्देली मे बहु-प्रचलित है—

iv) मोहै जानै (है) =मुझे जाना है।

मोहै रोटी खानै (है) =मुझे रोटी खाना है।

रोटी खबनै है =रोटी खाई जानी है।

पर इस गठन मे आने वाले बहुत से वाक्यो, जैसे—मोहै काम है (=मुझे काम है), मोहैं खेल आउत (=मुझे खेलना आता है), मोहै मालूम है

(=मुझे मालूम है), मोहै रुपइया चावनै (=मुझे रुपया चाहिए), मोहैं जाओ चइए (=मुझे जाना चाहिए) तथा मोहै भूक लगी (=मुझे भूख लगी है) को ध्यान मे रखकर ऐनिहासिकता मे दूर जाकर उक्त वाक्यो को निम्न प्रकार गठित करना होगा और कर्तृ प्रयोग मे ले जाना होगा—

मोहै जानै है =मुझे जाना है।

मोहै रोटी खानै है=मुझे रोटी खाना है।

रोटी खबनै है =रोटी खाई जानी है।

समर्थता एव असमर्थता द्योतक वाक्यो की निम्न कोटि भावे प्रयोग के अन्तर्गत ही परिगणित की जानी चाहिए। यथा—

v) मोसैं चढत बन जात=मुझसे चढने (=चढना) बन जाता है।

1

मोसैं चढत नई बनत=मुझसे चढते (=चढना) नही बनता।

1

मोसैं खाबो बन जात=मुझसे खाते हुए (=खाना) बन जाता है।

1

इस प्रकार साधारण वाक्यो की कोटियाँ और भी बढाई जा सकती हैं।

उपर्युक्त पूर्ण वाक्यो की तुलना मे अपूर्ण वाक्यो की भी कुछ कोटियाँ निर्धारित की जा सकती है। वस्तुत उनकी सीमा उन्ही विराम-स्थलो तथा सुर-लहरी की व्यवस्था से निर्धारित की जा सकती है। कभी-कभी सन्दर्भ का भी सहारा लिया जाता है।

लटोरा, इतै आव =लटोरा! यहाँ आओ।
हाय राम, का करो जाय =हे राम! क्या किया जाए
दिखौ तौ, का हो गओ =(आप) देखिये तो! क्या हो गया

बोलचाल का वाक्य विविधता लिए रहता है और परिणामस्वरूप श्रोता को आवश्यकतानुसार पदो का अध्याहार करना पड जाता है। यह अध्याहार कभी प्रतिष्ठित होता है और कभी पूर्वापर पर आधारित। मुहावरो मे पाए जाने वाले अध्याहार प्रतिष्ठित ही कहे जायेंगे। 'मौं दूर कि चनकट' [=मुँह दूर (है) कि थप्पड (दूर है)]

अप्रतिष्ठत अध्याहार निम्न प्रकार के है—

कहते है, कि ऊनै धतूरौ खा लओ = (लोग) कहते हे कि उसने धतूरा खा लिया

होय, न होय, मौहूँ चलो जॉव = हो, न हो, मै भी चला जाऊँ

का दिखानो, कि एक भौहरो है = (मुझे) क्या दिखाई दिया कि एक गुफा है

जौन होनै होहै, होहै = जो होना होगा, (वह) होगा

पद-व्यवस्था

६ वाक्य मे पाए जाने वाले पद एक सुनिश्चित व्यवस्था रखे हुए एक-दूसरे से अनुस्यूत है। उनके इन व्यवस्था-सम्बन्धो को 'साधारण वाक्य' के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। वाक्य मे, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, दो निर्माणक घटक अनिवार्य है—उद्देश्य एव विधेय।

उद्देश्य—सज्ञा-परक (Nominals) होता है। सज्ञा-परक अर्थात् सज्ञा या सज्ञा के स्थानापन्न जैसे सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, सज्ञा-कृदन्त या कोई वाक्याश। जैसे—

राम अच्छौ है = राम अच्छा है। [सज्ञा]

बौ अच्छौ है = वह अच्छा है। [सर्वनाम]

बडौ अच्छौ है = बडा (भाई) अच्छा है। [विशेषण]

बाहर अच्छौ है = बाहर अच्छा है। [क्रियाविशेषण]

महोबा कौ रहइया अच्छौ है = महोबा का रहने वाला अच्छा है। [सज्ञा-कृदन्त]

बडेन कौ कहिबो अच्छौ है = बडे लोगो का कहना अच्छा है। [वाक्याश]

विधेय—क्रिया-प्रधान रहता है। इसके अन्तर्गत सामान्य, सयुक्त तथा अपूर्ण (Incomplete) सभी क्रिया-रूप आ जाते है। जैसे—

बौ जात है = वह जाता है। [सामान्य]

बौ नाम कमाउत = वह नाम कमा रहा है। [सयुक्त]

बौ मास्टर तो = वह मास्टर था। [अपूर्ण]

७ उद्देश्य (कर्त्ता) तथा विधेय (क्रिया) को असाधारण रूप से विस्तृत किया सकता है। विस्तारक अवयव निम्न प्रकार है—

विशेषण-परक शब्दावलि (Adjectivals)

i) सामान्य तथा सख्यावाचक सर्वनाममूलक विशेषण—

मौडा आउत है=लडका आ रहा है ।

बडौ मौडा आउत है=बडा लडका आ रहा है ।

पाँच बडे मौडा आउत है=पॉच बडे लडके आ रहे है ।

इत्तो बडे पॉच मौडा आउत है=इतने बडे पॉच लडके आ रहे है ।

ii) कौ (की, के) प्रत्यय-युक्त सज्ञा शब्दावलि तथा अपने सश्लिष्ट प्रत्ययो सहित कतिपय सर्वनाम शब्द—

दद्दा हरन कौ मौडा आउत=दद्दा लोगो का लडका आता है ।

हमाओ (या अपनौ) मौडा आउत=हमारा (या अपना) लडका आता है ।

यह उद्देश्य तथा विधेय किसी के अन्तर्गत पाई जाने वाली सज्ञाओ की गुण-विस्तारक बन सकती है । सामान्यत इसका प्रयोग सज्ञाओ के पूर्वभाग मे ही होता है पर विधेयात्मक (Predicatively) प्रयोग भी प्रचुरता से मिलेगे ।

क्रियाविशेषण-परक शब्दावलि (Adverbials) यह विधेय विस्तारक मात्र कही जाएगी । इसके अन्तर्गत—

i) सामान्य (अव्यय, विषयक्रम ३) तथा सर्वनाम मूलक (सर्वनाम, विषयक्रम १२) अव्यय शब्दावलि आती है । यथा—

बौ रोज आउत =वह प्रतिदिन आता है ।

बौ हरइँ-हराँ आउत=वह धीरे-धीरे आता है ।

बौ ह्याँ रोज आउत=वह यहॉ पर रोज आता है ।

ii) –सैं, –मैं, –कैं, कारक-प्रत्यय तथा परसर्गो से युक्त सज्ञा-परक तथा अन्य शब्दावलि भी विधेय-विस्तारक होती है । यथा—

बौ रात कैं आउत =वह रात मे आता है ।

बौ खातन मैं आउत =वह खाते हुए समय मे आता है ।

बौ कलमन सैं लिखत=वह कलम से लिखता है ।

बानैं पेट-भर आओ=उसने पेट-भर खाया ।

सज्ञा परक शब्दावलि—यह विधेय, क्रिया का विस्तार प्रत्यय सहित (–खॉं) या रहित कर्म के रूप मे करता है ।

बौ राम खाँ बुलाउत=वह राम को बुलाता है ।

बौ घरैं जात =वह घर जा रहा है ।

८ वस्तुत क्रियाएँ दो प्रकार की उपलब्ध है—समापिका (Finite) तथा असमापिका (Infinite)। समापिका क्रिया के विस्तारको की जितनी कोटियाँ है, उतनी ही असमापिका क्रियाओ की हो सकती हे। कृदन्तीय शब्दावलि असमापिका क्रियाये ही है जो कि विस्तारक भी हैं ओर विस्तृत होने वाली भी है। इनकी निम्न तीन कोटियाँ निर्धारित की जा सकती है—

सज्ञापरक, जो कि उद्देश्य का विस्तार समानाधिकरण बनकर करता है। यथा—

महुबे कौ रहनबारौ बौ मौडा आउत है=महोबा का रहने वाला, वह लडका आता है।

विशेषण-परक, यह वर्तमान या भूतकालिक प्रत्यय लेकर आता है और सज्ञापरक शब्दो का उद्देश्यात्मक (Attributive) तथा विधेयात्मक (Predicative) गुणवाचीय बनकर विस्तार करता है। यथा—

खाओ-खबाओ मौडा आउत है= खा चुकने वाला लडका आता है।
बे मौडा थके-थकाए आउत है= वे लडके थके हुए आते है।

अव्ययन्परक, यह पूर्वकालिक प्रत्यय –कैं लेकर आता है। जैसे—

बौ खा-पीकैं आउत है=वह खा-पीकर आता है।

इस सम्बन्ध मे विशेष बात यह भी उल्लेखनीय है कि ये विस्तारक अवयव सयोजक विधायक चिह्नो द्वारा भी आशातीत रूप से बढाये जा सकते है। बुन्देली के ये सयोजक-तत्त्व अव्यय, विपय क्रम ४ मे गिनाए जा चुके है। पर अन्य विराम भी कभी-कभी सयोजकत्व का काम करने है। यथा—

बीस, पचीस आदमी आउत है=बीस या पचीस आदमी आते है।

९ पदो मे जिस सुनिश्चित व्यवस्था की चर्चा ऊपर की गई है, उसका अध्ययन निम्न भागो मे किया जा सकता है—क्रम (Order) अन्यय (Concord) तथा अधिकार (Government)।

पद क्रम

जिस प्रकार पद मे ध्वनियो तथा पदाशो (morphemes) का सुनिश्चित क्रम रहता है उसी प्रकार वाक्य के एक सगठन मे पदो का भी पूर्वापर क्रम लगभग निश्चित रहता है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ विभक्ति-प्रधान थी अतएव व्याकरणिक सम्बन्धो को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक पद लगभग स्वतत्र था, दूसरे पद पर समान्यतः आश्रित न था, पर मध्य युग मे बिभक्त्यात्मकता की क्रमिक क्षीणता ने पद-क्रम को स्थायित्व प्रदान

किया और इस समय वाक्य-विश्लेषण के अन्तर्गत पद-क्रम विश्लेषण ही प्रधान जान पडने लगा है। पदान्वय तथा पदाविकार उक्त विभक्त्यात्मकता के अवशेष चिह्न बनकर यत्रतत्र दिखाई पड रहे है। विभिन्य वाक्य सगठनो मे बुन्देली पदो के सुनिश्चित क्रम-सम्बन्धी नियम निम्न प्रकार है। आलकारिक शैली मे व्याघात मिल सकेगा, पर अन्यत्र यदि व्याघात है, तो बलात्मकता का द्योतक है। यथा—

ऊ नै अपुन सै बात करी = उसने आपसे बात की।
करी, ऊनै अपुन सैं बात ? = की, उसने आपसे बात ?

कभी-कभी बदले हुए पद-क्रम को पाकर भी बलात्मकता का आरोप साधारणत लगाना कठिन हो जाता है। यथा—

बिंजरानी कौ मौडा जगदेव आय = बृजरानी का पुत्र जगदेव है।
जगदेव, बिजरानी कौ मौडा, आय = जगदेव बृजरानी का पुत्र है।

i) उद्देश्य अपने विस्तारको को तथा कतिपय वैकल्पिक प्रयोगो जैसे—समय तथा स्थान सूचक अव्यय-परक शब्दावलि को छोडकर, वाक्य के प्रारम्भ मे ही प्रयुक्त होता है। यथा—

काल बौ खेतन मे पानूं देत्तो = कल वह खेतो मे पानी सींच रहा था।
बौ काल खेतन मै पानूं देत्तो = वह कल खेतो मे पानी सीचता था।
अथाई मै सब जनी जुरी ती = अथाई मे सब स्त्रियाँ इकट्ठा हुई थीं।
बा सबरे गाँव मे न मिली = वह पूरे गाँव मे नही मिली।

ii) कर्म या पूरक (यदि वाक्य मे है तो) विस्तारको को छोडकर ठीक कर्त्ता के बाद प्रयोग मे आता है। द्विकर्मक वाक्यो मे सजीव कर्म प्रथम तथा निर्जीव, द्वितीय स्थान ग्रहण करता है।

हमनै सबई खो न्योतो तो = हमने सबको निमत्रण दिया था।
बानै महराज कौ राम-राम पौचाई = उसने महाराज को राम-राम कहला भेजा।

iii) क्रिया पद वाक्य के अन्त मे ही प्रयुक्त होते है।

iv) समापिका अथवा असमापिका क्रिया-गठन वाले वाक्यो के विस्तारक अपने विशेष्य कर्त्ता, कर्म अथवा क्रिया के सामान्यत ठीक पूर्व भाग मे स्थित प्रयुक्त होते हैं। यदि अन्तर है, तो परिवर्तन मे बलात्मकता का भाव प्रकट है।

v) बलात्मक निपात—ई, ऊ, आय, तक, तौ—बल चाहने वाले पदो के ठीक बाद प्रयुक्त किए जाते है। (उदाहरण अव्यय, विषयक्रम ५-३)

vi) स्वीकारात्मक 'हओ' तथा प्रश्नसूचक 'ना' वाक्यान्त में प्रयुक्त होता है। नकारात्मक प्रवृत्ति के ना, नईं क्रिया-पद के ठीक पूर्व अथवा वाक्यादि मे प्रयुक्त हो सकते है। यथा—

हओ, मै बजारैं गओ तो = जी हाँ, मै बाजार गया था।
नईं, मै बजारैं नईं गओ तो = नही, मै बाजार नही गया था।
बजारैं चलहौ, ना = बाजार चलोगे ना ?

vi) प्रश्नवाचक का अथवा काए (=क्या) की स्थिति वाक्य मे आन्दोलित रहती है सामान्यतः अन्त मे ही आता है। यथा—

काए (का) गाडी आ गई = क्या, गाडी आ गई ?
काए (का) गाडी आ गई, का = क्या, गाडी आ गई, क्या ?
गाड़ी काए आ गई, का = गाडी क्या आ गई, क्या ?
गाडी आ गई का = गाडी आ गई, क्या ?

पदान्वय

सूदौ सारौ = सीधा साला
सूदी सारी = सीधी साली

तथा

मौडी आउती = लडकी आती
मौडीं आउतीं = लडकियाँ आती

वाक्यो के युग्म को देखकर कहा जा सकता है कि पद-रचनात्मक विभक्ति-प्रत्ययो की दृष्टि से पदो का एक वर्ग दूसरे वर्ग से एक निश्चित सम्बन्ध जोडे हुए है। वस्तुत इसी व्याकरणिक सम्बन्ध को 'पदान्वय' की सज्ञा दी गई है। कभी-कभी व्याकरणिक धाराओ की समानता के साथ-साथ विभक्ति-प्रत्ययो मे भी पूर्णत मेल रहता है, इस स्थिति को 'पूर्ण पदान्वय' और यदि केवल व्याकरणिक धाराओ मे ही मेल है, विभक्ति-प्रत्यय असमान है, तो इसे 'अपूर्ण पदान्वय' कहा जा सकता है। बुन्देली मे पाए जाने वाले इन अन्वय-सम्बन्धो को निम्न वर्गो मे विभक्त करके देखा जा सकता है।

लिंग-वचन—[कर्त्ता एवं क्रिया]

i) –तो (–ती, –ते) प्रत्यय युक्त क्रिया रूप जो कि संभाव्य भूत का अर्थ स्पष्ट कर रहे है (क्रिया, विषय-क्रम ६, ९-१)

ii) –० अथवा (–ओ, ई, ए,) तथा –नो (–नी, –ने) प्रत्यय-युक्त क्रिया रूप जो कि सामान्य भूतकाल का अर्थ

द्योतन कर रहे है (क्रिया, विषय-क्रम १०–१, ११) प्रथम कर्त्तरि एव कर्म कर्त्तरि और द्वितीय केवल कर्म- कर्त्तरि प्रयोग के उदाहरण प्रयुक्त करते है ।

पुरुष-वचन [कर्त्ता एव क्रिया]

विभक्ति-प्रत्यय युक्त क्रिया के तिडन्तीय रूप जिनकी चर्चा क्रिया, विषय-क्रम ५, ६-१, ८, ८-१, ८-२, मे की जा चुकी है ।

लिंग-वचन तथा पुरुष-वचन [कर्त्ता एव क्रिया]

–गो (–गी, –गे) प्रत्यय-युक्त भविष्यत् काल के रूप जिनमे मुख्य क्रिया, द्वितीय और सहायक क्रिया, प्रथम सम्बन्ध रख रही है (क्रिया, विषय-क्रम १२)

लिंग-वचन [कर्म एव क्रिया]

–० अथवा (–ओ, –ई, –ए) प्रत्यय युक्त सकर्मक क्रिया-रूप कारक प्रत्यय रहित कर्म के अनुसार लिग-वचन धारण करते है । जैसे—

राम नै रोटी खाई = राम ने रोटी खाई ।

राम नै आम खाए = राम ने आम खाए ।

इस सम्बन्ध मे कर्त्ता सदैव प्रत्यय सहित रहता है ।

लिंग-वचन-कारक [विशेषण तथा विशेष्य]

–औ/ओकारान्त विशेषण (विषय-क्रम २-१) तथा निकट-दूरवर्ती सर्वनाम (विषय-क्रम ६, ६-१) ही इस अन्वय सम्बन्ध मे भाग लेते है यह नियम सभी प्रकार की विशेषण-परक शब्दावलि पर लागू होता है ।

पदान्वय के कतिपय अन्य उदाहरण भी है—

1) एकाधिक कर्त्ता यदि भिन्न-भिन्न पुरुषो मे है तो क्रिया क्रमश उत्तम, मध्यम तब फिर अन्य पुरुष को प्राथमिकता देती है। यदि कोई समानाधिकरण शब्द है तो फिर उसी का अनुगमन होगा ।

मै औ बौ घरै जात हौ = मै और वह घर जा रहे है।

हम, तुम चल्बी = हम और तुम चलेंगे ।

केसर, तै औ मै, सबजनी जात है = केसर, मैं और तू, सब औरते जा रही हैं ।

ii) यदि भिन्न-भिन्न लिग-वचन वाली सज्ञाएँ कर्त्ता अथवा कर्म बनकर आएँ तो क्रिया के लिंग-वचन निकटस्थ कर्त्ता अथवा कर्म के अनुसार होगे—

मुत्के आदमी औ बइअरे बातै करत ती
=बहुत से आदमी और औरते बात करती थी

दो ठौ उघन्नी औ चार ठौ तारे डरे ते
=दो तालियाँ और चार ताले पडे हुये थे ।

iii) –औ/ओकारान्त विशेषण-परक शब्दावलि यदि भिन्न लिगस्थ एकाधिक विशेष्य से सम्बन्धित है तो वह निकटस्थ विशेष्य से लिग-सम्बन्ध जोडेगी । यथा—

बड़ो मौडा औ मौडी=बड़ा लडका और लडकी ।
बड़ी मौडी औ मौडा=बड़ी लडकी और लडका ।

पदाधिकार

	मै जात हो	=	मै जाता हूँ ।
परन्तु,	मोहै जानै है	=	मुझे जाना है ।
	तारौ ल्याव	=	ताला लाओ ।
परन्तु,	तारे खाँ ल्याव	=	ताले को ले आओ ।

वाक्यो के प्रयुक्त युग्मो मे नितान्त स्पष्ट है कि एक शब्द के दो विभक्ति-मय रूप (मैं तथा मोहे, तारो तथा तारे) परवर्ती पदो पर आधारित है । इस प्रवृत्ति को पद व्यवस्था मे 'पदाधिकार' की सज्ञा दी गई है । दान के अर्थ मे चतुर्थी, भी (डरने)के अर्थ मे पचमी तथा 'अधि' के योग मे द्वितीया या सप्तमी, इस प्रकार के पाणिनीय व्याकरण के सूत्र निस्सन्देह 'पदाधिकार' के उदाहरण कहे जाएँगे । बुन्देली कारक-प्रत्ययो की भी ऐसी ही व्यवस्था की जा सकती है । बुन्देली मे 'पदाधिकार' सम्बन्धी निम्न वर्ग निर्धारित किये जा सकते है—

कारक-प्रत्ययो से अधिकृत शब्दावलि—

कारक-प्रत्यय नाम (सर्वनाम, विशेषण भी) शब्दावलि को विकारी रूप मे ग्रहण करते है (सज्ञा, विषयक्रम ७.)

क्रियाओ तथा क्रियारूपो से अधिकृत शब्दावलि—

i) क्रियार्थक सज्ञा –नै रूप कर्त्ता का अर्थ रखने वाली 'नाम' शब्दावलि को सश्लिष्ट विभक्ति –ऐ (–है) अथवा –खाँ कारक प्रत्यय के साथ ग्रहण करती है । यथा—

मोहै जानै है=मुझे जाना है ।
लटोरै जानै है=लटोरा को जाना है ।

ii) जाव्–, आव्–, चल् आदि गत्यर्थक धातुओ क योग म आने वाला गन्तव्य –ऐ सश्लिष्ट विभक्ति लेकर आता है।

यथा—

बौ ममानै जात =वह मामा के घर जा रहा है।

हम कामै जात =हम काम के लिए जाते हैं।

तुम मदरसै चलौ =तुम स्कूल चलो।

iii) सभी सकर्मक क्रियाएँ अपने सजीव कर्म को उक्त –ऐ विभक्ति के साथ ग्रहण करती है। यथा—

बौ गइऐ दुहत =वह गाय दुहता है।

बौ लटोरै बुलाउत=वह लटोरा को बुलाता है।

बौ दद्दै चिठिया लिखत=वह पिता जी को पत्र लिखता है।

पाती राधाजुऐ गहाई=चिट्ठी राधा जू को दी।

बौ किऐ खबाउत =वह किसे खिलाता है।

अन्वय--अधिकार

i) एक वचन का कर्त्ता, सम्मान का भाव द्योतित करने के लिए क्रिया को बहुवचन मे अधिकृत किए रहता है।

भरत ममाने सैं लौट आए=भरत ननिहाल से लौट आये।

ii) –नै कारक-प्रत्यय युक्त कर्त्ता क्रिया के कृदन्तीय –ओ(–०–) प्रत्यय के साथ ही प्रयुक्त होता है। तथा खाँ (–ऐ) प्रत्यय-युक्त कर्म क्रिया को पुं०, एक० मे ही अधिकृत किए रखता है। यह क्रिया समापिका एवं असमापिका दोनो ही प्रकार की हो सकती है। जैसे—

डाँकुन नै किबारे खाँ दिखो=डाकुओं ने किवाड देखा।

डाँकुन नै किबरिया खाँ दिखो=डाकुओ ने खिड़की को देखा।

डाँकुन नै किबारे खाँ जरो भओ दिख कै ... ..

=डाकुओ ने किवाड को जला हुआ देखकर......

डाँकुन नै किबरिया खाँ जरो भओ दिखकै .

=डाकुओ ने खिडकी को जला हुआ देखकर......

इस प्रकार बुन्देली की काव्य-रचना मे वैविध्य है। एक ओर तो प्राचीन सस्कृत परम्परा के विभक्तयात्मक (Inflextional) पद है, तो दूसरी ओर मध्ययुगीन सस्कृत की कृदन्तीय (Participal) पदावली और सबसे अधिक पदो की वह विश्लिष्ट स्थिति है जो कि भारतीय आर्य-भाषाओ मे १००० ई०

से आई जान पडती है। कारक-प्रत्यय, पूर्वकालिक क्रिया-योजना तथा सयुक्त एव सहायक क्रिया गठन, सभी इसी विश्लिष्टात्मकता के प्रमाण है। द्विरुक्ति-विधान भी जो कि कभी बहुवचनत्व, कभी तीव्रता और कभी किसी अन्य भाव का स्पष्टीकरण करता है, इसी विश्लिष्टता की सूचना दे रहा है। इस प्रकार हिन्दी की तरह बुन्देली भी सश्लिष्ट तथा विश्लिष्ट — भाषा स्थितियो के मध्य्-मार्ग से गुजर रही है।

परिशिष्ट

१

[भाषा-मानचित्र—पृष्ठ १—४]

इसमे कतिपय भाषा-मानचित्र सकलित है, जिनमे भाषा-प्रवृत्तियो की गतिविधि अकित की गई है। ये बुन्देलखण्ड के सास्कृतिक इतिहास की झलक तो प्रस्तुत करते ही है; साथ ही, क्षेत्र की सगठित इकाइयो का भी निर्देश करते है।

२

[वाक्य-सामग्री—पृष्ठ ५—३७]

बुन्देली के क्षेत्रीय-रूपो का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए लगभग तीन सौ वाक्यो को आधार बनाया गया था। पुस्तक के प्रारम्भ मे दिए हुए मान-चित्र 'बुन्देली भाषा क्षेत्र' मे निर्दिष्ट सत्तरह स्थानो पर जाकर लेखक ने स्वय उन वाक्यो का अनुवाद किया था। लगभग इतने ही स्थानो से, अधिकारी व्यक्तियो से अनुवाद कराके मँगवाया था। अनुवाद के आवश्यक नमूने इस परिशिष्ट मे किए जा रहे है, जिनका उपयोग, अनुवाद की सीमाओ को ध्यान मे रखकर किया जा सकता है। आरम्भ मे तुलना के लिए मूल सूची भी सलग्न कर दी गई है।

३

[विशिष्ट शब्दावलि—पृष्ठ ३८—४४]

लेखक की व्यक्ति - बोली (स्थान—मुस्करा, जिला हमीरपुर, उत्तर प्रदेश) पर आधारित होने के कारण, ये शब्द उच्चारण तथा अर्थ—दोनो ही दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

—०—

भाषा-मानचित्र – १

कर्म कारकीय प्रत्यय
संज्ञा – १५
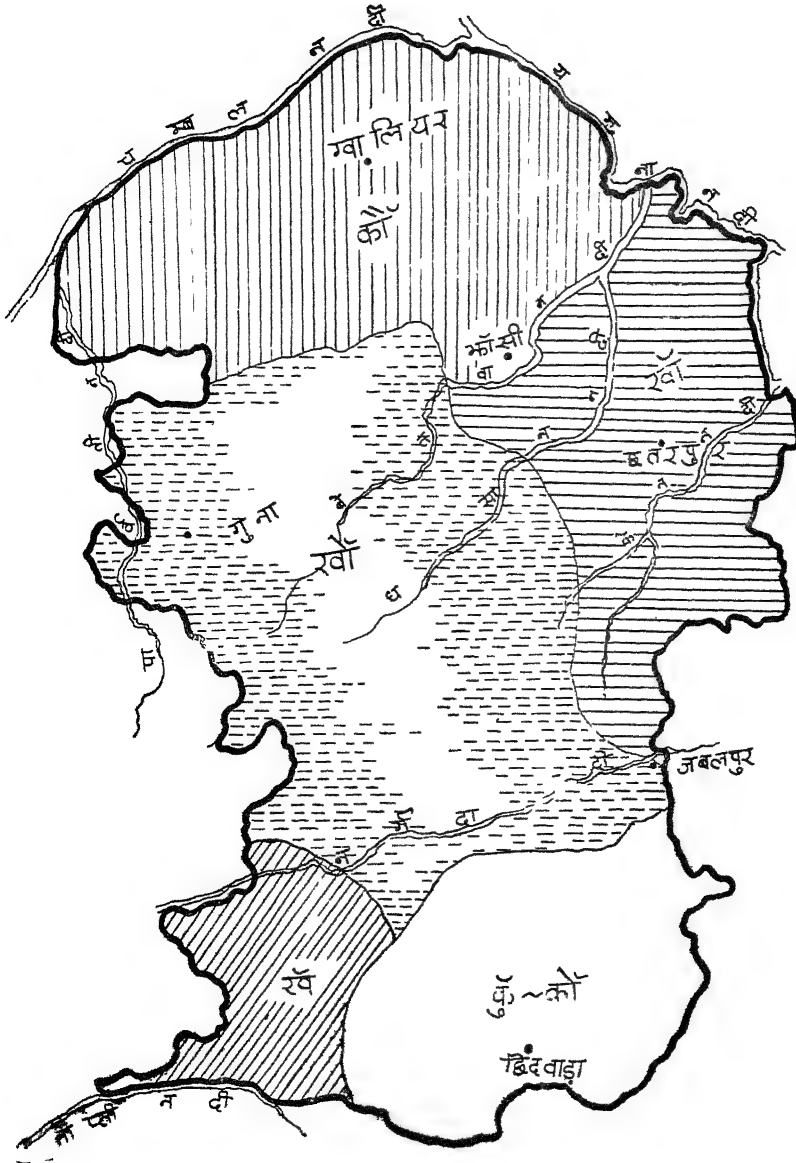
भाषा-मानचित्र-2

भविष्यत कालिक प्रत्यय
क्रिया-१२
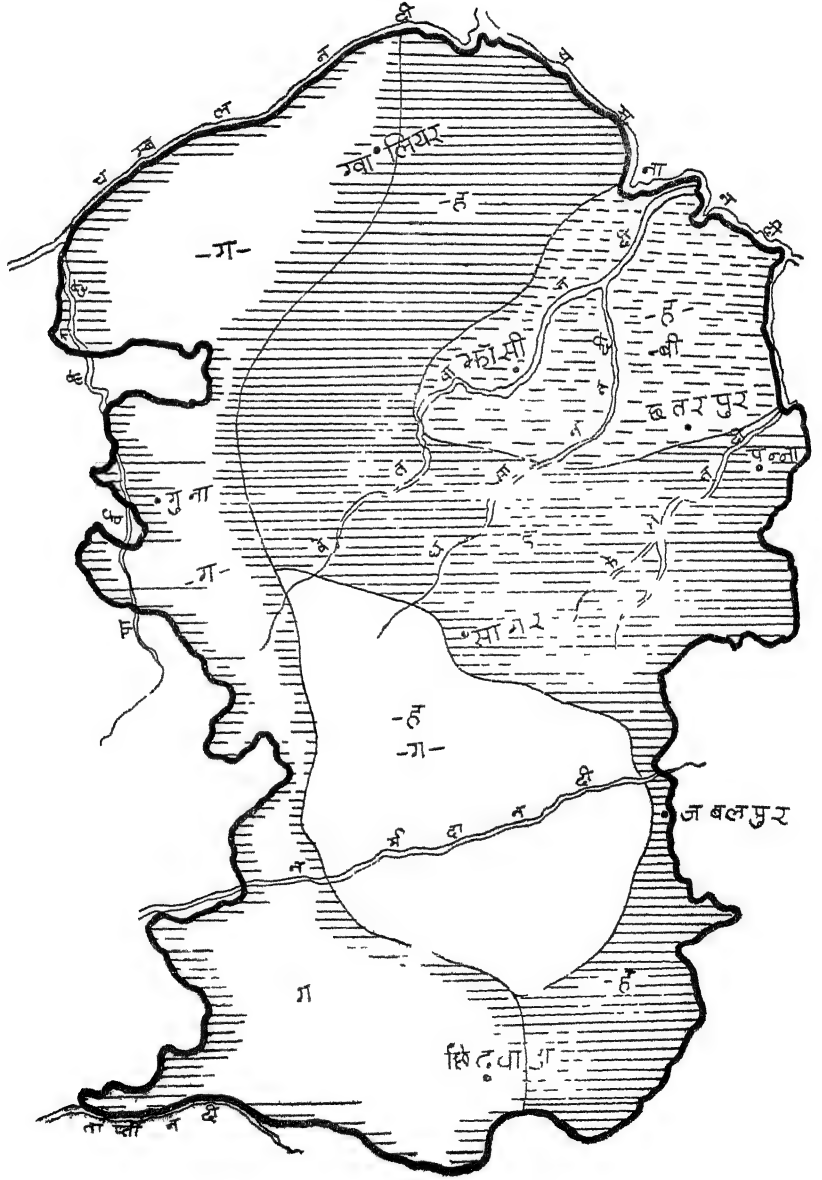
भाषा-मानचित्र - ३

संज्ञा प्रातिपदिक [औ / ओ]
संज्ञा - ४
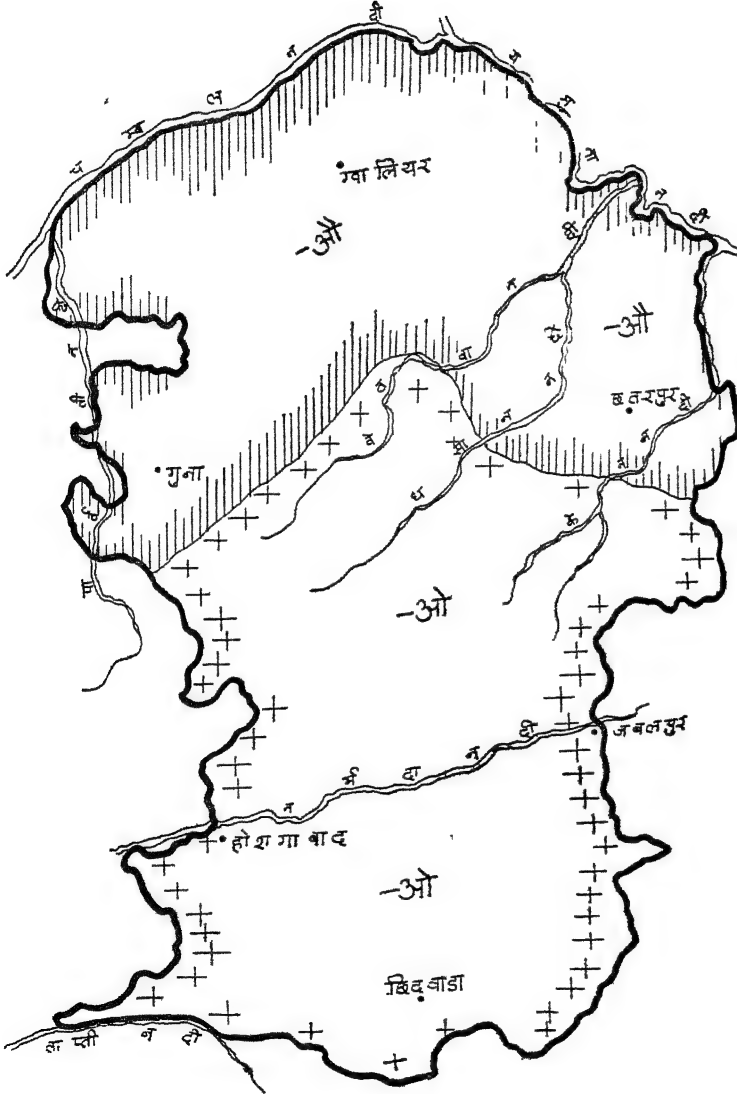
भाषामानचित्र-४

सकेत वाचक सर्वनाम
सर्वनाम - ६
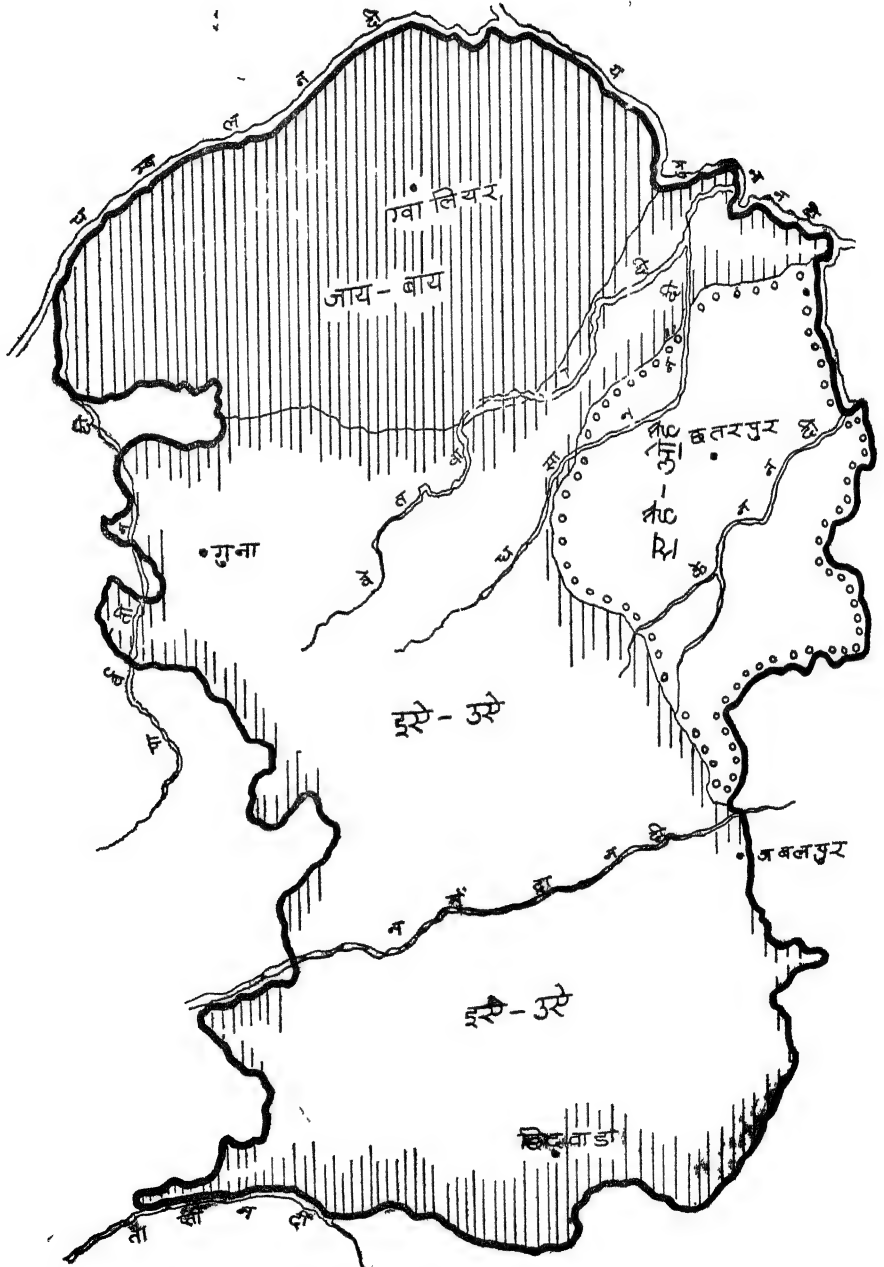
१ आप चाची जी के यहाँ गए थे ?
२ दो थप्पडो मे आपका मुह सीधा हो जाएगा ।
३ विवाह मे आपको चलना पडेगा ।
४ नुमायश मे हम तुम भी चलेगे ।
५ अपना कम्बल सभाल कर रखना ।
६ अपनी रजाई कहाँ भूल आये ।
७ छोटे भाई के विवाह मे सब थालियाँ चोरी चली गईं ।
८ ये हल अपने ही हैं ।
९. जिसने घर के अन्दर पैर रखा वही मारा गया ।
१० जो घर के अन्दर पैर रक्खेगा वही मारा जाएगा ।
११. जिसकी अटकी होगी वह मेरे यहाँ आएगा ।
१२ जो बैल राठ गया है, वह चरने वाला है ।
१३ जो चमारिन कल पीसने आई थी, वह बडी चोर निकली ।
१४ यह चाहे जिसकी लडकी हो, बडी शरारतिन है ।
१५ यह चाहे जिसका लडका हो, बडा शरारती है ।
१६ शाम के वक्त जो-जो आ जाए, सबको भोजन करा देना ।
१७ चमारिनें जो रस्सियाँ दे गई थीं, सब टूट गईं ।
१८ जिसमे ताकत हो, सामने आए ।
१९ जिस पर हो वह दे देवे ।
२० वर्तन मे क्या रखा है ।
२१. क्या सब ढोर छोड दिए गए ।
२२. वहाँ कौन-कौन है ।
२३. दरवाजे से कौन निकल गए ।
२४ डाकू किस ओर भाग खडे हुए ।
२५ देखो वह कौन जा रहा है ।
२६ ये ककडियाँ मेरी जेब मे किसने डाल दी ।
२७ पाँच मन ज्वार किसमे समाएगी ।
२८ क्यो चले आ रहे हो ।
२९ बैलो को धीरे-धीरे क्यों नही चलाते ।
३० किसी से कुछ मत कहना ।
३१ उसके यहाँ किस पर बैठोगे ।
३२ छोटी सन्दूक मे कुछ भी नही है ।
३३ मेरा काम इतनी चिडियो से नही चलेगा ।
३४ कुत्ता जैसे ही निकला, उसने लाठी चलाई ।
३५ तुम्हे कितनी चाहिए ।
३६ तुम किस दर्जे मे पढते हो ।
३७ तुम कैसे इतने रुपयो से काम चला लेते हो ।
३८ जरा वहीं को हट जाओ, क्योंकि यहाँ चने का बोरा रखना है ।
३९ उस दिन की तरह देर मत करो ।
४० वह कहाँ गया था ।

४१ उसकी तरह मै भी गगा जी मे नहाने जाऊँगा ।
४२ उस दिन शायद वह भी आ जाए ।
४३ तू भी आया, तो भी काम पूरा नही हुआ ।
४४ जब तक मै आता हूँ, तब तक गाय दुहवा लेना ।
४५ या तो तुम आना, या फिर भाभी को भेज देना ।
४६ सिर दर्द के मारे मुझे चैन नही मिलती ।
४७ यह औरत लडके वाली है ।
४८ मुझे अवकास कहाँ, बहुत काम पडा है ।
४९ दिखलाओ, भला, इसको ।
५० गाय बैलो का काम कर डालू, तब फिर आखीर मे बैठकर तुम्हारी बात सुनूँगा ।
५१ अगर तू जाता हो तो जा ।
५२ अगर तुझे जाना ही है, तो देर मत कर ।
५३ मै उसकी स्त्री हूँ ।
५४ वे अक्सर जाते है, लेकिन मुझे अच्छा नही लगता ।
५५ खाने से अब रुका नही जाता ।
५६ अपनी सहेलियो सहित वह अभी ही चली गई ।
५७ चार महीना चौमासे भर पानी बरसता रहा ।
५८ वह क्रोधी है, बडी देर मे क्रोधित बैठा है ।
५९ इकहरे शरीर का बना है ।
६० बहुत मुलायम लौंकी है ।
६१ तू कहाँ से लौट पडा ।
६२ तू कल मदरसे गया था या नही ।
६३ मा आदि को लिवाकर तुम लोग कब आओगे ?
६४ तुम रोजाना नमक माँगने आ जाते हो ।
६५ तू कल कानपुर पहुँच जाएगा, परसो लौट पडना ।
६६ तुम लोग आओ, चाहे न आओ, मै अवश्य आऊँगा ।
६७ मै खूब जानता हूँ तुमसे यह भी न होगा ।
६८ तुमसे यह घर भी छाते नही बनता ।
६९ अभी तुझमे उठने-बैठने की ताकत नही आई है ।
७० तेरा नाम क्या है, जल्दो बतला ।
७१ इस गाँव मे तेरी जात के लोग बहुत है ।
७२ तेरे ढोर काजी हाउस मे बन्द है ।
७३ तेरी चारपाइयाँ आगन मे भीग रही है ।
७४ चोरो ने आधी रात को तुम्हारे सन्दूक का ताला तोड डाला ।
७५ तुम्हारे कन्धे से खून टपक रहा है ।
७६ तुम्हारी आँख मे यह ललामी क्यो है ।
७७ तुम लोगो की किसी से नही पटती ।
७८. तुम्हारे लिए आटा पिसा हुआ रखा है ।
७९ तुम्हे तुम्हारी सरहज बुला रही है ।
८०. तुम्हारी साइकिले पचर हो गई हैं ।

८१ तुम क्या खाली बैठे हो ?
८२ यह कोई बुरा काम नही ह ।
८३ यह लडकी किसकी है ।
८४ यह लडका किसका है ।
८५ ये नौकर किस सेठ के ह ।
८६ इसमे लम्बा-लम्बा यह क्या पडा हैं ।
८७ इस धोती का कपडा खूब मजबूत है ।
८८ यह नही करोगे, तो तुम प्यासो मरोगे ।
८९ ये सभी आम अभी अधपके है ।
९० इन सब पर सोने का पानी चढा है ।
९१ इनके जूते बिल्कुल टूट गये ।
९२ इन औरतो के आदमी परसो से नही आये हैं ।
९३ इस पर चदरें और तकिया लगा दो ।
९४ इनकी क्या मजाल जो अब चमरौडा मे घुसे ।
९५ इस कुम्हारिन ने दो मटके भेजे है ।
९६ इसकी उँगलियाँ कुचल गईं ।
९७ यह लडकियो के कहने मे आ गई ।
९८ इसे कल लौटा देना ।
९९ मेरा होल्डर यही है ।
१०० मेरी कलम यही है ।
१०१ दूध दुहा जा रहा है ।
१०२ दूध दुह लो ।
१०३ नौकर से दूध दुहवा लो ।
१०४ मैं कहता हूँ, मा से भी कहलवा दू ?
१०५ बडियाँ दी जा रही हैं ।
१०६ पडोस की औरते बडियाँ दे रही हैं ।
१०७ या तू या लक्ष्मी उन बडियो को दिलवा ले ।
१०८ सब कपडे सिल गए ।
१०९ भला इतनी जल्दी किसने सिये ?
११० उसने बडी बहिन को चार कुर्तियाँ सिलाईं ।
१११ अब सबको एक-एक सिलवा दो ।
११२ रामायण हो चुकी । सैरा हो रहा है ।
११३. वह सबसे बात करती है तो करने दो ।
११४ गाडी खाली है, नही तो अभी खाली करवा दूँगा ।
११५ मैं खुद खाली किए देना हूँ ।
११६ शहद खाया जा रहा है ।
११७ वह और मैं दोनो खा रहे थे ।
११८ उस रोगी को भी खिला दो ।
११९ वैद्य जी खिलवा देगे ।
१२० वहाँ का शोर बहुत दूर तक सुनाई देता है ।

१२१ पुरोहित जी भागवत सुना रहे है ।
१२२ मुझे अभी कुछ रुपये और देने है ।
१२३ रमेश । खाने मे क्या सकोच ।
१२४ नमस्कार करना मत भूलो ।
१२५ खेलते-खेलते जी मतलाने लगा ।
१२६ गाडी आने वाली है ।
१२७ किसी लिखने वाले को बुलाओ ।
१२८ नाचने वालियो को जाने दो ।
१२९ आखिरकार उनको आना ही पडा ।
१३० वह इटावे का रहने वाला है ।
१३१ खिलाने मे मै किसी से कम नही ।
१३२ वह मामा के घर से आ रहा है ।
१३३ खेत की मेड पर वह कौन गा रहा है ।
१३४ उसने छत पर से झाँका था ।
१३५ धूप मे चलने से उसने इनकार कर दिया ।
१३६ वह ढोर मेरे खेत मे चर रहा था ।
१३७ वह गाय पचीस रूपया मे ली गई है ।
१३८ वे बकरियाँ जगल मे फिर रही होगी ।
१३९ वे बसोर कही दूसरे गाव मे बस गए ।
१४० उन्होने तुम्हे कई बार बुलवाया ।
१४१ मै उनको कबतक बिठलाये रहूँ ।
१४२ उस पर मेरा बस नही चलता ।
१४३ दुर्गा माई उन पर प्रसन्न है ।
१४४ मैं उससे सब कुछ कह दूँगा ।
१४५ उन गवाहो से मै सब कुछ कहलवा दूँगा ।
१४६ उसमे इतनी शक्ति कहाँ ?
१४७ उसको किसने डरवा दिया ।
१४८ उसकी भैसें कीचड मे फँस गई ।
१४९ उसकी पौर मे कल सब लोग इकट्ठे हुए थे ।
१५० उन लोगो की क्या हस्ती जो मुहल्ले की लडकियो को छेडे-छाडे ।
१५१. वह बैलो को नहलवा रहा है ।
१५२ वह भैसो को नहला रहा है ।
१५३ गाडी नह दो, कौन नहवा रहा है ।
१५४ झासी तरफ यह फल खूब मिलता है ।
१५५ मेरी कलमे किसने चुरा लीं ।
१५६ मैने सबको खिला-पिला दिया ।
१५७ मेरी कमीजे चूहो ने काट डाली ।
१५८ यह पत्र मुझसे पढते नही बनेगा ।
१५९ मुझे चार पैसे का गुड चाहिए ।
१६०. मुझे घर जाना है ।

१६१ मेरे लिए थोडी सी काली मिट्टी लेते आना ।
१६२ उसने मरते दम तक मुझ पर भरोसा किया ।
१६३ मेरी जगह पर लटोरा दो दिन काम कर जायगा ।
१६४ मेरे खेतो पर बहुत से मजदूर काम कर रहे है ।
१६५ हम तुम्हारे लिये रुके है ।
१६६ खाने मे हमको कोई एतराज नही ।
१६७ हम इससे अधिक कुछ न देगे ।
१६८ हमारा आगन तुम्हारे से चौगुना है ।
१६९ हमारे लिए दो कटोरे लेते आना ।
१७० हमारी जेब बिल्कुल खाली है ।
१७१ जाडे के मारे हमारी उँगलियाँ बिल्कुल ठिठुर गईं ।
१७२ हमारे साथ बद्रीनाथ चलोगे ?
१७३ कचहरी मे हम सब साफ-साफ कह देगे ।
१७४ हमारे यहाँ पिछली साल एक जलसा हुआ था ।
१७५ अगली साल हम लोग प० नेहरू को बुलाएँगे ।
१७६ लाकर दे दो, देकर चले जाओ ।
१७७ हँसकर बहलाना अच्छा नही है ।
१७८ छत होकर निकल जाना ।
१७९ तालाब के किनारे घूमने चलेंगे ।
१८० खिला-पिलाकर बडा कर देना हमारा कर्त्तव्य था ।
१८१ ज्यादा क्या लिखूँ, आप जवाब अवश्य देना ।
१८२ बिटिया को लुवाने-पठाने हम जायँगे ।
१८३ खाते मे ही उसे चिट्ठी मिली थी ।
१८४ चलते-चलते वह बिल्कुल थक गई ।
१८५ वह ऐसी अच्छी तरह खेल रही थी ।
१८६ ये आम कई दिन से रखे हुए थे ।
१८७ आकर बनिये के यहाँ से ले जाना ।
१८८ यहाँ लोधी बहुत बसते है ।
१८९ यह ठाकुरो की बस्ती है ।
१९० इस ओर ब्राह्मणो की बस्तियाँ अधिक है ।
१९१ बूदें पडते ही, सब ढोर तितर-बितर हो गए ।
१९२ मेरे होते हुए आप निश्चिन्त्य रहे ।
१९३ नौगाव किस ओर है ।
१९४ जलती आग मे उसका पैर फिसल पडा ।
१९५. पन्द्रह दिन के लिए हमे महाभारत बँचवाना है ।.
१९६ मै इसे लिए जाता हूँ ।
१९७ मैं नही जानता कि नाइन कब आएगी ?
१९८ तुम्हारा अहसान कभी नही भूलूँगा ।
१९९ तू अपना नाम बतला ।
२०० खडा रह, तुझे मै अभी देखे लेता हूँ ।
२०१ यह ताला इस ताली से खुल जाएगा ।

मुस्करा (जिला हमीरपुर)

१. तैं काकी ख्याँ गओ तो ?
२ दो थापरन मैं तोओ मूँ सूधो हो जैहे ।
३ व्याव मैं तुम खाँ चलनैं परह्यै ।
४ नुमास दिखन हमउँ तुम्हउँ चलहन ।
५ अपनो कमरा समार कैं धरित ।
६ अपनी सुपेती काँ भूलयाए ।
७ हल्के भइया के व्याव मैं कौन्हूँ नैं अपनी सब टाठीं चुरा लईं ।
८ ई हर अपनईं आँय ।
९ जेनैं घर के भीतर पाँव धरो ओई मारो गओ ।
१० जेखऊ घर के भीतर पाँव धरह्यै ओई मारो जैहै ।
११ जेखी अटकी होहै ऊ मोए इतै आहै ।
१२ जौन बैलवा राठै गओ है ऊ बौहुत खात है ।
१३. जौन चमार काल पीसन आई ती बा बडी भॅडऊ निकरी ।
१४ या चाय जेखी मौडी होय बडी उधमयाऊ है ।
१५ यौ चाय जेखौ मौडा होय बडौ ऊधमया है ।
१६. दिन बूडें जेखऊ आवै सब खाँ खबा दइयो ।
१७ चमारनै जौन गिरमा दै गईं तीं वैं सब टूट गये ।
१८ जेम्हैं तागित होय सो साम्हूँ आवै ।
१९ जेखऊ लैंय होय सो दै देवै ।
२० बासन मैं काय धरो है ।
२१ काए, सब ढोर छोड दये का ?
२२ उतै को को है ?
२३ दोरे भे (भो) क्वाय निकर गओ ।
२४ डाँकू काँ खाँ भग गये (डाँकू कौन कुधईं भग ठाँडे भये)
२५ दिखौ, ऊ क्वाय जात है ?
२६ ई ककोरियाँ मोई खलेती माँ केन्हैं आँय डार दईं ?
२७ पाँच मन जुन्डी काए मै अमैहै ?
२८ काये खाँय, चलो आउत हत ?
२९ बैलवन खाँ हरईंहराँ काए नईं हाँकत ?
३० कोऊ सैं कुछू न कैहित ।
३१ ओखे इतै काए पै बैठहित ?
३२ हल्की सन्दुकिया मैं कुछू नहियाँ ।
३३ मोओ काम इत्ती चिरइअन सैं (लै) न चलह्यै।
३४ जैसईं कुत्ता निकरो ओन्हैं लठिया चलाई ।
३५ तुम्हैं कित्तीं चाहुनैं ?
३६ तैं कौन दरजा माँ पढत (हत) ?
३७. तैं इत्तो रुपइअन लै अपनौ काम कैसें निकार लेत ।
३८ तनक हुईं खाँ सरक जा काएसैं कै इतै चनन कौ बोरा धन्नैं है ।
३९. ऊ दिनाँ की नाईं ढ्यार न करियो ।
४०. ऊ काँ गओ तो ?

४१ ओखी नाँई महूँ गङ्गाजुवै सपरन जैहौं ।
४२ ऊ दिनाँ सायत ओऊ आ जाय ।
४३ तहूँ आ गओ तऊ काम न भओ ।
४४ जौलौं मैं आउत हौं तौ लौं तैं गइया दुहवा लैत ।
४५ कै तौ तैं आइत नइंतर फिन भौजी खाँ पठवा दैत ।
४६. मूड के मारैं मौहें राही नईं आउत ।
४७ या बइयर लरकोरी है ।
४८ मोहैं फुरसित नइयाँ, अभै बौहुत काम परो है ।
४९ दिखाऔ भलाँ ए खाँ ।
५० गइयन बैलवन कौ उसार कर लेंव तब फिन बैठ कैं तोई बातैं सुनह्यो ।
५१ जो तोहै जानै होय ता जा ।
५२ जो तोहै जानई है ता ढ्यार काए खाँय करत ।
५३ मै ओखी बइयर आँहौं ।
५४ वैं तौ जातई रहत हैं पै मोहैं अच्छौ नईं लगत ।
५५ हमैं खाओ आउत ।
५६ अपनी गुइँयन के सँगै बा अभईं चली गई ।
५७ चार मईनाँ चौमासे भर पानी बरसो करो ।
५८ ऊ बडौ गुस्सैल है बौहुत ढ्यार सैं गुस्साँ बैठो है ।
५९ इसकरी द्याँय कौ है ।
६० बौहुत लरम तुमरिया है ।
६१ तैं काँ सैं लौटयाओ ?
६२ तैं काल मदरसै गओ तो कै नईं ?
६३ बाई हन खाँ लिवा कैं तैं कबै आहत ?
६४ तैं रोझऊँ नूँन माँगन (मँगाउन) आ जात हत ।
६५ तैं काल कानपुरैं पौहुँच जैहत परौं लौट परित ।
६६. तुम आइव चाय न आइव मैं तौ आहउँ ।
६७ मैं खीब जानत हौं कै तो सैं एऊ न हो पाहै ।
६८ तौ सैं एऊ घर छाउत नईं बनत ।
६९ अभै तोम्हैं उठैं बैठैं की सत्या नईं आईं ।
७० तोओ का नावँ जल्दीं बता ।
७१ ई गाँव माँ तोई बिरादरी बौहुत है ।
७२ तोए ढोर कानीहौद माँ बिंडे हैं ।
७३ तोई खटोलीं बखरी माँ भींजत है ।
७४ चोरन नैं आधी रात कैं तोई सिन्दूक कौ तारौ टोर डारो ।
७५ तोए कँधन सैं रकत चुअत है ।
७६ तोई आँखी मैं ललामी काए है ।
७७. तुम्हाई कोऊ सैं नई पटत आय ।
७८ तुम्हाए लानैं पिसनौं पिसो धरो है ।
७९ तोखाँ तोई सरज बुलाउत है ।
८० तोई पैरगाडी पिचर हो गई ।

८१ तैं सरतारौ काए बैठो हत ?
८२ यौ कौन्हउँ बुरओ काम नहोय ।
८३ या मौडी केखी आय ?
८४ यौ मौडा केखौ आय ?
८५ ई मँजूर कौन सेठ के आँय ?
८६ एम्हैं लम्बौ लम्बौ यौ काय डरो है ?
८७ ई धुतिया कौ उन्हाँ खीब मजबूत है ।
८८ यौ न करहत ता प्यासन मर जैहत ।
८९ ई सबरे आम अभैं गदरयाने हैं ।
९० इन सबरिन पै सोने कौ पानी चढो है ।
९१ एखी पन्हइयाँ बिरकुलई टूट गईं ।
९२ ई बईरन के आदमी परौं सैं नईं आये आँय ।
९३ एफै पिछौरा औ गदियाँ लगा देव ।
९४ ऐखी का तागित जौन अब चमरौडा मैं घुसैं ।
९५ ई कुम्हार (कुम्हरिया) नै दो ठइयाँ मटका दए हैं ।
९६ एखी उँगरियाँ कुचर गईं ।
९७ या मौडिन के कहे मैं आ गई ।
९८ एखाँ काल मुरका दैत ।
९९ मोऔ हुन्डल एई आय ।
१०० मोई किलम एई आय ।
१०१ दूद दुभ रओ ।
१०२ दूद दोह ले ।
१०३ मँजूर सैं दूद दुभवा ले ।
१०४ मैं कहत तौ हौं, बाई सैं सोऊ कभवा दैहौं ?
१०५ बरीं दई जा रईं (बरीं दिब रईं)
१०६ पुरा की बइरैं बरीं दिबा रईं ।
१०७ कै तौ तैं कै लक्च्छमी उन बरिन खाँ दिबवा ले ।
१०८ सब उन्हाँ सिम गये ।
१०९ काए, इत्ती जल्दीं केन्हैं सीं दये ?
११० ओन्हैं बडी बैहिन खाँ चार ठइया कुर्ती सिमवाईं ।
१११ अब सब खाँ एक एक ठइया सिमाँ दे ।
११२ रामान हो गई अब सैरा होत है ।
११३ बा सबसैं बतात है ता बतान दे ।
११४ गड्डी रीची (रीती) है नईं तर अभईं रिचवा (रितवा) दैहौं ।
११५. मैं खुदई रिचैयँ (रितैयँ) देत हौं ।
११६ मैं फर खबत है ।
११७ ऊ ना मैं दोऊ जनैं खात ते ।
११८ ऊ बिमरहऊ (रूगैलहऊ) खाँ खबा देव ।
११९ बैद जू खबवा दैहैं ।
१२० उतै कौ हल्ला बौहुत दूर लौं सुनात है ।

१२१ पुरहेत जू भागौत सुनाउत है।
१२२ मोहैं अभै कुछू रुपइया और देयँ खाँ हैं ।
१२३ रमेस खाॅय काॅ काए खाँ सरम्यात।
१२४. राम राम (रामाकिसनी) करबो न भूल जैंत ।
१२५ खेलत खेलत जी उम्थान लगो ।
१२६ रेल आउन चाहत है ।
१२७ कौन्हुउँ लिखइया खाँ बुलाव ।
१२८. नचनारिन्ह खाॅ जान दे ।
१२९. अखीरत माँ उनखाॅ आवनइँ परो ।
१३०. ऊ इटाये कौ रहइया आय ।
१३१. खिलाँऊँ माॅ मैं कोऊ सैं कम नईं हाँव ।
१३२ ऊ मम्मा के घर सैं आउत है, (ऊ ममाने सैं आउत है) ।
१३३ खेत की मेड पै ऊ क्वाय गाउत है ?
१३४ ऊ मुडिया पै भो झाॅकत (ढूंकत) तो ।
१३५ घाम मैं निगे सैं ओन्हैं नाईं कर दई ।
१३६ ऊ ढोर मोए खेत मैं चरत तो ।
१३७. बा गइया पचीस रुपइयन मैं लई है ।
१३८ वैं छिरियाॅ व्याहड (हार) मैं फिरत होहैं ।
१३९. वैं बसवारा (बसह्वारा) कौन्हूँ अतगाॅव मैं रहन लगे ।
१४०. उन्नै तोखाॅ कई दइयाँ बुलाओ ।
१४१. मैं उनखाॅ कब लौं बैठाऐं रहौं ?
१४२. ओफै मोओ कौन काबू चलत है ।
१४३. देवी मइया उन पै सीरो हथा दैंय ।
१४४ ओम्हैं इत्तौ ह्याव काँ सैं आओ ।
१४५. ऊ गबाहन सैं मैं सब कुछू कभवा दैहौं ।
१४६. मैं ओसैं सब कुछू कह दैहौं ।
१४७ ओ खाॅ केन्हैं डिरवा दओ ।
१४८ ओखी भैंसियाँ गिलाए मैं सल गईं ।
१४९ ओखी चौपार (पोंर) माँ काल सब जनैं जुरे ते ।
१५० उनकी का मजाल जौन वैं पुरा की बिटियन(लम्डियन)खाॅ रोकैं ।
१५१ ऊ बैलवन खाॅ सपर्वाउत है ।
१५२ ऊ भैंसियन खाँ सपराउत है ।
१५३ गड्डी नैंह दे, क्वाय नभवाउत है ।
१५४ झाॅसी कुधईं ईं फल खूब मिलत।
१५५. मोई किलमैं केन्हैं चुरा लईं ।
१५६ मैंनैं सब खाँ खबा पिबा दओ।
१५७ मोई कमींजैं चौखरिन नै काट डारीं ।
१५८ या चिठिया मोसैं नईं बँचत ।
१५९ मोहैं चार पैसा कौ गुर चाहुनैं ।
१६०. मोहैं घरैं जानै ।

१६१ मोए लानैं तनक (सी) कारी माँटी लेताइत ।
१६२ ओन्हें मरत मरत लौं मोई बात मानी ।
१६३ मोई बल्दी लटोरा दो दिनाँ काम कर जैहै।
१६४ मोए खेतन मैं कुल के मँजूर काम करत ।
१६५ हम तुम्हाए लानैं आय ठाडे (हन) ।
१६६ खॉय माँ कौनहूँ इतराज नहियाँ (खॉय के लानैं नाहीं नइयां) ।
१६७ हम एसैं जादाँ अब कुछू न दैहन ।
१६८ हमाई बखरी तुम्हाई सैं चार हीँसा बडी है ।
१६९. हमाए लानैं दो ठइया खुरवा लेतइयो ।
१७० मोई खलेती बिरकुल छूँची है ।
१७१. ठड के मारैं मोई सब उँगरियाँ ठिटुर गईं ।
१७२ हमाये सबै बद्रीनाथन चलहत ।
१७३ कचैहरी माँ हम सब साँची साँची कैह दैहन ।
१७४ हमाए इतै परसाल एक बडौ भारी जस्सौ भओ तो ।
१७५. परसाल (आँगित) हम प० नेहरू खाँ बुलाहन ।
१७६ ल्या कैं दै दे फिन दै कैं चलो जैत ।
१७७ हँस कैं टार दैबो कौन अच्छौ आय ।
१७८ मुडिया पै भो निकर जैत ।
१७९ तला की पार पै टैहलन चलहन ।
१८० खबा पिबा कैं बडौ कर दैबो हमाओ काम आय तो ।
१८१ जादाँ का लिखौं अपुन जबाब जरूर करकैं दैबी ।
१८२ मौडी खाँ लिबाउन पठौन (पठाउन) हम जैहन ।
१८३ खातइ मैं ओखाँ चिठिया मिली ती ।
१८४ निगत निगत बा बिरकुल थक गई ।
१८५ बा ऐसी अच्छी तराँ खेलत्ती ।
१८६ ई आम कई दिनाँ सै धरे आयँ ।
१८७ आकैं बनियाँ क्याँ सैं लै जैत ।
१८८ इतै लोधी बौहुत रहत है ।
१८९ यौ ठाकुरन कौ गाँव आय ।
१९० ई कुधईं बाम्हनन के गाँव जादाँ है ।
१९१. पानी बुँदयातईं सब ढोर बिचक गए ।
१९२ मोए जियत अपुन निसाखातिर रइयो ।
१९३ नौगाँव कौन कुधईं हैं ।
१९४ बरत आगी मैं ओखौ पाँव रिपट परो ।
१९५. पन्द्रा दिनाँ के लानैं हमखाँ महाभारत बँचवाउनैं ।
१९६ मैं एखाँ लैंय जात हौं ।
१९७ मैं नईं जानत कै नाउन आहै कै नईं ।
१९८ तुम्हाओ ऐसान कभऊँ न भूलह्यौं ।
१९९. तुम अपनौ नाँव बताव ।
२००. ठाओ रौ, तोखाँ मैं अभईं दिखैं लेत ।
२०१. यौ तारौ ई कुँची लै खुल जैहै ।

लखनवां, जिला छतरपुर

१. तुम काकी के इतै गए ते ?
२ दो रापटन मे तुमाव मूँ सूदो हो जैय।
३ व्याव मै तुमै चल्नै आय।
४ नुमासै हम तुम चलबू।
५ अपनौ कमरा सभारे राखियो।
६ अपनी ख्वार कॉ छोरयाये।
७ हल्के भइया के व्याव मै टाठी बासन सब चले गए।
८. जे हर हमायई आय धरे।
९ जी नै घर के भीतर पॉव धरो ऊ की खपरिया फोड्डारीं।
१० जो कऊ घर के भीतर आय, हम मारबी उऐ।
११. जी की अटकी हुऐ सो आपई चलौ आय।
१२ जौन बैला खजराऐ गओ तो, भाई मरखा है।
१३ जौन चमार काल पीसन आई ती बज्ज चोर, (बडी भँडऊ) निकरी।
१४ जा चाय जी की मौडी होय, बडी ऊधमयाऊ है।
१५ जौ चाय जी कौ मौडा होय, बडौ उधम्या है।
१६ डिन्डूबै सब खा व्याई करा दइयो।
१७. चमान्नै जौन जौरा दै गई ती सब टूट गये।
१८ जी मै हिम्मत होय साम्नै आ जाय।
१९ जी कै होय सो दै देबै।
२०. बासन मैं का धरो।
२१ सबरे ढोर छोर दये, का ?
२२ उतै को को है।
२३. द्वाए सैं क्वाय कड गओ ?
२४ बागी क्याय खो गए ?
२५ ऊ क्वाय जात, दिख तौ ?
२६ जे कक्रा मोई खलीती मै की नै डार दए।
२७. पाँच मन जुन्डी काए मैं बनै ?
२८ काए खौ चले आउत ?
२९ बैलन खा हरा हरा काए नई हॉकन ?
३०. काऊ सैं कछू न कइयो।
३१. ऊ के इतै काए पै बैठौ ?
३२. हल्की सिन्दूक मै कछू नइया।
३३. हमाव काम इत्ती चिरियन सौं नईं चल्नै।
३४ जैसइ कै कुत्ता निकसो ऊ नै लठिया चलाई।
३५ तुमैं कितेक चानै।
३६ तुम कौन दर्जा मैं पडत, भइया ?
३७. इत्ते रुपइयन सै तुमाव कैसै काम चलत ?
३८ तनक मई खो सरक जाव इतै चनन कौ वोरा धन्नें।
३९. उद्ना कै सौ झेल न कइयो।
४० ऊ का गओ तो।

४१ ओई घाई हमई गगा जू सपरबे खौ जैबू ।
४२ उद्ना चाय ओई आ जाय ।
४३. तुमई आ गए तौई काम पूरौ नइ भौ ।
४४ जलौ मै आउत तलौ गइया लगवा लइयो ।
४५ कै तो भइया तुम आ जइयो नइ ता भौजी खौ पौचा दइयो ।
४६ मूंड के माए चैन नइ मिलत ।
४७. जा लुगाई लरकौरी है ।
४८. हमै उकास नइया भौत काम दन्द कन्नै ।
४९. दिखाऔ भइया हमै दिख्नै ।
५०. ग्वासिली कन्नै तब सुनबू तुमैं ।
५१. तो खो जानै होय तौ चले जाव ।
५२. तुमै जानै होय ता जल्दी चले जाव ।
५३ घरैनू हौ जू ।
५४ आउत तौ भले है, मोए अच्छौ नइ लगत ।
५५ खैबे सै अब रुको नइ जात जू ।
५६ अपने मेरबानन के सगे चली गई बा ।
५७ चार मईना चौमासे भर पानी बरसत रऔ जू ।
५८ ऊ आदमी बडौ गुस्सैल है बडी झेल सै गुस्सा करै बैठो ।
५९ इकारिया सरीर कौ है ।
६०. जा गडैलू कौरी है ।
६१. तुम का सै लौटयाये ?
६२ तै मदरसै गओ तो काल, कै नइ ।
६३ मताई हन खो लुबा कै कबै आए ।
६४ रोजइ रोज तुम इतै नौन मागबे खो आ जात ।
६५ तुम काल कानपुरै पौच जैव, परौ लौ लौटयाइयो ।
६६ तुम चाय आइयौ चाय नई, हमै तौ आवनै है ।
६७ हम खूब जानियत तुमाओ करो नइ होनै जौ ।
६८ तुम पै जौ घरई मइ छाउत बनत ।
६९ अबै लौ तुम्मै उठबे बैठबे की हिम्मत नइ आई ।
७० तुमाव का नाव जल्दी बता ?
७१ ई गाव मैं तुमाई जात भौत है ।
७२ तोए ढोर कानीहौद मै बिडे है ।
७३. तुमाई खाटै आगन मे भीज रई ।
७४. भडयन्नै आदी रातै तुमाई सिन्दूक कौ तारौ टोड्डारो ।
७५ तुमाए कँधन मै रकत कडयाओ ।
७६ तुमाई आखी लाल काए है ?
७७ तुमाई काऊ सै मइ पटत लटत ।
७८. तुमाए लानै चून पिसो धरो ।
७९ तुमाई सारी साराज बुलाउत तुमै ।
८० तुमाई बाईसिक्लै (पावगाडी) काए बिगर गई ।

८१. तुम कैसे सरताए बैठे ?
८२ जौ कच्छू बुरऔ काम नइया।
८३ जा लरकी की की आय ?
८४. जौ लरका की कौ आय ?
८५ जे चाकर कौन बानिया के आय ?
८६. ई मे लम्मौ लम्मौ काय डरो दिखात ?
८७ ई परदनियाँ कौ उन्ना बडौ नीचट है।
८८ जौ न करौ तौ प्यासन मरौ।
८९ जे सबरे आम अदकच्चे हैं।
९० जे सब सुनाटू जान परत।
९१. इनकी पनइया सबयार टूट गईं।
९२ इन लुगाइन के आदमी परो से नईं आये
९३ ई पै पिछौरा औ गेडुआ धर दो।
९४ इनकी का तागत जो चमरौरा मै घुसै।
९५ ई कुमारन् नै दो ठौ मटका पोचाए।
९६ ई की उगइया कुचर गईं जू।
९७. जा बिटियन के कएँ लग्गई।
९८ ई खा काल लौटा दइयो।
९९. हमाऔ हुल्डर जेई आय।
१००. हमाई किलम जेई आय।
१०१. दूद लग रओ।
१०२ दूद लगा लो।
१०३ हरवाए सैं गइया लगवा लो।
१०४. हम कात जइत, अपनी मताई सैं सोई किभवा दैबी।
१०५ बरी लग रईं।
१०६ पुरा की लुगाईं बरी लगाउती।
१०७ चाय तौ तैं चाय लच्छ्मी बरी लगवा ले।
१०८ सब उन्ना सिम गए।
१०९ बताऊ तौ, इत्ती जल्दी कीने सी दए।
११० ऊ ने बड़ी बैन के लानै चार कुर्ती सिमवा दईं।
१११ घर भर खो एक एक सिमवा दो।
११२ रामान हो चुकी, सैरो होन लगो।
११३ बा सब सैं बतकाऔ करत, ता करत जान दो।
११४ गाडी न रीती होय ता रितवा देव।
११५. मैं रितैंय देत।
११६ मैंफर खात।
११७. ऊ ना मैं दोई खईत्तें।
११८ ऊ रोगिया खो सोई खबा दो।
११९. बैंद मराज खबाएं।
१२० उतै कौ हल्ला भौत दूर लौ सुना परत।

१२१. पडज्जी पुरान बाचत ।
१२२. मोए कछू रुपइया और देनै अबै ।
१२३ रमेश खैंबे को का सकोस ।
१२४. राम राम करबो न भूलौ ।
१२५ खेलत खेलन जी उमछान लगो (ओकाई आउन लगी) ।
१२६ रेल आउन चाउत ।
१२७ काऊ (कौनऊ) लिखइया खा बुला लो ।
१२८ नचनारन खा जान दो ।
१२९. आखरस पै उनै आउनैइ आओ ।
१३०. बौ इटॉय कौ रिवइया आय ।
१३१. खवाबे मे काऊ सैं कम नइया मै ।
१३२ ऊ अबै ममयावरे सैं आय आओ ।
१३३ ऊ खेत पै क्वा जू गाउत ।
१३४ हमनै मडवा पै हो दिखो तो ।
१३५ घाम् मै जाबे सैं ऊनै नाई कर दई ।
१३६ तुमाओ ढोर हमाए खेत मै घुसो तो ।
१३७. बा गइया पचीस रुपइया मैं आय लई ।
१३८ बे छिइया हमाई हार मै फिरती हुइए (हुए) ।
१३९ बे बसोर दूसरे गॉव मै रान लगे ।
१४० उन्नै कैऊ बेर कै बुलाओ ।
१४१ हम कौलौ बैठाएँ रइये उनै ।
१४२ ऊ पै हमाव उपाव नइया ।
१४३. महामाई उनपै खुसी आँय है ।
१४४ हम उनसैं सब कछू कै दैबू ।
१४५ उन गबान पै सब कछू किबा दैबू ।
१४६ अब उऐ काए की कमती आय ।
१४७ उऐ कीनै आए डरवा दओ ।
१४८ उनकी भैंसिया खचन मै धर रही ।
१४९ उनकी पौर मैं सब जनै काल जुरे रए ।
१५० उनकौ का बस जौ पुरापाले की बिटियन खा छेडै ।
१५१ ऊ बैलन खा सपराउत है ।
१५२ ऊ भैंसियन खा सपराउत है ।
१५३. गाडी नैं दो, क्वाय निबवाउत ।
१५४. झाँसी कोद खूब मिलत जे फल ।
१५५ हमाई किलमै कीनै चुरा लई ।
१५६ हमनै सब खा खबा पिबा दओ ।
१५७. हमाई कमीचै चुखरवन नै काड् डारी ।
१५८. जौ कागथ हम पै नई बनत बाँचत ।
१५९ मोय चार पइसा कौ गुर चानैं ।
१६०. हमै घरै जानै ।

१६१ हमाए लानै तनक कारी माटी लेताइयो।
१६२ मरत मरत लौ हमाऔ भरोसौ करत रए।
१६३. हमाई जगा पै लटोरा दो दिना काम करै।
१६४ हमाऐ भौत मजूर लगे।
१६५ हम तुमाए लानै आय बने राए।
१६६ खैबे पीबै मैं कछू इतराज नइया।
१६७ हम ई सै कछू जादा न दैबू (दैबी)।
१६८ हमाओ आंगन चार हीसा जादा है।
१६९ हमाए लानै दो ठउआ कचुल्ला लेताइयो।
१७०. हमाई खलीती बिल्कुल रीती है।
१७१ ठड के मारै हमाई उगइया सबयार ठटुर गई"।
१७२ हमाए सगे बद्दीनरान तौ न चलौ ?
१७३ कचारी मे साची साची कैबी।
१७४ हमाए इतै परसाल अच्छौ छाव भओ तो।
१७५ अगायत प० जू खाँ बुलाबू।
१७६ ल्या कै दै राखो। दै कै जात राव।
१७७ हँसा कै उसी डाँकाबे न करे।
१७८ अटाई (मचयारा) पै हो कड जइयो।
१७९ तलवा पै चलबू जू अपुन।
१८० खबा पिबा (से पालकै) बडो कर दैबो हमाऔ काम तो।
१८१ जादा का लिखिए पल्टा जरूर दइयो।
१८२ बिटिया खा हमई ल्वा लाइबू, पठै दैबू।
१८३ खातई मैं मिली ती चिट्ठी।
१८४ निंगत निंगत बा हार गई।
१८५ जे आम भौत दिनन सै आय धरे
१८६ बा ऐसै नौनै खेलत्ती।
१८७ बानिया का सै लै आऊ।
१८८ इतै लोदी भौत रात।
१८९ ठाकुरन कौ गाव आय जौ।
१९० नाय बामनन की बखरी भौत है।
१९१ पानी के बरसै सब ढोर टिरल पिल्ल हो गये।
१९२ हमाए आगू तौ तुम निरखटकै रओ।
१९३ क्यांय खाय है नओगाव।
१९४ बरत आगी मैं गोडौ खिसल परो।
१९५ पन्द्रा रोज खाँ हमैं महाभारत बैठान्नै।
१९६ मैं ई खा लैअ जात।
१९७. मोय नइया जू पतौ कै नान आऐ कै नई।
१९८ तुमाव जस कबउ न भूल्बी।
१९९. तुम अपनौ नाव बताऊ।
२००. ठाँओ रौ (ठाऐ रौ) तुमै अबै देखै लइत।
२०१ ई कुची सै बौ तारो खुल जैय।

अशोकनगर (जिला गुना)

१ तुम काकी जू कै गए ते का ?
२ दो थापरन मै तुमरो मो सूदो हो जायगो ।
३ व्याव मै तुमै चलनै परैगो ।
४ नुमास मै अपन सब चलैगे ।
५ अपनो कमरा समार के धरियो ।
६ अपनी गलेफ (फर्द) काँ भूल आए ।
७ छोटे भइया के व्याव मै अपनी सबरी थारी भँडयाई मै गई ।
८ जे अपनेई हर है ।
९ जो घर मे घुसो बोई मारो गओ ।
१० जो घर मैं घुसैगौ बौई मारो जायगो ।
११ जे की अटकैगी बौई मेरे झा आयगौ ।
१२ जौ बैल राठ गओ बौ भौत खाबे बारो है ।
१३ जो चमरिया काल पीसबै आई ती बा बडी भडैल (भडऊ) निकरी ।
१४ जा चाय जे की मौडी होय, है बडी ऊधमन ।
१५ जे चाय जे को मौडा होय, है बडौ ऊधमी ।
१६ सन्भा कै जित्ते आय सबखो खबा दइयो ।
१७ चमरिऐ जो लेजै दै गई ती, सबरी टूट गईं ।
१८ जेमै तागत होय सामू आय ।
१९. जे फै होय बौ देबै ।
२० बासन मै का धरो है ।
२१ सबरे ढोर छोर दये का ?
२२ मा को को है ?
२३ द्वार फै सै को कड गए ?
२४ भडया कितै खो भग् गए ?
२५ दिखै तौ सई, बौ को जा रओ ?
२६ जे ककरिऐं मेरे खौंसा मै कोन् नै डार दई ?
२७ पाच मन जुआर काए मैं बनैगी ?
२८ काए खो चले आ रए ?
२९ बैलन खो धीरे धीरे काए नई रिंगात ?
३० कोई सै कछू मत कइयो ।
३१ बाके झा काए फै बैठोगे ?
३२ हल्की सदूक मै कछूअई नईयां ।
३३ मेरो काम इत्ती चिरइयन सै नई चलेगो ।
३४ कुत्ता जैसोई निकरो बाने लठिया चलाई ।
३५ तुमैं कित्ती चइए ?
३६ तुम का के दरजा मैं पडत हौ ?
३७. तुम कैसै इत्ते रुपइयन सै काम चला लेत हो !
३८ नैक उत्थई खो हट जाओ, झा चनन कौ बोरा धन्नै है ।
३९ बा दिना की तरै, (घाई,) लेतलाली न करो ।
४०. बौ काँ गओ तो ?

४१ बा घाई मै सोई गगा मइया मैं न्हाने जाउगो ।
४२ बा दिना चाय बौ सोई आ जाय ।
४३ तू आओ तौई काम पूरी नई भौ ।
४४ मै आत्थौं तौ नौ गइया लगवा दइये ।
४५ चाय तुम अइयो चाय फिर भौजी खौ पौचा दइयो ।
४६ मूड दूखबे के मारै मोय चैन नइऐ ।
४७ जा बइअर बेटाबारी है ।
४८ मोय का फुरसत, भौत काम डरो है ।
४९ अच्छा, दिखाव जाय ।
५० गोस्टी कल्लऊ फिर तुमरी बात मुनउगो ।
५१ तू जात होय तौ चलो जा ।
५२ तोय जानेई है तौ चलो जा ।
५३ मै बाकी बइअर हौ ।
५४ बे जात रात है मोय अच्छौ नई लगै ।
५५ अब तौ खाबो होन ।
५६ अपनी गुइयन के सगै बा अभई चली गई ।
५७ चौमासे मै चार मइनउ पानी बरसू करो ।
५८ बौ गुस्सैल है बडी देर को गुस्सा मै बैठो है ।
५९ टीटई बानौ है ।
६० बडी नरम गडेरी है ।
६१ तू का सै लौट रओ ?
६२ तू काल इस्कूल गओ तो कै नई ?
६३ मताई खौ लिबाय कै तुम कब नौ आउगे ?
६४ तुम रोजई नोन मागबे आ जात ।
६५. तू काल नौ कानपूर पोच जायगो परौ लौट अइए ।
६६ तुम आव चाय न आव हमन तौ जरूर जायगे ।
६७ मैं खूब जान्त् हौ तोसै जौऊ नई बनेगो ।
६८ तुम सै जौ घरई छात नई बनत ।
६९ अबै तोमै उठबे बैठबे की ताकतइ नई आई ।
७० तेरौ नाव का है, जल्दी बता ।
७१. जा गाव मैं तेरी बिरादरी के आदमी जास्ती है ।
७२ तेरे ढोर कानीहौत मैं बिडे है ।
७३ तेरी खाटे ऑगन मै भीज रई ।
७४ भडयन् नै आधी रात खौ तुमाई सन्दूक को तारो तोड दओ ।
७५. तुमरे कदा सैं खून गिर रओ ।
७६ तुमाई (तुमरी) आख मैं जा ललाई काए है ?
७७ तुमरी कोऊ सैं नई बनै ।
७८ तुम खौ आटौ पिसो धरो है ।
७९ तुम खौ तुमरी सारैज बऊ बुलात है ।
८०. तुमरी साइकलें पन्चर हो गईं ।

८१. तुम का वैसेई बैठे हौ ?
८२ जौ कछू बुरो काम नईऐ ।
८३ जा कौन की मौडी है ?
८४ जौ कौन कौ मौडा है ?
८५. जे आदमी का के सेठ के है ?
८६. जा मै जौ लम्बो लम्बो का डरौ है ?
८७ जा धुतिया कौ कपडा अच्छो है ।
८८. जौ नई करौगे तौ प्यासन मर जैव ।
८९. जे सबरे आम अबै अदकच्चे है ।
९० इन सबरिन पै सोने को पानी चडो है ।
९१. इन की पन्हइयाँ बिल्कुल्लई टूट गईं ।
९२. इन बइरब के आदमी परो सैं नईं आये ।
९३. इन फै चादरै और उसीसे और लगा दो ।
९४. इनकी का बस की है, जो चमरानैं मै घुसैं ।
९५. जा कुम्हारन नै दो मथनिये पौचाई है ।
९६ जा की उगरिये कुचर गई ।
९७. जा मौडिन के कैबे मैं आ गई ।
९८ जाए काल मुरका दइयो ।
९९ जौई मेरौ होल्डर है ।
१०० जेई मेरी कलम है ।
१०१ दूद लग रओ है ।
१०२. दूद लगा लो ।
१०३ आसामी सै दूद लगवा लो ।
१०४ मै कैत्तो हौ बाई सैं सोई कैलवा दौगो ।
१०५. बरीं दिब रई है ।
१०६. बगल की बइरैं दै रई है ।
१०७. चाय तू चाय लच्छमी बे बरी दिबा दो ।
१०८. सबरे कपरा सिब गए ।
१०९ इत्ती जल्दी कौन् नैं सी दए ?
११० बानै बडी भैन खो चार कुरतियाँ सिबाई ।
१११ अब सबन खो एक एक सिबा दो ।
११२. रामान हो गई अब आल खड हो रओ ।
११३ बा सबसैं बतरात है तौ बतरान दो ।
११४. गाडी रीती है नई तौ अभई खाली करवा दऊगौ ।
११५. मै खुदई रितौय देत हौ ।
११६. सैंत खब रओ (खबत) ।
११७ बौ और मैं दोई खा रए ते ।
११८ बा मरीजैं सोई खबा दो ।
११९ हकीम जू खब्बा देगे (देइगे) ।
१२०. मां कौ हल्ला बड़ी दूर नौ सुनाई देत है ।

१२१ महराज भागवत बाच रए है ।
१२२. मोय अबै कछू रुपइया और देने है ।
१२३ रमेस, खाबै मै काए की सरम ।
१२४ जै राम जी की करबो मत भूलू करे ।
१२५ खेलत खेलत जी फिरन लगो ।
१२६ रेल आबे बारी है ।
१२७ कोई लिखबे बारे खो बुलाव ।
१२८ नचबै बारिन खौ जान दो ।
१२९ अखीर मै उन खो आनइ परो ।
१३०. बौ इटाबे मै रैत है ।
१३१. खबाबे मै मैं कोई सै कम नाई हौ ।
१३२ बौ मामन के झा सै आ रओ है ।
१३३ खेत की मेड पै बौ को गा रओ है ।
१३४. बा नै छत्त पै सै दिखो तो ।
१३५ घाम् मैं चलवे सै बा नै नाई कर दई ।
१३६ बो ढोर मेरेई खेत मै चर रओ तो ।
१३७ बा गइया पचीस रुपइयन मै लईऐ ।
१३८ बे बकइए डाग मै फिर रई होयगी ।
१३९. बे बसोड और कऊ गाव मै रैन लगे ।
१४० उन्नै तुमै कैऊ बेर बुलाव(ओ) ।
१४१ हम उनै कब नौ बिठाए ।
१४२ बा पै मेरौ कछू बस नइयाँ ।
१४३ दुर्गा मइया उन पै किरपा करत ।
१४४ मै बा सै सब कछू कै दउगो ।
१४५ उन गभन सै मै सब कछू किभा दउगो ।
१४६ अब बाय का चइए ?
१४७ बाय कौन् ने डरवा दओ ।
१४८ बा की भैंसै किचाय(गिलाव) मै फस गईं ।
१४९ बा की पौर मै काल सब जनै जुरे ते ।
१५० उनकी का मजाल जो मौडिन खो छेडै ।
१५१ बौ बैलन खो नभा रओ है ।
१५२ बौ भैसन खो नभा रओ है ।
१५३ गाडी नैह दो को निभा रओ है ।
१५४ झाँसी तनै जौ फल खूब मिलत ।
१५५ मेरी कल्मैं कौन् नै चुराईं ?
१५६. हमन् नैं सब खो जिबाय दओ ।
१५७ मेरी कमीचै चौखरन् नै काट दई ।
१५८. जा चिट्ठी मो सै पडत नई बनै ।
१५९. मोय चार पइसा कौ गुड चाइए ।
१६० मोय घर जानै ।

१६१. मोय नेक सी कारी माटी लइयो ।
१६२. बा नै मरतन मो फै भरोसौ करो ।
१६३ मेरी बजाय लटोरा दो चार दिना काम कर जायगो
१६४ मेरे खेतन पै मुलक केरे आदमी काम कर रए ।
१६५ हम तुमाई बाट देख रए ।
१६६ जेबे मैं हमै कोई हरजा नई ।
१६७. हम जासैं जादा कछू नई देयगे ।
१६८ हमाओ आगन तुमाए सैं चार गुनो बडो है ।
१६९ हमाए लानै दो कटोरा लेत अइयो ।
१७०. हमरौ खीसा रीतौ है ।
१७१ ठड के मारै हमरी उगरिऐ ठुटुर गईं ।
१७२ हमरे सग बद्रीनाथ चलहौ ?
१७३ कचैंरी मैं हम सब कछू खोल कै कै देगे ।
१७४ हमरे झा पर कै एक बडो भारी जल्सा भओ तौ ।
१७५. अगाडी साल हम नेरू (लेंडूजू) खौ बुलायेगे ।
१७६ ला कै देव, दै कै जाव ।
१७७ हासी मै टारबो अच्छी नइए ।
१७८ छत फै हो चले जइओ ।
१७९. तला की पार फै घूमबे चलेंगे ।
१८० पाल पोस कै बडो करबो हमरो फरज हैतो ।
१८१ भौत का लिखो तुम ऊतर जरूर दइओ ।
१८२ मौडी खो लिबाबे करबे हमई जाग्गे ।
१८३ रोटी जैत मैई बाय चिट्ठी मिली ती ।
१८४. चलत चलत बा भौत हार गई ।
१८५. जे आम कैई दिना के धरे ते ।
१८६. बा इत्ती अच्छी खेल रई ती ।
१८७ आकै बनिया के झा सै लै जाव ।
१८८. झा लोदी भौत रैत है ।
१८९ जा ठाकुरन की बस्ती है ।
१९० जा तरफ बाभनन के घर भौत है ।
१९१ बूदे गिरतई सबरे ढोर फैल फूट गए ।
१९२. मेरे होतन तुम निसफिकर रऔ ।
१९३. नौगॉव का के तनैं है ।
१९४ बरत आगी मै बाकौ पाव रिपट गओ ।
१९५. पन्द्राक दिन खो हमै माभारत बचवानैं ।
१९६ मै जाय लैय जात हौ ।
१९७ मै नई जानौ खवासन आयगी कै नई ।
१९८. तुमरौ ऐसान कभौ नई भूलौगो ।
१९९. तू अपनौ नाव बता ।
२००. ठाडो रऔ तोय अभई देखत हौ ।
२०१. जा कुची सै जौ तारौ खुल जायगो ।

पाली (जिला झाँसी)

१ तुम काकी इतै गए ते ?
२ दो थापरन मै तुमाव मौं सूदो होजै ।
३ व्याव मैं तुमैं चलनै आय ।
४. नुमास मै अपन तपन सोउ चलबू ।
५. अपनो कमरा समार कैं धरियो ।
६. अपनी रिजाइ कितैं भूल आए ।
७ हल्के भइया के व्याव मै अपनी मत्रर्गं टाठों चोरी चली गईं ।
८. जे हर अपनईं ऑय ।
९ जी नैं घर मैं पॉव धरो मो बोउ मारो गओ ।
१० जु कोऊ घर मैं पॉव धरै सो वेउ मारो जै ।
११. जी की बीदी हुइए सो वेऊ मोरे नॉ आय ।
१२ जौन बैल राठ गओ है बो भारी मारवे बारो हे ।
१३ जौंन चमारन काल पीसबे आइ नी बा बडी भँडऊ है ।
१४ जा चाय जी की बिटिया होवै बडी चालन है ।
१५ जौ चाय कौनउ कौ लरका होय बडो चाली है ।
१६ दिन डूबे जु कोऊ आ जॉय सब खो बियारी करा दियो ।
१७. चमारन जौन जेवरा दै गई ती वे सब टूट गये ।
१८ जी मे जोर होबै बौ हमाए सामैं आबै ।
१९ जी के लिगॉ होबै सो दै देबे ।
२० बासन मैं का धरे है ?
२१ का सबरे ढोर छोर दए ?
२२ उतै को को है ?
२३. दुवारे सें को-को कड गओ ?
२४ डॉकूं की बगलै भग गये ?
२५ देखौ, बौ को आ जा रओ ?
२६ जे कटोरियाँ मोरे खलीता मै कौने धर दईं ।
२७. पाँच मन जुनई काय मै बनै ?
२८ काए खो चले आउत ?
२९. बैलन खौं हौलै हौलै काए नईं हॉकत ?
३०. कोऊ से कछू नईं कइयो ।
३१. ऊ के इतै काए पै बैठौ ?
३२. हल्की बगसिया मै कछू नइयॉ ।
३३. मोरो काम इनेक चिरइयन से नईं चलै ।
३४ कुत्ता जैसउ कडे ऊसउ लठिया दे दइ ।
३५. तोय कितेक चानै ?
३६. तू कै दरजा मे पड रओ ?
३७. तैं इतेक रुपइयन मै कैसे काम काड लेत है ?
३८ तनक माँड्खौ सरक जइए कायकै इतै चनन कौ बोरा धरने है ।
३९. उदना घाँईं झेल जिन करिओ ।
४०. बौ कॉ गओ तौ ?

४१ ओई घाँई हम सोउ गगाजू खौ सपरबे जैय ।
४२ ऊ दिनाॅ चाय बे सोउ आ जै ।
४३ तू आओ तोउ काम पूरो नइँ भओ ।
४४ जौलौ मै आउत हौ तौलौ गइया लगा लियो ।
४५ चाय तुम आइयो चाय भौजी खौ पठै दियो ।
४६ मूड के मारै मोय साता नोइँ परत ।
४७ जा लुगाई मौडा वारी है ।
४८ मोय उकास क्याय है, भौत काम डरो है ।
४९ दिखइये रे नाॅय ई खो ।
५० ढोरन को काम कर लऊँ ई के पछाइँ बैट कै तोरी बात सुनो ।
५१ कजत तै जात होय तो जा ।
५२ कजात तोय जानै होय तौ झेल जिन कर ।
५३ मैं ऊ की घरबारी आॅव ।
५४ बे चाय जब जात है मोय नौंनौं नई लगत ।
५५ खावे खौं अब रुकौ नई जात ।
५६ अपनी गुइँयन के सगे बे अबई चली गई ।
५७ चार मइना बसकारे मैं पानी बरसत रओ ।
५८ बौ नाराज है, बडी देर सैं नाराज बैठो है ।
५९ भारी पतरे आँग को है ।
६० भाई कोंरी गडैलू है ।
६१ तूँ कितै सैं लौट आओ ?
६२ तूँ काल मदरसा गओ तो कै नई ?
६३ मताई हरन खौं लुआ कैं तुम सब जनैं कबै आओ ?
६४ तुम रोज नौंन माँगबे आ जात ।
६५. तूँ काल नौं कानपुर पौंच जैय और परो नौं लौट आइये ।
६६ तुम औरैं आओ चाये नई आओ मैं जरूर ज्यो ।
६७ हम खूबई जानत कै तुम सैं ज्योउ नैं हुइये ।
६८ तूँ सैं जौ घरई छाउतन नई बनत ।
६९ अबै तूँ मैं उठबे बैठबे की तागत नई आई है ।
७० तोरो नाॅव का है झट्टई बता ।
७१ ई गाॅव मे तोरी जात के लोग जादाँ है ।
७२ तोरे ढोर काॅनीभौत मे पिडे हैं ।
७३ तौरी खाटे आँगम मे भींज रई है ।
७४. भँडयन् ने आदी राते तुमाये सन्दूक कौ तारो टोर डारे ।
७५ तुमाये कदा सैं लोउ टबक रओ ।
७६ तुमाई आखन मे जा ललामी काये है ।
७७. तुम लोगन की काउ सैं नई बनत ।
७८ तुमाए लाजें चून पिसे धरे ।
७९. तुमे तुमाई साराज टेर रई है ।
८० तुमाई बाईसिकले पचर हो गई

८१ तुम का ठलुआ बैठे हो ?
८२ जौ कछु बुरओ काम नोई ।
८३ जा मौडी कौंन की आ ?
८४ जौ लरका कौंन को आ ?
८५ जे नौकर कौन सेट के आँ ?
८६ ई मे लामो लामो का या डरे ।
८७ ई धुतिया को उन्ना भारी नीचट है ।
८८. जो नई करौ तौ तुम प्यास मै मर जैऔ ।
८९. जे सबरी अमियाँ अबै अदपकी है ।
९० इन सब पै सोने को पानी चडे है ।
९१ इनकी पनइयाँ निट्ठुअई टूट गई ।
९२ इन लुगाइयन के मुस परो से नई आये है ।
९३. ई पै पिछौरा औ गेंडुआ और बिछा दो ।
९४ इनकी का मजाल जो अब चमरौला मै घुसें।
९५. ई कुमारन ने दो मटकिया पौंचाई हैं ।
९६. ई की नुगरियाँ कुच गई हैं ।
९७ जा बिटिअन के कैबे मे आ गई ।
९८ इऐ काल लौटा दिओ ।
९९ मोरो खत जेऊ आ ।
१००. मोरी कलम जेइ आ ।
१०१. दूद लग रओ ।
१०२. दूद लगा लो ।
१०३. नौकर सैं दूद लगवा लो ।
१०४ मैं कत तों हों मताइ सो सोउ कुवा दैंऔं ।
१०५ बरीं दई जा रई ।
१०६ पुरा की लुगाई बरीं दै रई है ।
१०७ तूँ कै लच्छमी उन बरियन खों दुआओ ।
१०८ सब उन्ना सिएँ गये ।
१०९ भलाँ इतेक जल्दी कौन नैं सिंए ।
११० ऊनें बडी बैन की चार ठउआ कुरतियाँ सुआई ।
१११ अब सब खों एक एक सुआँ दो ।
११२ रामान हो चुकी सैरो हो रओ है ।
११३. बा सबसें बात करत है तो करन दौ ।
११४ गाडी खाली है नईं तो अबई खाली करवा दैओ ।
११५ मै खुदइ रितैंय देत ।
११६. मछों खाइ जा रई ।
११७ बौ और मैं दोइ खा रए ते ।
११८ ऊ रोगी खों सोउ खुवा दो ।
११९ बैदजू खुवा दैंय ।
१२० माँ को हल्ला भारी दूर नौं सुनाइ देत है ।

१२१ पुरेत जू भागवत सुना रए हे।
१२२. मोखों अबे कछू और रुपइया दैने हैं।
१२३. रमेश खाबे मैं का सकोच।
१२४ राम राम करबो नई भूलौ।
१२५ खेलत खेलन हमाओ जिउ उकतान लगे।
१२६ गाडी आबे बारी हे।
१२७ कौनऊँ लिखबे बारे खों बुलाऔ।
१२८ नाचन बारिन खों बुलाऔ।
१२९ आकरस खौं उनैं आउनई परे।
१३०. बे इटावा के रैबे बारे है।
१३१ खुआबे मे हम कौंन काऊ सैं कम है।
१३२ बौ मामा के घर मैं आ रओ है।
१३३ खेत की मेड पै बौ को आ गा रओ है।
१३४ ऊनै छत पैसें ढूँको तो ?
१३५ घामे मे चलबे सैं ऊनैं नाईं कर दइ।
१३६. बौ ढोर मोरे खेत मै चर रओ तो।
१३७. बा गइया पच्चीस रुपइया में लइ है।
१३८. वे छिरियाँ हार मै फिर रई हुइये।
१३९ वे बसोर कौनऊ दूसरे गाँव में रन लगे।
१४० ऊनैं तुमैं केउ दार बुलाव।
१४१ मैं ऊखौं कब नो बैठाय रऔ।
१४२ ऊपै मोरो बस नई चलत।
१४३ दुरगा मइया ऊपै भाइ खुसी है।
१४४ मै ऊसैं सब कछु कै देयौं।
१४५ उन गवाइयन सैं मैं सब कछू कुआ दैयो।
१४६ अब ऊखौं कौन बात की जरूरत है।
१४७ ऊखौं कौन नैं डरवा दओ ?
१४८ ऊकी भैंसे खचा मे फँस गयीं।
१४९ ऊकी पौर मैं काल सबरे जुरे हते।
१५० उन लोगन की का ताब है जो हमाय पुरा की बिटियन खों छेडे।
१५१ बो बैलन खों सपरा रओ है।
१५२ बो भैंसन खों सपरा रओ है।
१५३ गाडी निअ दो कोआ नुवाँ रओ है।
१५४ झासी कुदाईं जो फल खूब मिलत।
१५५ मोरी कलमे कौन नैं दुका लइँ ?
१५६ मैंने सब खों खुवा पिया दओ।
१५७ मोरी कमीचें चोखरन नैं काट डारीं।
१५८ जा चिट्ठी मोसैं पडतन नई बनैं।
१५९ मोखों चार पइसा को गुर चानैं।
१६०. मोय घर जानैं।

१६१ हमाय लानैं तनक मी कारी माटी लेत आइयो ।
१६२ ऊनैं मोपे मरत मरन नौं भरोसौ करे ।
१६३ मोरी जाँगाँ लटोरा दो दिनाँ काम करै ।
१६४ मोरे खेतन पै भारी आदमी काम कर रये ।
१६५ मैं तुमाय लानें रुके हौं ।
१६६ खाबे मै मोखों कौनऊँ उजर नइयाँ ।
१६७ मैं ईसैं जादाँ कछू नइँ दैंओ ।
१६८ मोरो आँगन तुमाय सैं चौगुनो है ।
१६९ मोरे लानैं दो ठउआ बिलियाँ लेत आइयो ।
१७० मोरो खलीता बिलकुलइ रीतो है ।
१७१ ठड के मारे मोरी नुगरियाँ बिलकुलई ठिटुर गईं ।
१७२ मोरे सगे बदरीनाथ चलौ ।
१७३ कचैरी मै हम सब साँसी साँसी कै दै ।
१७४ हमाय इतै परकी साल एक बडौ भारी जलसा भओ तो ।
१७५. परकी सालै हम सव जनैं पडित नेहरू खौं बुलाँय ।
१७६ ल्या कैं दै दो, दै कें चले जाऔ ।
१७७ हँस कै बैंलाबो अच्छौ नइयाँ ।
१७८ बान पै हौ कड जइयो ।
१७९ तला पै टैंलन चले ।
१८० खुवा पिया कैं बडो करबो हमाओ काम हतो ।
१८१ जादाँ का लिखे आप जुआव जरूर दिओ ।
१८२ बिटिया खों लुआवे पठैवे हमई जैंय ।
१८३ खातई मे उये चिट्ठी मिली ती ।
१८४ निगत निगत बा निठुअई हार गई ।
१८५ जे अमियाँ भौत दिनन की धरीं ती ।
१८६ बा ऐसी नौनी खेल रई ती ।
१८७ आकैं बाँनियाँ के ना सैं लै जाऔ ।
१८८ इतै लोदी भौत बसत है ।
१८९ जा ठाकुरन की बसती है ।
१९० ई तरफ बामनन की बसीगत भौत है ।
१९१ बूँदे परतनई सब ढोर बिडर गये ।
१९२ हमाये होत आप बे फिकर रैबे ।
१९३ नौगाँव कितायँ है ।
१९४ बरत आग मै ऊको पाँव रिरक परे ।
१९५ पन्दरा दिनाँ खों हमै महाभारत बँचवाउनैं है ।
१९६ हम इयै लैंय जात ।
१९७ मैं नोइँ जानत खबासन आउनैं के नई ।
१९८ तुमाओ ऐसान कबउँ नई भूलैं ।
१९९ तुम अपनौ नाँव बताव ।
२०० ठाँडे रौ तोय अबई देखत ।
२०१ जौ तारो ई कुची सैं खुल जै ।

१ तुम कक्को के इतै गये ते ?
२ दो थापरन मे तुमाओ मौ सीदो हो जै ।
३ व्याव मे अपुन को चलनै परहै ।
४ नुमास मे हमऊ तुमऊ चलिये ।
५ अपनो कमरा समार के धरियो ।
६. अपनी गलेफ (सुपेती) कितै भूल आये ।
७ हल्के भईया के व्याव मैं अपनी सब टाठी चोरी चई गईं ।
८ जे हर अपनेई हैं ।
९ जीनै घर के भीतर पाव धरो, कै बोई मारो गओ ।
१० जो घर के भीतर पाव धरहै बोई मारो जैहै ।
११ जाकी अटकी हूहै बो हमाये इतै आहै ।
१२. जौन बैला राठै गओ है बो भौत चारू है ।
१३ जौन चमारे काल पीसन आई ती बे भौत भडऊ कढी ।
१४ जा चाये जी की बिटिया होय बडी चबाइन है ।
१५ जौ चाये जी कौ लरिका होय, बडौ चबाई है ।
१६ अथये के जो जो आ जाय, सब को खबा दिइयो ।
१७ चमारै जौन डोरे दै गई ती वे सब टूट गईं ।
१८ जीमैं तागित होय सो अगाऊ आ जाय ।
१९ जी पै होय बौ दै देय ।
२० बासन मै का धरो ।
२१ का सब ढोर (चौपे) ढिल गये ।
२२ उतै को को है ?
२३ दुआये से को कढ (निकर) गए ?
२४ डॉकू कितै तर भग गये ?
२५ देखौ, बौ को जा रऔ ?
२६ जे ककरा हमाई जेब मै कीनै डार दये ।
२७ पाँच मन जुन्डी काये मै समैहै ।
२८. काये चये आ रये ?
२९ बैलन को हरे हरे काये नई चलाउत ।
३० काऊ से कछू नई कईयो ।
३१ बाके हिनाँ (इतै) काये पै बैठहौ ?
३२ छोटी (नेकसी) सिन्दूक मे कछू नईया ।
३३ हमाओ (मोरो) काम इत्ती चिरईयन सें न चलहै ।
३४ कुत्ता जैसेई निकरो, ऊनै लठिया मार दई ।
३५ तुमे कित्ती चईये ।
३६ तुम कै दरजा मै पढत ?
३७. तुम इत्ते रुपईयन से कैसे काम चला (निकार) लेत ?
३८. नेक उतई को सरक जाव, काय से इतै चनन कौ बोरा धन्ने है ।
३९. बा दिन की नाई देर नई करौ ।
४०. बौ कितै गओ हतौ ।

४१ बा की तरै (नाई) मैंऊ गगा जी सपरन जैहो।
४२ ऊ (बा) दिन चाये स्यात बौऊ आ जाय।
४३ तैऊ आऔ, ताऊ तौ काम पूरौ न भओ।
४४ जब नौ मै आऊत, तब नौ गईया दुआ लिइओ।
४५ तुम आव चाये भोजी को पौचा दैव।
४६ मुँड के मारे मोय चैन नई मिलत।
४७ जा जनी लरकौरी है।
४८ मोय औसर कितै, भौत काम डरो।
४९ भले नेक जाय दिखाव।
५० उसार कल्ले तई फिर हम वैठके तुमाई बात सुनें।
५१ ते जात होय तौ जा।
५२ तोय जानेई है, तौ देर नई लगा।
५३ मै (हम) उनके घर से है।
५४ वे जात रहत है, अकेले मोय अच्छो नई लगत।
५५ खाये से अब नई रुकौ जात।
५६ अपई सकियन के सगै बा अबई-अबई चई गई।
५७ चार मईना चौमासे भर पानी बरसत रऔ।
५८ बौ किरोधी हैगो, भौत देर से गुस्सा मै भरौ बैठो।
५९ इसकरी देव कौ हैं।
६० भौत मुलाम लौकिया है।
६१ ते कितै से लौट परौ ?
६२ ते काल मदरसे गओ तौ कै नई ?
६३ अम्मा (मताई) हरन को लिबा के अपुन सब जने कबै आहौ ?
६४ तुम रोज नोन मॉगन आ जात।
६५ ते काल नो कानपुरै पौच जै, परो नो लौट परिये।
६६ तुम सब जने आऔ चाये नई आओ, हम अबसई जैहे।
६७ हम खूब जानत तोसे जौऊ ना हूहै।
६८ तो से जौऊ घर छाउत नई बनत।
६९ अबै तो मे उठबे बैठबे की तागित नई आई।
७० तोरौ नाव का है, जल्दी बता दै।
७१ जा गाव मे तोरी जात (बिरादरी) के जादा है।
७२ तोये (तोरे) ढोर कानीहौद मे बिडे।
७३ तोई (तोरी) खटिया आगन मे भीज रईं।
७४ चोरन (भडियन) नै आदी रातै तुमाई सिन्दूक कौ तारो टोर दओ।
७५ तुमाये कँधा से लोऊ टपक रओ।
७६. तुमाई आख लाल काय है ?
७७ तुम लोगन की काऊ से नई पटत।
७८ तुमाये लाने चून पिसौ धरौ।
७९. तुमाई सरज बुला रई।
८० तुमाई साईकिलें (पागाडी) पन्चर हो गईं।

८१ तुम का सरते बैठे ?
८२ जौ कोऊ (कछू) बुरौ काम नईयाँ ।
८३ जा बिटिया की की है ?
८४ जौ लरका की कौ है ?
८५ जे नौकड की सेट के है ?
८६ जामे लम्बो लम्बो जी का डरो ?
८७ जा धुलिया कौ कपडा भौत मजबूत है ।
८८ जौ नई करहौ तौ तुम पियास मे मर जैव ।
८९ जे सबेरे आम अबै अदपके है ।
९० इस सब पै सोने कौ पाँई चढो ।
९१ इनकी पनईयाँ बिरकुल टूट गईं ।
९२ इन जनियन के आदमी परो से नई आये ।
९३ ई पै चादरा औ तकिया और लगा देव ।
९४ इनकी का दम कै अब चमडौरा मे घुस पाये ।
९५ जा (ई) कुमारिन ने दो मटका पौचाये ।
९६ जा की उगइया कुचर गईं ।
९७ जा बिटियन के कहे मे आ गई ।
९८ जा को काल लौटा दिईयो ।
९९ हमाव हुडिल जौई है ।
१०० हमाई कलम जई है ।
१०१ दूद दोव जा रओ ।
१०२ दूद दो लेव ।
१०३. नौकड से दूद दुवा लेव ।
१०४ हम तौ कतई है, मताई सेउ कबा देयू ।
१०५ बरी दई जा रईं ।
१०६ परोस की जनी बरी दै रईं ।
१०७ तें कै लच्छमी उन बरियन को दिबा ले ।
१०८ सब कपडा सिम गये ।
१०९ बाभा, इत्ती जल्दी कीनै सी दये ।
११० ऊने (बाने) बडी भैन को चार कुर्त्ती सिमवाई ।
१११ अब सब को एक एक सिमा देव ।
११२ रामान बच्चुकी, अब सैरो हो रओ ।
११३ बा सबई से बाते करत, तौ करन्दो ।
११४ गाडी रीती है, कै नई, नई तौ अबई रितवा दैहै ।
११५ हम खुद रितये देत ।
११६ सहत खब रई ।
११७ बौ औ हम दोउ जने खा रये ।
११८ बा रोगियाऊ को खबा देव ।
११९ बैद जू खबवा दैहै ।
१२०. उतै कौ हल्ला भौत दूर नो सुनात ।

१२१ पुरोत जू भागवत सुनै रये ।
१२२ मोय अबै कछू रुपईया और दैवे को हेगे ।
१२३ ऐ रमेश, खावे मे का सकुचाव ।
१२४ राम जुहार करिबौ नई भूलियन ।
१२५ खेलत खेलत जी मचलन लगौ ।
१२६ गाडी आउन को है ।
१२७ कौनऊ लिखईया को टेरौ ।
१२८ नचनारिन को जान देव ।
१२९ अखीर मे उने आनेई परो ।
१३० बौ इटावे कौ है ।
१३१ खिलाबे मे मै काऊ से कम नईयां ।
१३२ बौ अम्मा के इतै से आ रओ।
१३३ खेत की मेड पै बौ को गा रओ ।
१३४ बाने छत पैसे ढूंको हतो ।
१३५ घास मे चलवे से बाने इन्कार कर दओ ।
१३६ बौ ढोर मोरे (हमाये) खेत मे चरत्तो ।
१३७ बा गईया पच्चीस रुपईया मे लई गई ।
१३८ बे छिरिया हार मे फिर रई हूहै ।
१३९ बसोरन की बा बसीकत कऊ और गाव मे बस गई ।
१४० उन्ने तुमे कैऊ बार बुलवाओ।
१४१ हम उनको कवनो बैठारे रये ।
१४२ बापै हमाओ बस नई चलत ।
१४३ दुरगा मईया उन पै पिरसन्द हें ।
१४४ हम बासे सब कछू कै दे ।
१४५ उन गवाअन से हम सब कछू कबा दे ।
१४६ अब बाऐ का बात की कमी ।
१४७ बाको कीने डरवा दऔ ।
१४८ बाकी भैंसे गिलारे मे फस गई ।
१४९ बाकी पौर मे काल सब जने इखट्टे भये ते ।
१५० उन लोगन की का दम कै मुहुल्ला की बिटियन को छेके ।
१५१ बौ बैलन को सपरा रऔ ।
१५२ बौ भैंसन को सपरा रऔ ।
१५३ गाडी नै देव, को नवा रओ ।
१५४ झासी तर जौ फल खूब मिलत ।
१५५ हमाई कलमे कीने दुका लई ।
१५६ हमने सबको खबा पिबा दओ।
१५७ हमाई कमीचे चुखरन ने कतड्डारी ।
१५८ जा चिठिया हमसें (मोसे) नई पडत बनहै ।
१५९ मोय चार पईसा कौ गुर चईये ।
१६० मोय घरै जाने ।

१६१ हमाये लाने नेक कारी मट्टी लये आईओ ।
१६२ बाने मरत खन नो मोपै भरोसो राखौ ।
१६३ हमाई जगा पै लटोरा दो दिना करहै ।
१६४ हमाये खेतन पै भौत से मंजूर काम कर् रए ।
१६५ हम तुमाये लाने रुके ।
१६६ आबे मे हमे कोऊ इतराज नईया ।
१६७ हम जासे जादा कछू न दैहै ।
१६८ हमाओ आगन तुमाये से चार हीसा है ।
१६९ हमाये लाने दो ठौरे कटोरा लये आईओ ।
१७० हमाई जेब बिरकुल खाली डरी ।
१७१ ठड के मारे हमाई उगइँयाँ बिरकुल ठिटुर गई ।
१७२ हमाये सगे बद्दरीनाथन चलहौ ?
१७३ कचैरी मे हम सब साप साप कै दे ।
१७४ हमाये इतै पर की साल एक भारी जिल्सा भओ तौ ।
१७५ पर की साल हम सब जने प० नेरू जी को बुलैहै ।
१७६ ल्याके दै देव, औ दैके चले जाव ।
१७७ हँस के टार दैबो अच्छो नईया ।
१७८ छत्त पै भयें कढ जईयो ।
१७९ तला की पार पै घूमन चलहै ।
१८० खबा पिबा के बडो कर दैबो हमाओ काम हतो ।
१८१ जादा का लिखे, अपुन ज्वाब जरूर दिईयो ।
१८२ बिटिया को लिबाउन पठाउन हम जैहे ।
१८३ खातई मे उये (बाये) चिठिया मिली ती ।
१८४ चलतई चलत मे बा बिरकुल हार गई ।
१८५ जे आम कैऊ दिन से धरे हते ।
१८६. बा ऐसे अच्छे खेल रई ती ।
१८७ आके मोदी (बनियहँ) के इतै से लै जाव ।
१८८ इतै लोधी जादा बसत ।
१८९ जा ठाकुरन की बस्ती है (इतै ठकुरास जादाँ है) ।
१९० इतै तर बामनन की बस्ती जादा है ।
१९१ बूदे परतन खन, सब ढोर इतै उतै बगर गये ।
१९२ हमाये होत भये आप बेफिकिर रऔ ।
१९३ नौगाँव कितै तर है ।
१९४ बरत आगी मे बाको गोडो सरक परौ ।
१९५ पन्द्रा दिन के लाने हमे महाभारत बँचवाउने ।
१९६ हम जायै (इयै) लये जात ।
१९७ मैं नई जानत नान आहै कै नई ।
१९८ तुमाव ऐसान कबउं नई भूलहौ ।
१९९ तै अपनौ नाव बता ।
२०० ठाडौ रै, तोय अबइ समझत ।
२०१. जौ तारौ जा कुची से खुल जै ।

सांगर बेडा खुर्द (होशंगाबाद)

१ का तू काकी खा गव थो ?
२ दो तमाचे मे तेरो मो सीधो हो जाहे ।
३ बिहाव मे तुम्हे चलनो पडे ।
४ मेले मे अपन चल्हेंगे ।
२२ भॉ कौन कौन है ?
३३ मेरो काम इत्ती चडिइयो से नइँ चले ।
३६ तू कौन सी किलास मे पढे है ?
४० वौ कहाँ गव थौ ?
४१ वाके सरीखो मै हूँ गगा जू मे नहा हूँ ।
४९ दिखो तो जाहे ।
५१ तोहे जानो हो तो जा ।
६० गडेली बडी लुचलुची है ।
१०१ दूद लग रव है ।
१३२ वो मामा के हा से आ रव है ।
१३४ वा ने छत पे मे झाँको थो ।
१३६ वो ढोर मेरे खेत मे चर रव थो ।
१४० उन ने तुम्हे कैइ बार बुलाव ।
१४१ मैं वाहे कौ नौ बिठारे रहूँ ।
१४३ देवा वा पे पिरसन्न है ।
१४७ वाहे कौन ने डरवा दवो ?
१४९ वाकी दलान मे सबरे इक्टट्टे भए थे ।
१५१ वौ बैलोहे सपडा रव थो ।
१५४ झासी तरफ ऐसो फल मिले है ।
१५५ मेरी कलम कौने चोर लई ?
१५६ मैंने सभे खबा पिया दव ।
१६० मोहे घर जानो है ।
१६३ मेरी बित्तल मे लटोरा दो दिना काम कर
१६४ मेरे खेत मे मुतके वनहार लगे है ।
१६६ मोहे खाने मे कोई उजर नही ।
१६९ मेरे काजे दो कटोरा लि आइयो ।
१७० मेरो खीसा रीतो है ।
१७३ कचेरी मे मै साफ माफ कह दहूँ ।
१७५ पर की साल हम नेहरूजिहै बुलाहे ।
१७७ हँस के बात टारनो अच्छो नइँ ।
१८१ जादे का लिखूं, जल्दी जवाब दइयो ।
१८२ मौडीहै लेबे भेजबे मैं जाहूँ ।
१८६ जे आम मुतके दिन से धरे थे ।
१८७ आ के बनियाँ खा से ले जइयो ।
१८८ भाँ लोदी बहुत रैवे है ।
१९५ एक पखवाडे महाभारत बिठाहे ।

हीरापुर (जिला सागर)

१ आप काकी कै आँय गए ते ?
२ दो तमाँचा मै टेडो मों हो जैय ।
१३. जौन चौदरन (चमारन, हरवान, पिसनारी) काल पीसन आई ती, ऊ बडी भँडऊ निकरी ।
२४ डाँकू क्याँय खौं भाग गए ?
२५ दिखियो, क्वाय जात ?
२६. जे ककरा हमाए खीसा मै कीने धर दए ?
२८. इतै काए खौ चले आउत औ ?
३३ हमाओ काम इत्ती चिरइयन सै नै चलै ।
३९. उदनाँ घाँई झेल न करियो ।
४७. जा लरकौरी लुगाई आय ।
५३ हम ऊ की घरैनी आँय ।
६० भौत कौरी गडैलू है ।
७१ ई गाव मै तुमाई बिरादरी मुतकी है ।
८२ जौ काम बुरओ नओइँ ।
८३ जा लरकी की की आ ?
८४ जौ लरका की कौ आ ?
८५. जौ हरवाव की कौ आ ?
८९. ई पै सोने कौ पानूँ आय चडौ ।
९१ पनइयाँ इकाउ टूट गईं ।
१०४ हम कात्त है मताई मे मोउ क्वा देय ।
१०७ कै बिन्नाँ कै तै चली जा, बरीं दिबा ले ।
१०९ इत्ती जल्दी कौनै सीं दए ।
११६. मच्छौं खात ।
११७ हम तुम दोई खात्तें ।
११८. उऐ ख्वा दे ।
१२३ खाबे मे काए सकुसत ।
१३० बौ खजुरए कौ रैबे बारौ आय ।
१३८ बे बुकइयाँ हार मै फिरत ।
१४८ ऊ की भैसियाँ गिलाए मै गप गईं ।
१५१ ऊ बैलन खौ सपराउत है ।
१५२ ऊ भैसन खौ लुराउत है ।
१५३ जा गाडी नै दे, क्वाय न्वाउत ।
१५६. हम ने सब खौ ख्वा प्या दओ ।
१५८ जा चिठिया नइँ बाँचतन बनत ।
१६१ हमे तनक सी कल्लू माटी लेत आइयो ।
१६७. हमे अदकारौ कछू नइँ देनै ।
१७५. अँगाऊँ की साल प० नेडू खौ बुलाएँ ।
१८९ ठकरायसो गाँव है जौ ।
१९७ हम नइँ जानत, वा खबासन आऐ, कै न आऐ ।

कबरई (जिला हमीरपुर)

१. अपुन काकी के इतै गए हुते ?
२ दुय लप्पडन माॅं तुम्हार मौं सूधो हो जैहै ।
४ नुमास माॅं हम तुम (अपुन तुपन) सोउ चलबी (चलिहैं) ।
११. जेखी अटकी हूहै, मोरे इतै आहै ।
१३. जौन चमन्नी काल पीसैं आई ती, वा बडी चोट्टी निकरी ।
१४ या चाय जी की बिटीना होय, बड़ी ऊधमिन है ।
२५ द्याखौ, वा क्वाव जाय रओ है ।
२६. ए ककरा मोरी खलीथी माॅं केनैं डार दए ।
२७ एक पाथे जुन्डी क्यह्याॅं अँटहै ।
३६. तुम कौनी दरजा माॅं पर्हुत हौ ?
३८ तनाॅं वहै खँ सरक जाव, काए सैं इतै चना को ब्वारा धरै खँ है ।
४१ ऊ की नाँई महूँ गगा मइया मँ सपरबे खँ जैहौ ।
४७. ई मेहरिया लरकौरी है ।
५३. मै ओखी गुट्टी (दुल्हैन) आॅव (हौं)।
५८ ऊ गुस्सैल है, बडी घ्यार से गुस्साओ बैठो है ।
५९ वा इकहरी द्याॅंव को है ।
१०४ मै कहत्तहौ, बाइयउ से कहवाऊँ ।
११० ऊ नै जिज्जी खाँ चाट्ठा कुर्ती सियाॅंई ।
११६ मँहपर खाओ जात है ।
११७ वा औ मै दोऊ जने खात्त ।
११८. वा बिजारउ खँ खबाय देव ।
१२३ रमेश, खाँय मँ का सॅंकोस ?
१२४. जुहार करबो न बिसरियो ।
१२५ ख्यालत-ख्यालत उब्काईं आवै लागी ।
१२६ गाडी आवै बारी (आवतई) है ।
१२७. कौनौ लिखइया खँ बुलाव ।
१२८ नचिनियन खॅं जाँय देव ।
१३६ वा गोरू मोरे खितवा माॅं चरत्तो ।
१४७ वा खाॅं केनैं डरवा दओ ?
१५६ मैंने सब खाँ खबाय पिबाय दओ ।
१५९ म्वाॅंखाॅं चार पइसन कौ गुर चहै खॅं है ।
१६० म्वाॅंखाँ धरै जाॅंय खँ है ।
१६४ मोए ख्यातन माँ भौत से चैतुआ (रोजिहा) काम कर रए हैं ।
१७०. हमाऔ खलीता तौ रीचो है ।
१७७ हँस कै बँहटाबो नीको नइयाँ ।
१७९ तला के किनारै घूमैं खँ चलबी ।
१८२ बिन्नू खँ लिवाबे पठाबे खँ हमई जैबी (जाहैं) ।
१८८ ह्याँ लोदी भौत रअत है ।
१९३. नौगाँव कौनी कनैं है ।
१९६. मैं या खँ लएँ जात हौं ।

विशिष्ट शब्दावलि

कुटुम्बी और नातेदार

बाई = माता जी
ओरी = माता जी
दद्दा = पिता जी
लुगाई = औरत, पत्नी
लुगवा = आदमी, पति
बइयर = औरत, पत्नी
भौजी ~ भुज्जी = भाभी
लाला = देवर, साला, बहनोई, दामाद, ननदोई, साढू
बिन्नूं = बहिन, छोटी ननद
बिन्नाँ + सेली = मित्र (सम्बोधन)
आजी = पिता की माँ (सम्बो० मे नहीं)
अजा = पिता के पिता (सम्बो० मे नही)
बब्बा = पिता के पिता
बऊ = पिता की माँ
मम्माँ = मामा
माँईं = मामी
कक्का = चाचा
काकी = चाची
जिज्जी = बडी बहिन
जिजी = जिठानी
दाव्जू = जेठ
भउवा = बडे बहिनोई
गुइँयाँ = साथी, सहेली
फूपा = फूफा
फुआ = फूफी
नाँती = पुत्र (पुत्री) का पुत्र
नाँतिन = पुत्र (पुत्री) की पुत्री
पन्ती = पुत्र (पुत्री) के पुत्र (पुत्री) का पुत्र
पन्तिन = पुत्र (पुत्री) के पुत्र (पुत्री) की पुत्री
सन्ती = पुत्र (पुत्री) के पुत्र (पुत्री) के पुत्र (पुत्री) का पुत्र
सन्तिन = पुत्र (पुत्री) के पुत्र (पुत्री) के पुत्र (पुत्री) की पुत्री
हल्कौ = सबसे छोटा
मँझलौ = बीच का
सँझलौ = मँझले से छोटा
नन्नाँ = बडा भाई
ननाँ = माता जी के पिता
नाँनीं = माता जी की माँ
मौंडा = लडका या पुत्र
मौंडी = लडकी या पुत्री
लौंडा = लडका या पुत्र
लौंडिया = लडकी या पुत्री
डुकरा = बूढा
डुकरिया = बुढिया
सरज = पत्नी के भाई की पत्नी
पुरखा = पूर्वज
राँड = विधवा
रँडुवा = विधुर
नतैत = नातेदार
पाहुनैं = मेहमान
घरैत = घर के
मौसी = मौसी
दचोरानी = देवर की पत्नी
बहिनौता = बहिन का लडका
जिठौत = जेठ का लडका
मौसिया = मौसा

शरीराग

हाँत = हाथ
पाँव् = पैर
गोडौ = पैर
पेट = पेट
भत्यान = पेट (हेयार्थ)
हड्डा = हाड
हड्‌रा = हाड
रकत = खून
गटा = आँख का श्वेत-भाग
नाँक = नाक
काँन = कान

मूं ~ मौं	=	मुँह
आँखी	=	आँख
मूँड	=	सिर
जी	=	दिल
घाँटी	=	गला, गर्दन
घिँची	=	गर्दन
गरौ	=	गला, गर्दन
खलरिया	=	खाल
जीब	=	जीभ
नौं ~ न्यों	=	नाखून
उँगरिया	=	अँगुली
ऊँठा	=	अँगूठा
औंठ	=	होठ
जाँग ~ राँग	=	जघा
पींट	=	पीठ
कर्ह्या	=	कमर
कर्ह्याई	=	कमर
दयॉय्	=	बदन
डाँडी	=	दाढी
अँसुआ	=	आँसू
टौंडी	=	टुड्ढी
बखौरौ	=	कधो के नीचे का पिछला भाग
टक्नाँ	=	पिंडली और पैर का जोड का अग
कौंचौ	=	पहुँचा (wrist)
पिंडरी	=	पिंडली
घूँटौ	=	घुटना
टेहुनीं	=	कोहनी
मूँछ	=	मूछ
तरुवा	=	तालु
नकुवा	=	नासिका रन्ध्र
झुतरौ	=	उलझे बाल
पौंद	=	चूतड़

पशु-पक्षी

ढोर	=	पशु (पालतू गाय, बैल, भैंस)
गोरू	=	पशु (गाय, बैल, भैंस)
गइया	=	गाय
बैंलवा	=	बैल
बधिया	=	नपुसक किया बैल
सँड्वा	=	साँढ
बछ्वा	=	गाय का बछडा (नर)
बछिया	=	गाय का बछडा (मादा)
गट्टा	=	जोते जाने के लिए तैयार बैल
गट्टी	=	जोते जाने के लिए तैयार छोटे आकार का बैल
भैंसिया	=	भैंस (मादा)
भैंसा	=	भैंस (नर)
पड्वा	=	भैंस का बच्चा (नर)
पडिया	=	भैंस का बच्चा (मादा)
उसरिया	=	गाभिन होने के लिए तैयार भैंस
बुक्रा	=	बकरी (नर)
बुकरिया	=	बकरी का बच्चा
छिरिया	=	बकरी (मादा)
गाडर	=	भेड (मादा)
मिड्ला	=	भेड (नर)
मिढ्रुवा	=	भेड का बच्चा
घुड्वा	=	घोडा
घुडिया	=	घोडी
बछिर्वा	=	बछेडा
बछिरिया	=	बछेडी
हँत्नी	=	हथिनी (मादा)
हाँती	=	हाथी (नर)
कुत्ता	=	कुत्ता (नर)
कुतिया	=	कुत्ता (मादा)
पिल्ला	=	कुत्ता का बच्चा (नर)
पिल्लिया	=	कुत्ता का बच्चा (मादा)
बँद्रा	=	बन्दर (नर)
बँदरिया	=	बन्दर (मादा)
बिल्रा	=	बिल्ली (नर)
बिलइया	=	बिल्ली (मादा)
बिलौटा	=	बिल्ली का बच्चा
सुँघर्वा	=	सुअर (नर)

सुँघरिया = सुअर (मादा)
घिट्ला = सुअर का बच्चा (नर)
घिटिलिया = सुअर का बच्चा (मादा)
हिन्नाँ = हिरन (नर)
हिन्नीं = हिरन (मादा)
हिन्नौटा = हिरन का वच्चा
लिडइया = सियार
लिड़ैन = सियारनी
लुखरा = लोमडी (नर)
लुखरिया = लोमडी (मादा)
डिँगुरा = बकरियो का बैरी जानवर (भेडिया)
रुझ्वा = नील गाय
तिँदुआ = तेँदुआ
नाँहर = शेर
जनावर = सेर, तिँदुवा आदि खूँ-ख्वार जानवर
गदा = गधा (नर)
गदइया = गधा (मादा)
बिघना = कुत्तो का बैरी जानवर
चौँखरो = चूहा
चौँखरिया = चुहिया
चिरवा = चिडिया (नर)
चिरइया = चिडया (मादा)
गलगलिया = गाय-बैलो के शरीर से निकाल कर कीडे-मकोडे खाती है।
टुइँयाँ = तोते की एक किस्म जो खूब बोलती है।
सुआ = तोता
कउवा = कौआ

बर्तन (मिट्टी, पीतल तथा बांस या लकड़ी)

गघरा = बड़ा घडा
गघरी = छोटा घड़ा
मंटका = मोटा और बड़ा घड़ा
मटकिया = मोटा और छोटा घडा
चपिया = चौडे मुँह का छोटा घडा
चरुआ = विशेष अवसर पर दाल, पानी पकाने का घडा
डहरिया = पानी भरने का बडा और ऊँचा बर्तन
कुठली = मिट्टी का बिना पका अनाज भरने का बडा और ऊँचा बर्तन
कूँडौ = मिट्टी का तसला
गुरसी = मिट्टी की अँगीठी
डबला = लोटा के आकार का
डबुलिया = डबला से छोटा
दिया = दीपक
डब्बी = छोटा, बत्तीदार दिया
कुँडी = पत्थर की कटोरी
गौरइया = गौरा पत्थर की कटोरी
नाँद = पानी भरने का चौडा बर्तन
टाठी = थाली
गडई = लोटा
तबेला = पतीली (बडी)
तबिलिया = पतीली (छोटी)
बटुआ = दाल या चावल बनाने का बडा, मोटा पात्र
बटलोई = दाल या चावल बनाने का बडा पात्र
बौँगना = भगौना (बडा)
बौँगनिया = भगौना (छोटा)
बेला = काँसे का कटोरा
बिलिया = कटोरी
कुपरा = बडा और मोटा थाल
कुपरिया = बड़ा और पतला थाल
हँडा = अनाज भरने का ऊँचा व बड़ा पात्र

कसेँडा = पीतल का बडा बर्तन जिसमे विवाह के अवसर पर मिष्टान्न भर कर भेजा जाता है।

कसैँडिया = पीतल का छोटा बर्तन विवाह के अवसर पर मिष्टान्न भर कर भेजा जाता है।

घण्टी = छोटा सा लोटा

तुतइया = टोटीदार घण्टी

खुरिया = कटोरी

खुरवा = कटोरा

कलसा = पानी भरने का लोहे का पतला घडा

कलिसया = पानी भरने का लोहे का पतला घडा

तसला = लोहे की बडी चौडी थाली जिसमे खाने का काम नही लिया जाता

तसिलिया = लोहे की छोटी चौडी थाली जिसमे खाने का काम नही लिया जाता

डोल = लोहे का एक पानी भरने का पात्र

डोल्ची = लोहे का एक पानी भरने का पात्र

कर्हइया = कढाई

कर्हाव = बडी कढाई

तइया = कम गहरी, बडी कढाई

झारौ = छेद-युक्त छोटी करछुल

झरिया = छेद-युक्त छोटी करछुल

कलछुरी = करछुल

थैंता = छिद्र-रहित सपाट करछुल

पटा = पाटा (रोटी बेलने का)

बिलनाँ = बेलन (रोटी बेलने का)

दौल्ला = बाँस का एक चौडा मोटा बर्तन

दौंरिया = बाँस का एक चौडा पतला बर्तन

टुकना = बाँस का एक बडा और चौडा बर्तन

टुकनिया = बाँस का एक छोटा परन्तु चौडा बर्तन

बिजना = पखा

पैली = अनाज नापने का बर्तन

चौरी = अनाज नापने का बर्तन

पिरा = खाड़ू की टोकरी

पिरिया = खाड़ू की छोटी टोकरी

खाद्यान्न और साग-भाजी

सुहारी = पूडी

पुरी = बेसन भरी पूडी

लुचई = सादी पूडी

पुआ = मीठी पूडी

कुचइया = छोटी रोटी

गकरिया = बिना तवा के अँगारो (आग) पर सेकी रोटी

माँडे = घडें के नीचे हिस्से (कल्लौ) मे सेकी हुई बडी पतली रोटी

फरा = खौलते पानी मे सेंकी रोटी

चीला = दोसा

महेरौ = मट्ठा मे पकाए गए चावल

रसयावर = गन्ने के रस मे पकाए गए चावल

थुली = दलिया

कलेऊ = नास्ता

बयारी = रात्रि का भोजन

पिसनौट = पीसने के लिए = तैयार अनाज

चून = आटा
कनक = गेहूँ का आटा
बेसन = चने का आटा
बिर्रा = गेहूँ तथा चना मिले हुए
जबर्रा = जौ तथा चना मिले हुए
बिझरा = ज्वार तथा जौ मिले हुए
गौंझई = गेहूँ और जौ मिला हुआ
जुन्डी, जुनरी = ज्वार
तिली = तिल
समाँ = सवाँ
कुदवा = कोदौ
जवा = जौ
कुदई = कोदौ के चावल
बिजरी = अलसी
कलीदो = तरबूज
डँगरा = खरबूजा
लिदरा = खरबूजा की एक किस्म
फूट = खरबूजा की एक किस्म
मुरार = मृणाल
पडोरा = जगली परवल
भटा = बैंगन
भाजी = चने के पत्ते
चौरई = पत्तेदार साग
खटुआ = खट्टे पत्तो का साग
नेबा, कुम्हडा = कद्दू
तेदू = एक फल
फत्कुलियाँ = तरुई की एक किस्म
नैंना = तरुई की एक किस्म
किसुरुआ = कमल के फल
पुरैन = कमल के पत्ते
मकुइयाँ = बेर के आकार का फल

अन्य

गरदा = धूल
उरानौ = उलाहना (सज्ञा)
बींग = दोष
लाँच = घूस
बिचोई = मध्यस्थ
टिया = निश्चित समय
ऐरौ = आहट
हरयाँद = हरे पत्त की गध
आरो = आला, ताक
अकता (सैं) = पहिले (से)
पपीरा = चातक
सत्त्या = शक्ति
सरीक = दुश्मन
कहनौत = कहावत (जनोक्ति)
सार = गाय-बैल बाँधने की जगह
खोर = गली
ददोरा = चकत्ते की तरह सूजन
टूंका = टुकडा
सुघर = चतुर
दर = कद्र
उसनींद = उँघासी
खता = फोडा
पुरा-पालौ = पडोस
रमानै = भेजना
बरकनै = बचना
बमूरा = बबूल
टउका = छोटा काम
टेसन = स्टेशन
ओरौ = ओला
हीला = कीचड
सौज = साथ, साझा
साकौ = शौक, चाव
साँस = छेद, दरार
करौटा = करवट
उमानौ = नाप
उलींचनै = (पानी) फेकना
गोरौ-नारौ = गोरे रग का
अघानै = तृप्त होना
अठाई = उत्पाती
उलायतै = जल्दी
उकतानै = जल्दी करना

घोकनै = बिचारना
ढी = पार
घूरौ = कूडा खाना
परदनियाॅ = मरदानी धोती
निभौली = नीम का फल
दारी = स्त्रियो के लिए गाली
हरजाई = भ्रष्टा स्त्री (गाली)
टौका = छेद
टटवा = झाड़-फूस का दरवाजा
टेनै = तेज करना
टटकौ = ताजा भरा हुआ (पानी)
सद्द = गुनगुना (पानी)
टिरउवा = बुलावा
रमतूला = विवाह के अवसर पर प्रयुक्त बाजा
टुनई = पेड का सर्वोच्च भाग
बहरा = झाडू
घुन्चू = घुँघचू, रत्ती
मौखात = जबानी
भबूका = लपट
मन्तक = चुपचाप
बन्नक = नमूना
बिरानौ = दूसरा
बगर = गाय-बैल बाँधने का बाडा
पटनै = तय होना, निभजाना
पिरानै = दर्द देना
पिरातौ = दर्द देने वाला दुख
पाउनौ = मेहमान
निबकनैं = ढीला पडना
धुँदकनैं = आग के धुआँ छौडने की स्थिति
थुतरी = मुँह (हेयार्थ)
थुतनौं = जानवर का मुँह
थतोलनैं = हाथ से टटोलना
ढेरनै = केडा देखना
ढूंकने = झुककर देखना

झमाँ = चक्कर
पावनौ = नौकर चाकरो को दिया जाने वाला भोजन
छिपुरिया = जलाने की लकड़ी का छिलका
चौतरा = चबूतरा
चिमानौ = चुपचाप
घालनैं = मारनै
गारी-गुप्ता = गाली-गलौज
खकलनै = डँसना
खूंटनैं = टोक देना
गतरा = टुकडा
उकडूँ = पजो के बल बैठना
ऐना = दर्पण
ओली = गोद
औकात = हस्ती
ओरा = आवला
डूँडा = बिना सीग का
तक्का = उजाले के लिए आला
ततूरी = गर्म जमीन पर पैरो का जलना
तखरिया = तराजू
तुमरिया = लौकी की तरह का फल
थिगरा = थेगली
थराई = एहसान
थम्मा = खम्भ, खेल का साँकेतिक स्थान
दसकत = दस्तखत, हस्ताक्षर
उडला = एक बार दला गया चना
निहुरनै = झुकना
नोचिया = चिउँटी काटना
निन्त्याम = बिल्कुल
राई = राहत
प्याँर = कोदौ की घास
खाँखर = तिली की घास
खाडू = अरहर की घास
टटेरौ = खडा, सूखा जुडी का पेड़

करबी = कटे हुए टटेरे
पबरने = (प्र+ब्रज)
अनिच्छा से हटाना
पीप = मवाद
फरार = फलाहार, उपवास
के बाद का
पान्नौ = उपवास के बाद का
खाना
निन्नै = बिना खाये हुए
बरेदी = गाय-बैल चराने वाले
हौदी = हौज
चिर्हई = गाय-बैलो के पानी
पीने का हौज
घिनौची = स्नानागार
नरदा = नाबदान
लिडौरी = भूसा खाने के लिए
बनाई गई जगह
जरियॉ = बेर के पेड
जोरा = रस्सी
पगइया = रस्सी
जरीबानौ = जुर्माना
जॉतो = ऊँची चक्की
छैरौ = छाया
छिदनॉ = छत्ता
छूंची = खाली
जडयावर = जाडे के कपड़ो का
दान
मुंदरी = अॅगूठी
पुंगरिया = नाक का आभूषण
दुर = नाक का आभूषण
पैजना = पैर का आभूषण
गजरा = गले की माला
डेरा-डगर = गृहस्थी का सामान
चीज-बसत = गहना
डेरा = गहना
करधौनी = कमर की साँकल
सुमी = देखा-देखी करना
समसर = बराबरी

बोरका = खरिया मिट्टी वाली
दावात
किन्छा = पानी का छीटा
किन्छनै = पानी छिडकना
सकरौ = जूंठा
सैलानै = बढती कर देना
सुन्दॉ = सहित
सनाकत = शिनाख्त
गुजराती = इलायची
डौंडा = बडी इलायची
मउवा = महुवा
ऑसौ = इस वर्ष
ऑगित = पिछला या अगला
साल
हुँडस = हठ
औरनै = सूझना
अहानौ = कहावत
अनुवा = बहाना
अतर = इत्र
अत्पर = अधर
अलगोजा = बॉसुरी
उढरू = बिना विवाही स्त्री,
रखैल
उपत = बिना बुलाए
उपनओ = बिना जूते पहिने
उसरी = बारी
औजी = बारी
उरतिया = पानी गिरने की
पनाली
गारनै घिसना
ऊननैं सुनना
झूकनैं झींकना
भीकनै खींचना
पसरनैं फैलना
मोनैं घी और पानी से
आटा गूंधना
साननै गूंधना
कमनै कम होना